हातिम ताई का क़िस्सा

जिस में

तय के पुत्र हातिम नामक सत्यवादी सत्पुरुष परोपकारी के द्वारा हुस्नबानू के सात प्रश्नों के उत्तर देने और उस के अन्तर्गत अनेक विचित्र कहानियों का वृत्तान्त

वर्णित है

जिस को

रस रसिक विलासियों और विद्यानुरागियों के अनुरागार्थ

बहराम घाट निवासी जीवा राम जाट ने उर्दू से देव नागरी भाषा में उल्था किया

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के सीसाक्षर यन्त्रालय में मुद्रित हुआ

मई सन् १८७७ ई०

इस महीने अर्थात् मई सन् १८७७ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तैय्यार हैं वह इस सूची पत्र में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घटा कर नियत हुवा है परन्तु ब्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को ब्योपार की इच्छा होवह छापेखानेके मुहतमिम अथवा मालिकके नाम खत भेज कर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
दुर्गा पाठ सटीक	हनूमान बाहुक	प्रेमसागर
अपराध भञ्जन स्तोत्र	सुन्दरी चरित्र	सूर सागर
महिम्न स्तोत्र	सत्य नारायण की कथा टी-	रागप्रकाश
श्रीगोपाल सहस्रनाम	का सहित	सभाविलास
गङ्गा लहरी	शनिश्चर की कथा	विक्रमविलास
शिवार्चन	रामकलेवा	ज्ञान चालीसी
यमुना लहरी	बनयात्रा	रसराज
भगवत गीता नागरी	कथा चित्रगुप्त	इन्द्रजाल नागरी
भगवद्गीता विष्णुसहस्र	भजनावली	कायस्थ कुल भास्कर
नाम सहित	गीत गोविन्द नागरी	क़िस्सह गोपीचन्द भरतरी
दुर्गापाठ मूल	कृष्ण बाल लीला	बहारविन्द्राबन
श्रीमद्भागवत सटीक १२	कृष्ण सागर	पद्मावती खण्ड आल्ह खंड
स्कन्ध	रामायण राम विलास	याज्ञ वल्क्य टीका सहित
भक्तमाल	विनय पत्रिका नागरी	युगल विलास
अवध यात्रा	रामायण बड़ी मोटे अक्ष-	ज्ञान माला
कथा गङ्गाजी	रों की	भाषा महाभारत मुक्ताव-
रामायण नागरी	तथा हिनाई काग़ज़ की	ली
रामायण जिल्दबन्धी	सुखसागर	जनक पच्चीसी
रामायण तुलसीकृत	ब्रज विलास	भरतरी गीत
रामायण तुलसीकृत सटीक	देवी भागवत नागरी	सिद्धान्त चन्द्रिका
सतसई रामायण	मार्कण्डेय पुराण	आनन्दा मूलवर्षिणी
कवित्तावली रामायण	ठाकुर दिग्विजयभाषा	दोहावली रत्नावली
गीतावली रामायण	ब्रह्मसार	चित्रचन्द्रिका
रामायण दोहावली	परमार्थसार	कविकुलकल्पतरु भाषा

भूमिका ॥

धन्य है उस परब्रह्मपरमेश्वर सच्चिदानन्द निराकार को जिसकी कृपाकटाक्ष से सम्पूर्ण सृष्टि में अनेक प्रकार के विचित्र चरित्र लीला विलास होरहे हैं और प्रत्येक जीव अपने २ कार्य्य में तनमन से आरूढ़ हैं इस परमात्मा की अद्भुत लीलाविलास में ऐसे २ भी मनुष्य वर्त्तमान हैं कि जिनकी अनुपम मति सर्वदा परोपकार और सर्वजनों के लाभ और भलाई में तत्पर रहती है परमेश्वर ऐसे सत्पुरुष महात्मा लोगों को धन समृद्धि आयुरारोग्य और कुलवर्द्धन करे ॥

प्रकट हो कि जबसे श्री महाराणीराजराज्येश्वरी लोकानन्ददायिनी श्री मती विक्टोरिया का राज्य इस भरतखण्ड में हुआ तबसे विद्या का प्रचार विशेष करके है कि ग्राम २ में हिन्दी उर्दू आदि और जिलों में अंगरेजी पाठशाला हैं जिन में अत्युत्तम रीति से विद्या का पाठ होता है और अनेक प्रकार की पुस्तकें अंगरेजी फ़ारसी नागरी आदि में बनी हैं जिसके पढ़ने से सुगम रीति से विद्या की वृद्धि होती है जो कि उर्दू फ़ारसी अंगरेजी में बहुतसी पुस्तकें ऐसी हैं कि उनके अवलोकन से चतुराईबुद्धिमत्ता विशेष होती है और परमेश्वर की सृष्टिकी विचित्र लीलायें विदितहोती हैं, परन्तु जो लोग अपनी मातृभाषानागरीके सिवाय उर्दू, फ़ारसी, अंगरेजी, नहीं जानते हैं वे इस अलभ्य लाभ से निराश रहतेहैं इस कारण परोपकारी गुणिगण मण्डलीमण्डन आर्त्तधर्मप्रवर्त्तक विद्यानिधि वर्द्धक श्रीमन्मुन्शीनवलकिशोरजीकी अवधसमाचारसम्पादकने देवनागरीके जाननेवालों के उपकारार्थ ऐसाविचार किया कि ऐसी २ पुस्तकें जिनसे बुद्धिमत्ता, चतुरता, ईश्वरकी सृष्टिकी लीला, रस, काव्य, आदिमें निपुणता और जानकारी होती है देवनागरीभाषामें सरलरीतिपर होजावें, निदान अलिफ़लैला, फ़िसानाअजायब, बागबहार, गुलबकावली, गुलसनोबर आदि पुस्तकों को बहुत सी द्रव्य व्यय करके सरल भाषा अर्थात् क्लिष्ट शब्दों को निकाल कर बोलचाल की रीतिपर करा के अपने यन्त्रालय में छपवाईं जिनसे कि अनेक विद्यानुरागियों

और रसरसिक विलासियों को लाभहुआ, अब यह पुस्तक आरायशमहफ़िल अर्थात् हातिमताई का क़िस्सा जिसमें तय के पुत्र हातिम नामक सत्पुरुष की सत्यता और दयालुता और परोपकारताका वृत्तान्त और उक्त हातिम के द्वारा हुस्नबानू के सात प्रश्नोंका उत्तर देना और और उसके अन्तर्गत अनेक विचित्र कहानियों का वृत्तान्त है, सकल गुणनिधान परमसुजान बहराम घाट निवासी जीवाराम जाट से उर्दू से सरल भाषा में कराय अपने लोकाचार यन्त्रालय में छपवाया, आशा है कि विद्वानलोग कृपा पूर्वक ग्रहण करें ॥

(रामरत्न शर्म्मा)

इति

श्रीगणेशायनमः ॥

आरायश महफ़िल

अर्थात् हातिमताई का क़िस्सह ॥

प्रथम कहानी—बरजख़ सौदागर की बेटी हुस्नबानू के शहर ख़ुरासान से
निकालेजाने और किसी जंगलमें असंख्य जवाहिरादि द्रव्य मिलने
और मुनेर शामी शाहज़ादे के ऊपर मोहितहोने और
हातिम की सहायता करने के विषय में ॥

सुनाहैकि ख़ुरासानके देशमें एक बादशाह ऐसाथाकि लाखों प्यादेऔर सवारउसके साथसदा वर्तमान रहाकरतेथे और न्याय और दण्डभेदमेंभी ऐसाथा।कि बाघ और बकरी को एकहीघाटपर पानी पिलाताथा और न्यायसमय अपने पुत्रकाभी पक्षपात नहीं करताथा उसके राज्यमें एकसौदागर बरजखनामक अत्यन्त द्रव्यवान प्रतिष्ठितऔर माननीय रहताथा वहअपने गुमाश्तोंको प्रति देशमें मालअसबाबदेदेके भेजाकरता और आपआनन्दपूर्वक उसी शहरमें रहाकरताथा और उसने बादशाहसे भी भलीभांति मेल मिलापकररक्खाथा और बादशाहभीउसपर अत्यन्तदयाकरताथा कुछ कालबीते वहसौदागर मरनेके निकटपहुंच अपनीस्वासोंकी संख्या पूरीकरनेलगा और उस सौदागरके एक हुस्नबानू नामक बेटीकेसिवा और कोईनथा जो उसके पश्चात्उसके धनकामालिक होता निदानवह सम्पूर्ण धनउसकी बेटीहीको मिला और उस समयवह बारहवर्षकी थी परिणामयह हुआकि सौदागर उसी पुत्रीको अपने धन दौलतका मालिककर और बादशाहको सौंप आपस्वर्ग को पधारा बादशाहने हुस्नबानू को अपनेपुत्रों के समान पाला और उसके धनकी आधिक्यता देखके कुछ लोभनकिया किन्तुसम्पूर्ण धनउसीको देदिया कुछदिनबीते जब हुस्नबानू युवाहुई तब अपनी धायको बुलायथों कहनेलगी कि हे माता यह संसार पानीके बबूलाकेतुल्यहै इसकाटूटजाना कुछबड़ी बातनहींहै इतना धनलेकरमैं अकेलीक्याकरूंगी इसलियेमैं यही उचित समझती हूं

कि इसको परमेश्वरकी राहपर बांटदूं और विवाहनकरूं जिसमें अपनेको दृष्टिके विकारसे पवित्ररक्खूं इसलिये हे माता मैं तुमसे पूछतीहूंकि तू समझके मुझे उचित सिखापनदे तब दाई बोली की बेटीमेरी उनुमतियहहै कि तूसात प्रश्नलिखके अपने द्वारपर चिपकादे और उनकेनीचे लिखदे कि जो कोई इनसातों प्रश्नोंके उत्तर देगा उसीके साथमैं विवाहकरूंगी ॥

[पहलाप्रश्न] यहहै कि एकबेरतो देखाहै और दूसरीबेरदेखने की हौसहै [दूसराप्रश्न] भलाईकर और नदीमें फेंकदे [तीसरा प्रश्न] किसीसे बुराईनकर जो करैगातो वही पावैगा [चौथाप्रश्न] सत्यवादी सदासुखी है [पांचवां प्रश्न] कोहनिदा अर्थात् शब्दवान् पर्व्वतकी खबरलादे [छठाप्रश्न] एक मोतीजो जलपक्षीके अण्डे की समान वर्त्तमान है उसका जोड़ा मिलादे [सातवां प्रश्न] हम्माम-बादगिर्दकी खबरलादे] हुस्नबानूने अपनीधायकी बातमानी और हर्षितहोके कहनेलगीकि काहेकोकोई ऐसामनुष्यहोगा जो इन सातोंप्रश्नोंका उत्तरदेगा इसी विचारसे वह परमेश्वरकेपूजा पाठमें लगीरहती एकदिन ऐसासंयोग हुआकि यह अपने कोठेपर बैठी बाजारका तमाशा देखरही थीकि इतनेमें एक साधू देखनेमें बड़ा सिद्धचालीस चेलाजिसके साथइसके मकानके पासहोकर निकला और ऐसादम्भकियेकि पृथ्वीपर पांवनधरै किन्तुसोने चांदीकीईंटें उसकेचेला उसके पावोंतलेधरतेजावें वहदम्भी उन्हींईंटों परपाव धर २ के चले यह सुन्दरी उसको देखबहुत प्रसन्नहुई और अपनी दाईको बुलायकेपूछाकिहे मातायहकोई बड़ासिद्धसा लगताहै जो इसप्रकारसे मार्गमेंजाताहै उसनेकहाहांबेटीयहबड़ासिद्धहै औरबादशाहका गुरुहै बादशाह महीनेमें कईबेर इसकेदर्शनोंको जाताहै और कभी२ यहभी आताहै यहबातसुनके हुस्नबानूने अपनी धायसे कहाकिजो मातातूमुझे आज्ञादेवे तोमैं इस साधूका न्योता करूं और घड़ीपहरके लियेअपने घरबुलाके इसकेचरण चूमूं और इसका सत्संगकरूंउसने प्रसन्नहोके कहाकिबेटी बहुतउत्तमहै निदान हुस्नबानूने सिद्धजीको सन्देशा दिया कि आप दया करके मेरे घर अपने चरणारविन्द पवित्रों को धारिये तो मैंभी लोक परलोक में पवित्र होऊं और आप के दर्शन कर नेत्रों को पवित्र करूं साधूने संदेशा मानलिया और कहामैं अवश्य आऊंगा क्योंकि यहकाम सिद्धलोगों काहै जोकोई किसी का न्योतानहीं मानता वहदोषी होताहै परन्तु आजतोनहीं कल्ह सवेरेअवश्यही आऊंगा क्योंकि

आजके दिनमुझे काम है जबयह समाचार हुस्नबानूने सुनाकि कल्ह सिद्धजी अपने चालीसों शिष्यों के साथ कुछदिन चढ़े आवेंगे तब उसने भांति२ के षटरस विंजन और अनेक प्रकारकी मेवामिष्ठान बनवाये और रुपया मोहर जवाहिरोंके बहुतसे थार भरायके धरे किजब सिद्धजी आवैंगे तब उनको भेटदेके उनके चरणचूमूंगी और बहु प्रकार दीनभाव प्रगट करूंगी इतने में सवेरा होते ही वह दम्भी अपनेचालीसों शिष्योंकोसाथ लियेयथा पूर्वक चांदीसोनेकी ईंटोंपर पावरखताहुवा हुस्नबानूके द्वारपर आनपहुंचा अब बड़ाई मैं उसकी तुमसे क्या कहूंकि बाहर तोसिद्ध और भीतर लोभकिंकर था और आपसोजोउसके छलकोकहूं तोनिश्चरों सेभी अधिक था निदान बालकहत्याका विचार तजवह चाण्डाल बधने योग्यथाहुस्नबानूने पाटम्बर के पावड़े प्रथमही बिछवारक्खे थे वह छली उन अमोल्य वस्त्रों को लांघता हुआ मसनदके ऊपर जाय के बैठगया तबखाजा सराय उसके मन्सुखबहुतसे थाररुपया मोहर औररत्नों केभरहुये लाये परउसने कुछ नलिया और कहाकि यहद्रब्यमेरे किसकामकीहै फिरभीतर बहुतसेभार भांति२के वस्त्रों के भेटदिये पर उसने एकभोन लिया फिरदूसरे मकान मेंगया वहांभांति२के षटरस बिंजन सोनेचांदीके बासनों में परोसि के आये और सोने चांदीके तारोंके बिनेहुये वस्त्र बिछायेगये तिसपर वेथार रक्खेगये और वहांरेशमी कपड़ा सोनेचांदीके तारों के बिनेहुये तिनके पर्दा दालानों मेंपड़े हुये और रेशमकी डोरियोंसे बंधेहुयेथे और एक नमगीरा मोतियों की झालर लगाहुआ दालानोंके आगे आंगन में झमझमा रहाथा नौकर चाकर अच्छे२ वस्त्र जरवफ़्तादि के पहरे शीघ्रगामी चिलमची सहतावा लिये सोनेके गडुवामें पानी लेके हाथ पांव धुलानेके लिये आये और हाथ मुंहधुलायके शील रुतखड़े होके प्रार्थनाकरने लगे कि हे दयानिधि हमारी मालिक प्रार्थनाकरतीहैकि आपदयाकरके कुछभोजनकीजिये औरइसदीन के घरको अपनी जूठनडारकेपवित्र कीजिये यहसुनकेवहदम्भीभोजन करने लगा और सोने चांदीके बासन और रत्नादिको भापनेलगा और प्रतिग्रासके साथही शोचताजाय कि बरजब सौदागर कोई बड़ाधनाढ्यथा कि जो बादशाहोंके समान ऐसीमाया छोड़ के मर गया है कोई ऐसो यत्न किया चाहिये कि जिसमें सम्पूर्ण असबाब आजही रात को लेचलूं निदान उसने थोड़ा बहुत भोजन बिषके समान किया और अपना हाथ खींचा तब नौकरोंने हाथमुंह धु-

लाया फिर जड़ाऊ अतर दानले आये और उसने अपनी दाढ़ी और अपने कपड़ों में इतर लगाया और ऊपरी मनसे आशीर्वाद देके बिदा हुवा और जितने नौकर चाकर थे सो तो उसके न्योते की तैयारी करने में थकगये थे इसकारण सन्ध्या होतेही अचेत हो सो गये और सम्पूर्ण असबाब जहां का तहां पड़ा रहा न तो बासन सोने चांदी के अलग रक्खे और न रत्नादिकों को ठिकाने सेधरा और घरकेकिवाड़भी खुलेही रहगये जब पहररात बीती तो वहसिद्ध अपनेचालीसों चेलाओंको लेकरघरमें घुसआयाऔर अपनासा माल उठाय २ के धरनेलगा इतनेमें जबआहट हुई तो नौकरचाकर जागे और उनकेसाथ लड़नेको उद्यतहुये तबबहुतेरों कोतो उसकेसाथियोंने घायलकिया और बहुतेरोंको जीवसे मार-डाला और हुस्नबानू कोठेपरसे खिरकीकी राहसे यहचरित्र देख२ पहिचान२ के कहै किहेछली चाण्डाल पाखण्डी तू ऐसादम्भी है किऊपरऐसा भेषबनायेऔरभीतरऐसी छुरीकटारीहैं औरबहुतेरी प्रतिष्ठा मर्य्यादा निदान हुस्नबानू हाथ मलमल के कहनेलगी कि अबतेराक्यायतनकरूं निदानराततोऐसीहीकटीजो सबेराहुआ तो हुस्नबानूनेउनमृतक और घायलोंको चारपाइयोंपरडालकेबादशाह के द्वारपरलेके पहुंची और चिल्लायके दुहाईदेनेलगी किमैंलुट गई जबबादशाहनेसुनातब पूछाकि यहकौनहै औरकिसनेदुःख दियाहै तब प्रतिहारों ने जाकेकहाकि महाराज बरजख सौदागरकी बेटी चारपाइयोंपर कितनेएक मृतकऔर घायललेकेआईहै और रोयर केदुहाईदेती हैजो आपउसको अपनेपास बुलावैंतो वहअपना वृ-त्तान्तआपसे कहै बादशाहने यह सुनतेही उसको बुलायके पूछा तबवह बोलीकि महाराजके जीवकीजय और जबतक पृथ्वीआका-शहै तबतक राज्यकरो मेरीओर न्याय और दयाकी दृष्टि से देख केसुनो किकल्हके दिन मैंने उससाधूका निमंत्रन किया था उसने पहररातबीतेमेरेघरमेंअपने चालीसों चेलाओंकोलेके आघुसाऔर सम्पूर्णधन ग्यारहबारहलाख रुपयोंकाउठायलेगया औरदशबीसको माराऔरदशबीसको घायल किया परमात्माउसकामुखकालाकरै जिसनेमुझे अनाथजानके लूटाहैइसबातके सुनतेहीबादशाहके क्रो-धकीज्वालाउठी और कहनेलगा किऐमूर्खतुझेकुछबुद्धिहै तेरीमत भ्रष्टहोगई है जोऐसे सिद्धकोतू दृथादोष देतीहैवह सम्पूर्ण दृष्टि को वस्तुवों से घृणा करता है तब हुस्नबानू ने फिर कहा कि वह नास्तीक पाखण्डी है और छल में यमदूतों सेभी अधिक है और

आपक्या यहकहतेहैं उसकोबराबरतो दुष्टकोई सृष्टिमेंनहीहै इस चाण्डालकोकोई मनुष्यनकहै क्योंकियहतोराक्षसोंसे भी अधिकदुष्टात्माहै इसबातचीतकेसुन्नेसेबादशाह औरभीअधिकक्रोधातुर हुआ और कहनेलगा कि और कोईहै नहींजो इस हतभाग्यलड़कीको मेरेसामनेसे हटावै और पत्थरोंसे इसकामूड़ फोड़े तो यह अपने फलकोपावै और दूसरोंकोभी इसकीबुरी दशादेखके ज्ञानहोजाय जिसमेंफिर कोईऐसी ढिठाई नकरै किजोयह ऐसेसाधूकी निंदा इसप्रकार करतीहै इतनेमें एकमंत्री उठकेप्रार्थना करनेलगा कि महाराज यहवही बरजख सौदागरकी बेटीहैकि जिसकेऊपरसदा आपदयादृष्टिरखतेथेऔरअपनेपासबैठालतेथेऔरअपनाकरुणामय हाथइसके शीसपर धरतेथे और आजउसको वधकरनेकी आज्ञा देतेहैंइसकेदेखनेसे हमसबभी आपकीदयालुतासे निराशहोतेहैं सकल सभासदोंको यहआपकी आज्ञा अधीरकरतीहैकि वेसबके सब आपकादेश छोड़केभाग जावेंगे और शत्रुवों से मिलजावेंगे क्योंकि वे अबदेखते हैं कि जिसको बादशाहने बेटा की बराबर पालापोषा उसकोतो उसकेपिताकी मृत्युकेउपरान्त यहदशाकीहै तो हमारे पीछेहमारे बालबच्चों के साथ बादशाह कौनभलाई करेंगे इससेविदितहोताहै कि आपके सम्पूर्ण नौकर चाकरआपके शत्रुहो जायंगे इसलियेजो मेराकार्य्यथा सोमैं प्रार्थनाकरचुका अबआपका जैसा जीचाहैसा कीजिये आपकी आज्ञा सर्वोपरिहै इसबातको सुनके बादशाहकहने लगाकि अच्छा तेरेकहनेसे और बरजख सौदागर की पूर्व सचाईसे इसको जीवदानदिया परन्तु जो यहअपना भला चाहै तो आजही हमारे देशसे निकलजाय और राजद्वारके सिपाहीजायकै इसको देशनिकालादे आवैं और इसकेघरका सम्पूर्ण धन जवाहिरादि द्रव्य सबलेकर घरके तिनका तक सकल पदार्थसरकारीखज़ानेमें लेआवैं निदानबादशाहकी आज्ञानुसार सिपाही गये और जोकुछ धनउस चाण्डालसाधूसे बचरहाथा सो सबका सब बादशाह के कोषमें धरागया और हुस्नबानू केवल अपनी धायको साथलेके एकजंगलमें गई और चारोंओर घबड़ाई घबड़ाईफिरती थी और अपनीधायसे रोरोकेयों कहतीथीकि हेमातामुझसे कौनसा अपराधहुआजो मैं ऐसीआपदामें आनपड़ीहूं तबवहदाई छातीसेलगायके कहतीकि ऐबेटीब्रह्माके लिखेकोकोई मेटनेहारा नहीं है तू काहेको अपना मनछोटा करती है ईश्वर बड़ा कौतुकी है जिसनेतुझे आपदामें डालाहै वहीइसे निवारण करैगा इसप्रकार

हुस्नबानूरोती २ अपनी दाईसमेतश्रौर एकजंगलमें जापहुंची श्रौर
एकछायादार वृक्षकेनीचे कईदिनकी भूखीप्यासी थकी थकाई जो
नींदआई तो उसीकेनीचे पृथ्वीमेंसोगईतो क्या स्वप्नदेखतीहै किएक
पुरुषशीलवान श्वेतवस्त्र धारणकिये हुये आसाहाथ में लिये श्रौर
गलेमें बहुतसी मालापहने सरहानेकीश्रोर खड़ाकहताहै कि बेटी
खेदमतकर क्योंकिईश्वर ऐसाकौतुकी है कौनजाने तेरेको पहली
दशासेभी अधिकभलाईमेंसोंपै अबतू उठ,श्रौर इसवृक्षके नीचेसात
बादशाहतका खजानादबाहै ईश्वरने तेरेहीलियेरक्खाहै सोतूइस-
को अपने खर्चमेंला तब हुस्नबानूने कहा कि मैं अनाथ स्त्री इसको
किसभांतखोदके अपनेपास रक्खूं तब उसने कहाकि ईश्वरकी मा-
याका प्रभाव तो देखकिवह किसप्रकार कठिनको सरल करताहै
तूएक लकड़ी लेके इसके नीचे खोदयह बात सुनके हुस्नबानू चौंक-
पड़ी श्रौर उठके अपनीधायसे कहनेलगीकिमैं ऐसा स्वप्नदेखाहै
तबउसने कहाकिअच्छा ईश्वरकीलीला तोदेखोनिदान एक लकड़ी
ले उसकेनीचेखोदा श्रौर दोनोंने उसकी जड़पकड़के अपनीयथा सा-
मर्थ्य हिलाई तो रुपयामोहरके चहबच्चा श्रौर रत्नोंकोसंदूकें दृष्टिपड़ीं
श्रौर वही मोतीजो जलमुर्गीके अण्डाकी बराबरहै सो भी दिखाई
पड़ा हुस्नबानू इसईश्वरी द्रव्यकोदेखके बहुतहर्षितहुई श्रौर कहने
लगीमातातू शहरकी श्रोरकोजा श्रौर हमारे कुनबेके लोगों को
जायके बुलाला श्रौर कुछखाने पीनेकी वस्तुभी मोललेश्रा यहसुनके
धाय बोलीकिमैं जाऊंतो सही परन्तु तुझे अकेली किसभांति छोड़
जाऊंजो तेरेपास दूसराकोई श्रौर होतातो मैं चलीजाती इतनेमें
हुस्नबानू का कोका योगी का भेष बनाये आनपड़ा उसको देखके
हुस्नबानू गलेमें लगके बहुत रोई श्रौर कहने लगी कि अबतू घबड़ा
मत क्योंकि ईश्वरने इतना खजानादियाहै कि उसकी संख्या नहीं
होसक्ती इसलिये अब तू कुछ थोड़ा सा रुपया लेके शहरको जा
श्रौर वहांसे हमारे कुनबाके लोगों को बुलाला श्रौर कुछ खाने
पीने की भी थोड़ी सी वस्तुलेश्रा श्रौर कारीगर थवई आदि को
भी बुलाला जिसमें एकबड़ासा मकान रहने केलिये तैयार करें
श्रौर मैंयहांएक शहरबसायाचाहतीहूं उसकानाम शाहाबादधरूं-
गी यहभेदकिसीसे अभीनहीं कहनानिदान वहकोका कुछरुपया
लेके शहरकोगया श्रौर उसकेकुनबेके लोगोंको जोजहांतहांमारे२
फिरतेथे सबकोइकट्ठा करकेहुस्नबानू के पासलेश्राया वेसब आपस
मेंमिलेचुले फिरएक बड़ाभारीतम्बू खड़ाकिया गया श्रौर वेसबलोग

रहनेलगे एकदिनफिर वहकोका शहरमें आया और राजोंके यथ
कोबुलाकेकहा कि हमको कुछकाम वनवानाहै इसलियेमेरे साथ
चलोऔर बहुतसेयवईअपने सायलेचलो उसनेउसकी बातमानली
और उसकेसाथ जङ्गलकीओर चला और सबकोजिस कामकेलिये
लायाथा उसकाममें लगायाजब छ:मासमें एकबड़ामकान बनचुका
तब हुस्नबानूने आज्ञादीकि अबइस मकानके आसपास एकशहर
का डौलडालो तबयवईलोगोंने कहाकि विना बादशाहकी आज्ञाके
हमशहर नहीं बनासकतेयह बातसुनतेही हुस्नबानू मरदाना भेष
बनाय थोड़ेसे प्यादे सायले एकअर्बी घोड़ेपर चढ़ और जवाहिरों
काएक थारभरऔर एक याकूतका मोर लेके शहरकी ओर सि-
धारीयह समाचार बादशाह को मिलेकि एक सौदागरबचा आप
के दर्शनों की अभिलाष से द्वारपर खड़ा है बादशाह ने सुनतेही
कहाकि शीघ्रही उसको प्रतिष्ठायुत मेरे सन्मुखले आओ द्वारपाल
बादशाहकी आज्ञानुसार उसकोबड़े आदर से बादशाहके पासले
गये और वह बादशाहोंके समानदण्ड प्रणामकर भेंटआगेधरकर
खड़ी होरही इसको देखके बादशाह बहुत प्रसन्न हुवा और इस
प्रकार पूछनेलगा कितुम किसदेशके निवासीहो और तुम्हारा क्या
नामहै यहांकौन कामकोआयेहो यहसुनके हुस्नबानू कहनेलगी कि
मैं उस शहरका रहनेवालाहूं यहांइस शहरके निकट मेरे पिता
प्रारब्धानुकूल जहाजमें डूबके मरगये मैं आपके दर्शनों की लाल-
सासे आपकीड्योढ़ी परआयासोईश्वरने मेरीअभिलाष पूरीकी और
आपसेकेवल यहीप्रार्थना करताहूं किमैंअपनी आयुर्बलके शेषदिन
आपकीशरणमें काटूं यदिआपकीआज्ञा होतो उसजङ्गल में एक
शहर बनाऊं और उसका नाम शाहाबाद रक्खूं क्योंकि द्रव्य का
खर्चलोक परलोकदोनों में मनुष्यको पवित्रकर देताहै यहबातसुन
के बादशाह बहुत प्रसन्नहो के कहनेलगा किहेप्यारे जहांतेरा जी
चाहेवहां रह और तुम्हारीजो इच्छाहो सो करो और जो चाहो
सोलेजावो तुम्हारेमाता पितातो मरगये आजसेतू मुझेअपनेपिता
कीजगह मान और मेरातूपुत्र हुवा तबहुस्नबानूने हाथजोड़ के
कहाकिजो आपनेमुझे अपनापुत्र बनायातो मुझेकोई उपनामदी-
जिये जिससेमेरी विशेष प्रतिष्ठाहो और यह प्रसिद्धनाम मेराभला
नहींबादशाह यहसुनकेबहुत प्रसन्नहुवा और उसकानाम माहरू-
शाहरक्खा और कहनेलगाकि हे पुत्रवह जंगल यहांसेबहुतदूरहै
इसलिये एकशहर मेरेशहरके निकट बसा और आनन्दसे रह तब

उसने फिर कहा कि महाराज वह जंगल बहुत रमणीक है और दूसरा शहर कुस्तुन्तुनियां के निकट बसाना बड़ी ढिठाई है इसलिये प्रार्थना करता हूं कि यवइयों को आज्ञा हो जिसमें वे वहां शहर बसावें बादशाह ने आज्ञा दी कि राजलोग जाके मकान शहर के बनावें फिर तो हुस्नबानू महीनेमें दो तीनबेर बादशाह के पास आयाजाया करती और यवइयों को बहुत माइनामदेदे के प्रसन्न करती और कहतीकि शीघ्र काम करो विलम्ब न करो और रातिदिन उसी शहर के बनवाने में लगी रहती निदान दो वर्ष के अंतर में एक शहर आबाद होगया तो हुस्नबानू उस शहर के बनाने वाले और नौकर चाकरों को पारितोषिक आदिसे प्रसन्न करके बिदा किया फिर तो हुस्नबानू बहुधा बादशाह की सभा में वर्तमान रहा करती एक दिन हुस्नबानू बादशाह की भेटको गई उस समय वह बादशाह उसी छली साधू के दर्शनों को जाताथा तो इसे देख कहने लगा कि हेपुत्र आज चित्त चाहता है कि उस योग्य साधू के दर्शनों को दोनों जने चलें क्योंकि संत के दर्शनों की समान सृष्टि में दूसरा सुख नहीं है और ऐसे सिद्धों के दर्शन मुक्ति दायक हैं इससे तुमभी चलो हुस्नबानूने कहा कि महाराज एकतो ऐसे सिद्ध के दर्शन दूसरे आपका साथ इससे अधिक भाग्य किसकी बलवान् होगी जो मैं ऐसे पदार्थ से मुह फेरूं परन्तु मनमें कहै कि ऐसे छली के दर्शन करना बहुत अनुचित है और उसके द्वार का जाना यमपुरी के तुल्य है परंतु क्या करूं परबस हूं और बादशाह के साथ मुझे जाना अवश्य है निदान बादशाह के साथ उस दम्भी के पास गई और बादशाह शाहकुशाह की बड़ाई उस कपटी मुनि के सन्मुख करने लगा कि यह शाहकुशाह के नाम से प्रसिद्ध है हुस्नबानू अपना सिर नवाकिये सुना की और मनमें कहने लगी कि यह केवल प्रपंच साधन की है नहीं तो मैं वही बरजख सौदागर की बेटी हूं जिस को अपने देश से निकाल दिया और सम्पूर्ण धन लेलिया इतने में बादशाह उससे बिदा हुवा तब शाहकुशाह ने हाथ बांधके कहा कि हे दीनदयाल जो मेरे घर में भी एक दिन पद पखारिये तो मैं भी अपने को धन्य मानूं और यह भी निश्चय है कि आप सिद्ध लोग सहज दयालु होते हैं इसलिये मुझे भी अपनी दया से विमुख न करेंगे यह सुनके वह अन्तर कपटी बोला कि बच्चा मैं तेरे घर अवश्य ही चलूंगा तब बादशाह से शाहकुशाह कहने लगा कि मेरा मकान यहां से दूर बहुत है इसलिये इनको जाने में बड़ा दुःख होगा जो आप बरजख सौदागर का घर जो बादशाहों के रहने के योग्य है दो चार दिन को मांगे दीजिये तो मैं इससे इस सिद्ध का न्योता

कहूं यहसुनके बादशाह बोला कि हे पुत्र तैंने उसकी खबर कैसे पाई तबवह कहने लगा कि बहुधा नगर निवासी उसकी प्रशन्सा करतेहैं और उसका नाम लेतेहैं तब बादशाहने कहा कि हमने वहमकान तेरेही को दिया यह बातसुन शाहरूखशाह उस मकान केपास आयाऔर उसकोटूटाफूटादेखके रोने लगा फिर थवइयों कोआज्ञादीकि इसमकान को साफ़करो और आप अपने नगर को चला गया और एक महीने पीछे सम्पूर्ण सामान न्योते को वहांभेजी और बहुतसे बर्तन थारआदि चांदी सोनेकेभेजेऔर एक याकूतकातोर और बहुतसे अमोलिकजवाहिरलेके उसमकान में धरकर अपने नौकर चाकरों को वहांपरछोड़ आप बादशाहके पासगया और हाथजोड़के कहने लगा कि मेरी अभिलाष है कि उससौदागरके मकान में कुछ दिन रहूं जिसमें आप की सेवा में सोनित्त आसकूं औरकलके दिनमें उस सिद्ध का निमंत्रण किया चाहताहूं बादशाहने सुनके कहाकि बहुतशुभहै और प्रसन्न होके कहाकि हमारी बादशाहत सौतू अपनीही जान यह सुनके शाहरूखशाहनेकहाकियहकेवलआपकीदयाहै जोमुझऐसे नीचकोऐसा अधिकारदियानिदान बादशाहकेपाससेविदाहो घरआया औरएक नौकरके हाथ उस साधूकोसंदेशा भेजाकिआपशाहरूखशाह के घर पर पधारिये औरउसकोबड़ाई दीजियेयहसुनके वहछलीअपनेचालीसों चेलाओं को साथ लिये यथा पूर्बक सोने चांदी की ईंटोंपर पांव धरता हुवा शाहरूखशाहके द्वारपर आय पहुंचा शाहरूखशाहने पहलेही से पाटम्बर के बिछौना और तकिया मसनद आदि लगवा रक्खी थी वहभीतर आयातो शाहरूखशाहने उसकोराजसी मसनद पर बैठाला और बहुत से थार जवाहिरों के और अनेक थानबहु मौलिक वस्त्रोंके उसके आगे धरे उसने कुछन लिया तब शाहरूखशाह ने सब जवाहिर ठौर २ ताखों में धरा दिये जिसमें सम्पूर्ण पदार्थ देखै तो उसको लोभ अधिक होय फिर भांति २ के भोजन और अनेक प्रकारकी मेवा मिठान सोनेचांदीके बासनोंमें धरके उसके आगे धरे और सुनहरी गेडुवा से चरण धुला के कहा कि सिद्धजी कुछ भोजन कीजिये और जूठन डालके इस दास का घर पवित्र कीजिये निदान वह अपने चालीसों चेलाओं को साथ बैठालके खाने लगा दशपांच ग्रास खाके हाथ बन्दकर लिया और कहनेलगा कि बसबच्चा अब बहुत भोजन पेट भर के खाना अच्छा नहीं क्योंकि जो पेटभर भोजन करैं तो ईश्वर की पूजा पाठमेंविघ्न

होगा तब साहूकारशाह ने कहाकि दयानिधि मेरा चित्त तो संतुष्ट नहीं हुवा थोड़ा भोजन और करिये यह सुनके वहबोला बच्चा मैंने तोतुम्हारा प्रेम देखके इतने दसपांच ग्रास भोजन भी किये नहीं तो आठपहर में दोचार दाने खाताहूं और निशि दिन ईश्वर के ध्यानमें रहताहूं औरजो पेट भर भोजन करूं तोभजन फिर क्या करूंगा परंतु घरमें धनको देख२ करपेटमें खलबली पड़ी किहाय यह धन और रत्न मुझे कैसे मिलें फिर सुरखा का जड़ाऊ खतरदान उसके आगे लायधरा उसने कपड़ों और डाढी में मला और घाड़ी दोघड़ी बैठके चलागया जब मकानमें गयातो अपने चेलों से कहने लगा कि यह भोजन तो तब खारथ हो जब वह संपूर्ण माल मेरे घर में आजही रातको आजावे यहांउसशाहूने अपने नौकरों से कहदियाथा कि सम्पूर्ण पदार्थ जो जहां हैं उसे उसीठौर पड़ा रहनेदो और तुमसबके सबलड़नेकी तैयारी कियेबैठे रहोऔरकोतवालकोभी समाचार दियाकि आजकी रातकोडांका आनेवाला हैसोतुम अपने लोगोंकोसाथलेके किसी ठौरसमीपही में रहोऔर इस मकानमें जब हल्लागुल्लाहो उसीसमयतुमआनके पहुंचजाइयो निदान कोतवाल नेसौ सिपाही उसमकान केदायेंबायें लगारक्खे जब पहर रात बीतीतो वह साधू और उसके साथी चोरोंकाभेष बनायके साहूकारशाह की हवेलीमें आयघसेऔरसबमाल उठाय २ के बांधने लगे और वह सुरखा का मोर उसछलीने भिजहाथमेंले लिया निदान जब बांधके चलने लगे तबचारों ओरसे मनुष्योंनेकूदके उनकी मुशकें बांध लीं इतने में कोतवाल भी अपनी फौज लेकर आनपहुंचा साहूकारशाहने वेसब चोर कोतवाल कोसौंप दिये और नौकर चाकरों से कहा कि अब निःसन्देह सोवें, जब प्रातःकाल कोतवालउन सबोंको लेके बादशाहके द्वारपै पहुंचा और जबबादशाहसभामें संची और सभासदों समेत बैठा तो कोतवाल ने जाके ग्रीसनवाया बादशाहनेपूछाकि रात को नगर में कोलाहल कहां होता था कोतवाल ने कहा कि महाराज बरजब सौदागर की हवेली में डाकापड़ाथा परंतु यह दासबोलके साथही पहुंचा और सबचोरों को बांध लाया इतने में साहूकारशाह भी आया बादशाह को सीस नायकेबैठगया तब बादशाहने पूछा कि पुत्र रात तुम्हारे मकान में डाका पड़ा था साहूकारशाह ने उत्तर दियाकिहां महाराज परन्तु कोतवाल न होता तो निस्सन्देह लूटा भी जाता और इसके सिवायमारापीटाभी जाता यह सुनके बादशाहने आज्ञादी

कि वे चोर मेरे सन्मुख आवें जब वे सन्मुख बुलाये गये तो बादशाहने कहा कि यह तो हमारे अरजकशाह मालूम होते हैं जब निकट से देखा तो सत्य ही सिद्ध जोड़ी हैं जब उनकी तलाशी लीगई तो सब के पास फांसी और कमन्द थे जब इस सिद्ध की तलाशी लियातो उसकेपासभी बहुतसीफांसी निकलीं औरसुरखा का मोरभी निकलातब बादशाहने आज्ञादी कि इनसबको सूली दीजाय जिसमें फिरकोई ऐसा छलनकरे फिरतो केवल कहने की ही देरथी तुरन्त बधिकोंनेफांसी देदी तब साहजूशाहनेखड़े होके कहा कि महाराज मैं आप की बांदी हुस्नबानू बरजख सौदागर की बेटीहूं उससमय भी इसदासीका कुछ अपराध न था सम्पूर्ण धन मेरे पिताका यहीछली उठायले गया जोआपको निश्चयनहीं तो इसकाघर खोदा जाय यह सुनके बादशाहने हुस्नबानू का बहुत आदरकिया और अपने दांतोंसे अंगुली दबाई फिर उसकाघरजो खोदागया तो सम्पूर्ण धन बरजखसौदागरका उसीछलीके घरनिकला तब हुस्नबानू ने बादशाह से कहाकि यह सम्पूर्ण धनआपही की भेट मैंने किया और मेरेपास बहुत द्रव्यहै सोभी आपकोदिखाऊंगी अबकेवल आपसे यही प्रार्थनाहै कि एकदिन मेरेघरको अपने चरणकमलों की रजसे पवित्र कीजिये बादशाहने कहा कि अच्छामैं आऊंगा फिर हुस्नबानू अपने घर कोगई और अपनेनगर के सजनेके लिये आज्ञादी और सम्पूर्ण सामान बादशाही इकट्ठी की फिर बादशाहके आनेका संदेशा सुनके कितनेएक सिपाहीलेके बादशाहको आगेलेनेगई और लाके मसनदपरबैठाला और दूसरा मोर सुरखाका और कितेकथार रत्नोंसे भरके बादशाहके भेंटकिये बादशाहदेखके प्रसन्न हुये फिर हुस्नबानू ने सातोंचहबच्चेमोहरोंके भरेहुये दिखाये औरहाथ जोड़के बादशाहसे कहाकि आपअपने नौकरों को आज्ञा दीजिये जिसमें यह सम्पूर्ण धनले के बादशाही खजानेमें धरैं तब बादशाहने मंत्रीको आज्ञादी कि यह सम्पूर्णधन बादशाही कोषमेंधरो आज्ञापाके मंत्री बहुतसे नौकरों को साथ लेकेगयातो देखाकि चहबच्चाऊपरतकमोहरोंसेभरे हैं परन्तुज्योंहीं चाहाकि हाथलगावें त्योंहीं सबमायासांप और बिच्छू बनगई मंत्री ने यहसमाचार बादशाहसे कहा बादशाहसुनके बहुत विस्मितहुआ तब तो हुस्नबानू घबड़ाई फिर बादशाह ने हुस्नबानू से कहा कि हे पुत्री यह द्रव्य तेरी भाग्यमें ईश्वरनेदीहै और कोई न पावैगा तू आनन्दसे इसको भोगकर तब हुस्नबानू ने बादशाहसे कहा कि मैं

चाहतीहूं कि इसको ईश्वरकी राहमेंलगाऊं बादशाहने कहा तू मालिकहै जो चाहे सोकरे फिर समझाबुझाके बादशाहतो अपने घरकोगये और हुस्नबानूने एकमुसाफिरखाना बड़ा भारी बनवाया और नौकर नियतकरदिये कि जोकोई पथिकआवे उसका आदर होय भोजनकरे जब जाने लगे तो उसको हुस्नबानू के पास लेजावे और उसको कुछद्रव्यदेके बिदाकरे इसदानसनमानसे उस कायश देशदेशऔरनगर नगरमें फैलाकिएक यमनशहरमें एकलड़कीऐसीहै कि न तो कभी ऐसीदेखीहै और न कभी सुनीहै और इतनीद्रव्य उसकेपासहै कि जोकोई उसके नगरमें जाताहै उसके साथ ऐसी भलाई करतीहैकिउसकोरुपया और मोहरोंसेनिहाल करदेतीहै और उसका नाम इसदान और सनमानसे इसदृष्टिमें सूर्य्य और चन्द्रमासेभी अधिकप्रकाशितहै निदान यहयशउसका ख्वारजिमके देशमेंपहुंचा वहांकाभी बादशाह बड़ा ऐश्वर्य्यमानथा और उसके एकपुत्र मुनीरशामीनामक चौदह वर्षकाथा दैवयोगसे उसने भी हुस्नबानू की कीर्त्ति सुनी वह शाहजादा सुनतेही उसके बिरह में फंसा औरएक चित्रकार को बुलाय के कहाकिमैंतुझेइतनारुपया दूंगातू शाहाबादमेंजाके जैसे बने तैसे हुस्नबानूका चित्र खींचलेआ वह चित्रकार उसकी आज्ञानुसार कितने एक दिनों में शाहाबाद में जापहुंचा वहांतो हुस्नबानूके नौकरइसी कामकेलियेनियतथेकि जोकोई पथिकविदेशी उसके नगरमें आवे उसकोवे लोग अपने २ घरलेजाते और बड़े आदरभावसे उसकी सेवाकरते और जबवह चलनेकोहोता तो उसेबिदाकरनेके समय हुस्नबानू के पासलेजाते तबवह उसका हाल पूछकेउसको जैसा उचितजानती वैसी द्रव्यदे के बिदाकरती निदानउसकोभी हुस्नबानूके नौकर अपने मकानपर लेगये और उसका बड़ा आदरकिया और सबेरे हुस्नबानू के पास लेगये उसनेअपनी चिलमनके पासबुलाया और उसकाहाल पूछा तो उसने कहाकि मेरी अब यह इच्छा है कि अपनी आयुर्बल के शेषदिन यहीं आपकी शरण मेंपारकरूं तबहुस्नबानूने पूछाकि तुझमें क्यागुणहै उसनेकहाकिमैं ऐसाचित्रकारहूंकि बिनदेखेचित्र खींचता हूं हुस्नबानूनेउसको चाकररखलिया थोड़ेदिनपीछे हुस्नबानूके मनमें आईकिमैं अपनाचित्रखिचाऊं और उसके झूठसांचकी परीक्षाभी लूं तोहुस्नबानूने उसचित्रकारको बुलायके कहाकिमेरा चित्रखींचदे तबउसने कहाकि आपकोठेपरसे पानीमें झांकेंतोमैं आपकास्वरूप पानीमें देखलेऊंफिर आपका चित्रखींचूं यहसुनकेहुस्नबानूने आज्ञा

कोंकि पात्रमें पानी भरके दीवारके नीचे धरा जावे निदान पानी धर दिया गया हुस्नबानूने ऊपरसे जलमें झांका तो उसने देखके उसका चित्र अपने घर में आके दो चित्र खींचे उनमेंसे जो अच्छा चित्र था सो तो अपने पास रक्खा और जो मध्यम था सो हुस्नबानूको दिया उसने उसीको बड़ी प्रसन्नतासे ले लिया और उसको बहुत सा इनाम दिया फिर वह चित्रकार वहांसे बिदा होकर चला और थोड़े दिनोंमें मुनीरशामीके पास आया और वह चित्र दिया और पारतोषिकका आशावान हुआ मुनीरशामी उसके देखतेही मूर्छित होगया और जब चेत हुआ तब ठंढी स्वाससे हाय मारने लगा और एक संग यही मनमें ठहराई कि निकल चलो निदान बिना मातापिताकी आज्ञाके आधी रातको योगीका भेष करके शाहाबादकी ओरकी राह ली और कितने दिनोंमें दुःख सुख भोगता शाहाबादमें आय पहुंचा परन्तु वहां भोजन न किये तब सन्देशियोंने आयके हुस्नबानूसे कहा कि एक पथिक ऐसा आया है कि न तो कुछ खाता है और न किसी से बोलता है हुस्नबानू ने उसको अपने पास बुलाया और पूछा कि हे पथिक तुमने अन्न क्यों छोड़ा है और यह द्रव्य क्यों नहीं लेते यह कहीं न कहीं तुम्हारे काम आवैगी भला कुछ तो हमारे पाससे लो तब उसने उत्तर दिया कि मैं रुपया पैसाका आकांक्ष नहीं हूं मैं भी खारज़िमके देशका शाहज़ादा हूं तब हुस्नबानूने पूछा जो तू शाहज़ादा है तो योगीका भेष काहेको किया है तब उसने कहा कि मैं केवल तेरा चित्र देखके बावला हुआ हूं सो केवल तेरे साथ व्याह करने की इच्छा है हुस्नबानूने यह सुनके थोड़ी देर सोचके कहा कि हे जवान ऐसे अनुमानको अपने मनमें न बैठने दे क्योंकि जो तू रेत होके वायुके साथ आवै तो भी मेरे एक रोमको न पावैगा और सुख तो कौन देखता है परन्तु जो कोई मेरे सात प्रश्नोंके उत्तर देगा वही मेरा पति होगा तब मुनीरशामीने कहा कि मैं तेरे द्वार पर मरूंगा तब हुस्नबानूने हंसके कहा कि जीव देना तो बहुत सरल है परन्तु मेरा मिलना बहुत कठिन है फिर मुनीरशामीने पूछा कि वह प्रश्न कौन २ हैं भला मैं सुनूं तो तब हुस्नबानूने कहा कि पहला प्रश्न तो यह है कि (एकबेर तो देखा है पर दूसरी बेर देखनेकी इच्छा है) यह सुनके बादशाहज़ादेने पूछा कि वह कहां है और उसका क्या नाम है और यह कहावत कबसे प्रसिद्ध है यह सुन हुस्नबानू हंसके बोली कि यह तुमने खूब कही जो मैं ही जानती होती तो तुमसे क्यों पूछती यह सुनके मुनीरशामीने गर्दन नीची करली और उठकर चल दिया तब हुस्नबानूने कहा कि हे प्यारे इसमें यही तो कठिनता है इससे उचित है कि तू यह बिचा-

रमनमेंसेउठादेऔर जहांमनमानेतहांजातबउसनेकहातेरेनगरका रहनाऔरघर२कीगलियोंमें फिरकेमरजाना यहीशुभहै यहसुनकर क़ुस्रबानूनेकहाकि हमऐसेमदपको अपनेनगरमेंनहीं रहनेदेतेइससे तुझे उचितहै कि तूचलाजा नहींतो परबस उपहास्यके साथ निकाला जायगा शाहज़ादा इसबातके सुन्ने से निपट निराश होके एकवर्षकी अवधि बदके चलातो क़ुस्रबानूने देखाकियह अपनीजान यहां खोचलाहै तब उसको कुछ रुपये राहके खर्च को दिये और उसका नाम पूछा तोउसने कहा कि मेरा नाम मुनीरशामी है इतना कहके रोताहुवा एक जंगलकी ओर कोचला और कभीहंसे औकभी रोवे इसी प्रकार कितने एक बादशाह और मंत्रियोंकेपुत्र उसके घर आये और प्रश्नसुन २ कितनेही तोभाग गये औरकितने ही मरमिटे परकिसीने उसके प्रश्नका उत्तरनदिया निदानमुनीरशामी क़ुस्रबानू का चित्तो अपनीपगलमें दाबेजंगल जंगल बगुला की भांति उड़ा२ फिरे परन्तुउसके मतलबका कहीं खोज न मिले निदान इसी प्रकार फिरते २ एक जंगलमें पहुंचा और एकवृक्षके नीचे बैठके रोनेलगा दैव योगसे उस जंगलमें उसदिन हातिमभी अहेरके लिये आयाथाजब उसनेरोनेकाबोलसुनातब अपनेनौकरों से कहनेलगाकि देखोतो इसजंगलमेंकौन ऐसा दुखित है जोइस प्रकार फूट२ केरोरहाहै नौकरोंनेउसको देखकरहातिमसेजाकर कहाकि महाराज एक चन्द्रमुख युवापुरुष योगीका भेषकिये एक वृक्षकेनीचे रोरहाहैऔर नतोवह किसीसे बोलताहै और नकिसी को ओर आंख खोलके देखता है हातिम यह बातसुन के उसकी ओरचला और जायके उससे दूरपर एक वृक्ष के नीचे खड़ा देखा कियाकिवहरोरोकेअपनाजीखोताहै हातिम देखकेबहुतअधीरहुवा और आंखोंमें आंसूभरआये निदान अपने घोड़े से उत्तर के उसके सिरहाने जाके खड़ा होरहा औरकहने लगाकि हे ईश्वर इस पै ऐसीकौन आपदा पड़ीहै जिससेऐसा दुखी होके अपनाजीवखोता है थोड़ीदेर सिरहानेखड़ेहोकर उसकीदशादेखा कियाफिरहातिम ने पूछाकिहे जवान ऐसी तेरेऊपर कौनआपदा आनपड़ीहैजिससे तेरी यह दशाहुईहै जबउसने आंखखोल केदेखातो एक युवा पुरुष अत्यन्त सुन्दर बादशाहों किसी पोशाकपहरे सिरहाने की ओर खड़ापूछताहै तोएकसंग ऊपरको सिरउठाके देखा और बोलउठा किहे भ्राता क्याकहूं नतो मुझमें सामर्थ्य कहनेकोहै न लिखनेकी औरकोई ऐसा इष्टमित्र अपनानहींजो मेरा दुखसुनके कुछउसका

यत्नकरे यह सुनके हातिम बोलाकि धीर्य्यधरअकुलामत और मुझसे कहमैंने ईश्वरकी राहमें कमरबांधी है औरयहीनियत करचुकाहूं किमैं सबका काम करता फिरूं इसलिये तूभीकहमैं तेरे भीकाम में यथा सामर्थ्यपरिश्रम करूंगा यदि तुझको धन दौलत कीचाह है तो अभी लेले और जो तुझको किसी शत्रुने सतायाहै तोउसको बतादे याती मारूंगा याआपही मरजाऊंगा और जोकिसी प्यारी की विरहसे दुखीहै और वहबिना सहायताके नहींमिलसकतीतो मैं उसको भीयत्न करकेतुझसे मिला दूंगा और जो तू मेरा शिर चाहता हैतो यहतो यहीं वर्तमानहै जबमुनीरशामीने ऐसी बातें सुनीतो कहाकि हे सत्पुरुष तू धन्यहै ईश्वर तुझको आयुषवान् करे जो मुझसेदीनको ढाढसबधांता है यह कहके वहचित्र अपनी बगलसे निकालके दिया और कहने लगा कि तूही बता मैं इसके विनादेखे कैसे जीऊं हातिम उसचित्र को देख कर चुपके रह गया और कहने लगा किईश्वर चाहता है तो तुझे मिलेगी परन्तु इतनाअधीरनहो संतोषकर ईश्वरकी दयासे किसीको निराशन होनाचाहिये और जहांतक होसकेगावहांतक यथासामर्थ्यतेरेकाम करनेमें ढीलनकरूंगा और जबतक तेरीप्यारी तुझसे नहीं मिलती तबतकतेरा साथभीनछोड़ूंगा ऐसीऐसीबातोंसेउसकाढाढसबंधाय के यमनको लेगया और वहां स्नानकरायके पोशाक पहराई और दोचारदिन नाचरंगमें बिताये तब एकदिन उसको उदास देखके कहनेलगा किहे मित्रमैं तेरेको टालतानहीं किन्तुतेरे मतलबकी यत्नकरताहूं तब बादशाहजादेने कहाकि मेरे कामका कुछआदि अन्तनहींहै इसलियेमैं नहीं चाहताकि तू अपना सुखछोड़के मेरे लिये दुखभोगे और नानाप्रकारके कष्टोंमेंपड़े तब हातिमने उत्तर दियाकि चाहेतू मान चाहेनमान मैंतोजो अपनी जिह्वासे कह-चुकाउसका प्रतिपाल करूंगा फिरहातिमने सबसम्बन्धी और नौ-कर चाकरोंको बुलायके समझायाकि जब तकमैं न आऊं तब तक पथिकोंको मकान और दीनदुखी और नंगेभूखोंको भोजनवस्त्र और दीनोंको राहकेलिये खर्चजैसे मेरेसामने मिलताहै उसीभांतसबका दान सनमानहोता रहै ऐसानहोकि कोई कहे यहां अब हातिम नहींरहता अबकौनदेवे और कौन आदरभाव पथिकोंका करै नि-दानयह कामयथा पूर्वक वैसाही चलाजाय इसभांति सबको सम-झायके आप मुनीरशामीके साथ शाहाबादको चला और कितने एकदिनोंमें वहांजापहुंचा हुस्नबानूके लोगतो इसकामके लियेनि-

यतहीये हातिमको सरायमेंलेगये और भांति२के भोजनऔर रुपयामोहर बहुतसी उसके सन्मुखधरीऔर कहाकि आपकुछभोजन कीजिये जितने रुपया मोहर आपको चाहिये सो लेलीजिये तब हातिमने कहाकि माईमैं धन और भोजनोंका भूखानहीं आया हूं ईश्वरने मुझेभी बहुत द्रव्यदी है और बहुतसे देशोंका स्वामी बनायाहै मेरीतो अभिलाष और हीहै यह बात सुनके नौकरलोग हुस्नबानूके पासगये और कहने लगेकि एक कोई हातिम नामक आपके नगरमें आयाहै और आपके प्रश्नोंका उत्तरदेने कहता है और मुनीरशामीभी उसकेसाथहै हुस्नबानूने सुनतेही उनको बुलवालियाऔर चिलमनके पासबैठके पूछनेलगी कि तुम्हाराक्याहाल है हातिमने कहाकिईश्वरका धन्यवाद करताहूं हे सुन्दरीतू अपने बिरहीकोतो अपनामुखारविन्द दिखलाकि उसकेमनकोसन्तोष हो और अपने जीवनकाफलपावै तबउसने कहाकिमैं अनचीन्हे मनुष्यके सन्मुख नहीं निकलूंगी परन्तु हांजोकोई मेरेसातो प्रश्नोंके उत्तर दे वहीमेरा मुखदेखेगा तबहातिमने कहाकि तुमभी मुझेवचन देवो किजबमैं तुम्हारे प्रश्नोंका उत्तरदेचुकूंगा तो जिसको मेरामन मानेगा उसकोतुम्हेंदेदूंगा उसने यहबातमानली तबहातिमनेकहाकि तुमअपनी जिह्वासे प्रश्नोंको कहोतोसही उसनेकहा कि प्रथम प्रश्न यहहैकि (एकबेरतो देखाहै और दूसरीबेरदेखनेकीहोसहै) इसका उत्तरदे कि वह कौन है और कहांहै और उसने ऐसी कौन वस्तु देखीहै जो फिरदेखनेकी हौसलगीहै यहबता फिर दूसरेकोपूछियो सुनतेही हातिमने कहाकिमैंतो जाताहूं और मुनीरशामीको तुम्हें सौंपताहूं यह मेराभाईहै जबतकमैं न आऊंतबतक इसेअपनेघरमें बड़े आदरभावसे रखियो यहकहके हातिम बिदाहुआ और मुनीरशामी को वहांछोड़के एक ओरको चला ॥

प्रथम कहानी हातिमके जाने और प्रथम प्रश्नका उत्तरदेनेके विषयमें ॥

निदानजब हातिमथोड़ी दूरगया तब कहनेलगाकि अबमैं कहां जाऊं और किससेपूछूं अदेखबातको कैसेजानूं परन्तु मैंनेतो परमेश्वरके भरोसेपै दूसरेकी आपदा अपने शिरधरीहैतो वहीइसको सरलभीकरैगा और मुझमेंतो कुछभी सामर्थ्यनहीहै यहकहआगे बढ़के देखाकि एक भेड़िया एक हिरनी को पकड़के भोजन करनेके बिचारमें है यह देखके हातिम ने ललकार के कहा कि देख ऐ निर्दई चाण्डाल तू क्या करता है यह दीन बच्चेकी माताहै और इसके थनों से दूध बहता है यहसुनके वह भेड़िया डरके चुपखड़ा

छोड़दिया और बोलाकि कदाचित् तू हातिम है जोतू उसके ऐसेसमयसहायक हुआ तब उसनेकहा कितैने कैसेजानाभेड़ियाने उत्तर दियाकि मैंने तेरीधीरता और दयालुताको देखकेपहचानापरंतु यहभी प्रसिद्धहै कितूकिसी जीवको दुःखनहीं देतातो मेरेभोजन छीनलेनेका क्या हेतु है तबहातिमने पूछा किअबतू क्या चाहता है तबउस भेड़ियेने कहाकि मैंतोमांसाहारी जीवहूं जोमांसखाने को मिलेतो भोजनकरूं नहींतो भूखाहीरहूंगा तबहातिमने कहा कितुझे जहांके मांसकी रुचिहो तहांकामांस मेरीदेहमेंसे लेकर भक्षणकर तबभेड़ियेने कहाकि चूतरोंका मांस मैंखाऊंगा क्योंकि उसमेंहड्डी नहींहोतीहै हातिमने सुनतेही तरवारसे अपनाचूतर काटके उसकेआगे डालदिया उसनेपेट भरके भोजनकिया और लज्जाके पूछनेलगा कि हेहातिम तुम्हें ऐसी कौनविपत्ति पड़ीहै जो यमन ऐसे नगरको छोड़इस कठिनबनमें आये हो यह सुनके हातिमने कहाकि मुनीरशामी हुस्नबानू नामकएक चन्द्रमुखीके प्रीति फन्दमेंफंसा है और उसकुटिलने सातप्रश्न कियेहैं और कहती है किजोकोईमेरे सातोंप्रश्नोंके उत्तरदेगा उसीकेसाथ विवाहकरूंगी और उसकेप्रश्नों मेंसेपहला प्रश्नयहहै कि (एकबेर तोदेखाहै और दूसरीबेर देखनेकी मनमेंअभिलाष लगरहीहै) मैंउसके बदलेउन प्रश्नोंके उत्तरदेने परउद्यत हुआहूं परन्तुयह कौनजाने वह कौन साधुरुषहै और कहांरहता है और कौनऐसी अचम्भेकीबातदेखी हैजो उसकोदूसरी बेरदेखनेकी अभिलाष है यहसुनके वह भेड़िया बोलाकि हेजवान मैं बहुधा उसठौर जाताहूं और प्राचीनोंसे भी इसका पता मिलता है कि उसठौर का नाम दश्तहवैदा है जो कोईवहां जायतो सम्पूर्ण दिन उसको यही बोल सुनाईदेगा तब हातिम ने पूछा किवह दश्तहवैदा अर्थात् प्रकट बन कहां है तब उसभेड़ियाने कहाकि यहांसे तूजा और थोड़ीदूर आगेचलकेतुझे दोराह मिलेंगी उसमेंसे बांयेंहाथकी राहको छोड़के दाहनेहाथ कीराह कोचलेजाना ईश्वर चाहेतो उसीजगहमें पहुंच जायगा और अपनेमनोर्थ को पायजायगा तब वह हिरणी उसको आशीर्वाददेती और जय२ कहतीचली और भेड़ियाभी विदाहुआ परंतु दोनोंउसकी वीरताऔर दात्यको प्रशंसाकरतेजातेथेऔर हातिम ने भीअपनीराहली परंतु हातिमदोचारपैगचलाकिमारे चूतरकी पीड़ाके नचलागया तबलाचारहोकर एकवृक्षकेनीचे जाबैठा और कराहनेलगा, उसवृक्षके नीचे एक स्यार की माठिथीवै दोनो स्त्री

यतहीये हातिमको सरायमेंलेगये और भांति२के भोजनऔर रुपयामोहर बहुतसी उसके सन्मुखधरीऔर कहाकि आपकुछभोजन कीजिये जितने रुपया मोहर आपको चाहिये सो लेलीजिये तब हातिमने कहाकि भाईमैं धन और भोजनोंका भूखानहीं आया हूं ईश्वरने मुझेभी बहुत द्रव्यदीहै और बहुतसे देशोंका स्वामीबनायाहै मेरीतो अभिलाष और होहै यह बात सुनके नौकरलोग हुस्नबानूके पासगये और कहने लगेकि एक कोई हातिम नामक आपके नगरमें आयाहै और आपके प्रश्नोंका उत्तरदेने कहता है और मुनीरशामीभी उसकेसाथहै हुस्नबानूने सुनतेही उनको बुलवालियाऔर चिलमनकेपासबैठके पूछनेलगी कि तुम्हाराक्याहाल है हातिमने कहाकिईश्वरका धन्यवाद करताहूं हे सुन्दरीतू अपने विरहीकोतो अपनामुखारविन्द दिखलाकि उसकेमनकोसन्तोष हो और अपने जीवनकाफलपावै तबउसने कहाकिमैं अनचीन्हें मनुष्यके सन्मुख नहीं निकलूंगी परन्तु हांजोकोई मेरेसातों प्रश्नोंके उत्तर दे वहीमेरा मुखदेखेगा तबहातिमने कहाकि तुमभी मुझेवचनदेवो किजबमैं तुम्हारे प्रश्नोंका उत्तरदेचुकूंगा तो जिसको मेरामन मानेगा उसकोतुम्हेंदेदूंगा उसने यहबातमानली तबहातिमनेकहाकि तुमअपनी जिज्ञासे प्रश्नोंको कहोतोसही उसनेकहा क प्रथम प्रश्न यहहैकि (एकबेरतो देखाहै और दूसरीबेरदेखनेकीहौसहै) इसका उत्तरदे कि वह कौन है और कहांहै और उसने ऐसी कौन वस्तु देखीहै जो फिरदेखनेकी हौसलगीहै यहबता फिर दूसरेकोपूछियो सुनतेही हातिमने कहाकिमैंतो जाताहूं और मुनीरशामीको तुम्हें सौंपताहूं यह मेराभाईहै जबतकमैं न आऊंतबतक इसेअपनेघरमें बड़े आदरभावसे रखियो यहकहके हातिम विदाहुआ और मुनीरशामी को वहांछोड़के एक ओरको चला॥

प्रथम कहानी हातिमके जाने और प्रथम प्रश्नका उत्तरदेनेके विषयमें॥

निदानजब हातिमथोड़ी दूरगया तब कहनेलगाकि अबमैं कहां जाऊं और किसेपूछूं अदेखबातको कैसेजानूं परन्तु मैंनेतो परमेश्वरके भरोसेपै दूसरेकी आपदा अपने शिरधरीहैतो वहीइसको सरलभीकरैगा और मुझमेंतो कुछभी सामर्थ्यनहीहै यहकहआगे बढ़के देखाकि एक भेड़िया एक हिरनी को पकड़के भोजन करनेके विचारमें है यह देखके हातिम ने ललकार के कहा कि देख ऐ निर्दई चाण्डाल तू क्या करता है यह दीन बच्चेकी माताहै और इसके थनों से दूध बहता है यहसुनके वह भेड़िया डरके चुपखड़ा

होरहा और बोलाकि कदाचित् तू हातिम है जोतू उसके ऐसेसमय सहायक ऊवा तब उसनेकहा कितैंने कैसेजानाभेड़ियाने उत्तर दियाकि मैंने तेरीधीरता और दयालुताको देखकेपहचानापरंतु यहभी प्रसिद्धहै कितूकिसी जीवको दुःखनहीं देताते मेरेभोजन छीनलेनेका क्या हेतु है तबहातिमने पूछा किअबतू क्या चाहता है तबउस भेड़ियेने कहाकि मैंतामांस्सोहारी जीवहूं जोमांसखाने को मिलेतो भोजनकरूं नहींतो भूखाहीरहूंगा तबहातिमने कहा किमुझे जहांके मांसकी रुचिहो तहांकामांस मेरीदेहमेंसे लेकर भक्षणकर तबभेड़ियेने कहाकि चूतरोंका मांस मैंखाऊंगा क्योंकि उसमेंहड्डी नहींहोतीहै हातिमने सुनतेही तरवारसे अपनाचूतर काट के उसकेआगे डालदिया उसनेपेट भरके भोजनकिया और तृप्तहोके पूछनेलगा किहे हातिम तुम्हें ऐसी कौनविपत्ति पड़ीहै जो यमन ऐसे नगरको छोड़इस कठिनवनमें आये हो यह सुनके हातिमने कहाकि मुनीरशामी ऊसबानू नामकएक चन्द्रमुखीके प्रीति फन्देमेंफंसा है और उसकुटिलने सातप्रश्न कियेहैं और कहती है किजोकोईमेरे सातोप्रश्नोंके उत्तरदेगा उसीकेसाथ विवाहकरूंगी और उसकेप्रश्नों मेंसेपहला प्रश्नयहहै कि (एकबेर तोदेखाहै और दूसरीबेर देखनेकी मनमेंअभिलाष लगरहीहै) मैंउसके बदलेउन प्रश्नोंके उत्तरदेने परउद्यत ऊवाहूं परन्तुयह कौनजाने वह कौन सापुरुषहै और कहांरहता है और कौनऐसी अचम्भेकीबातदेखी हैजो उसकोदूसरी बेरदेखनेकी अभिलाष है यहसुनके वह भेड़िया बोलाकि हेजवान मैं बहुधा उसठौर जाताहूं और प्राचीनोंसे भी इसका पता मिलता है कि उसठौर का नाम दश्तहवैदा है जो कोईवहां जायतो सम्पूर्ण दिन उसको यही बोल सुनाईदेगा तब हातिम ने पूछा किवह दश्तहवैदा अर्थात् प्रकट बन कहां है तब उसभेड़ियाने कहाकि यहांसे तूजा और थोड़ीदूर आगेचलकेतुझे दोराह मिलेंगी उसमेंसे बांयेंहाथकी राहको छोड़के दाहनेहाथ कीराह कोचलेजाना ईश्वर चाहेतो उसीजगहमें पहुंच जायगा और अपनेमनोर्थ को पायजायगा तब वह हिरणी उसको आशीर्वाददेती और जयर कहतीचली और भेड़ियाभी बिदाऊवा परंतु दोनोंउसकी वीरताऔर दातृत्वकी प्रशंसाकरते जातेथेऔर हातिम ने भीअपनीराहली परंतु हातिमदोचारपैगचलाकिमारे चूतरकी पीड़ाके नचलागया तबलाचारहोकर एकवृक्षकेनीचे जाबैठा और कराहनेलगा, उसवृक्षके नीचे एक स्यार की भाठियीवै दोनो स्त्री

पुरुषअपने अहेरको गयेथेजब संध्या समय दोनोंआये तो हातिम कोअपनी भाड़िकेपास पड़ापायातो उसकीस्त्रीनेकहा कि यहमनुष्य कहां आया अबमेरे निकट यहांका वास उचित नहीं क्योंकि स्वजातियोंका संयोगभला बनता है मनुष्य और पशुओंका साथकैसे निबहैगा यह सुनके स्यारबोला कियह हातिम है और चूतर की पीड़ासे विकल है और यह दस्तहवेदा की खबरको जाता है तब उसकीस्त्री ने पूछा कि यह तैने कैसे जाना कि हातिम है स्यारने उत्तर दिया किमैंने अपनेश्राचानों से सुनाथा कि एकदिन हातिम इसवनमें आकरइस वृक्षकेनीचे दुःखसहेगा सोआज वहीदिनआन पहुंचाहै तबउसकी स्त्रीनेपूछा कि तू इसकेकुछ समाचार सुनेबतलातोसही तब वहस्यार कहनेलगा कि यह यमनदेशाधीश्वरनेजब इसजङ्गलमें आनके यह देखाकि एक भेड़िया एकहिरणी को मारे डालताहै तबउसने भेड़िये को अपना मांस देके उसदीन हिरणी को छुड़ाया और अपनेऊपर आपदा उठाई तबउस स्यार की स्त्री नेकहा कि मनुष्योंमें ऐसेदानी शीलवान कहां हैं तबउस स्यारने कहाकितू नियामूर्ख हुईहै ईश्वरने मनुष्य को सृष्टिमें सर्वोपरि अधिकार दियाहै और मनुष्यहीकोसबजन्तुओंमें बुद्धिवान बनायाहै और फिरहातिमसा वीर, दाता, शीलवान, ईश्वरकाभक्त, जिसने अपना मांसदेके दूसरेका जीवबचाया जब उसने हातिम को ऐसीभलाई सुनी तो कहा कि यह ऐसे कष्टके मारे इतनी दूर कैसे जायगा तबउस स्यारने कहाकि परीरूपएकजीवहै जो उसके शीसका गूदा इसके घावपर लगायाजाय तोबातकी बातमें इसकाघाव अच्छा हो जायपरन्तु यहबड़ी कठिनताहै कियह एक ऐसाजीवहै कि जिसकासम्पूर्ण शरीरतोसियार कासाहै और शीसमनुष्य कासाहैऔरबहुत सेमनुष्य उसस्त्रीका भावमानउसके साथ भोगकरते हैं और वह माजिन्दानके बनमेंरहताहै जो कोई उसके पासजाता है और शरबतपिलाता है तोवह मदांधहोके नाचने लगतीहै तब उसस्यारकी स्त्रीने यहसुनके कहाफिर कौनऐसाहै जो उसका शीसकाटके लावे और हातिमको अच्छाकरे तबस्यारने कहाकिजो सातदिन तक नसोवै और नकहींको जायकिन्तु इसीकी सेवामें लगीरहै तो मैं जायकेलेआऊं यहसुनके उसस्यारिनने कहाकि इससेकौनबातभली हैकि जिससेमनुष्यपर पशुभलाई करै निदान वहस्यार वहांसे माजिन्दान के बनकी तरफ को गया और वहां जाके उस जीव को एकवृक्षके नीचेसोता पायातब उसकाशीश काटवहांसे पलटाफिर

अपनीभांति परस्थान पहुंचा और उसकी स्त्री भीउसी प्रकारहा-
तिमकी सेवा करतीथी उसनेउस जीवकी खोपड़ी तोड़के उसका
गूदाहातिमकी चोटमेंलगाया वह घावबातकी बातमेंजैसाकातैसा
होगयातब हातिम उससेकहने लगाकि तैनेपशुहोके मेरेसाथऐसे
भलाईकीहै कि इसका पलटानहीहै परंतुतैने इस जीवको मेरेलि-
येवधकिया मैंईश्वरके आगेक्या उत्तर दूंगातब उसनेकहा कि यह
हत्यामेरे माथेहै तूनि:केवलहै क्योंकिहमभीआपने ईश्वरकोजानते
हैं एआपसमें ऐसीबातें कररहेथे कि इतनेमें हातिम ने कहा कि
अबतू मुझे कोई कामबता तो मैं भी उसको करूं तब स्यारबोला
किहेवीर इसबन में एक प्रकारके जीव सुफतारें होतेहैं सोहमारे
बच्चोंको प्रति रूबत खाजाते हैं और हमारा कुछ बसनहीं चलता
जो तू उनको बधकरै और हमारे बच्चा बचावे तो हम तेरे बिन
मोल चेरेहोजावें तब हातिमने कहा कि वेकहांहैं तुममुझे बतावो
यह सुनके स्यार हातिमको वहां लेगया और उसको बताके आप
किसी झाड़में छिपके बैठगया हातिम उस ठौर को खाली पाके
वहांजाबैठा और जबउनका जोड़ाआया तोहातिमको वहांबैठा
देखके बोलाकि यहमनुष्य कौन है यह कहते हुये आगे बढ़े और
कहनेलगे कियह तेराघर नहीं जोतू मालिकबन बैठाहै इसलिये
जोतूअपना भलाचाहताहै तो अभीचलाजा नहींतो हमतुझे मार
के भोजनकर लेंगे तब हातिमने कहाकि हेमूर्खमैं नतो दु:खदाई
हूंन अहेरियाहूं तुमइतना काहेको डरतेहो जो यहतुम्हारा घर
हैतो आनन्दसे रहोतब वेबोलेकि बातनो बनावे मत मनुष्यकेतो
शीलहीनहीं होताअबतू चलाजा और हमकोछलमततब हातिम
ने कहाकि ईश्वरके लियेजैसा अपनाजीव जानोतैसेही औरकाभी
जानोदेखो तो यहकैसा अन्यायहै कि स्यारके बच्चोंको खाकेअपने
बच्चों को पालतेहो यह सुनके वेबोले कि अब हमने जानी कि तू
स्यारोंकी सहायताको आयाहै अवश्य उनको तो खातेहीहैं और
तुझेभी भोजनकरैंगे तबहातिमने कहाकि अच्छाउसके बच्चोंकेबदले
मुझेखाखो और तुम्हें उसईश्वरकी सौगन्धहै जिसनेसम्पूर्ण सृष्टिके
उत्पन्नकियाहै कि उनके बदलेमें मुझेखावो और उनकोछोड़ो क्यों-
किईश्वर अन्नदाताहै तुम्हें किसी प्रकार से भोजन पहुंचावैगा तब
उननीचोंने नमाना किन्तु हठकरकेकहा किउनकोभी न छोड़ेंगे
औरतुझेभी सजीव नजानेदेंगे तबहातिमने सोचा कि ये चाण्डाल
बड़ेकठोर चित्तहैं किपरमेश्वरकोभी आनिनहींमानते तबहातिमने

क्रोध करके उनदोनोंकी गर्दन पकड़ पृथ्वी पर पटकमारनेके हेतु अपनी कमर से खड्ग निकाली परन्तु उसने सोचाकि अबतकमैंने कोईजीवबधनहीं कियाऔरन किसीको दुःखदियाहै परन्तु इन्होंने ईश्वरकीभी आननहीं मानी इसलिये इनकोकुछ दण्डदेना अवश्य है तब उसने तलवारके कब्जेसे तो उनके तीक्ष्ण दांततोड़े और उसकी बाढ़से उनके नखों को काटा और उनको खोलके ईश्वर से प्रार्थना करने लगाकि हे ईश्वर इन पशुओंकी पीड़ा जातीरहै परमात्मा ने उसकी प्रार्थना सुनीतो उनकी पीड़ा जाती रही तब वे रोय २ के कहने लगे कि हमतो मांसाहारी हैं अब हम अपने भोजन कैसे पावेंगे हातिम ने कहाकि वह ईश्वर ऐसा अन्नदाता है कि सम्पूर्ण सृष्टि को अन्नदेता है तुम्हें भी किसी न किसी भांति भोजन देवेगा इतने में वह स्यार बोला कि अब तुम निश्चिन्त रहो हम जबतक सजीव हैं तब तक जहां से बनेगा तहां से इन्हें भोजन दियाकरेंगे यहसुन हातिम उनसे बिदा हुवा और थोड़ीदूर चला त्योंही उसस्यार की स्त्री ने कहा कि यह कौन शील और मनुष्यत्व है कि हातिम अकेला बनको जाता है और तू उसके साथ नहीं जाता तब स्यार यह बातसुन दौर के हातिम के पास जाके कहने लगा किमैंभी तेरेसाथ हमेशाके बनकोचलूंगा तब हातिम ने कहा कि एकही कामसे मैंतेरा चेरा होरहाहूं अब दूसरा बोझ मेरी गर्दनपर काहेको लादताहै औरमैं वह नहींचाहता कि तुझे अपने साथ लेजाऊं हांजो तू मेरे साथ चलनेही को चहताहैतोइतना-होकर कि मुझे सूधी राहबतादे तब स्यारने कहाकि एकराह से तो बहुत शीघ्र जायगा परन्तु उसमें नाना प्रकार के कष्ट हैं और जिस राहसे बहुत दिनों में पहुंचेगा वह उसकी अपेक्षा सुगम है तब हातिमने कहाकितू मुझे वही राह बता जिससे शीघ्र पहुंचूं ईश्वर उसकोभी सुगमही करदेगातबस्यारने कहाकि यही राहहै जिसेतू खड़ाहै बहुत सीधीहै तब हातिमने उसको बिदाकिया और आप आगे को बढ़ा चलते २ आगे एक चौराहा मिला वहां खड़ा सोच रहाथा कि अबकिससे पूछूं और कौनसी राह को जाऊं औरवह बनकेवल रीछोंकाथा और रीछही वहां का राजा था इतने में सौ दोसौ रीछ घूमते फिरते उस तरफ को आ निकले वेहातिम को देखके बहुत प्रसन्न हुये और उसकोअपने राजा के पास लेगये वहभी देखतेही बहुत प्रसन्न हुवाऔरकहने लगाकि तुम मुझे हातिमसे मालूम होतेहो तब हातिमने कहाकि यहसत्य

है मैं तय का पुत्र हातिम हूं सत्कारानुकूल इस वनमें आनिकला तब रिच्छपति ने कहा कि मैं तुम्हारे आने से बहुत प्रसन्न हुवा और अब मैं अपनी पुत्रीका विवाह तुम्हारे साथ करूंगा क्योंकि इस वनमें कोई मेरा जामाता होने के योग्य नथा यह सुनके हातिम ने अपनी गर्दन नीची करली और कुछ-उत्तर न दिया तब उस रिच्छपतिने कहा कि तुम्हारे चुप रहने का मुझे यही हेतु मालूम होता है कि कदाचित् मैं तुम्हारे ससुर होनेके योग्य नहीं यह सुनके हातिम ने कहा कि हां तुम पशु और मैं मनुष्य मेरा तुम्हारा संयोग कैसे बनेगा तब उसने उत्तर दिया कि हे जवान रतिका सुख मनुष्य और पशु दोनोंको समान है तू इसका कुछ सोच मतकरो और मेरी पुत्री भी तुम्हारे ही समान है इतने में रिच्छपतिने रीछोंको आज्ञा दी कि पुत्री को ब्याह के कपड़े पहरायके और भली भांति संवार के एक स्थानमें लेआवो वे उस लड़की को उसकी आज्ञानुसार एकस्थान में लाये वहां हातिमको भेजा हातिमने जाके देखा तो एक सुन्दरी चम्पक बदनी मृगनयनी चन्द्रमुखी कटि क्षीण यौवन पीन रूप साज सिंगार किये घलु वेस दीर्घवार बैठी है हातिम देख बहुत विस्मित हो फिर सभा में लौट आया और बोला कि तू राजा है और मैं योगी हूं जो मैं इसको अपनी भार्या बनाऊं तो बड़ी ढिठाई है तब रिच्छपतिने कहा कि ऐसे तू बहाना मतकर क्योंकि तूभी तो यमन का अधीश्वर है हातिम यह सुनके चुप होरहा और सोचने लगा कि मैं किस काम को आया हूं और यहां यह काम करके बैठूं तो मुनीरशामी मेरा आसरा देखके मरजायगा तो मैं ईश्वर के आगे क्या उत्तर दूंगा तब रिच्छपतिने कहा कि हे जवान तैंने कुछ उत्तर न दिया जब तक तू मेरी बेटी से विवाह न करैगा तब तक तू किसी भांति छुट्टी न पावैगा और कठिन बन्दि सेवना पड़ैगी हातिम इसको भी सुनके कुछ न बोला तब तो रिच्छेश बहुत क्रोधातुर होके बोला कि इसको उस खोह में लेके बन्दकरो और उसके द्वार पै एक भारी शिला दाबदेवो उन्होंने आज्ञानुसार हातिमको ले जाय गुफामें बन्दकर दिया हातिम उसीमें कई दिनतक बिन अन्नजल पड़ा रहा जब रिच्छ पतिने उसको निकसवाया और अपने सन्मुख बुलाके पूछा तब भी उसने इनकार किया तो फिर उसी खोह में बन्द करादिया उसमें मारे भूख प्यास के अधमरा होके नींदबस हुवा तो क्या देखता है कि एक सुन्दर पुरुष सुखरब बुर्का अर्थात् सियाहुवा वस्त्र जिसको अरबादि देशोंके यमनों कीस्त्री घूंघटकाढ़ने के बदले मुखसे ओढ़ती

हैं छोड़े सिरहाने की ओरखड़ा होकेकहता है कि हे हातिम जब तकतू उसकीबेटीके साथविवाह नकरैगा तबतकतू नछूटैगा और जोविवाह करलेगातो उसीसे तेरा सम्पूर्ण काम बन जायगा और वहीतुझे अपनेपितासे कहके छुड़वाय देगी वहपुरुषतो यहकहके लोप हुआ और प्रातःकाल को राजाने उसकोनिकसवा केअपने सन्मुख बुलवाया औरकहा कि हे जवान अभी भलाहै मेराकहना मान ले तब हातिमनेहार झकमारके उसका कहना मान लिया तब रिच्छपतिने मेवा मगवाके उसकेआगेधरा उसनेभूखके मारेपेट भरके भोजन किये फिर रिच्छेशने अपने सजातीलोगोंको बुलाया और हातिम का विवाह अपनी पुत्रीके साथ कियाऔर उसको एक मकानएकांतमें रहनेको दिया हातिमबड़े आनन्दसे उसीके साथ भोग विलास करता और केवल मेवाही भोजन करता जब मेवा खाते २ उसका मनऊबा तो राजा के पास जाके कहा कि अब मेवाखानेसेतो मनऊब गयाइस लिये अन्नहोयतो भली बातहै तब रीछोंके बादशाहने आज्ञादी कि गांव और शहरोंसे भांति २ के भोजनोंकी सामग्रीऔर बासन और जो जो वस्तु आवश्यकहोंसो लाओ वेआज्ञा पातेही क्षणभरमें सकल पदार्थले आये फिरराजा नेनाना भांति के विंजन बनवायेऔरहातिम नेअपनीभार्य्या संयुक्त तृप्त होकेभोजन किये इसी प्रकार भोजन करते और भोगविलास करते तीन मास व्यतीत हुये एक दिन हातिम ने आनन्द केसमय अपनी स्त्रीसे कहाकि हे प्यारी मैं अपने घरसे कुछ कार्य्य करनेके लिये निकला था यहां तेरे पिता ने मेरा विवाह तेरे साथ कर दिया इसलिये जो तू प्रसन्न होके अपने पिताकी आज्ञानुसारमुझे विदा करदेवे तो जब मैं उस कार्य्य से छुट्टी पाऊं तो फिर तुझसे मिलूंगा यह सुनके वह अपने पिताके पास जाय कहने लगी कि हे पिता वह इस प्रकार कहताहै तब वह बोलाकि बेटी वहतेरा पति है और तू उसकी स्त्रीहै जो तू प्रसन्नहै तो क्या मैं इनकार करता हूं जैसे तेरे मन आवै वैसकर तब उसकी बेटीने कहा कि यह पुरुष सत्यवादी मालूम होताहै इसे निश्चय है कि वह अपनी अवधि न बितावै तब उसरीछने बुलाय के हातिम को बिदा किया और कितेकरीछ उसके साथ भेजे कि अपनीसीवां तक कुशलपूर्वक पहुंचाय आवैं निदान जब हातिम इनदोनोंसे बिदाहुआ तो चलते २ एक ऐसे रेतले मैदान में पहुंचाकि जहां अन्नजलके दर्शन नहीं मिलते थे परंतु एक पुरुष मुखपै बुर्का डाले संध्यासमय दो रोटी

श्रौर एक गिलास पानी का दे जाता था वही रोटी खाता श्रौर वही गिलास पानीका पीता श्रौर निसदिन राहसे ध्यान लगाये चलाजाता था एक दिनएक सर्पभूधराकार सामनेदृष्टि पड़ा परन्तु यह आगेही को बढ़ा चला गया इतने में उसने जो स्वास खींचा तो हातिम ने बहुतेरा अपने को संभाला परंतु न संभल सका निदान उसके पेट में होरहा श्रौर जब उसके उदर में अपने को देखा तो ईश्वरका धन्यवाद किया श्रौर कहाकि यह भली बात हुई जोमेरा दोषी शरीरएक जीवकेरोग लगा नहींतो यहमाटीहीथा ही थी अवसत्यतो यहहै कि जो कोई ईश्वरकी राहमें पांव धरै श्रौर उसका स्मरण करै तो उसको बिगाडता नहीं है उसकी परीक्षा कीजिये उसकोकुछकुछ दुःख देता जाताहैजो परीक्षामेंपूरा उतरा तो निसंदेह अपनी अभिलाष के इच्छके फल खाता है इसी भांति अपनेमनको समझायरहाथा श्रौर अपूर्व पुरुषकीविपत्ति का स्मरण करता श्रौरकहताकि परमेश्वरबड़ा दीनदयालहै उसीभांति मेरेभी कष्ट कोदूरकरैगा निदान तीनदिनतकउसके पेट में फिरा किया श्रौर चारों श्रोर राह खोजा किया राह तो कहीं न मिली परंतु आप उसके पेट की गन्दगी में लिथर गया श्रौर सांप का विष जो उसको नहीं व्यापा उसका कारण यह थाकि चलती बेरउसको स्त्रीनेएक मुहरा उसकी पगड़ीमें बांधदियाथाश्रौर उसमें यहगुण थाकि जिसके पास वह मुहराहोय वह न तो अग्निमेंजले श्रौरन जलमें डूबे श्रौर न उसको विषव्यापै इसीहेतुसे वह उसके पेट में सजीव बनारहा श्रौरउसे उससर्पका विष नहींव्यापाश्रौरवह सर्प अपने मनमें कहैकि मैंने आज कौन ऐसी वस्तु खाई है जो पचती नहीं श्रौर पेट में दौड़तो फिरती है निदान वह सर्प तो अपने पेट के दुःखके मारे अधीर होरहा था श्रौर हातिम उसके पेटमेंक्षण भर भी नहीं थंभता था किंतु चारों श्रोरदौरा२फिरता था श्रौर उसकी आंतोंको अपने पावोंसे कुचिलता था निदान उस सर्प ने जानाकि यहग्रास सब दिनके भोजन निकालेगा इसबातको मनमें ठहरायके उससर्पने भार की तो हातिम निकल परा श्रौर अपने कपड़े उस रेत में खड़े होके सुखाने लगा जब कपड़ा सूख गये तब आगे चला थोड़ीही दूरगया था कि इतनेमें एकतालाव दृष्टिपड़ा हातिमदौड़के उसकेकिनारे परबैठकर अपनेकपड़ाधोनेलगा इतने में एक मछली किनारेपरनिकल आईतोहातिमने देखाकि नीचेका धरतो मछली का श्रौर कमर के ऊपरसे स्त्रीकाशरीर है यह देख

के ईश्वर की माया और उसकी कर्तव्यता को बारम्बार धन्यवाद कर रहा था और उसकी ओर टकटकी लगाये देख रहा था इतने में वह मछली उसका हाथ पकड़के तालाब के भीतर अपने मकान में ले जाके एक सुथरे बिछौने पर बैठाया और आप एक सुन्दर स्त्री का स्वरूप बनके आई और हातिम से रति की इच्छा की तो हातिम ने कहा कि मैं अपना घरबार छोड़कर एक काम करने को निकला हूं और तू मुझे व्रतधारी करके इसी ठौर में रखना चाहती है सो मुझसे यह काम न होगा हां एक बात पर मैं तेरी बात मानूंगा कि जहां से तू मुझे लाई है वहां ही मुझे पहुंचा दे तो जो तू कहै सोई मैं करूं और तेरे मन की अभिलाष पूरूं तब उसने कहा कि तीन दिन उपरांत जहां से मैं तुझे लाई हूं वहां ही पहुंचाऊंगी तब हातिम ने उसकी बात मानी और तीन दिन तक उसके साथ विहार किया जब तीन दिन बीते तब हातिम ने कहा कि हे मछली अब तू भी अपने वचन का प्रति पाल कर यह सुनकर उस मछली ने हातिम का हाथ पकड़ पानी में डुब्बी मारी और जलमार्ग से किनारे लाय खड़ा किया फिर वह मछली बोली कि हे प्यारे तू मुझसे बिलग क्यों होता है तब हातिम ने उत्तर दिया कि मुझे एक काम करने की बड़ी जल्दी है यदि मुझको वह काम न करना होता तो मैं तुमसे काहे को बिलग होता मछली तो यह सुनके अपने भीतर को चली गई और हातिम ने भी कपड़े धोय के अपनी राह पकड़ी और कुछ दिन में चलते२ एक ऐसे पर्वत पर जा पहुंचा कि उसपर भांति२ के वृक्ष मेवा के फले हुये कोसों तक चले गये हैं और सैकड़ों मकान सुन्दर२ बने हुये थे और चारों ओर नहरैं बह रही थीं और फुलवारियां लहलहा रही थीं और सब मकान हवादार थे यह थका मांदा तो था ही वहां जाके सोय रहा इतने में उस मकान का स्वामी आय पहुंचा और देखा कि एक युवा पुरुष दिव्य मूर्ति सोय रहा है वह उसके पास आयके बैठ रहा जब बड़ी देर पीछे हातिम जागा तो उसने एक पुरुष अपने पास देखा तब उठके सलाम किया तो उस मनुष्य ने पूछा कि तू कौन है कहां से आता है और कहां जाने का विचार है और तेरा नाम क्या है तब हातिम ने उत्तर दिया कि मेरा नाम हातिम है यमन से आता हूं और दश्त हवेदा को जाता हूं मेरी भाग्य उदय हुई जिससे इस वन में आपके भी दर्शन हुये तब उसने कहा कि हे जवान तू इस विचार को चित्त से निकाल क्यों वृथा जीव खोता है और मुझे यह खेद होता है कि कोई तेरा इष्ट मित्र भी न था जो तुझे बरजता

हातिमने कहाकि मैंने तो यह आपदा दूसरेकेलिये ओढ़ीहै क्योंकि मुनीरशामी ख्वारजिमका शाहजादा हुस्नबानू बरज़खसौदागर की बेटीके विरहमें दु:खीहै और उसने कहाहै कि जो कोई मेरे सात प्रश्नोंके उत्तर देगा उसीके साथ अपना विवाह करूंगी जब मुनीरशामीमें उत्तरदेनेकी सामर्थ्य न ठहरी तब उसने मेरे पास आके यह समाचार कहे इसलिये मैं उसके बदले उत्तर देने को उद्यतहुआहूं और यहभी मनुष्यको उचितनहीं है कि अपनीबात का प्रतिपाल न करै इसलिये ईश्वरके भरोसेपै निकलाहूं जो करै सो परमेश्वर अबतो घरसे निकलाहूं यह बातसुनके उसने कहा कि मालूमहोताहै कि तू तयकापुत्र हातिम है क्योंकि वर्त्तमानकाल में ऐसा कौन है जो बिरानेलिये इतनी आपदा भोगे अच्छा कुछ सोचकी बात नहीं है ईश्वर सकलकार्य्य सिद्धकरैगा परन्तु एकही सोच मेरेमनमेंहै कि आजतक कोई दश्तहवेदासे फिरानहीं और फिरा भी तो आपमें नहीं रहा निदान कुशल पूर्वक कोई नहीं लौटा इसलिये तू मेरीशिक्षाको मनमेंधरले कि जबतू उसबनमेंपहुंचेगा तोतुझेस्त्रियां अंधेरेमें लेजांयगी तू उनकेसाथ चुपकेचलाजाना कहीं ठहरना मत और बहुतसी मृगनयनी चन्द्रमुखी मनोहरतेरी दृष्टिपड़ैंगी कि जिनके देखतेही तेरेमनका तोता हृदयके पींजरासे निकलजायगा इसलिये तू मनको अडोलराखियो और जैसेही तेराहाथ वे परीजादपकड़ैंगी वैसेही तू दश्तहवेदामें पहुंचजायगा और जोएक अठवारेतक तू उनसे कुछकामको कहेगातो जन्मभर पश्चात्ताप रहेगा येदोनों आपस में ऐसीही बातें करते थे कि इतनेमें एकमनुष्य दोकटोराखीर और दोकटोरापानी लेलेके आया इनदोनोंजनोंने खीरका भोजनकिया और आचमनकरके रात्रीको तोविश्राम किया प्रात:काल कोएक ओरको राहली थोड़ेदिनोंमें एकसुन्दरतालावके ऊपर हातिम जापहुंचात्योंही उसमेंसेएक वारांगणा वस्त्रहीन निकली और हातिमका हाथ पकड़के फिर उसीतालाबमेंचलीगई और ज्योंहीं हातिमका पांवपृथ्वीमें लगा त्योंहींजो आंखखोलीतो आपकोउस स्त्री समेतएक फलेफूले बागमेंदेखा वह नङ्गीस्त्रीतो किसीओरको चलीगई और हातिमउसीमें जहां तहां शोभादेखनेलगा इतनेमें एकवारांगणोंका झुण्डसोरहो श्रृङ्गारकिये एकदूसरेके कन्धापरहाथधरेआया और हातिमको हरएकअपनी२ ओरखींचनेलगी हातिमने नतोकिसीकी ओरदेखा और नकिसीसे बोलाक्योंकि उसपुरुषकी शिक्षाकाअसरथा किऐसानहो किमेरा

मनडिगेतोजादूकेकुआमें ट्याजीकाघातहो निदानवेसब हातिमको
बरबसएक ऐसेमकानमें लेगईं किजो सम्पूर्ण लालहीरा पन्नाआदि
रत्नोंसेजड़ाथा और एकदालानमें एकरत्नजटित सिंहासन बड़ेठाट
से बिछाथा जब हातिम वहांपहुंचा तबवेसब उनचित्रोंमें जो उस
मकानमें लगेथेजामिलीं हातिम देखनेलगा कि हजारों परीउस
मकानकीदीवारसे लटकतीहैं यहदेख हातिमबड़े आश्चर्यमेंथा कि
हेईश्वरयह कौनमायाहै किपहलेवे परीआईं और फिर चित्रकी
भांतिसबकीसब दीवारोंमें जाचिपटीं यहक्याकारणहै इसकाकुछभेद
दिखाईनहीं देतानिदान इसीसोचमें उसतख़्तके पासतोखड़ाहीथा
अपनेमनमें सोचनेलगा कि हे हातिम अबतो तू यहां आयाही है
भलाइस सिंहासनपर तोबैठले ज्योंहीं हातिमने तख़्तपर पांवधरा
त्योंहीं उससे एकशब्दाघात हुआ तो हातिमनेजाना कि मानोतख़्त
टूटगयापरन्तु जबतख़्तकेऊपरसे नीचेकीओर झांकातो उसको अख-
ण्डितदेखा फिर हातिम उसपर बैठगया तबफिर एकशब्दाघातहोने
केउपरान्त एक चन्द्रमुखी उनचित्रोंमेंसे सजीवस्त्रीका स्वरूपधारण
करकेहातिमके पासआई यह देखके हातिम बड़े आश्चर्य में हुआ
किहेभगवान् अभीतोयह चित्रथा और अबयह किसप्रकारसे स्त्री
कास्वरूप धारण करके ऐसे हावभाव कटाक्षसे मेरेपास आई है
उसकोदेखतेही हातिमने अधीरहोके चाहाकि उसकाहाथ पकड़े
और उसका घूंघट खोलके उसके चन्द्रमुखावलोकन से अपने नयन
चकोरों को सुखदेवे परन्तु उसपुरुष की शिक्षाका स्मरणहुआ कि
इसकाहाथ पकड़ातो फेरइस अन्धकारमें किसीभांति बाहरनजा-
ऊंगा इसलिये इसका तमाशाही देखना उचित है देखूं तो यह
मेराहाथ आपसे पकड़ती है और मैं इसे बाहर निकलता हूं अ-
थवानहीं, इसी अभिलाषमें तीनदिन रात उस तख़्तपर बैठारहा
जबसांझहोती तबआपही आपकपूरकी बातीचारों ओरजल जातीं
और चारोंओरसे बाजासुनाई देता और वेही चित्रस्त्रीका स्वरूप
बन २ केनाचतीं औ वह चन्द्रमुखी शृङ्गार किये तख़्तके नीचे खड़ी
होती और तिरछी २ आंखोंसे हातिम को देख मुसकराय और
भांति २ केमेवा हातिमके आगेधरे. हातिमबहुतेराखाय भी परन्तु
मेवाके भोजन से तृप्ति न होये इससे हातिमको बहुतही आश्चर्य
होताथा किमैं इतना भोजन करताहूं परंतु पेट नहीं भरता यह
क्या कारण है इसी भांति तीन दिन और रात वितीत हुये तब
चौथे दिन हातिम ने सोचा कि जो मैं सदा मान यहां रहूं तो

भी न तो इस मेवासे पेट भरेगा और न इससे बाहर निकलूंगा और वहां मुनीरशामी मेरे आसरेमें बैठाहै जो उसको कुछहो-गयातो मैं ईश्वरके आगेक्या उत्तरदूंगा यहसोचके हातिमने उस-का हाथ पकड़ के ज्योंहीं तख़्तके ऊपर खींचा त्योंहीं उस तख़्त के नीचेसे एकबारांगना निकली और हातिमके एकलात ऐसीमारी कि हातिम कहींकाकहीं होरहाजो वहांआंख खोलकेदेखे तोनतो वहांवह घरहै नवेबारांगनाहैं किन्तुएक मैदानऐसा सफाचट्टहैकि जिसका कहीं ओरछोर नहीं दिखाईदेता तबहातिमने जाना कि होयनहोय तोयही दश्तहवैदाहैऔरयहांहीं वहमनुष्यभी होगा जोइसशब्दका उच्चारणकरता है किएकबेर तोदेखाहै और दूसरी बेरदेखनेकी अभिलाषहै उसकोयहां खोजना चाहिये यहसोच के हातिमजहां तहांउसकी खोजमें फिरताथा कि इतनेमेंएक ओरसे उसकेकानमें यहशब्दपड़ा किएक बेरतो देखा है और दूसरी बेर देखनेकी अभिलाष है फिर दिन भरमें तीन२ बेरयह शब्द सात-दिनतक निरन्तर सुनाई दिया आठवें दिन जबयह शब्द हातिम को सुनाई दिया तो उसी ओर को हातिम दौड़ा गया तो क्या देखताहै किएक वृद्धपुरुष रेतमेंबैठा है हातिमने उसके पास जाके सलामकिया तो उसनेप्रति उत्तरके उपरान्तपूछा किहेजवान तू कहांसेआताहै और इसबनमें तेराकौन कामहै तब हातिमनेकहा किमैं इस बातकेपूछने कोघरसे निकलाहूं कितुमने ऐसी कौनवस्तु देखीहै जिसकोफिर देखनेकी अभिलाषहै तबउसने कहा किअच्छा-मैं तुझे यह बताऊंगा यह सुनके हातिम बैठगया जबरात भईतबदो रोटी और दो गिलासपानी केआपही आप आगेआये तबउसनेएक रोटी और एक कटोरा पानी कातो हातिमकोदिया और दूसरा भाग आपलिया जब भोजनकरचुके तब हातिमने पूछा कि अब तू मुझेवहबात बतादे तबवहवृद्ध इसप्रकार कहनेलगा कि एकदिनमैं चित्तबहलानेके लिये फिरता२ एकतालाबके ऊपर आनिकला तो मेरेपहुंचतेही एकस्त्री अत्यन्तशोभायमान वस्त्रहीन मेरेसामने उस तालाब मेंसे निकलकर मेरा हाथ पकड़के उसके भीतर लेगई जब मैंने आंखेंखोलीं तब अपनेको उसस्त्रीसमेत एकबाग में जो अतिही फलाफूला और रमणीकथा देखा इतनेमें वहनंगीस्त्री तो कोजाने कहांकोगई परन्तु चारोंओरसे बारांगनोंके यूथकेयूथ आये और मुझेबरबसलेजायके एकमकानमें जड़ाऊतख़्तपर बैठाला और एक चन्द्रमुखी घूंघटकाढ़े मेरेसामने तख़्तके पास आयखड़ीहुई और मेरे

मनमोतीको सीपतनसे निकाललिया तबमैंने उसका घूंघटखोला तो उसके देखतेही मूर्छित होगया पर थोड़ीदेरमें संभल के मैंने उसको अपनीओर पकड़के खींचातो खींचतेही एकस्त्री और उस तख़्तके नीचे से निकली और मेरे एकलात ऐसीमारी कि मैं इस विकटवनमें आयपड़ा नतो वहमकान न वह मेरा चित्तचोर फेरि दृष्टिपड़ा उसदिनसे मेरायहहालहै कि मैंतो बहुतेराचाहताहूं कि किसीभांति उसको भुलादूं परन्तु मेराचित्ततो मेरेपासहीनहीं है मैं किसको समझाऊं यह कहके एकहायमारी और उसी रेतमें बवंडरे की भांति दौड़नेलगा और यहशब्द उच्चारण करनेलगा कि एकबेर तो देखाहै और दूसरीबेरदेखने की अभिलाष है यहसुनके हातिमने जानाकि यहमनुष्य विरही है तबहातिमने उससे पूछा कि जोतू फिरउस जगहमें पहुंचजाय तो कुछप्रसन्न भी होगा यह सुनके उसने कहाकिहे जवानयहबहुत कठिनहै और निशिकोपृथ्वी पर शीसधरके यहमैं नित्यही यह मंत्र जपा करता हूं (जामिउल मुतफर्रकैन) अर्थात् बिछुरों के मिलाने वाले हे ईश्वर मुझेभी मेरे चित्त चोर से मिला दे परन्तु कुछ इसका भी प्रभाव न देखा तब हातिमने कहा हे दुष्ट तू मेरेसाथ आ मैं तुझे वहां पहुंचाऊं यह सुनके वह विरही हातिम के साथहोलिया तब दोनों ने चलते २ एक वृक्ष के तले जो उस तालाव से थोड़ी दूर था जा पहुंचे तब हातिम ने कहा कि हे मित्र जो तू चाहता है कि मैं सदाकाल अपने चित्तचोर को देखा करूं तो तू उसका हाथ नपकड़ना और उसका घूंघटभीनखोलना वहतेरे सामने सदाहाथ बांधेखड़ीरहे- गी नहींतो इसी विकटवनमें आपड़ेगा और फिर अंतके दिनभी वहां न पहुंचेगा और मैंतो वहां एकसिद्धके आशीर्वाद से पहुंचा था नहींतो मेरीक्यासामर्थ्य थी इसलिये अबतू जा इसकेआगेवह तालाव है निदान वह बूढ़ाहातिमके पतेसे उसतालाबपर पहुंचा उसके पहुंचतेहीएकनंगी स्त्री निकलीऔरउसका हाथपकड़केपानी के भीतरलेगई और हातिम शाहाबादकी ओर सिधारा चलते २ कुछदिनमें उस साधूकेपासआया और दो चारदिन रहके वहांसे चलकर उस मछलीकेपासआया वहां एकमहीनेरहके बिदाहुआ और कुछदिनमें रीछोंकेवनमेंपहुंचा दोमहीने उसरीछकी पुत्रीके पासरहा और वहां से बिदाहोके उनयारोंके पास आया उनको कुशलक्षेम देखकेचलतार शाहाबादमें कुशलपूर्वक पहुंचावहांहुस्न- बानूके नौकर उसको हाथोंहाथ लेगये और हुस्नबानूके पासजाके

हातिमके आनेका संदेशादिया हुस्नबानूने सुनतेही उसको बुलाया और अपनेपर्दाकेपास कुर्सी पै बैठालके उससेपूछनेलगी कि उत्तर लाया तबहातिमनेकहाकि वहएकदृढ़ विरही था और वहएकस्त्री पैजो हुस्नआत अर्थात् अंधकार मेंथी उसपर मोहित था वही उस बनमें बिरहके दुःखसे पुकारता था कि एकबेर तो देखाहै दूसरी बेरदेखनेकी अभिलाषाहै और उसीमें मारा फिरताथा उसकोमैंने उसकेप्यारेसे मिलादिया यहशब्द वहां अबनहीं सुनाई देता यह सुनके हुस्नबानू और उसकीदाई दोनोंहातिमको धन्यर पुकारनेलगीं तब हातिमने कहाकि हेहुस्नबानू अबतू अपना दूसरा प्रश्नबता तब हुस्नबानूने प्रसन्नहोके बड़ी दयालुता से कहा कि हेहातिम अबतू बहुतयका मांदा अनेकभांतिके दुःखभोगता आयाहै इसलिये कुछ दिन सस्तायले तब फिरजाना तब हातिमने कहाकि मुझे आराम जभीहोगा जबमैं तेरेसातों प्रश्नोंके उत्तरदेदूंगा यहकहके सराय में मुनीरशामी के पासआया और सम्पूर्ण वृत्तान्तकहा और नवें दिन हुस्नबानूसे कहाकि अबतू अपनादूसरा प्रश्नबता॥

दूसरा प्रश्न हातिम के जाने और उस पुरुष के लिखे की खबर लाने के विषय में।

हुस्नबानूने कहा कि दूसरा प्रश्न यहहै कि एक मनुष्यने अपने द्वारपर यहलिखके लगायदिया है कि नेकीकर और नदीमेंडाल) इसका भेदनहीं खुलता कि इसलिखनेका क्या हेतुहै और उसने ऐसीकौन भलाई करीहै इसके समाचारलादे यह सुनके हातिम उठ खड़ाहुआ और पूछाकि वहकौनहै और कहांरहता है हुस्नबानूने कहाकिमैंने अपनी धायसेसुनाहै किवह उत्तरको दिशामें रहता है इतना पूछके हातिम ईश्वर के भरोसे पर उठके चलदिया जबकुछ दिनबीते एकविकट भयानक बनमें जापहुंचा तब संध्यासमय एकवृक्षके नीचेचुपका होकेबैठरहा तोवहांसे एक शब्द ऐसा दुःखमय रोनेकेसाथ उसके कानमें पड़ा किजिसके सुनतेही इसकी आंखोंमें आंसूभरआये और मारेदयाके कलेजाटलक उठा और कहनेलगा कियेह बातमनुसाई से दूरहै कि एककोई मनुष्य आपदामें पड़ारोदनकरै और तूउसका बोलभीसुने तबभी उसकी सहायतानकरै यहबात अपने चित्तमें ठहराके जहांसे वह बोलसुनाईदेताथा उसीओरकोचला और थोड़ीदेरमें उसीजगहजा पहुंचा तो क्यादेखताहै कि एकयुवापुरुष अत्यन्त शोभायमान पृथ्वी परबैठा रोरहाहै और हायमार२के यह कहरहाहै कि हेमित्रो

मैंकहांजाऊं और किससेकहूं तुम्हीलेरे दुःखकोदेखो और जोमुझपै बीतती है उसकेप्रकट करनेकीतो मुझमें सामर्थ्य नहीं है तब हातिमने पूछाकि हेजवान तुझपै ऐसीकौन विपत्तिपड़ीहै जो तू ऐसा रोरोके अपनाजीव खोताहै यहसुनके उसनेकहा कि हेपथिक मैं तोसौदागरहूं परयहांसे दशबारहकोसपै एकबड़ा शहरहै जिसमें एक हारसनामक सौदागर रहताहै और उसकीपुत्री अत्यन्तशोभायमानहै मैं एकदिन सौदागरीका मालखिये फिरता२ उसशहरमें भी आ निकला और मारेधूपके हारसके मकानके छायामें बैठगया तो तनमें मैंने उसमकानकी ओर जोदेखा तो एकश्री चन्द्रमुखी मेरीदृष्टिपड़ी मैं उसके देखतेही उसके चन्द्रमुखपै यथाचकोर लोभगया तबमैंने वहांके निवासियोंसे पूछा कि यहमकान किसकाहै उन्होंने कहा कि यह मकान एक हारस नामक बड़ धनाढ्य सौदागरकी बेटीकाहै फिर मैंने उनसेपूछा इसका ब्याह होगयाहै कि कुमारीहीहै यह सुनके उन्होंने उत्तरदिया कि यह अभीतक कुमारी है इसका विवाह इसके पिताके आधीनमें नहीं है क्योंकि वह कुमारी स्वाधीन है और कहतीहै कि जो कोई मेरे तीन प्रश्नोंके उत्तरदेगा उसके साथ विवाह करूंगी यह सुनके मैं उसकी ड्योढ़ी परगया तो द्वारपालकोंने मेरी पहुंच के समाचार भीतरजनाये तब उसनेमुझे बुलाकेकहा कि जोतू अपने बचनका प्रतिपाल करसके तोमैंतुझे अपने प्रश्नसुनाऊं यहसुनके मैंने कहा किबताओ मैंतो तनमनसे उद्यतहूं तब उसनेकहा किजो तू मेरे प्रश्नका उत्तरदेगा तबतो मैंतेरीही होकेरहूंगी नहीं तोतुझे अपनाजाइ्ंगी मैंने यहभीमाना तब उसनेकहा किपहिला प्रश्नतो यहहै कि इसशहरके निकट एक पहाड़का खोहहै आजतक कोई नहींजानता कि इसका आदि और अन्तकहां तकहै इसको थाह लादे और दूसरा प्रश्नयहहै कि इसबनमेंसे यहशब्द सुनाईदेता है कि मैंने वहकाम नकिया जो आजकीरात मेरे कामआता और तीसराप्रश्न यहहै किवह मुहरा जोलाखसांपकेपेटमेंहै सोमुझेलादे यह सुनतेही मेरीसुध बुधजाती रही अबमैंने इसकार्य्यके करनेको इनकारकियातोउसनेमेरा सम्पूर्णधन छीनलिया और मुझे अपने नगरसे निकालदिया मैं हारके इसबनमें आपड़ा, एकतो धनगया दूसरे सबनेनामधरा तीसरेविरहकी गांसीने कलेजेमें छेदकरदिया यहसुनके हातिमने कहा कि धीरजधर और मुझे तू उसशहर में लेचलतो तेराधनभी दिलादूं और तेरेचित्त चोरसेभी तुझेमिलादूं

यहसुनहायमारके उसने कहाकि हेप्यारेसभीतो कुछधनका शोक नहींकिन्तु अपने चित्तचोरके मिलनेहीको मैं अमितद्रव्यसमझताहूं निदानहातिम उसविरहके रोगीकी चिकित्सा करनेशहरमें आया और उसकोसरायमें बैठालके आपउसके द्वारपर गया और कहा किमैं इस स्त्रीके साथ विवाह करने कोआयाहूं द्वारपालोंने यह संदेश भीतर दिया उसने सुनतेही अपनेघरके के पासहातिम को बुलाया और जोसौदागरके पुत्रसेकहाथा सोईहातिमसे भीकहा तबहातिम ने उसकी बातमानी और कहाकितू हारस सौदागर कीबेटीहै जोइस बातको माने किजब मैंतेरे प्रश्नोंके उत्तरदेदूं तबमैं तेरामालिकहूं जिसचाहूं उसेदेदूं यहबातमेरी मानेतबतो मैंइस कामके करनेको कमरबांधू नहींतो अपनीराहलूं उसने उत्तरदिया किमैंने यहबात तनमन से मानीतब हातिम ने उसकेपिता हारस सौदागरकोभी बुलायके यहबातसुनादी उसनेभी इसकोपुष्टकिया तब हातिमने उससेकहा कितू अपनाप्रश्नबता तो सौदागरकी बेटी नेकहाकि पहिला प्रश्न यहहै कि(इसशहरके निकटएक खोह है उसकोइस शहरके सबनिवासी स्त्री और पुरुषजानते हैं तूइसका पतालगादे कियह कितनागहरा है और कितना लम्बा चौड़ा है और इसकेभीतर क्याहै)यहसुनके हातिमवहांसे बिदा हुआ और कितने मनुष्य उसकेसाथ खोहतकआये और उसकोदिखाके फिर लौटगये और हातिमउस खोहमें कूदपड़ा तो एकदिन और एक राततक चलाहीगया इतनेमेंउसको प्रकाशदिखाई दियातो हातिम नेजाना कि बस इसका अन्त होचुका अबयहां से फिरचलूं परन्तु उसनेसोचा किजोकोई मुझसेयहांका कुछहाल पूछेगातो क्याउ-त्तरदूंगा यहसोचके आगेबढ़ातो एकमैदान उसकोदृष्टि पड़ा और एकतालाब बहुतस्वच्छ जलसेभरा देखातो उसतालाब के पासगया और हातिम अपनेपास एकसुराही पानी और थोड़ेबादाम लेता गयाथा जबभूखलगती तो दोचारदाने बादाम के खाकेपानी पीता और रातदिन चलनेसे ध्यानरखता निदान अपनी सुराहीमें पानी भराऔर आगेकोबढ़ातो थोड़ीदूर जानेपैएक दीवारऐसी ऊंचीदृष्टि पड़ी कि जिसको अपनीपगड़ी थांभकेजो देखाचाहै तोभी उसकी चोटीतकदृष्टिनपहुंचै और नपक्षीकिसी भांतिवहां तकउड़सके परन्तु जबआगेबढ़के देखातोउसमेंएक दरवाजादिखाईदिया हातिमउसके भीतरघुस गयातो एकनगर दिखाईदिया जबउसके भीतरगया तो अगणितदेव हातिमके खानेको दौड़े और चाहा कि इसको खावें

इतनेमें उनमेंसे कोईबोला कि इसकोमारो मत यह मनुष्यहै इस-
कामांस बहुत स्वादिष्ट होताहै जोहम इसको खावेंगे और कोई
बादशाहसे यहबात कहदेगातो बादशाह हम सबको मरवाडाले-
गा इसे उचितयही है कि इसको बादशाहके पासलेचलें तबवेकहने
लगेकि ऐसाकौन हमाराशत्रु है जोबादशाह से जाकेकह देगा इ-
सनेकहा कितुम यह क्या कहतेहो हमारेही साथियोंमें से कोई
कहदेगा इसलिये यही उचित है कि तुम इसे मत बोलो यह सु-
नकेवेसब अपने २ घरकोसिधारे हातिमने आगेको पांवबढ़ाया तो
उसकोएक गांव दिखाई दियातो हातिमने जाना कि कदाचित्
इसगांवमें मनुष्यरहतेहैं यहसमझके आगेबढ़ातो उसकोचारोंओर
भेड़ियोंने घेरलिया और खानेकाविचार कियातो उनमेंसे भी एक
नेकहा कि इसको खावोमत किन्तु सभीवही बादशाह के पासले
चलोक्योंकि उसकीबेटी बहुतमांदी है कोजाने इसमनुष्य की चि-
कित्सासे वहअच्छी होजायतब उनमेंसेभी एकनेकहा कि हमतो
सैकड़ों आदमियों कोलेगये और फिरलज्जित भोऊये इसे हमक्यों
लेजांय अबतोयह हमारेदेशमें आहीपहुंचा है कहांजायगा कोई
नकोई इसको बादशाह के पासतक लेही जायगा यह कहके सब
अपनेघरको गये और हातिमआगेको चलातो दूसरेगांवके देवउसे
पकड़के अपनेस्वामीके पासलेगये वहांउसकी स्त्रीकी आंखें दर्दक-
रतथीऔर आठापहर पानीबहताया इसीशोचमें वहशिर झुकाये
बैठाथा इसको देखतेही उसने कहा किइस अपनेबापको क्यों पकड़
लायेहो छोड़दो जहांचाहे तहांजाय हातिने उसको शोचग्रसितजो
देखातो पूछाकि हेदेव तुझेक्या शोचहै तबउसने उत्तर दिया कि
भाई मेरी स्त्रीकी आंखेंदुखती हैंसो इसी शोचमें रातदिन रहता
हूंतब हातिमने कहाकि तूघबड़ा मत मैंतेरी स्त्रीकी आंखें अच्छी
करदूंगा यहबात सुनतेही वह देवउठा और हातिमका हाथप-
कड़के अपने घरमें लेगया और अपनी स्त्री केपास बैठालके कहने
लगाकिहे सत्पुरुष जोयहतेरी चिकित्सा से अच्छीहोगई तो यह
तोतेरी जबतक जीवेगीतबतक चेरीरहेगी परंतुमैंभी यथासामर्थ्य
तेरीसेवा करूंगातबहातिमने कहाकि इसकीआंखें अच्छीकरताहूं
परएक बातपर कि जबतेरी स्त्रीकी आंखें अच्छी होजावेंतोतू मुझे
बादशाहकी सभामेंलेचल और मेरी चिकित्सा की प्रशंसा करै यह
सुनके देवने सुलेमान की आनकी किमैं तुझे बादशाह के सम्मुख
लेचलूंगा और बादशाहसो मिलाऊंगा तबहातिमने अपनीपगड़ी से

सुरहरोखोखपानीमें घिसउसको आंखोंमें लगायातो उसीसायत उसकी आंखोंकीपीर जातीरही उसीभांतिदोतीन बेर लगाया तो उसकी कौआखें धावकीसी फांकेंखुलगईं यहदेखके दैवोंका मालिकबहुत प्रसन्नहुवा दोतीनदिनतो उसको पहुनाईकरीफिर अपने बादशाह के पासलेगया और उससेमिलायके बादशाहसे उसकी प्रशंसा करने लगाकि महाराज यहपुरुष वैद्यकमें अद्वैत है क्योंकिमेरी स्त्री की आंखेंकई सालसेदुखने आईथीं और सैकड़ों प्रकार की औषधैंलगाईं गईं परन्तु अच्छी नहुईं और इसने क्षणमात्र में ज्योंकीत्यों अच्छी करदीं यह सुनके बादशाह फरोकाफ़ने कहा कि हे पथिक मेरेपेटमें पीररहा करतीहै जोतू इसकीकोई यत्नकरै और अच्छा होजाऊं तो जोकुछसेवा मुझसे होसकेगी उससे मैं बाहर नहूंगा तबहातिमने पूछाकि जिससमय आप रसोईखानेकोजाते हैं उससमय कितनेलोग आपकेपास रहतेहैं तबउसने उत्तरदिया किजितनेछोटेबड़े हैं वहसब मेरेसाथ भोजनकरते हैं यहसुनके हातिमने कहा किआज रसोईके समयमैंभी चाहताहूं कि आपकेपास रहूं बादशाहने कहाकि बहुत अच्छा निदानजिस समयरसोई तैयार हुई और बादशाहके सम्मुखथार आया और ज्योंही बादशाहने ग्रास उठाना चाहा त्योंही हातिम ने एक कटोरा भोजन के थार मेंसे उठालिया और उसको ढकदिया और थोड़ी देरमें जोखोलातो सम्पूर्ण भोजन कटोरा में कीड़ेहीकोड़े दृष्टिआये तब बादशाह ने पूछाकि यहक्या कारणहै हातिमने प्रार्थनाकी किमहाराज यह इनदेवों की दृष्टिका प्रभावहै इसलिये आपएकान्तमें बैठके भोजन कियाकरो जिससेइन देवोंकी दृष्टिनपड़े बादशाहने वैसाहीकिया तो उसदिनपीर बहुतथोड़ी हुईफिर धीरे २ पांचचारदिनमें भला चङ्गा होगया बादशाह उसकीइस चतुराई से अत्यन्त प्रसन्न हुवा और अपनेगलेमें लगाके कहाकि मांग जोमांगेगा सोई दूंगा हातिमनेकहा कि आपकेयहां मनुष्यबहुतसे बन्दीहैं मैंयही चाहताहूं कि सब छोड़दिये जांय बादशाह फरोकाफ़ने सुनतेही आज्ञा दीकि जितने मनुष्य बन्दीगृहमें हैं छोड़दिये जांय और सबको सिरोपाव पहरा २ और कुछराहका खर्चदेकर बिदाकरदो फिर बादशाहने कहाहे जवानमेरी एकप्रार्थना और है जो मानतोकहूं हातिमने कहाकि आपकी आज्ञामेरे सिरमाथेपरहै तबबादशाहने कहाकि मेरीबेटी बहुतदिनसे रोगग्रसित है जोउसकीभी कोईयत्न करदेतो मुझे मोललेलेवे यहसुनके हातिमने कहाकि बहुतअच्छा मैं सब प्र-

कारसे आपका सेवकहूं चलिये फिर बादशाह फरोकाश उसको अपनीबेटीकेपास लेगया तोहातिमनेदेखाकि बहुतहीदुबलीहोरही है हातिमने कहाकि थोड़ाशरबत लावो बादशाहने शरबतबनवाया हातिमने उसमेंवही मोहराघिसके उसकोपिलाया थोड़ीदेरकेपीछे उसकोदस्त आनेलगे और फिर दिनभर बहुतदस्तआये और सांझ समय उसको कईबार कै हुई तब वह लड़की मूर्छित होगई यह दशादेखके बादशाह बहुतघबराया और हातिमसे कहने लगा कि ऐसानहोकि कहींमरजाय तब हातिमने समझाया कि अधीरन हूजिये यहईश्वरकी दयासेभलीचङ्गीहोजायगी उसदिनतो वह उसी भांति अचेतपड़ी रहीजब सबेराहुवा तबउठी और भोजनकी तृष्णा हुईतो कुछभोजन कियेनिदान पन्द्रह दिनमें उसकामुख चमकने लगा और भलीचङ्गी होगई तब हातिम ने बिदामांगी और कहा किमैं अपने घरसे एक कामके लियेनिकला था इसलिये अब मुझे जानाअवश्य है तबबादशाहने बहुतसे रत्नथारोंमें भरकेउसके आगे धरे हातिम ने कहाकि येमेरे कामकेनहीं हैं और मैंकुछ द्रव्यके लालचसे बाहरनहीं निकलाहूं किन्तु ईश्वर की राह परसब का कामकरता फिरताहूं तबबादशाह ने कहाकि अबतो हमारी प्रसन्नता इसीमेंहै कि तू इसमेंसे कुछलेले यह सुनके हातिमने कहा किमैं अकेला सेइतना बोझकैसे लेजाऊंगा तब बादशाह ने आज्ञादी किकई देवजांय और अपने कन्धों पर धरके इसको पहुंचाय आवें निदानएक मासकेअन्तरमें वेदेवसब द्रव्यसमेत उसखोहाके मुहपर पहुंचायके लौटआये और वहांकई जासूस हारस की बेटीने हातिमके लिये लगारक्खेथे वेदेखतेही डरकेभागे तबहातिमने उनसे पुकारके कहाकि भागोमत मैंवहीहूं जो इसखोहकी खोजकोगया था अबईश्वर की दयासे कुशल पर्वक फिरा हूं जबउन्होंने देखातो हातिमनिकला वेदेखके बहुतहर्षको प्राप्तहुये हातिम वह सम्पूर्ण धनसरायमें उठालाया और हारससौदागरसे मिला और वह सम्पूर्णधन उसीको देदिया वहसौदागर हातिम के पांवोंपर गिरा फिरउसको अपनीछातीमें लगालिया फिर हातिम उसलड़की के पासगया उसने उसखोहका हालपूछा हातिमने ज्योंका त्यों उस लड़कीसे कहसुनाया और कहाकि मैंनेतेरेएकप्रश्नकाउत्तरदिया अबअपना दूसराप्रश्नबता तबउसने कहाकि शुक्रवारकी रातकोएक आवाजआतीहै कि(मैंने वहकाम नकिया जोआजकी रातमेरेकाम आता)इसकी खबरलादे यह सुनके हातिम उठ खड़ा हुवा और

एकबनकी ओर सिधारा और रातदिन उसके खोजमें फिरने लगा निदान चलते २ एक गांवमें पहुंचा तो क्या देखता है कि सब छोटेबड़े उसगांवके रोदन करतेहैं हातिमने पूछा तो एकने कहा कि इसगांव में कोई ऐसी बलाय सात तारीख शुक्रवारके दिन आतीहै कि एक आदमीको खाजातीहै और जोवहां किसीको न पावे तो सम्पूर्ण नगर एकही दिनमें उजाड़करदे सोअब की बारी इस नगरके स्वामी के बेटाकीहै उसीसे सबरोदन करतेहैं यहसुनके हातिम उस नगरके स्वामीके पासगया और उसको धैर्य्य दिया कि तू घबरा मत तेरे पुत्रकेबदले अबकीबेर मैं जाऊंगा यहसुनके वह अधीश्वर बहुत प्रसन्न हुआ और इसकी मनुष्याई को धन्यमाना तब उस अमीरने कहाकि हे जवान उसके आनेके चार दिन बाकी हैं तब हातिमने पूछाकि जो किसी ने उसको देखा हो तो मुझे उसका स्वरूप बतादे बादशाहने उसका चित्र पृथ्वीमें खैंचके दिखादिया तो हातिमने कहाकि इसका नाम हलूका है इसको कोई अस्त्र शस्त्र न बेधेगा और न किसीके मारे मरेगा इसलिये मैं तुमको एकबात बताताहूं जो तुम करो तो जैसे बने तैसे मैं इसको मारूं और तुम्हारे सिरसे यह आपदा टालूं यह सुनके उस अमीरने कहाकि जो तुम कहो सो करूं तब हातिमने कहाकि तुम्हारे नगरमें शीशागर भी कोईहै तब उसने कहाकि बहुत हैं तब हातिम और उस नगरके स्वामी शीशागरोंके पास गये और कहाकि एक आईना दोसौगजका लम्बा और सौगजका चौड़ा बनादो तो मैं इ-उसबलाको मारूं नहीं तो सबको खाजायगी उस नगरके स्वामीने सौघड़ी उतने बड़े आईना बनाने के हथियार और असबाब मंगवा दिया और शीशागरोंने तीनदिनमें वह शीशा बनायके तैयार किया तब हातिमसे कहाकि वह आईना तैयार है फिर हातिमने कहा कि इसगांवके छोटेबड़े उसको उठाके उसठौरपै धरो कि जहां वह आता है निदान हातिमकी आज्ञानुसार उसी ठौरपै खड़ा कर दिया तब हातिमने कहाकि अब एकचादर इतनी बड़ीलावो जिसमें यह ढकजाय उन्होंने उतनीहीबड़ी एकचादरभी लायदी और उस आईनेको ढांपदिया तब हातिमने कहाकि अबतुम सबलोग आनन्दसे जाकेरहो और जो किसीको भी तमाशा देखनेको चाहे तो मेरे साथरहे यहसुनके कोईनबोला परन्तु वही लड़का जिसकी उसदिन बारीथी कहनेलगा कि मैं तुम्हारे साथ रहूंगा तब उसके पिताने कहा कि हे पुत्र तेरेही लिये तो इतनी द्रव्य खर्च की गई और तूही यहां रहताहै और जानबूझके अपनेको मृत्युके मुखमें

डालताहै तब उसनेकहा किहेपिता तुमतो मुझे पहिलेही उसके भोजन केलिये ठहराय चुकेथे अब क्या कहतेहो मैं इसीमें प्रसन्न हूं देखो यह मरदेखोदीन आपको जान बूझके अग्निमें डालता है और सबोंके बचानेको यत्नकरताहै और तुम इसको अकेला छोड़ जातेहो निदान उसने बापकी बात नमानी और हातिम के पास रहा जबदिन व्यतीत हुआ और रातहुई तब उनसबको यथापूर्व-कशब्द सुनाईदिया यह सुनतेही सबकेसब डरगये तिसपीछे हलू-का गयन्दके समान दृष्टिपड़ा जिसके नौमुख और नौहाथ और नौ पांव और प्रत्येकमुखसे ज्वालानिकलता हुआ ऐसा भयानकस्वरूप सन्मुख चला आतादेखपड़ा जो नगर निवासी कोसदोकोससे देख रहे थे वे डरके भागगये जब हातिम ने देखाकि अब हलूका आ-न पहुंचा है तो उस आईना परसे चादर खेंच ली और उसको खोलदिया जबहलूकाने अपनी सूरत उस आईनामें देखी तोमारे क्रोधकेऐसी श्वासखींची और तड़पाकि सम्पूर्ण पृथ्वी उसगांव और जंगलकी दलक उठी और वहांके निवासियोंको मूर्छाआगईफिर उसने ऐसी श्वासखींची किआपही आप उसका पेटफटगया और मरतीबेर फिरवैसाही भयानक शब्दाघात किया कि जिसके सुन्ने से सबके सब मूर्छा में मृतक समान होगये जब चेत हुआ तो क्या देखतेहैं किहलूका मरापड़ाहै और उसके पेटके मैलसे सब जंगल बूड़गयाहै और नदीके समान नीलापानी बहताहै तबवह अमीर और उसका पुत्रदोनों हातिमके पावोंपर गिरपड़े और पूछनेलगे कि हेजवान तूउसके हाथसे कैसेबचा और वह किसप्रकार मा-रागया तबहातिमने कहा कि उसकानाम हलूकाहै उसके कोई अस्त्रशस्त्र नहीं बेधता परयही यत्नहै किजब वहकिसी दूसरेको न देखे और अपनीही सूरतदेखे तोवह मारेक्रोधके ऐसा दमखींच-ताहै कि आपही पेट फूल कर मरजाता है यह सुनके सबके सब यथासामर्थ्य अपने२ पाससे रुपया मोहर और रत्नलेके हातिम से बड़ी दीनताके साथ विनय करनेलगे किआप इससे कुछ लेली-जिये तोकुछ हमारीभी मनुहारिहोजाय तब हातिमने कहा कि मैंनेकुछ यहकाम रुपयोंके लालचसे नहीं कियाहै मैंतो इसीभांति सबकाकाम परमेश्वरकी राहमें करता फिरताहूं तब उन्होंने पू-छाकि इसतरफको आपका आगमन किसहेतसे हुआ तब हातिम ने कहाकि आजशुक्रवारहै और इसजंगलमें से एक आवाज ऐसी सुनाईदेती है कि(मैंने वह कामनकिया जोआजकी रातमेरेकाम

आता)सोमैंइसबातको शोधनेको घरसे निकलाहूं राहमेंजाते इस तरफभी आनिकला अबअपनी राहलूंगा तबउस रईसनेभी कहा मैंभी बहुतदिनोंसे इसआवाज कोयोंहीं सुनताहूं परयह नमालूम हुआकि यहकिसकी आवाजहै और कहांसे आती है यह सुनके उस दिनतो हातिम वहांहीं रहा जब रातहुई तब वही आवाज सुनाईदी फिर हातिम उसी ओरको चलदिया चलते २ कईदिन केउपरान्त एक टीला दृष्टिपड़ा और मालूमहुआ कि पांचसौ सवार और प्यादेवहां परचलेजाते हैं जबहातिमने निकटसे निरताके जोदेखातो नतोसवारहैं और नप्यादेहैं किन्तु मृतकों कीकबरें दृष्टिआती हैं तब हातिमने शोचाकिये कबरसिद्ध लोगोंकीहैं और होय नहोयतो यहआवाजभी यहांहीं से सुनाईदेती है इसलिये यहांहीं बैठना चाहिये इतने में रातहुई तोवही आवाजफिर सुनाईपड़ी हातिम परमेश्वरके ध्यानमें था जबएक पहररात बीती तबप्रत्येक कबरसे एक एक पुरुष सिद्ध कीसी सूरत निकला और अपना २ बिछौना बिछाकेबैठा इतनेमें एक मनुष्य किसी फूटीसी कबरसे निकला और बहुतमैले कपड़ेमाटीमें लथड़े पहरेहुये रेतमें बैठगया और सबलोग अपनेबिछौनों परबैठेहुये कहवापिया किये नतोउससे कोईबोला और नकिसीनेदेखा और नकिसीने एकभी प्यालाकहवा काउसकोदियातबउसने हायमारकेबड़ेजोरसेपुकारके कहाकि हायमैंने वहकाम नकियाजो आजकीरात मेरेकाम आताहातिमने परमेश्वरका धन्यवाद किया और कहाकिमेरा काम पूराहुआ इतनेमें एकएक यारउन सबकेलिये आपहीआप आया और उनयारोंमें एक २ प्यालाखीरका और एक २ गिलासपानी धरा और एकयार उनसबसे बड़ा अलग धरा तब एकने उनमें से कहाकि आजकीरातको हमारेयहां एकपाहुन आयाहै सो यह यारउसीका भागहै उसकोलावो यहसुनतेही एकउनमेंसे हातिम केपास आया और लेजाके एक मसनद पै बैठाला और वह यार उसकेआगे लाधरातब हातिमने उसपुरुषकी ओरजो देखातोमैले कुचैलेकपड़ा पहनेरेतमेंबैठाहै और एकयारउसकेभी आगेधराहै परन्तुप्यालेमें खीरकी जगहतो थूहरकादूध और पत्थरकेटुकड़ेभरेहैं और पानीके बदलेपीब धराहै हातिमने उसकीओर देखके अपनी आंखेंनीची करलीं फिर भोजनकरने और बार२ उसकीओरदेखनेलगा जबसब भोजन करचुके और सबके आगेसे यारउठगये तब हातिमने उनसेकहा किमुझे आपसेएक प्रार्थनाकरना है जोआप

लोगोंकी आज्ञापाऊं तो कुछविनय करूंतब उन्होंने कहाकिकहो हातिमने कहाकि आपलोग ऐसाभला और स्वादिक भोजनकरतेहैं और ऐसी प्रतिष्ठा केसाथ बैठेहैं और यहदीन रेतमें बैठाहै और खीरकेबदले थूहरकादूध और पत्थरकेटुकड़े और पानीके बदले पीव इसकेथारमें धराहै इसकाक्या कारणहै उन्होंने कहाकिहम कोइसका कुछकारण नहींमालूम तूउसीसे पूछले तबहातिम वहां सेउठके उसकेपास गया और पूछनेलगा किहे मित्र तूनेऐसा कौन पापकियाहै जोऐसा दुःखभोग करता है तबवह आंखोंमें आंसूभर केबोला किहेप्यारेमैं इनसबकासरदारहूं और यूसुफ सौदागरमेरा नामहै एकबेर व्यौपार के लिये शहर खारज़िमको जाताथा और मैंसूमभी ऐसाथाकि नतोआपदेता और नकिसीको देनेदेता और कौड़ीपैसा कोतोकौन चलावै कभीएक दानाभी किसी भिक्षुकको ईश्वरको राहपै नदेताथा और जोमेरे नौकर चाकरोंमेंसे कोई कभीदेदेतातोमैंउसकोभी बरजता और कहताकि क्योंतूअपनाधन खोताहै जबवह कहताकि हमपरमेश्वर की राहमें देतेहैं जिसमें अन्तकेदिन हमारेकाम आवेतबमैं उनकी बात सुनकेहंसता और बहुधा अपने दासोंको इसीकामके लिये दण्डदिया करताथा दैवयोगमेराहमें डांकापड़ातोधनवित्तजो थासोतोसम्पूर्णलूटगया और हमको इसीठौर मारके गाड़ दिया सो और जितने नौकरचाकर और मेरेआधीनथे सोतोअब आनन्दकरते हैं और मैं इस दशामें हूंसोतू वर्तमान देखताहै तबहातिमने पूछाकि भलाअब कोईऐसी यत्नहै जिससे तू इसआपदासे छूटेतब उसनेकहा किहेप्यारे मैंतो इसीलिये चिल्लाया करता हूं परन्तु कोई मेरा दुःख पूछनेको न आयातूआजआयाहै जोतुझसेहोसकेतोतू चीनदेशजा और वहांमेरे मकानकेपास एकदरख़्तकेनीचे बहुतसा धनगड़ाहै और मेरीसन्तान घर२दौर२कौड़ीको मारेफिरतेहैंसोतू उसशहर चीनमेंजाके यूसुफ सौदागरकामकान सौदागरोंकेटोलामें प्रसिद्धहैपूछलेना और मुझे निश्चयहै किजब यहहाल मेरेलड़केसुनेंगेतो तेरेपासआवेंगे तूउस सम्पूर्णद्रव्यकोखोदकेतीनभागले। ईश्वरकीराहपर पुण्यकरदेना और चौथाभाग मेरेलड़केवालोंको देदेनायहसुनके हातिमने कहाकिहे-प्यारे अबमैं तेराकामकरनेको जाताहूं और जोमैंतेराकाम नकरूं तोजानियोकिमैं तयकापुत्रनहींहूं निदान हातिम रातकोतोवहीं रहा और देखाकिया कि वेतोसब सुखचैन करतेहैं और यहदीन उसीभांति रोयाकिया। जबसबेराहुआ तो तबशहीद अर्थात् हतक

तो अपने२ स्थानोंको सिधारे और हातिमने चीनकीराहली चल-ते २ कुछदिनोंमें एकठौरजापहुंचा तो क्यादेखता है कि एकपथि-क एककुयेपर पानीभररहा है तब हातिम उसकेपास गया और चाहाकि इससे डोललेकरपानी पीऊं त्योंहीं उसकुयेंमेंसे एकसांप हाथीकी सूंड़के समान मुखनिकालके उसदीन पथिक को भीतर खैंचलेगया तबहातिमने पुकारके कहाकि हे चाण्डालनिर्दई यहतू क्या करता है वहां इसके लड़केवाले आसरादेखते होंगे कि बाबा परदेशसे कुछखर्चभेजैंगे अथवा आपहीआतेहोंगे और तूनेइसेयहां मूलही से मिटादिया फिरमनमें इसभांति कहनेलगा कि हे हा-तिम तू ऐसाहाल किसीका देखे और फिर उसकी सहायता न करैतो ईश्वरकेआगे क्या उत्तरदेगा और तेरानाम इससृष्टिमें क्या पत्थररहैगा यहसोचके आपकुयेके भीतर कूदपड़ा जबथोड़ीदूरगया और धरतीमें पावपहुंचातो आंखखोलके जोदेखातो नतोवहकुआं है और न पानी है केवलएक लम्बाचौड़ामैदानहै और हरे२वृक्षों से भरालहलहा रहा है और एकमकान बहुत सुन्दर उनवृक्षों के पास चमकता है हातिम यह सोचता कि उस मुसाफिर को वह कहां लेगया उसमकान के पासजा पहुंचा तो क्या देखता है कि उसमकान में ताखें बहुत शोभायमान और बैठ के ठौर २ बने हैं और उसमें एकतख़्त बिल्लौरका बिछाहै उसकेनीचे एकमनुष्यवृक्ष के समान सोरहाहै तबहातिमने सोचाकि यह कौनहै इसकोदेखा चाहिये तो हातिम उसके सीसकी तरफ खड़ा होके देखनेलगा और कहनेलगा कि जबयह उठेगा तो सबहाल इससेपूंछूंगा इतने में वहीसांप उसमुसाफिरको बागमें किसीठौर छोड़के हातिमकी ओर लपका हातिम तो उस पथिकके पकड़ने के कारण क्रोध में भराही था उससांपको पकड़के ऐसाबलकरके दाबा कि मारेदाब के वहसर्पचिल्लानेलगा तो उसका चिल्लाना सुनके वहदेवभी जाग पड़ा और पुकारनेलगा कि हेप्यारे यहक्या करताहै यहतोमेरा सेवक है इसे छोड़दे तब हातिमने कहाकि जबतक यह उसमुसा-फिरको न छोड़ेगा तबतक मैं इसकोन छोड़ूंगा यह सुनके उसदेवने-पुकारा कि यहकोई बलवान हमसे भी अधिकहै तू संभलेरहना अबनिश्चय है कि यहीतेरेपेटमें घुसजायगा और हमारीमाया का भेदखोले यह सुनतेही हातिम चट उसके पेटमें घुसगया तो क्या देखताहै कि सर्पका तोचिन्हभीनहीं है परन्तु एकअंधियारामका-नहै उसमें चारोंओर हातिम मारा२ फिरता था इतनेमें हातिम

को एक आवाज ऐसी सुनाई दी कि हे हातिम इस अंधेरे में जो कुछ तेरे हाथमें आजाय उसे तरवारसे काट और इसमायावी के पेटसे निकल नहीं तो सदामान इसीको अपनाघर जानना क्योंकि जबतक तू उसवस्तुको न तोड़ेगा तबतक इसके बाहर न निकलेगा और उसकेटूटनेपै यह मायाका विस्तार आपसे आप खुलजायगा हातिम ने वैसेही जो कुछ हाथमें लगा उसको चट तलवार से खंडन किया त्योंहीं हातिम को एक सोतानदी समान लहराता दृष्टिपड़ा हातिम उसमें बहनेलगा परन्तु दो तीन डुबकियोंके पीछे जो उसकापाव पृथ्वीमें लगा और आंखखोल के जो देखे तो नतो वह सांपहै न वहमकानहै नवहबाग है और न वहसोताहै किन्तु एकमैदान बहुतबड़ा दृष्टिपड़ा और हजारों आदमी उसमें खड़े हैं जिसमेंसे बहुतेरे तो मरनेके निकट पहुंचे हैं और बहुतसे सूख के कांटाहोरहेहैं और उन्हीमें वहपथिकभी खड़ाहै तबहातिमने उसके पासजाके पूछाकि तुम्हेंयहां कौनलाया है तो उसनेकहा कि मुझे तो एक सांपलाकर छोड़गयाहै और अबनहींमालूम कि कहांगया जबऔरोंसे पूछातो वेभीकहनेलगे कि हमको भी वहीसांपलाया है परयहतो बताइये कि आपक्योंकर आयेहैं तब हातिमने सम्पूर्ण वृत्तान्त उसमायाका कहसुनाया और कहाकि मैं तुम्हारे शत्रुको मारआया अबतुम सब अपने २ घरको जावो यहसुन वह सबके सब हातिमसे कहनेलगे कि हम बन्दीजनोंमेंसे बहुत से तो मारे भूखों प्यासोंकेमरगये और बहुतसे अधमरे होगये हैंआपकेद्वारा ईश्वरने हमसबको इसचाण्डाल के हाथसे छुड़ाया यह कहके वे सब अपने अपनेघर कोगये और हातिम उनसे विदाहोके चीनकी ओरचला थोड़ेदिनोंमें चलते २ एकबड़े शहरकेफाटक पर पहुंचा औरचाहा कि भीतरजाय त्योंहीं द्वारपालोंने हातिम का हाथ पकड़ लिया और कहा कि कहांजाते हो पहले यहां के बादशाह से प्रश्नोत्तर करलो तब कहीं जाना यह सुनके हातिम कहनें लगा कि भाई तुम्हारे नगरकी कैसी रीतिभांतिहै जोपथिकोंको सताते हो और तो सब यथा सामर्थ्य पथिकोंकी सेवाकरतेहैं तब द्वारपालोंने कहा कि भाई यहांके बादशाहके एकबेटीहै उसके सामने पथिकको ले जातेहैं वह उससे कुछ प्रश्नकरती है जब वह उत्तर नहीं देसक्ता तो सबेरेके समय उसको सूलीदेतेहैं इसहेतुसे इस शहरका नाम बेदाद नगर अर्थात् (अनीतिपुरी) पड़गयाहै और राहचलने से बन्दहोगईहै निदान हातिमको भी द्वारपाल बादशाहके पासलेगये

तबबादशाहने पूछाकि तेराक्या नामहै और कहांसे आताहै और कहांजानेका विचारहै हातिमने कहाकि मैंमनुष्यहूं और चीनको जाताहूं और नाम पूछनेसे आपका क्या प्रयोजनहै और कहाकि हे बादशाह सब बादशाह पथिकोंपर दयाकरते हैं जिससे उनका नामइस सृष्टिमें सदा वर्तमान रहै यह सुनके बादशाह रोनेलगा और हातिमसे कहाकि हेजवान पहलेइस शहरकानाम न्यायपुरा था परन्तु थोड़ेदिनोंसे इसहत भाग्य लड़कीके कारण यहां पथिक वधकिये जातेहैं इसीसे इसकानाम अअन्यायपुरा परगयाहै तब हातिमने कहाकि फिरतू उसकोमार क्योंनहीं डालता जिससेतू इसहत्यासे बचेतब बादशाहने कहाकि किसीने अपने लड़कीलड़काको माराभीहै यह सुनके हातिम आंसूभर लाया और कहने लगाकि तेराकुछ बसनहींहै तूपरवसहै ऐसा ईश्वरबड़ादयालु है तुझे इसहत्यासे बचावेगा निदानफिर बादशाह हातिमको भीतरलेगया और लड़कीको सवांरके लेआये और उसके पास बैठारदिया तब हातिमने कहाकि अबतो इसचन्द्रमुखी के समानदूसरा स्वरूपवान नहींहै और वहभी हातिमके स्वरूपको देखके इसकी प्रीतमेंफंसी और अपनीधायको बुलायके कहनेलगी किहेमाता मैंतो आजइस पथिककी प्रीतमेंफसी परन्तु बड़े शोचकी बातहै कि सबेरा होतेही यहभी स्वाभाविक रीतिसे फांसी दिया जायगा यह सुनकें वहधाय बोलीकि बेटीतूबड़ी हतभाग्यहै किहजारों दीनदुःखी तेरेहाथ से मारे गये हैं और उनकी हत्या तेरे माथे है तेरीभाग्य तो ऐसी प्रबलनहीं मालूम होतीपरन्तु यहमालूम होताहै किजो ईश्वरचाहै तोइसीसेतेरा कामनिकल जावे तब हातिमने कहाकि सखा मैंभी तोसुनूं किवह कौनबात है जिसकेलिये येदीन पथिकमारे जातेहैं तबदाईने कहाकि हेजवान जबरात होतीहै तोयह लड़कीबावली होजातीहै और जोमुखमें आताहै सोबकतीहै और मैंभीउससमय इसकेपास नहींहोतीहूं उसदशामें यहउस पथिकसे प्रश्नकरती है जबवह मुसाफिर उत्तर नहीं देतातो उसको आपही मारडालती है अथवा सवेरे के समय उसको सूली दिलादेती है यही इसकी रीतहै यह सुनके हातिमने कहाकि देखिये मुझेभी यहां मृत्युले-आईहै इतनेमें जबरात हुईतो वहदाई भोजनलेके आई और कहने लगी हेपथिकतू भोजनकर तबहातिमने कहाकि मैंतोभोजनतभी करूंगाजब पहले इसका काम करलूंगा और अभी भोजन करना योग्य नहीं है यह भोजन काहेका है किंतु जीवका देना है तब

उस दाईने कहा कि अबमुझे मालूम होता है कितू इसका काम करैगा क्योंकि तूभक्ष्य भोजन करता है इतने में जब रात हुई तब दाई लौंड़ीबांदी और नौकर चाकर सब मकानके बाहरगये और मकान के किवाड़ भलीभांति बन्द करदिये जब पहर रात गईतो वह लड़की बावलोंकी भांति कूदने लगी और निरर्थ बकने लगी और हातिमकी ओर मुहकरके कहनेलगी तुझेअपना जीव प्यारा नथा जो विनाजाने बूझे हमारे पासआया है अच्छा जोतू आया-हीहै तोहमारे प्रश्नोंकेउत्तरदे तबहातिमने कहाकितेरा प्रश्नक्याहै तबउसने कहाकि वहआनाकी बूंदकौनसी है जोसजोवहै हातिम ने कुछदेर शोचनेके उपरान्त कहाकि वह बूंद मनुष्यका वीर्य है फिरथोड़ी देरमेंबोली कि वहमेवा कौनसाहै जोसब मेवोंमें मीठा है हातिमने कहाकि वहमेवा पुत्रहै कि वह सम्पूर्ण फलोंमेंमीठा है फिर तीसरा प्रश्न किया कि वह कौन वस्तु है जो सबकी दृष्टि गोचरमें है और कोई उससे अलगनहीं है यह सुनके हातिम ने कहा कि वहमृत्युहै जोकिसीको नहीछोडती यहसुनके वहलड़की कांपने लगी और कुर्सी से उतर के धरती में लोटने लगी और अचेत होगई, इतने में एक सांप अत्यन्त भयानक हातिम की दृष्टिपड़ा और फनफना के हातिम की ओरचला तब हातिम ने शोचा कि जो इसकोमारूं तो दुःखदाई ठहरताहूं और छोड़दूं तो मुझीको डसजाता है निदानयह शोचके हातिमने वहमुहरा जो रीछकी लड़कीने दियाथा उसको पगड़ीसे खोलकेमुखमें रख उस सांप को हाथमें पकड़लिया और एक बासन में बन्दकर कमर से कटार निकाल के पृथ्वी खोद के उसको गाड़दिया और उस तख़्-पर जा बैठा जब पछिली रात को उस लड़की को चेत हुआ तो घूंघटकाढ़के बोलीकि तू कौनहै जो अनजान इसठौर आनबैठा है तब हातिमने कहाकि हे मूर्ख इतनीही देरमें भूलगई मैं वही हूं जिसको तेरेपिताके नौकर इसठौर पहुंचायगये थे तब उसनेदाई को पुकारा और पूछाकि आजक्याकारण है जो यहपथिकजीताहै उसदाईने उत्तरदिया कि यहईश्वरकी कृपाहै उसनेहमें बचायाहै तुमअपनाहाल कहो कि तुमकैसीहो तबउसने कहाकि आजमेरा बदनबहुतहलका लगताहै नहीं तो सदाबहुतभारी रहाकरता था फिर दाईने हातिमसे पूछाकि तुमनेयहां क्या देखा और कैसेजीते बचे तबहातिमने कहाकि मैं तुझे न बताऊंगा परजब बादशाहइस-कापिता आवेगाउसीसे यहसम्पूर्ण हालकहूंगा जबसवेरा हुआतो

बादशाह आया और पूछनेलगा कि हे मुसाफिर तू कैसे सजीव बचाहै हातिमनेउत्तरदिया कि जब पहररातबाती तबआपकी बेटी बावलीहुई और निरर्थबकनेलगी और मुखमेंफेनभरे मेरीओर को दौड़ी और कहनेलगी तैनेइतनीसामर्थ्य कहांसेपाई जोबिनजानेमेरे घरमेंआया है और जोतू आयाहीहै तो मेरेप्रश्नका उत्तर दे तब मैंनेकहाकि प्रश्नकर यहसुनके उसनेतीन प्रश्नकिये मैंने ईश्वर की दयासे तीनोंके उत्तरदिये तबवह कांपनेलगी और कुर्सी से धरती में अचेतहो लोटनेलगी इतनेमें एकसांप उसकेकूखसे निकलकेमेरी ओर लपका मैंने उसको पकड़के उसीअंगनाई में गाड़दियाहै जो न मानोतो देखलो फिरवह लड़की चेतमेंआई तो लाजकरनेलगी तब बादशाहने पूछाकि हेप्यारे यहक्या था तबहातिमने कहा कि तुम्हारी बेटीपर एकजिन्द आशिक था सो वही सांपबनके आदमी को खाजाताथा अबमैंने ईश्वरकी दयासेमारा आपके मूड़सेबलाय टलीयह सुनके बादशाहबहुत प्रसन्नहुआ और कहाकि मेरायही प्रणथा कि जो कोई इसको इसहत्यासे बचावेगा उसीके साथइस का बिवाहकरूंगा सो अबतुमभी इसबातको मानो और इसकेसाथ बिवाहकरो तब हातिमने कहाकि मैं एकबातपर इसको मानूंगा वहयहहै कि बिवाहके उपरान्त जहांमेराजी चाहैगा तहांलेजाऊंगा बादशाहने कहाकि तू अपनेमनका मालिकहै निदान बादशाहने निज कुलरीति अनुसार उसका बिवाह हातिमके साथ करदिया और हातिम तीनमासतक उसकेसाथ बिहार करतारहा जब वह गर्भिणीहुई तो उससेहातिमने कहा अबमुझेबिदाकर और मैंरहने वाला शहरयमनका हूं और तयमेरेपिताका नाम है जो तेरे पुत्र उत्पन्नहो तो इसीपतेसे भेजना और जो लड़कीहोतो किसीअच्छे सुशीलपुरुषके साथबिवाहकरदेना और जोजीऊंगा तो तुझसेभली भांति आमिलूंगा और तेरापोषण करूंगा इसीभांति की दोचारबातें उससे करके बिदाहुआ और चीनकीओरचला परमेश्वरकीकृपासे थोड़ेदिनोंमें चीनमें आपहुंचा वहांकेनिवासियों से पूछनेलगा कि यहां सौदागरों का टोलाकहांहै किसीने बतादिया तबवहांपूछने लगाकि यहांकोई यूसुफसौदागरकी भी हवेलीहै और उसकेवंश मेंसेभीकोईहै लोगोंने जाकेउनसे कहातो वेदौड़आये और उससे पूछनेलगे तो हातिमनेकहा कि हेलड़को तुम्हारेबापने मुझेभेजाहै और तुम्हें एकसंदेशादिया है इसबात के सुन्तेही सबहंसपड़े और कहनेलगेकि हे पथिकतू बावलाहोगया है उसकोबहुतकालबीता

कि मरगया और इसकोभी यहीहंसीआती है और आश्चर्यहोता है कि उसने तेरेहाथ संदेशा कैसे भेजाहै तब हातिमने कहा कि भाई मैं जानता हूं कि यूसुफ सौदागर की हवेली सौदागरों के टोलामें और एकपता उसने मुझे और भी दिया है जोतुम सुनो तोमैंकहूं सभोंने कहाकि कहोतब हातिमने कहाकि एकमकानमें जहां उसकेसोनेकी जगहथी वहां एकवृक्षके नीचे बहुतसेरत्न और रुपया गड़े हैं उसको खोदो और उसके चार भागकरो उनमें से एकतो तुमलेलो और तीनभाग ईश्वरकी राहपर पुण्यकरदो यह बताके सम्पूर्ण वृत्तान्त आद्योपांति उनसे कहा और कहाकि उस वनमें मैंने यह सबतमाशा देखा है नहीं तो यहां आने का मेरा कोई काम नहींथा उन सबनेकहा कि यहकाम विन बादशाहकी आज्ञाके कोईनहीं करसक्ता निदान उसको सब बादशाह के पास लेगये तब बादशाहने पूछाकिहेपथिक तैंने क्यादेखाहै वहतू सत्य२ कह हातिमने कहाकि महाराज मैंने यूसुफ सौदागर से मुला-कातकीहै और उसनेमेरेहाथसन्देशा भेजाहै यह सुनके बादशाह भी हंसा और कहनेलगा कितेरे शहरमें कोई वैद्यनहीं मिला जो तूयहां फस्तलेनेको आयाहै तूतो भलाचंगा वावलाहै क्योंकि उसको मरेसौवर्ष हुये और तूकहताहै कि मुझसे मुलाक़ात हुईहै अरे मूर्खकहीं मृतक भी किसीसे मिलनेको आतेहैं कोई इसवावलेको नगर के बाहर नहीं निकालता तब हातिमने कहा कि हे नीतिरत दीनबंधु यह ईश्वरकी मायाहै और बुद्धिमान इसको खोजतेहैं और क्या आपनहीं जानते कि अकाल मृतकोंकी गतिनहीं होती और प्रेतयोनि भोग करतेहैं और यह प्रसिद्धहै कि यूसुफसौदागर अत्यन्त सूमथा इससे वहबड़े कष्टको प्राप्तहै जोमेरी बातको मानो तो वहदीन इसकष्टसे निवृत्त होजाय और मैंने भी माना किमैं वावलाहूं परन्तु उसखजानेकी खवर कैसेलाता निदानबादशाह ने बड़ा आश्चर्य किया और हातिमके साथ २ यूसुफ सौदागर के मकानपर आया और उसजगहके खजानेको खुदवाया तो अमित धननिकला बादशाहने उसके चारभाग किये उनमें से एकतो उसके लड़के बालोंको दिया और तीनभाग हातिम को दिये और कहा कि ऐसा सत्पुरुष तूहीहै इसलिये तूही इसको ईश्वर की राहमें पुण्यकर जा हातिमने सम्पूर्ण धन भूखेनंगे दीन दुखी और पथिकों को बांटदिया और बादशाहसे बिदाहोकर शहर आदिखा बादजिसकोअन्याय पुराकहचुकेहैं उसमेंआयपहुंचा और अपनीखो-

से मिला और जो लड़का पैदाहुआथा उसको देखके बहुत प्रसन्न हुआ और उसकानाम सालिमधरा और दोचारदिन रहके वहां से बिदाहो जंगल की राहली थोड़ेदिनों में शहीदोंके पास आय पहुंचा और तीनदिन पोछे जब शुक्रवार दिनआया तो सवक्तक अपनी२ कबरसे निकलके सबकेसब सफेदबिछौनों परबैठे और उ-सीप्रकार सबके आगेभोजन चुनेगये तब उस सौदागरसे मुलाका-तकी तो देखा किसबके समान भोजन उसकेभी आगेहैं तब उससे समाचार पूछे उसनेकहा तेरीहीभलाई और मनुसाई और कृपा लुतासे मुझे भी इनसबके समान भोजन मिलताहै और इनलोगों से याचना करनेसे बचा और उसदशासे छूटा केवल मेरा बिछौना उनके बिछौने के समान नहींहै क्योंकि उन्होंने जीतेजी पोशाकें और बिछौना दिये हैं और मैंने इतनेही दिये निदान यहसमा-चार पूंछ पांछके हातिम उससेबिदाहुआ तो एकबनमें पहुंचा तो देखाकि एकबूढ़ीस्त्री भीख मांगतीहै उसको हातिमने वह अंगूठी जोआपनिजहाथमें दूलमासकी महरियाउतारकेदी तबवह बुढ़िया पुकारके कहनेलगी किआगेदोगयेपीछे परोऐसेका रामरखवाराहै यह सुनके हातिमके दायेंओरसे सातपुरुष हथियार बांधे निकल आये और हातिमके साथ होलिये और वे सातोंचोरउसी बूढ़ी के बेटे थे जबउसने सोनेकी जड़ाऊ अंगूठी देखी तब उनसे कहा कि आगेसोनेकीचिड़िया गईहैनिदान वे सातों उसकेसाथ होलिये और पूर्वपश्चिम की बातेंकरनेलगे और कहनेलगे कि हे जवानहम तेरेसाथ चलकर चाहतेहैं कितेरेद्वारा किसी बादशाह कीनौकरी करें तब हातिमने कहाकि अच्छा मेरेसाथचलो और खानेपीनेका कुछ सन्देह नकरो जब हातिम उनके धोखे में आगया तब पीछे से फांसीडालदी और हाथ पांव बांधके सब असबाब छीन लिया और तलवारोंसे घायलकरके कुवेमें डाल दिया केवल एक पगड़ी जिस में वह रीछ की लड़की वाला जहरमुहरा बंधा था वही लपटी हुई रह गई निदान हातिमने उसी कुवें में दो तीनदिन तक अचेत पड़ारहा जब उसको चेतहुआ तो हातिम ने वह मु-हरा पगड़ीसे खोलके किसीकोनेमें एक पत्थरपर रगड़के अपनेघा-वोंमें जो लगाया त्योंहीं उसका दर्द जातारहा और घावभी अच्छे होगये तबहातिमने कहाकि बड़ेशोचकी बात है उनकायरों ने मेरे साथधोखा किया और जोवे मुझसे ईश्वरको राहपर मांगतेतोमैं उनको सबदेदेता और जोअभी मिलेंतोभी इतना धन देऊंकीजो

तेजो आनन्दकिया करेंइसी सोचमेंथा किइतनेमें हातिमकीआंख लगगई तोक्या स्वप्नमेंदेखता है कि एकपुरुष खड़ापुकारके कहता है कि हेहातिमतू क्यों सोचता है जो ईश्वरने तुझेइस कुआमेंगिराया है तो यहभी कुछ उसकी बुद्धिमानीसे अलगनहीं है औरवह बड़ादयालु है देखइस कुआमें एक बड़ाभारी खजाना है ईश्वरने केवल तेरीही भाग्यमें लिखा था अबतू उठ और यह द्रव्यले तब हातिमने कहाकि मैं अकेला कैसे निकालूं और कहां लेजाऊं तब वह पुरुषबोला किकल्ह दोआदमी यहां आवेंगे और तुझेइस कुंवा से निकालेंगे तू उनकी सहायतासे इस धनको निकाललेना हातिम ने यह सुनके परमेश्वरका धन्यवाद किया निदान इतनेमें सबेरा हुआतो दोआदमी उसकुआपर आये और बोलेकि हेहातिमजो तूमजीवहै तोबोल हातिमने कहाकि अभी ईश्वर की अनुग्रह से जीताहूं तबउन्होंने कहाकि हमारे हाथपकड़के चढ़िआउ हातिम उनकेहाथके सहारेसे बाहरआया और उनसे मिलके कहनेलगा किइस कुंआमें बड़ाभारी कोष है जोतुम निकालोतो हाथलगे तब उन्होंने कहाकि तुमथंभो हमनिकालते हैं यहकहके एकतो भीतर सेदेने लगा और दूसरा बाहर ढेरकरने लगाजब सब निकाल के हातिमके आगेधरा तोआप एक ओरको सिधारे तब हातिम उस मालकेढेरको देखके अपनेजीमें कहने लगाकिजोइससमय वेचोर मेरेपास होतेतो यहसम्पूर्ण धन उनको देदेता जिससेवे फिर दीन दुखियोंको नमारते और आनन्द से रहते यहमनमें ठहराय एक जोड़ा कपड़ा, उनमें से पहर और कुछ रुपया और जवाहिर लेके उनचारों कोढूंढने चला और ईश्वरसे बारम्बार प्रार्थना करे कि हेपरमेश्वर मुझेउस बुढ़ियासे मिलादे, इतनेमें वहबुढ़िया दृष्टिपड़ी किवह्नत फटेहाल भीखमांगतीहै कहतीहैहेदाता राहचलने हारे कुछमेरीभीसुधिलेतेजावो हातिम देखतेही बहुत प्रसन्न होकेउसको मुट्ठी भरके रुपया और मोहरें अपनीजेबमेंसे निकालके दिये और आगेको बढ़ा तो उसबुढ़िया नेफिर पुकारके कहाकि इस बटोही का राम रखवाराहै यहसुनतेही वेही सातोंचोरयथा पूर्वक शस्त्र बांधे और फांसीलिये निकलआये और हातिम से मिलकेबातें करनेलगे तबहातिम उनकोचीन्हके कहनेलगा किभाइयो तुमसेमुझे कुछकहनाहै जोमानोतो कहूं यह सुनके वेकहनेलगे किकहोक्या कहतेहो तबहातिमने कहाकिजो तुम वधिकका कर्म छोड़ देवो और मनुष्योंको नमारो और इसकेलिये सौगन्दखावो तोमैंतुमको

इतना धनदेताहूं किवह तुम्हारी सातपीढ़ी तकनचुके तब उन्होंने कहाकि हमतोकेवल इसपेटहीके लियेयह अपराधकरते हैं और जो इतनाधन पावेंतो काहेको ऐसाकाम करैंगे हमतो आजही सेइसका प्रणकियेदेतेहैं तबहातिमने कहाकि अच्छातुम परमेश्वर कोसाक्षीदेकेकहोतब उन्होंने कहाकि पहलेहमकोधनदिखादो तोहम इसकामको छोड़ेंनहींतो ऐसा नहो किहमसे सौगन्द भी लेलो और फिर धनभी नदो तब हातिम उनका हाथ पकड़ उस कुवें परले गया और वह अमित धन दिखा के कहने लगा कि अबजोकुछ तुमने कहाहै उसकाप्रतिपालकरो वेचोर इतनीसम्पदा देखतेही बहुत प्रसन्नहुये और हाथबांध के कहनेलगे कि अब जो कुछ तुमकहो सोईकरें तबहातिमने कहाकि अबतुम ईश्वरकोसाक्षी देके यह कहोकि ईश्वरसर्व्वव्यापी है और सबकेचित्तका हालजा-नताहै जोहम आजसे किसी को धनकेलालचसे मारैं अथवाचोरी करैंतो ईश्वरकी क्रोधाग्नि में जलजावें हातिमने जब उनसे यह सौगन्दसुनी तबवह सम्पूर्णधन उनको देदिया और आपएकबनकी ओरचलदिया थोड़ीही दूरपहुंचाहोगा कि इतनेमेंएक कुत्ताहां-पताहुवा मुखफैलायेहुये इसकोदृष्टिपड़ा तबहातिमनेजानाकिकदा-चित् इसबनमें कोईसौदागर पड़ाहै और यहकुत्ताहोयनहोय तो उसीकाहो निदानपासजाके वह कुत्ता हातिमने गोदमें लेलिया और उस प्यासेको पानीपिलानेकेलिये सोताढूढ़नेलगा इतनेमें उस को एकगांव दिखाईदिया तबयह उसकी ओरचला वहांकेनिवासी मुसाफिरोंको रोटी और मट्ठा देतेथे जब वहां हातिम पहुंचा तब उसको भी मट्ठा और रोटी दी हातिमने वेरोटी और दही उस कुत्ताकेआगे धरदिया उसकुत्तेने पेटभरके खाया और पानी पिया तबहातिमकहनेलगा कि देखो यह कैसादिव्यकुत्ता है और परमेश्व-रका स्मरणकरके कहताथाकि यहतेरीही कृपाकटाक्ष औरप्रवीणता है कितैंने चौरासीलक्ष योनि उत्पन्नकिया और सबके एकसे अंग और सबएकदूसरेसे विलगहैं और उसकुत्ताके ऊपरहाथफेरनेलगा तो कुछ सींगके समान कठोर वस्तु उसके शिरपर मालूम हुई तो हातिमने भलीभांति निर्णयके जो देखातो एकलोहकी कीलउसके शिरमें दिखाईपड़ी हातिमने चटवहकील उसके मूड़मेंसे निकाल ली उसकीलके निकालतेही वह एकदिव्यस्वरूप पुरुष बनगया तब हातिम बड़ेआश्चर्यमेंहुआ और पूछनेलगा कि हेप्यारे इसका क्या भेदहै कि पहले तू एकपशुकी सूरतथा और इसकीलकेनिकलतेही

मनुष्यहोगया जबउसमनुष्यने देखाकि इसने मेरेसाथ भलाईकी है इसलिये इससे अपनाहालछिपाना भलीबातनहीं है तबवह पुरुष हातिमके चरणोंमेंगिरपड़ा औरकहनेलगाकि हेसत्पुरुषमैंमनुष्यहूं तेरोदयासे फेरमनुष्यहुआ तब हातिम पूछनेलगा कि इसका क्या कारणहै जो कुत्ताबनाथा यहसुनवह जवान इसप्रकार कहनेलगा कि मेराबाप एकबड़ासौदागर था वह बहुतसा व्योपारका माल लेकेचीनकोगया और वहांवहमाल बेचके वहांसे दूसरामालभर खताको लेगया और वहां बड़ालाभहुआ तब मकानपर आय बड़ी धूमधामसे मेराविवाहकिया और कुछकाललगतहुये पिता परमधाम को सिधारे और मैं उसीमालको बेच२ के सुखचैन करतारहा जब वहमालचुका तो कुछमाल खता देशका मोललेके चीनको चला और यहांवह मालवेच और दूसरा मालभर अपनेदेशको राहली इसबीचमें मेरी स्त्री एक हबशीदाससे फसी थी औरयह लोहे की कील एक जादूगर से बनवाराखी थी जब मैं मकान में आया तो एकदिनमैं अचेतसोरहाथा उसनेयह कीलमेरे शिरमेंठोंकदीउसके लगतेही मैं कुत्ताबनगया तो मुझेदुदकारके घरकेबाहर निकाल-दिया मैं कानफटफटाता बाजारमें आयातो बाजारके कुत्ता मुझे अनचीन्हाजानके काटनेकोदौड़े मैं उनकेडरकेमारे इसबनमेंतीन-दिनसे भूखाप्यासा मारा फिरताथा दैवयोग से तू आनमिलातेरी दयासेमैं फिरमनुष्य होगया यहसुनके हातिमने बड़ा शोचकिया और कहनेलगा कि हे प्यारे तेराघर यहांसे किसओर को और कितनीदूरहै और क्यानामहै तबउसने उत्तरदियाकि मेरेनगरका नामसूरत है और तीन दिनकी राह है तब हातिम ने कहा कि हेप्यारे तेरेशहरमें कोई हारस सौदागरभी रहताहै और उसके एकबेटीहै और उसकेतीन प्रश्नहैं उनमेंसे मैं इसबातके सोधने को गयाथा कि मैंनेवह कामन कियाजो आजकीरात मेरेकामआता तबउस जवानने कहाकि मैं जानताहूं और वहतो मेरेही शहर में रहतीहै तबहातिमने कहाकितू उस कीलको अपनेपास रहने देजोतू बदलालिया चाहेतो तूभी उसके मूड़में ठोंकदेना वह कु-तिया बनजायगी येदोनो इसीभांतिकी बातेंआपसमें करतेचले और तीनदिनमें उसशहरमें आपहुंचे वहजवान हातिमको अपनेघरमें लाया और हातिमको बरोठेमें खड़ाकरके आपभीतरगयातो सब लौंड़ीबांदी पांवोंपर गिरपड़ीं और उसकीस्त्री उसीहबशी दासके साथसोतीथी इसने तलवार से उसहबशी को मारा और कील

उसखोंके मूड़में ठोंक दी वह कीलके लगतेही कुतियाहोगई तब उसको रस्सी में बांधके हातिमके पासआया और लेजायके मसनद पर बैठाके कहने लगाकि यह कुतिया वही स्त्री पुंश्चली है जिसने मुझे कुत्ताबनाया था और यह हब्शी मेरा दास है तब हातिमने कहाकि हे प्यारे तैंने इसको क्योंमारा तब उसने कहाकि इसका यही दण्डथा और यह काम मैंने अधिक तो इसलिये कियाकि जिसमें औरोंके आंखेंहोजावें और ऐसाकामनकरैं और जोकरता भी होगा वहभी यह हालदेखके अलग होजागा यह कहके उस मृतकको अपने आंगनमें गाड़दिया और सबलौंडी और दासोंको दान सनमानसे परिपूर्ण करके सबको अधिकार दिया और उस दिन रातभर हातिमको पहुनाई करी और जब सबेरा हुआ तो हातिमउससे बिदाहोकेसरायमेंआया और उस सौदागरसेमिलके कहनेलगाकि कहोक्याकरतेहो प्रसन्नतोहो उसनेकहाकिहे दीन-दयालआपके जीवकी जयमनायरहाहूं और कुछदिनसे अब वह आवाजनहीं सुनाईदेती इसीसे हारस सौदागर की बेटी तुम्हारे आनेका आसरा देखती है तबहातिमने कहाकि कुछसन्देहकीबात नहीं है मैं ईश्वरकी दयासे उसको खोजआयाहूं यहकहके हातिम हारससौदागरकी बेटीके द्वारपरगयातोद्वारपालोंने भीतर जना-या उसलड़कीने सुनतेही हातिमको बुलवायाऔरआप दालानमें परदाके भीतरबैठी और परदाके बाहरहातिमके लिये कुरसी बि-छवादी और फिरअपने प्रश्नका उत्तरपूछनेलगी तबहातिमने ज्यों का त्यों जैसा सुना और जैसादेखाथा और जो जो कामउसने किये सो सब आदिसे अन्ततक कहसुनाया तब उसने कहाकि हे सत्य-वादी पुरुषतूसत्यकहताहै अब वह आवाजभी नहीं सुनाईदेतीऔर अबतूजाऔर माहरूपरीका शाहमुहराला हातिमसुनतेही उठ-खड़ाहुआ और सौदागर बच्चाके पासआकर कहनेलगाकि तू धी-रजधरे बैठारह मैं अब माहरूपरीका शाहमुहरालेने जाताहूं जो ईश्वर उसके इसप्रश्नको भी पूराकरदेताहै तो तुझे तेरी प्यारीसे मिलायेदेताहूं यहकहके उससे बिदाहो एक ओरके बनकी राह ली और कुछ दूर चलके एक वृक्षके नीचे बैठ शोचनेलगा कि अब उत्तमयहीहै कि देवोंसे जो मिलूंतो वे इसका पतादेंगे यह मनमें ठहरायके उसी खोहामें धसाजिसमें प्रथमही गयाथा और चलते२ कुछदिनों में वही मैदान और जङ्गल दृष्टिपड़ा उसको पार करके उस गांवमें गया जिसमें पहलेगयाथा उस गांवके निवासी चारों

मनुष्यहोगया जबउसमनुष्यने देखाकि इसने मेरेसाथ भलाईकी है इसलिये इससे अपनाहालछिपाना भलीबातनहीं है तबवह पुरुष हातिमके चरणोंमेंगिरपड़ा और कहनेलगाकि हेसत्पुरुषमैंमनुष्यहूं तेरोदयासे फिरमनुष्यहुआ तब हातिम पूछनेलगा कि इसका क्या कारणहै जो कुत्ताबनाथा यहसुनवह जवान इसप्रकार कहनेलगा कि मेराबाप एकबड़ासौदागर था वह बहुतसा व्योपारका माल लेकेचीनकोगया और वहांवहमाल बेचके वहांसे दूसरामालभर खताको लेगया और वहां बड़ालाभहुआ तब मकानपर आय बड़ी धूमधामसे मेराविवाहकिया और कुछकालगतहुये पिता परमधाम को सिधारे और मैं उसीमालको बेच२ के सुखचैन करतारहा जब वहमालचुका तो कुछमाल खता देशका मोललेके चीनको चला और वहांवह मालबेच और दूसरा मालभर अपनेदेशकी राहली इसबीचमें मेरी स्त्री एक हबशीदाससे फसी थी और यह लोहे की कील एक जादूगर से बनवाराखी थी जब मैं मकान में आया तो एकदिनमैं अचेतसोरहाथा उसनेयह कीलमेरे शिरमेंठोंकदीउसके लगतेही मैं कुत्ताबनगया तो मुझेदुत्कारके घरकेबाहर निकाल- दिया मैं कानफटफटाता बाजारमें आयातो बाजारके कुत्ता मुझे अनचीन्हाजानके काटनेकोदौड़े मैं उनकेडरकेमारे इसबनमेंतीन- दिनसे भूखाप्यासा मारा फिरताथा दैवयोग से तू आजमिलातेरी दयासेमैं फिरमनुष्य होगया यहसुनके हातिमने बड़ा सोचकिया और कहनेलगा कि हे प्यारे तेराघर यहांसे किसओर को और कितनीदूरहै और क्यानामहै तबउसने उत्तरदियाकि मेरेनगरका नामसूरत है और तीन दिनकी राह है तब हातिम ने कहा कि हेप्यारे तेरेशहरमें कोई हारस सौदागरभी रहताहै और उसके एकबेटीहै और उसकेतीन प्रश्नहैं उनमेंसे मैं इसबातके सोधने को गयाथा कि मैंनेवह काम न कियाजो आजकीरात मेरेकामआता तबउस जवानने कहाकि मैं जानताहूं और वहतो मेरेही शहर में रहतीहै तबहातिमने कहाकितू उस कीलको अपनेपास रहने देजोतू बदलालिया चाहेतो तूभी उसके मूड़में ठोंकदेना वह कु- तिया बनजायगी येदोनो इसीभांतिकी बातेंआपसमें करतेचले और तीनदिनमें उसशहरमें आपहुंचे वहजवान हातिमको अपनेघरमें लाया और हातिमको बरोठेमें खड़ाकरके आपभीतरगयातो सब लौंडीबांदी पांवोंपर गिरपड़ीं और उसकीस्त्री उसीहबशी दासके साथसोतीथी इसने तलवार से उसहबशी को मारा और कील

उसस्त्रीके मूड़में ठोक दी वह कीलके लगतेही कुतियाहोगई तब उसको रस्सी में बांधके हातिमके पासआया और लेजायके मसनद पर बैठाके कहने लगाकि यह कुतिया बड़ी स्त्री पुंश्चली है जिसने मुझे कुत्ताबनाया था और यह हब्शी मेरा दास है तब हातिमने कहाकि हे प्यारे तैंने इसको क्योंमारा तब उसने कहाकि इसका यही दण्डथा और यह काम मैंने अधिक तो इसलिये कियाकि जिसमें औरोंके आंखें होजावें और ऐसाकामनकरैं और जोकरता भी होगा वहभी यह हालदेखके अलग होजागा यह कहके उस मृतकको अपने आंगनमें गाड़दिया और सबलौंड़ी और दासोंको दान सनमानसे परिपूर्ण करके सबको अधिकार दिया और उस दिन रातभर हातिमकी पहुनाई करी और जब सबेरा हुआ तो हातिमउससे बिदाहोकेसरायमेंआया और उस सौदागरसेमिलके कहनेलगाकि कहोक्याकरतेहो प्रसन्नतोहो उसनेकहाकिहे दीन-दयालआपके जीवकी जयमनायरहाहूं और कुछदिनसे अब वह आवाजनहीं सुनाईदेती इसीसे हारस सौदागर की बेटी तुम्हारे आनेका आसरा देखती है तबहातिमने कहाकि कुछसन्देहकीबात नहींहैमैं ईश्वरकी दयासे उसको शोधआयाहूंयहकहके हातिम हारससौदागरकी बेटीके द्वारपरगयातोद्वारपालोंने भीतर जना-या उसलड़कीने सुनतेही हातिमको बुलवायाऔरआप दालानमें परदाके भीतरबैठी और परदाके बाहरहातिमके लिये कुरसी बि-छवादी और फिरअपने प्रश्नका उत्तरपूछनेलगी तबहातिमने ज्यों का त्यों जैसा सुना और जैसादेखाथा और जो जोकामउसने किये सो सब आदिसे अन्ततक कहसुनाया तब उसने कहाकि हे सत्य-वादी पुरुषतूसत्यकहताहै अब वह आवाजभी नहीं सुनाईदेतीऔर अबतूजाऔर माहरूपरीका शाहमुहराला हातिमसुनतेही उठ-खड़ाहुआ और सौदागर बच्चाके पासआकर कहनेलगाकि तू धी-रजधरे बैठारहमैं अबमाहरूपरीका शाहमुहरालेने जाताहूं जो ईश्वर उसके इसप्रश्नको भी पूराकरदेताहै तो तुझेतेरी प्यारीसे मिलायेदेता हूं यहकहके उससे बिदाहो एक ओरके बनकी राह ली और कुछ दूर चलके एक वृक्षके नीचे बैठ सोचनेलगा कि अब उत्तमयहीहै कि देवोंसे जो मिलूंतो वे इसका पतादेंगे यह मनमें ठहरायके उसीखोहामें धसाजिसमें प्रथमही गयाथा और चलते२ कुछदिनों में वही मैदान और जङ्गल दृष्टिपड़ा उसको पार करके उस गांवमें गया जिसमें पहलेगयाथा उस गांवके निवासी चारों

ओरसे धाये और हातिमको चीन्हके बड़े सनमानसे गांवमें लाये और बड़ीप्रतिष्ठासेमसनद पैबैठारा और बड़ेहर्षसेपहुनाई करी और अधिक क्याकहूं उसीभांति प्रत्येक पुरुष अपने २ घरलेगया और हातिमकी पहुनाईकर हातिमको दूसरेनगरमें पहुंचादेताथा अन्त कोबादशाह फरदकाशके मकानपर पहुंचाउसने हातिमको आगे आयकेलिया और एक प्रतिष्ठित आसनपर बड़े सनमानसे बैठारा और बड़े हर्षसे पूछाकि आपके आनेका क्या हेतुहै तब हातिमने कहाकि जो माहरूशाहके हाथमें मुहराहै मैं उसकेलेनेको आया हूं यह सुनके फरदकाशने कहा कि हे जवान उसके हाथमेंसे वह मुहरालेनेको किसकोसामर्थ्य है देवोंकोतो यह सामर्थ्य हैहीनहीं जो वहांजायके कुशल पूर्वक फिरआवैं और तेरीतो भलाकौनबात है और काहेमें गिनती है तब हातिमने कहाकि कुछ सन्देह की बातनहींहै जिसने मुझे यहांतक पहुंचायाहै वही वहांभी पहुंचा-वेगा परन्तु आपसे एकदेवकी याचनाहै जिससे मुझे राहदिखाता जाय तब फरदकाश बादशाहने कहाकि हे जवान तू इस कामको मतकर तब हातिमने कहाकि यह मेरा काम नहीं है जो अपने प्रणको भंगकरूं यह सुनके बादशाह फरदकाश चुप होरहाफिर हातिम तीनदिनतक वहांरहा और चौथेदिन कहने लगाकि अब मैं रहनहीं सक्ता क्योंकियहांमैं सुखचैनकरूं और वहविरहीमेरा आसरा देखके मरगयातो यह हत्यामेरे माथेपरहुई और यहभी नहोतोमैं ईश्वरके आगेक्या उत्तरदूंगा तब फरदकाश बादशाहने कई देवहातिमके साथकोदिये और कहाकि तुम इनकोमाहरू परी बादशाहकी सीमापरपहुंचा देवो और जबतक यहवहांसेफिर केनआवें तबतकतुमइनकेआसरेमें बैठेरहियो निदानहातिमउससे विदाहो देवोंको साथलेके अपनी राहली और एकमहीनेमें परीरू बादशाहकी सीमापर पहुंचा वहांवे देवकहने लगेकि बस यहांसे उसकी राज्यहै अबहमारी सामर्थ्य नहींहै जो उसके राज्यमेंजांय क्योंकि जोकोई उसकी राज्यमें जाताहै उसको जीवसे मारडालता है निदान हातिम उनसे विदाहोके परीरू बादशाहके राज्यमें घुसा और कुछदिनमें चलते २ एक पहाड़ ऐसा ऊंचा दृष्टिपड़ाकि हुये मानो आकाशसे बातें करताहै और अमित हृक्षउसपै मेवाके फले लगेहैं हातिम उसकी ओरचला जबनिकटपहुंचा तब हजारोंपरी जाद उसकेचारों ओरसे दौड़आये और कहनेलगेकि यह मनुष्यहै इसकोछोड़ना उचितनहींहै क्योंकि यह पहाड़पर चढ़नेका अनु-

मानकरताहै इतनेमें और भी पहाड़परसे उतरे और हातिमका हाथपकड़के पहाड़पर लेगये और जंजीरों से बांधके पूछनेलगे तू सत्य २ बतातुझे यहां कौनलायाहै और कहांसे आताहै तब हातिमने कहाकि मुझे यहां परमेश्वर लाया है और शहर सूरत से आताहूं तब वे कहने लगेकि मालूम होताहैकि तू परीकुशाह के हाथका मुहरालेनेको आयाहै भलासत्य२ कह यह बातहैकिनहीं तब हातिमने शोचाकि जोमैं यहां सत्यबोलताहूं तो जीवसे मारा जाताहूं और इनकार करताहूं तो झूठबोलताहूं इससे चुपरहनाही उचितहै यह शोचके हातिम कुछनबोला तब उन्होंने खैंचिके कहाकि इसको अग्निमें छोड़देनाचाहिये निदान उन्हों ने अग्नि जलाई और जबज्वालाउठीतो हातिमको उसीजलतीअग्निमेंडालके वे सबचलेगये जब तीनदिन पीछे वहअग्निबुझीतो हातिम उससे निकला और एक ओरको राहली जब थोड़ी दूरपहुंचा तो फिर हजारों परीजादों ने उसे घेरलिया और पूछने लगेकि हे जवान तेरीही सूरतका एकमनुष्यहमने अग्निमें छोड़दियाथा सो जलके राखहोगया होगा अबतूबताकि तू वही है अथवा दूसराहै तब हातिमने कहाकि अरेमूर्खो जो अग्निमेंपड़ा वह फिरकैसे जीताबचैगा यह सुनके उन्होंने उसको घुमायके जो फेंकातो उसपहाड़से एक समुद्र अठारहकोसथा उसमेंगिरावहां उसको घरियाल ने लीललिया उससमयतो हातिमको मूर्छामें न कुछ मालूमहुआ कि मैं कौनहूं औरकहांहूं जबचेतहुआ तो अपनेको घरियालके पेटमें देखके बहुत घबराया और दौर२के उसके पेटकी आंतोंको खूंदनेलगा तबतो वह घड़ियाल बहुतदुःखीहुआ और देखाकि अबयह न पचेगातो रेतमें आयके वान्तकरनेलगा हातिम उसके मुहसे निकलपड़ाऔर एक तरफको चलदिया परन्तु बिनाअन्नजलके सामर्थ्य तो थी हीनहीं थोड़ी दूरचल रेतमें गिरपड़ा और चारों ओर देखने लगाइतनेमें एक झुण्डपरीजादोंका हंसता खेलता उस ओर को आनिकला और हातिमसे पूछने लगाकि हेमनुष्य तुझे यहां कौन लायाहै तब हातिमने कहाकि मुझेपरमात्मा जिसनेमुझे और तुम्हे बनायाहै वही यहांलायाहै और आजदूसरे दिनघड़ियालके पेटसे ईश्वरने जीतानिकालाहै जो तुमको परमेश्वरने कुछदियाहै तो मैं भूखाबहुतहूं मुझेखानेको भोजन दो तबउन्होंनेकहाकि हमारेबादशाहकी आज्ञाहैकि जहां मनुष्यकोदेखो वहांहीं मारडालो जोहम तुझे भोजनदें तो बादशाहकी आज्ञा भंगकरने का दण्डकौन भोगे

इतनेमें उन्होंमेंसे एक बोलाकिहे मित्रो देखोतो परमेश्वरकी लीला कैसी है कि घड़ियाल के पेट से उसने इसको सजीव निकाला है और कुछ आपसे आया नहीं कोजाने घड़ियाल कहांसे इसको खाया है और कहांबादशाह और कहां यह भिखारी कुछ परमात्माको डरोकि जिसने कालकेमुखसे इसेबचायाहै और यह मनुष्यहै और दृष्टिमें सर्वोपरि गिनाजाताहै इससे इसको अपने घरलेचलोऔर पालो तबफिर किसीने कहा ऐसा नहोकि कहीं बादशाह सुनेतो हमारा इथाजीवजाय तब हातिमने कहाकिजो तुम्हाराभला मेरे मारेजानेहीमें होयतो तुममुझे मारडालो निदानजब हातिमकी यह मजबूती देखीतो आपसमें सलाहकरके कहाकि हमारा बादशाह यहांसे सातदिनकी राहपर रहता है ऐसाकौनहै जो उससे यह समाचार कहेगा यह सब आपसमें सम्मत करके हातिमको अपने घरलेआये और भांति२ के भोजन हातिमको खिलाये जब हातिम तृप्तहोके बैठातो परीजादभी उसके चारोंओर आय बैठे और हंसी मसखरी करनेलगे और उसके रूपपर मोहित होगये तबकई दिनपीछे जबके हातिमने कहाकिहे मित्रोअबमुझे बिदाकरो और मैं जिसकामको आयाहूं उसेकरने की यत्नकरूं तब उन्होंने पूछाकि तेराकौनकामहै और तुझेयहां कौनलायाहै तब हातिमने कहाकि मुझे फरदकाश बादशाहके देव परीरू बादशाहके राजकी सीमापर पहुंचायगयेथे और तुम्हारेभाइयोंने मुझेतीनबेर अग्निमें डालदिया वहांभी परमात्माने सजीव रक्खा फिर उन्होंने समुद्रमें फेंकदिया वहां घड़ियालने लीलिलियाजब वहन पचासका तब उसने मीचगलदिया इतनेमेंतुमको ईश्वरनेयहां पहुंचाय दियातुम मुझ परदयालुहोके अपने घरलाये औरमेरीसेवा करीतब उन्होंनेपूछा कि हेजवान ऐसा कौनसाकठिन काम है जिसकेलिये तैने इतनी विपत्तिझेली तब हातिमनेकहाकि मुझेमाहरूपरी बादशाहसेकुछ कामहै यहसुनकेउन्होंनेकहाकिअरे अज्ञानतू हमारेसामनेमाहरू परी बादशाहकानाम नले क्योंकि वहदेव और मनुष्य को अपनी राज्यमेंनहीं आनेदेता औरजोवह सुनेगाकि यहांकोई मनुष्यआया हैतोहमैं तुम्हेंकिसी कोभी जीतान छोड़ेगाक्योंकि यहआज्ञा हैकि इसदेश मेंकोईआने नपावै औरजो कदाचित् भूलसे कोई आयभी जायतोफिरजीता नफिरै तब हातिमने कहा कि हेमित्रो जोमेरी आयुर्बल है तबतो कोईभी नहीं मारसक्ता और तुमडरतेहो तो तुममुझे बांधके उसकेपासले चलोतब उन्होंने कहा कियहभी हमसे

नहीं होनेका क्योंकि जिसको बचाया और पाला उसको मारने को कैसे दें तब हातिम ने कहा कि तुम मेरे मारे जानेपर कुछ सोच न करो क्योंकि मुझे तो परीज़ाद बादशाह के पास जाना है चाहे वह मारे चाहे छोड़े यह सुनके उन सबने सलाह की कि इसको बन्दि में राखो और बादशाह को यह सन्देशा देवो जैसी उसकी आज्ञा होगी उसी अनुसार किया जाय इस बातको सबने माना तब उनमें से एक के हाथ एक अरजी लिखके भेजी और उसमें यह लिखा कि महाराज एक मनुष्य लाल समुद्र के किनारे हमको मिला है सो उसको अपने यहां क़ैद किया है जो आपकी आज्ञा हो तो आपके सन्मुख भेजें निदान सातदिन में वह बादशाह की ड्योढ़ी पर जा पहुंचा तब द्वारपालों ने बादशाह से जनाया कि महाराज एक परीज़ाद लाल समुद्र के चौकीदारों में से वहां के हाकिम की अरजी लेके आया है बादशाह ने आज्ञा दी कि सन्मुख लावो चोबदारों ने उसको बादशाह के सन्मुख लेके खड़ा किया उसने जयजीव कहके वह अरजी दी माहरू परी बादशाह ने अरजी पढ़के आज्ञा दी कि शीघ्र उसे हमारे पास ले आवो वह धावन कई दिन में वहां से उत्तर लेके आया और सबसे कहा कि बादशाह ने अपने सन्मुख बुलाया है यह सुनके सब हातिम को बादशाह के पास लेके चले और यह समाचार चारों ओर पहुंचा कि एक मनुष्य लाल समुद्र के किनारे पर पकड़ा गया है सो बादशाह के पास लिये जाते हैं यह समाचार मीनापरीज़ाद की बेटी जिसका नाम हुसनाया उसने भी सुना तब उसने अपनी सखियों को बुलाके कहा कि सुनते हैं कि एक मनुष्य अत्यन्त शोभायमान पकड़ा हुआ बादशाह के पास जाता है किसी भांति से उसको देखना चाहिये तब सखियों ने कहा कि जो देखना है तो राह में से ही देखलो और जब बादशाह के सन्मुख गया तो किसको सामर्थ्य है जो देख आवे यह सुनके वह अपनी माता के पास गई और उससे बाग देखने के लिये जाने को कहा वहां की यह रीत थी कि जो कोई बाग देखने को जाय वह चालीस दिनतक वहां ही रहे निदान यह उससे पूछके बाग में आई और अपनी सखियों से कहने लगी कि किस ढब से देखें इतने में क्या देखती है कि एक बड़ी फौज पड़ी है तब उसने एक परी को आज्ञा की कि तू जाके देख तो यह भीर काहेकी है तब वह परी जाके पूछने लगी कि तुम कौन हो और कहां जाते हो तब उन्होंने कहा कि हम लाल समुद्र के चौकीदार हैं एक मनुष्य को पकड़ के बादशाह के पास लिये जाते हैं तब उसने कहा कि वह कौनसा मनुष्य

है जिसको तुम लिये जाते हो हमको भी देखलेने दो उन्होंने हातिमको दिखा दिया और कहा कि यही है जिसकी मृत्यु निकट आई है उसने देखा कि एक युवा पुरुष फूल समान खिला और चन्द्रमाके समान मुखारविन्द चमकता अत्यन्त शोभयमान कैदियों की सूरत बनाये बैठा हाय २ कररहा है यह देखके वहांसे फिर आई और हुसना परीसे उसकी सुन्दरता का बखान करने लगी हुसनापरी उसके रूप को बड़ाई सुनके उसके देखने को बहुत अतुराई और अपनी सहेलियोंसे कहने लगी कि उसको अब कैसे देखूं तब उसके साथकी परी कहने लगी कि जबरात होगी और सिपाही पहरुआ सो जावेंगे तब हम उसको चुरायके उठाय लावेंगी तब तुम उसको देख लेना निदान इतने में रात हुई तो परी उड़के उस सेना की ओर गई और हातिमको सोताही उठाय लाई और उसको बाग में रखके हुसना परीके पास जाकर कहने लगी कि हम उसको उठाय लाई हैं और आपके बागमें धरके आपके पास आई हैं यह सुनतेही हुसनापरी बागकी ओर आई तो क्या देखती है कि एक युवापुरुष चन्द्र मुख कमल नयन अचेत सोरहा है वह उसके देखतेही प्रेम से विह्वल होगई और प्रीतिकी गांसी उसके कलेजेमें वार पार होगई उस परीने जातेही उस अचेत सोतेको जगाया तो हातिमने आंख खोल के जो देखा तो एक अत्यंत स्वरूप वाल मृगनयनी सिरहाने की ओर खड़ी दृष्टिपड़ी यह देखके हातिम घबरायके कहने लगा कि तू कौन है और मुझे यहां कौन लाया है उसने यह सुनके बड़े प्यारसे मधुर वचन मुख फेर के कहने लगी कि यद्यपि यह घर मेरा है तेरा नहीं है परन्तु अब यह घर मेरा नहीं किन्तु तेरा है हातिम अपने मनमें सोचा कि यह तो परियों का यूथ है और मैं मरदोंके हाथ में कैद था फिर इस बागमें कैसे आया अन्तको घबड़ाके पूछा कि तुम सत्य कहो तुम कौन हो और मैं यहां किस भांति आया हूं तब हुसनापरी ने कहा कि हे जवान यह बाग मीना परीजादने बनवाया है और मैं उसकी बेटी हूं जब तेरे आनेके समाचार सम्पूर्ण नगर में फैले तो मुझे तेरे देखने की अधिक अभिलाष हुई तब मैंने परियों के हाथ तुझे यहां मगवा लिया है यह सुनके हातिम ने कहा कि मेरे लानेका क्या हेतु है वृथा मेरे काममें बाधा लगाई तब वह परी कहने लगी कि भला वह कौनसा काम है जो तू उसके लिये ऐसा घबड़ाया है तब हातिमने कहा कि मैं माहरू परी बादशाहके हाथ का माहमुहरा लेने को आया हूं तब उस परीने कहा कि हे जवान उस

सुहरा आपाना बड़ाकाम है क्योंकि जहां धर्म्मराजके दूतोंका भी निवाह नहीं वहां मनुष्य की कौन कहे जोतेरी भाग्यसे मिले तो मिले नहीं तोकुछ आसरा नहींहै हां यथासामर्थ्य मैंभी अपनी ओरसेबहुत कुछकरूंगो यह सुनके हातिम कोकुछ हर्षहुआ और फिरदोनों मंजिलके विहारकरनेलगे इतनेमें जबसेनाके लोगसोने से जागे और हातिम कोन देखा तब बड़ेशोचमें हो चारों ओर खोजने लगे और कहने लगे किहायनहोय तो परी उसके रूपके कारण चुरायलैगई और यहां बादशाहने हमारी खाल खिंचवाई इसलिये अब यही उचितहै किकिसीकोनेमें छिपके उसका खोज लगावें जब पावेंगे तब उसको बादशाहके पासपकड़लेचलेंगे यही शोचके वे सबभागे और किसी खोहमें छिपरहे जबरात हुई तब उसको ढूढने लगे इसीभांति दिनको तो छिपेरहते और रातको उसे खोजते निदान इस बात को बहुत दिन बीते एक दिन बाद-शाहको सुधआईतो कहनेलगा किअब तकवह मनुष्यनहीं आया कोई जाके वहां समाचार तोलावे यहआज्ञा पातेही एक धावन पलकेपलमें वहांजाके कहनेलगा कि बादशाह आजतक उसमनुष्य के आसरेमेंहै उसके नभेजनेका क्याकारणहै तबवह बोला कि मैंने कितनेही दिनबीते किअपनी सेनाकेसाथ उसको बादशाहके पास भेजदिया यहसुनके वह धावन बादशाह के पास फिर आया और सम्पूर्ण समाचार कहे यह सुनके बादशाह मारे क्रोध के ज्वाला समान प्रज्ज्वलितहो एक यूथपको बुलाके कहने लगा कि जाओ उनको खोजोतो वे उस मनुष्यको कहांलेगये निदान वह अपनी फौज लेकर बादशाहकी आज्ञानुसार उनको खोजने लगे इतनेमें दैवयोग्यसे एकदेव उस भगीहुई फौजका इसमरदारके आदमियों को मिलातो उसको बांधकेबादशाहके सन्मुख लेगयेतब बादशाहने पूछाकिसत्य२ कहवहमनुष्य कहांहै नहीतो जीवसे मार डालूंगा इस बातके सुनतेही उसने कहा कि जो जीवदान पाऊं तो कुछ कहूं बादशाह ने कहा अच्छाक्या कहताहै तबवह कहने लगा कि महाराज हमसबलोग उसको लिये आतेथे एकजगह रातकोअचेत सोगये वहांसे उसको कोई चुरायलेगया, वहतो आपही आपके दर्शनों की बड़ी अभिलाषारखताथा इससे मालूम होताहै किवह आपसे नहीं गया जबहम सबेरे जागे औरउसको नदेखातो आप के डरके मारे जहां तहां सब छिपरहे और रातको खोजकरते थे यह सुनके बादशाहने उसको तो बन्दिमेंभेजा और पांच छः हजार

परीजादों को आज्ञा दी कि जहां हो तहां से खोजके लावो इतने में एक परीजाद मीनापरी जादके बाग में जा निकला और दिनको छिपके बैठरहा जब रात हुई तब हसना परी हातिमके गलेमें बांह डाले हुये आई और उसके साथ विहार करने लगी तब इसने भली भांति चीन्हके कहाकि हम इसको बादशाहके पासको लियेजाते थे और तुमने इसको चुरवाय लिया इसलिये जोतुम अबभी अपनी भलाई चाहो तो इस मनुष्य को हमें देदो तो हम इसको बादशाह के पासलेजावें यह सुनतेही हसनापरी क्रोध के मारे आग होगई और कहने लगी कि रे हतभाग्य निगोड़े तेरा मेरे बाग में कौन काम है ऐसी ढिठाई करता है कोई यहां है नहीं जो इस मौत मारेको मारै यह सुनतेही वहुतसीपरी उसके ऊपर टूटीं ज्योंही चाहा कि पकड़ें त्योंही वह मारे डरके भागा और बादशाहके द्वार पर जाय पुकारा बादशाहने कहाकि देखोतो यहकौन है और इसको किसने दुःखदियाहै यहां बुलावो जब उसे बादशाहकेपासले गये तब उसने कहाकि महाराज हमसब उस मनुष्यको आपके पास लिये आते थे रातको मीनापरी जाद की बेटी हसना नामक उसे चुरा के अपने बागमें लेगई अब उसके साथ विहार करतीहै मैं ढूढ़ते२ एक दिन उसके बाग में जा निकला तब उस मनुष्य को चीन्ह के कहनेलगा कि हम इसको बादशाहके पासलिये जातेथे और तुम इसको चुराय लाई अब मुझे यह देदोतो मैं बादशाह के पास ले जाऊं यह सुनके वह मदिरा के मदमें भरीथी अपनी परियों को आज्ञादीकि इसको पकड़के मारो महाराजमैं मारे डरके वहांसेभाग के आपकी शरणमें आयाहूं यह सुनतेही बादशाह आग होगया और तीस हजार परीजादोंको आज्ञा दी कि मीना परीजाद को उसकी धी बेटी और उस मनुष्य समेत शीघ्रमेरे पास लेके आवो यह आज्ञापातेही सब लोग दौड़ पड़े और मीना परीजाद के घर कोघेर लियावह दीन इस बात कोजानताही न था यह सुनतेही भौचक्कासा रहगया औरकहने लगाकियह क्या कारणहै तबउन्होंने कहा कि तेरी बेटी एक बादशाह के क़ैदी को चुरालाई है और अपने बागमें उसके साथ विहार करतीहै यह सुनतेही वह डरगया और जोबागमें आयके देखातो सचही हसनाएक आदमीकेसाथ विहार करती है यह देखतेही घबड़ाया सा होगया और दोनों हाथ अपनी बेटी के मूड़पर मार के कहने लगा कि हे चाण्डाली तूने यह कैसा काम किया कि माता पिताका नाम धरायाऔर

तेरे पकड़नेको बादशाहकी फौज आनपहुंची अनसमेतहो वह सुन-
तेही वहसहमगई और मारेडरके थरथर कांपनेलगी और आंखोंसे
आंसूभर लाई इतनेमें बादशाह की सेना आयपहुंची और सबको
पकड़ बादशाह के पास लेगये तब सेनापति बादशाह के सन्मुख
खड़ाहोके प्रार्थना करनेलगा कि महाराज सोनापरीजाद आपकी
आज्ञानुसार अपने लड़केवाले समेत हाथबांधे बिना रोकटोकचला
आया बादशाह ने आज्ञा दी की सोनापरीजाद को मेरे सन्मुख
लावो जब सोनापरीजाद बादशाह के सन्मुख आया तब कहनेलगा
कि महाराज के जीव कीसौं मुझे इसबात का कुछ भी हाल नहीं
मालूम था और मैंतो आपका सब प्रकार आज्ञाकारी हूं बाद-
शाहने दयालु होके अपराध क्षमा किया जब लोगोंने हातिम
को बादशाहके सन्मुख खड़ा किया तब बादशाहने देखा किअत्यंत
दिव्यस्वरूप और युवापुरुषहै बड़ीप्रीतिसे निकट बैठारकुछबातेंकरके
पूछने लगा कि हेजवान तू मनुष्य होके मेरेराज्यमें क्योंकर आया
और कौनसा काम तुझेथा जिसकेलिये इतनाकष्ट औरदुःखभोगता
यहां आयाहै तब हातिम ने कहा कि महाराज फर्रुखफाम बाद-
शाह ने आपके यश और कीर्तिका ऐसा बखानकिया कि मुझमें
उसके फिर कहने की सामर्थ्य नहीं है वह सुनतेही इस दास
को चित्त आपके दर्शनोंको बहुतही उमगा इसीसे आपके पासतक
पहुंचा यहसुनकेबादशाहने पूछाकि हमारेदेशमें तुझे कौनलाया
हातम ने कहा कि मुझे फर्रुखफाम बादशाहकेदेव यहां लायेफिर
बादशाह ने पूछा कि हे जवान तेरी जान में कोई वैद्य मनुष्यों में
प्रवीण है तब हातिम ने कहा कि आपको वैद्य से क्या प्रयोजन है
क्या आपके देशमें वैद्यनहीं हैं तब बादशाह ने कहा कि हमारी
जातिके वैद्यों की चिकित्सा से कुछ आराम नहीं होता मैंने बहुत
औषधि का सेवन कराया है क्योंकि मेरेबेटेकी आंखें बहुतदिनों
से दुखती हैं सोमारे दुःख के व्याकुल रहता है और अन्धाहोने
के निकट पहुंचा है तब हातिम ने कहा कि जो आपके बेटे की
आंखें अच्छी होजावें और पीरभी जातीरहै तोमुझे उसके बदलमें
क्या पारतोषिकदीजियेगा बादशाहने कहाकि मुंहमांगा पावेगा
तब हातिमने कहा कि इसबात को प्रण करके सौगन्द खावोतोमैं
बादशाहजादे कीआंखों कीचिकित्सा करूंऔर जैसीआंखेंथीं वैसी
हीहोजांय बादशाह ने कहा मैंने तेरी बात मानी तब प्रातःकाल
होतेही हातिम ने वह मुहरा अपनी पगड़ीसे खोल पानीमेंघिस

उसकी आंखों में लगाया तो सांझ होते होते उसकी आंखों की लाली जाती रही और पीरभी मिटगई परन्तुदृष्टि नहुई तबबाद- शाह ने कहाकि हे प्यारे पीरतो जाती रही पर दृष्टि नहीं है तब हातिम ने कहाकि अन्धकार में एक वृक्ष है और उसको नूरैन अर्थात् दृष्टि प्रकाशक कहते हैं जो दोतीन बूंद पानीउस वृक्षका मिलेतो इसकी आंखोंमेंदृष्टि यथापूर्वक होजाय इसबातकेसुनतेही बादशाह ने कहा कि हेपरीजादो सत्य कहो तुममेंसे कौन ऐसा है जो वहां जाकेउस वृक्षका पानीलावे यह सुनतेही सबने कानों पर हाथ धरे और गरदन नीचीकर कहने लगेकि महाराजवह राह ऐसी विकट है कि जीव जाने काडर है और वहां भूत प्रेत पिशाच रहते हैं वहां हममेंसे कोई नहीं जा सक्ता और वेलोग ऐसेबलवान हैं किहमको किसीभांत सजीव नछोड़ेंगे आगे आपके आधीन हैं जैसी आपकी आज्ञा होगी करैं इतनेमें हुसना परी बोली किमहाराज जोआपमेरा अपराध क्षमा करैं और इसम- नुष्यकोभी मुझेदेवेंतो मैंउस वृक्षका पानीलाऊं बादशाहने कहा किहमने तेराअपराध क्षमा किया और वहसीसा तेरे पिताकोदी और इसमनुष्य कोभी तेरेपिताके आधीनकिया तबहातिम बोला कि हेहुसनापरी जोतू चाहे कि सदातेरेही पासरहूं तोमैं नहीं मानताहूं परहां इसबातकोतू मानेकी जबतक मेरामन मानेतब तकतेरे पासरहूं और जबचाहूं तबचलाजाऊं तो हासक्ताहै तब हुसनापरी ने कहा कि हेजवान मुझेभी कुछकाम और नहीं है परंतुइतना है किकुछदिन तेरेसाथ विहार करके अपनेचित्तको प्रसन्नकरूं फिर जहां तेरामन माने वहां जाना तुझेकोई न रोकेगा तबहातिमने कहाकि तौतो कुछ डरनहीं है मैंनेभी माना अबतू शीघ्र जा यहसुन हुसनापरी किनेकपरी अपने साथ लेके वहां से बिदाहुई और चलते २ चालीस दिनमें जुलमात अर्थात् अंधकार में जापहुंचीतो क्यादेखतीहै किएक वृक्षऐसा बड़ा है कि उसकी चोटी आकाशतक पहुंचीहै औरपानीउससे टपकताहैहुसनापरी ने एकशीशा उसकेनीचे धरदिया थोड़ीदेर में वहशीशा पानी से भरगया वहउसका मुंहबांध चटवहांसे लेउड़ी इतने में हक़्फ़ाश देवोंका चौकीदार जो हजारदेवोंको साथलेके उसवृक्ष की चौ- कीदेताथा आपहुंचा और हुसना परी भी बहुत शीघ्र गामी थी ऐसीभागी किउसके हाथनलगी चालीसदिनमें बादशाहके सन्मुख आविराजी और कहनेलगी किमहाराज आपकेप्रतापसे यहदासी

पानीलेआई और वहांकेचौकीदारों के हाथ न आई यह कहके वहपानीका शीशाबादशाह के आगेधरदिया बादशाहने बड़े प्रेम से उसनापरीको अपनेगलेमें लगालिया औरवहपानी हातिम को दिया हातिमने वटवह मुहराउस पानीमें घिसके उसकी आंखों में लगाया और पट्टी चढ़ादिया सातदिनतक आंखोंमें पट्टी बांधी रहीजब आठवेंदिन उसकीआंखोंसे जोपट्टी खोलीतो जैसी आंखें लेकेमाताके पेटसे पैदाहुआथा उसीभांतकी आंखेंहोगईं तब बादशाहजादेने अपनेमाता पिताके दर्शनकिये और अति हर्षितहोके हातिम के पांवोंपर गिरपड़ा हातिमने उसको अपनी छाती से लगालियातब बादशाहने उसकेबदलेमें अमितधन हातिमके सामने धरायहदेख हातिमने कहा कि हे प्रजापालक न तिरत मैं निहङ्ग हूं इतने जवाहिर और मोहर और रुपया ले के क्या करूं और कहां लेजाऊं हां जो आप अपने परीजादों के हाथ फरदकाम बादशाहके यहां पहुंचवादेंतो वहमेरे मकानपर पहुंचवा देगा तब बादशाह ने अपने परीजादों से कहाकि जबयह जवान अपनेशहर को जाने लगे तब यह सम्पूर्ण धन इसके साथ ले जाना तब फिर हातिम प्रार्थनाकरनेलगा कि महाराज यह जोधन आपने दिया सोतो आपकी दयाहै परजो आपने देनेको कहाहै सो दीजिये तब बादशाह ने पूछा कितू कौन वस्तु मांगता है तब हातिमने कहा किजो यह मुहरा आपके हाथमेंहै सोमैं मांगताहूं और जो आप अपनीबातका प्रतिपाल करतेहैंतो मुहरमांगा पाऊं यह सुनके बादशाह ने कहा कि मालूम होताहै कि यह मुहरा तुझसे हारस सौदागरकी बेटीने मांगाहै अच्छाअभी तुझसे कहचुकाहूं लेजब बादशाहने वह मुहरा हातिम कोदिया तो कहाकि हेजवान जब तू यह मुहरा उसको देगा तो मैं उसके पास यह मुहरा रहने नदूंगा जैसे बनेगा तैसे मंगवा लूंगा तब हातिम ने कहा कि जब किसीका कामबनगया और अपनीधारीसे निकलगया तबइसकोजो चाहे सोले जायनिदान जबहातिमने उसमुहरेको अपने भुजापर बांधा तब सम्पूर्ण सृष्टिकी दबीहुई द्रव्य ठौरठौर दिखाई देने लगी तब हातिमने अपने मनमें कहाकि हारस सौदागर कीबेटी ने इसीलिये मांगाहै निदान जब हातिम बादशाह से बिदा होने लगातो अपनेनौकरोंसेकहाकि तुमहातिमकेसाथ जावोजबहारस सौदागर की बेटीका विवाह होजाय तब तुम इस मुहरे को जैसे बने तैसे चुराय लाना जब हातिम बादशाहसे बिदाहुआ तो क

दिन हुसनापरी से घरविहार किया उससे जब विदा हुआ तब वह सम्पूर्ण द्रव्य परीजादोंने अपने ऊपर लादली और हातिमके साथ चले और अपनी सीमापर पहुंचा के लौटगये तब वेदेव जो हातिम के साथ आये थे देखतेही दौड़े और हातिमको देखके बहुत हर्षित भये और हातिमको सबधन समेत थोड़े दिनोंमें बादशाह फरदकाश के पासले आये वह उठके हातिम से मिला और उसको मनुनाई को बड़ी बड़ाई करने लगा था तब रातभर वहां रह सवेरे उससे भी विदाहुआ और थोड़े दिनोंमें उस खोहपर आन पहुंचा तब वहीं सम्पूर्ण धन उन देवों को देके विदा किया फिर शहर सूरत में आपहुंचा और हारस सौदागर की बेटी के पास गया और वह मुहरा उसको दिया वह उसके पालेने बहुत प्रसन्न होके कहने लगी कि ऐ सतपुरुष वीर अब मैं तेरी हूं जो चाहो सो करो तब हातिमने कहाकि मेरी कुछ यह इच्छा नहीं है कि तेरेसाथ विहार करूं परन्तु वह जो पुरुष बहुतदिनों से तेरे बिरहमें दुखीहै उसको अवश्य अपना पति समझ तबउसने कहाकि मैं तोतेरे बसहूं जिसको चाहे उसको देदे तब हातिमने उसके पिता हारसको बुलाया और उसकेसामने उस सौदागर बच्चा के हाथमें उसकी बेटीका हाथ दे दिया और हारससे कहा कि अवश्य इसको अपना बेटा समझ हारसने भी शीघ्र विवाहकी तैयारीकी और अपनी बेटीका विवाह उस सौदागरबच्चासे करदिया फिर दसदिनके उपरान्त वह मुहरा उस लड़कीके पाससे खोगया तबवह रोनेपीटने लगी तो हातिमने कहा कि काहेको ऐसा विलाप करती है मैंने तेरे पतिको इतनी द्रव्य दी है कि वह सातपीढ़ीतक नचुकेगी इसीभांति सौदागरोंसे कह फिर वहांसे विदा हुआ और हुस्नबानूके प्रश्नका उत्तर ढूंढ़नेलगा कुछदिन में नानाभांतिके कष्ट और विपत्ति भोगताहुआ एक नदीके किनारे परजा पहुंचा तो वहां एक बड़ाभारी महल बादशाहोंके रहनेके योग्य दिखाई पड़ा और देखा तो उसमहलके द्वारपर लिखा है कि नेकीकर और नदीमेंडाल हातिम उसको पढ़केबहुत हर्षितहुआ और ईश्वर का धन्यवाद करके कहनेलगा कि अबमेरा कामबनगया यह कहताहुआ थोड़ा और आगे बढ़ा तो देखा कि बहुत से दास और दासी उस घरसे निकले और हातिम को उसके भीतर लेगयेतो हातिमक्या देखताहै किएकपुरुषवृद्ध सौवर्षकी अवस्थाका तख़्तपर बैठाहै हातिमको देखतेही उठके मिला और भांति२ के षटरस व्यंजन मंगाके हातिम को भोजन कराये जब हातिम खाचुका तब

उसबूढ़े ने पूछाकि आपने २ द्वारपर यह क्योंके लिखरक्खा है कि नेकीकर और नदीमेंडाल तबवह बूढ़ा इस प्रकारकहने लगा कि मैंबटमारथा और रातकोपथिकों को लूटाकरता और दिनको मेहनत कियाकरताथा और सांझकेसमय दोरोटी घीमेंचुपड़के उन पर शक्करधरके नदीमेंछोड़के यहकहता कियह काममें परमेश्वर केलिये करताहूं कुछदिन इसभांति बीते इतने में संयोग अचित हो मरनेके निकट पहुंचा जब एक दिनमें बहुतअचेत होगया तो यहजीव शरीरसे निकलगया तो क्या देखता हूं कि एक आदमी मेराहाथ पकड़े नर्कको लिजाता है और कहता है कितेरे रहने की ठौर यहहै ज्योंहींमुझे उसने गिरानाचाहा त्योंहीं धर्म्मराज के दूत आपहुंचे और मेराहाथ पकड़के कहनेलगे किइस इसको नर्कमें नजानेदेंगे क्योंकि यहनर्कके योग्यनहीं किंतुयह बैकुण्ठका अधिकारी है यहकहते हुयेमुझे बैकुण्ठको लेगये इतनेमें एकबड़ा अधिकारी सा उठके कहने लगा कि इसको क्योंलायेहो इसकी आयुर्बलके अभीदोसौ वर्षबाकी हैं इसीनामका जो दूसरा मनुष्य है उसकोलाओ यह बात सुनके वेदोनो जवानमुझे यहां पहुंचा गये और कहनेलगे किइस वेदोनों रोटीहैं जो तू ईश्वरकी राह परपानीमें छोड़ाकरताथा इतनेमें मुझेचेतआयातो उठबैठा और परमेश्वरकी स्तुति करनेलगा किहे परमेश्वर तूही सृष्टिकापालन करता और हरता है और तूहीमुझे चाहेजिसप्रकारसे जीवनदे अब मैंनि:कर्म्महोकर बैठताहूं मेरेअपराधोंको क्षमाकर निदान जबमैं दिनको अपनीस्वभाविक रीतकेअनुसार वेदोरोटी नदीमेंछोड़ने लगयातो एकसौ दीनार (अर्थात् एकप्रकार का सिक्का जो अरब केदेशमें चलता है) मेरे सामने पानीसे निकलआये मैंने उनको उठालिया और नगरमें ढंढोरापिटवादिया किजिसकिसीकामाल खोगयाहो तो मैंने पायाहै मेरेपाससे लेजावे पर किसीने उत्तर नदिया फिरदूसरे दिनजब रोटीछोड़ने लगयातो फिरएकसौदीनारनिकले उनकोभीमैंने उठालाया जबदिनबीता और रातहुईतो स्वप्नमेंदेखा किएक पुरुषखड़ा मुझसेकहता है किहेपरमेश्वरकेदास तेरीवेदोरोटी आई आईंअब मुझे परमेश्वरने आज्ञादीहै कि एक सौदीनार तुझेदिया करूं और तू उनको कुछपरमेश्वरकी राहतो खर्चकर और कुछ अपने खर्चमेंला इतनेमें मेरीआंख खुलगई तो मैंने परमेश्वरका धन्यवाद किया और यहमकान बनवाया और उसकेद्वारपरयही लिखदिया किभलाईकर और नदीमेंछोड़ और

मुझेअबभी सौ दीनार निरन्तर मिलेजातेहैं सोमैं दीनदुखी और पथिकोंको देताहूं और भोजन करताहूं और परमेश्वरका भजन करताहूं अबमेरी आयुर्बलके सौवर्ष और रहेहैं और सौवर्ष इस मकानको बनवायेहुये उससमयसे हेप्यारे मुझेनिश्चय होगया कि ईश्वर ने मेरा अपराध क्षमाकिया और इतनी उमर बढ़ाई और बिनमांगे भोजनदेताहै उससमयसे मैं बड़ा हर्षितरहताहूं कुछहर्ष विस्मय नहींकरता ईश्वर सबको ऐसाही उपदेश करै हातिमनेयह सुनके ईश्वर का धन्यवाद किया और तीनदिन वहांरहके चौथे दिनवहांसे बिदाहो शाहाबादकी राहली थोड़ेदिनोंके पीछे एक बनमें आनिकला तो क्यादेखता है किएक कालासांप किसी श्वेत सांपकेसाथ एकवृक्षके नीचेलड़ताहै और ऐसा मालूमहोताहै कि कालासांपश्वेतसांपकोमारडालेगा इतनेमेंहातिमनेडाटातोकाला सांप डरकेमारे छोड़केभाग गया औरयहदीनघबरागयाथाभागने कीतो सामर्थ्यथी नहीं उसीवृक्षके नीचे ठहर कर चारों ओर घ- ड़ायासा देखनेलगा तबहातिमने कहाकि हेसर्पतू धीरजधर जब तकतू संतुष्टनहोगा तबतक मैं तेरेपाससेनजाऊंगा जबथोड़ी देरमें वहसंभला तोउस वृक्षके ऊपर चढ़के मनुष्य का स्वरूपधरके हा- तिमको झुक २ के सलाम करने लगा हातिम यह देखके बड़े आ- श्चर्यमें हुआ और सोचनेलगा किहे परमेश्वर यहकौन मायाकीहै तबवह सांप बोला कि हे हातिम तू आश्चर्य नकर मैं जिनहूं और इस शहरका बादशाह मेरेपिताका दासहै सोमेरेसाथ युद्धकरता था वह कितनेही दिनोंसे हयामुझसे शत्रुता रखता है आज घात पाकेमुझे मारनेको यत्नमें था कित्योंहीं ईश्वरने तुझेयहां पहुंचाके तेरेद्वारा मेरा जीवबचायातब हातिम ने कहा कि अच्छाअब मैंने आज्ञादी जहांतेराजी चाहेवहां जा क्योंकि मैंभी कामसेहूं बहुत देरनहीं थमसका तबउसने कहाकि हेदीनदयाल मेराघर यहांसे बहुतही निकटहै जो आपदया करके मेरे घरपर चलिये तो मैंभी पावनहोऊं निदान हातिमउसके साथ २ उसकेघर चला थोड़ीदूर चलके एकमहल मिलातो हातिमने पूछा कियह किसको सेना है उसने उत्तर दियाकिआपही कोहै जबमकानपर गयेतो हातिमको एकरत्नजटित सिंहासनपर बैठाला भांति २केषटरस भोजनकराये औररातभर नाचरङ्गमेंबिताई सबेरा होतेही उसनेउस दासकोबन्ध किया और हातिमने बिदामांगी तबबहुतसी द्रव्य हातिमके आगे लाधरी हातिम ने कहा किमेरे कुछ कामकी नहीं है यह कहके

शाहाबादकी ओरचला अढ़ाईवर्ष और पन्द्रह दिन पीछेशाहाबादमें पहुंच सौदागरायमें मुनीरशामीके पास चलागया यहसमाचार किसीने हुस्नबानूको पहुंचाया उसने ततकालही हातिमको बुलालिया और एक मकानमें पर्देके बाहर हातिम की कुरसी डलवादी और बिचवान के द्वारा हातिम से पूछने लगी कि हे जवानतू कुशलपूर्वक आया कहकौन समाचारलायाहै तबहातिमने जो कुछ उस बूढ़ेसे सुनाथा सोसब आद्योपांत हुस्नबानूसे कहसुनाया कि इस हेतुसे उसने यहअपने द्वारपर लिखके लगादियाहै हुस्नबानू यहसुनके बहुतप्रसन्नहुई और हातिमकी बहुतबड़ाई करने लगीकि हे जवान तेरेसिवा यहकिसीकी सामर्थ्य नहींहै किकोई इसको शोधता तिसपीछे बहुतसे थारमेवा और मिष्ठानके हातिमके पास सराय में भेजदिये वहां मुनीरशामी के साथ बैठके हातिमनेभी भोजनकिये और ईश्वर का धन्यवाद करके कहने लगा कि हे मुनीरशामी तू घबरा मत ईश्वर की दयासे मैं थोड़ेही दिनोंमें तुझे तेरीप्यारीसे मिलायदेताहूं इसभांति मुनीरशामीको समझाबुझाके हुस्नबानूके पासगया और कहनेलगा कि अब बतातेरा कौनसा प्रश्नहै मैं उसको शोधूं तब हुस्नबानूने कहाकि तीसरा प्रश्न यह है किकोई वनमें खड़ा यह कहताहै कि किसीसे बदीनकर जो करेगा तो वहीपावेगा इसबातको शोधला॥

तीसरा प्रश्न हातिमके जाने और इसबात की खबरलाने का किकिसीसे बुराई मतकर जो करेगा तो वही पावेगा॥

निदान इसबातकोसुन हातिम वहांसे बिदाहो ईश्वरके भरोसेपर एक वनकी राहली तो एक महीना पीछे एक पहाड़ आसमान से बातें करता दिखाई पड़ा और जब उसके नीचे पहुंचा तो एक बोल रोनेका सुनाई दिया यह सुन हातिम चारों ओर सिर उठाय के देखने लगा परन्तु कुछ दृष्टि नपड़ा जब उसके निकट गया तो क्या देखता है कि एकवृक्ष छायादार जिसके नीचे संगमरमरकी सिलकेऊपर एकयुवा पुरुष दिव्यस्वरूप रोगियोंकीसी सूरत उसवृक्षकी डाली पकड़ेखड़ा है और आंखें बन्द किये हायमार२ बारम्बार रोय२ के यहीकहता है किशीघ्र आवोअबतेरी बिरहमेंधीरजनहींरहा यहदेखहातिम बहुतविस्मितहो कहनेलगा कियह क्याभेदहै जब निकट गयातोपूछा किहेजवान तेरीयहदशा कैसेहुईहै तूअपना वृत्तान्तकहवहअपने उसीध्यानमेंथा उसने हातिमकीबातका उत्तरनदिया तबहातिमने दूसरीबेर पुकारा तबभी

वह कुछ न बोला तब फिर हातिम ने तीसरी बेर पुकारा कि हे मनुष्य मेरे जान तू बहरा है मैंने तुझे तीन बेर पुकारा और तैंने उत्तर न दिया यह सुनके उसने आंखें खोलके पूछा कि तू कौन है कहां से आया है और तेरा कौन काम है यह सुनके हातिम ने कहा कि मैं मनुष्य हूं और फिरते २ यहांभी आनिकला अब तू अपना हाल कह कि तू क्यों रोता है और यहां काहेको पड़ा है तब उसने कहा कि हे पथिक तेरे समान यहां कितेक आये और मेरा दुःख भी पूछा परन्तु किसी ने मेरे रोग की चिकित्सा न करी इसलिये अपना हाल कहना कुछ काम नहीं और तू काहेको वृथा दुःख देता है तब हातिम ने कहा कि जब तैंने बहुधा मनुष्यों से अपना हाल कहा है तो दया करके एकबेर मुझेभी सुनादे क्योंकि मुझेभी सुनने की अभिलाष है तब उसने कहा कि अच्छा तू मेरे पास बैठजा मैं तनक चेत में आऊं तो तुझसे अपना हाल कहूं जब हातिम उस वृक्षके नीचे बैठा तब वह इसभांति अपनी कहानी कहने लगा कि हे पथिक मैं दीन एक सौदागर हूं मेरा बाप हमको लाता था और मैं उसके साथ यहां आन पहुंचा और सबेरे उससे बिछुरके इस पहाड़पै आया वहां मैंने अपना विश्राम किया फिर इस वृक्षके नीचे आया तो एक चन्द्रमुखी स्त्री मेरी दृष्टि पड़ी मैं उसके देखते ही मूर्छित होगया और अचेत होके गिरपड़ा तब उसने मेरा शीश उठाके अपनी जंघाओं पर धर मेरे मुखपर गुलाब छिड़कने लगी जब मैं चेत में आया तो अपना शीश उसकी जांघ पर देखके बहुत प्रसन्न हुआ और उसके नैनों की कटाक्ष मेरे कलेजा के वारपार होगई उसी घावकी पीरके मारे उठके पूछने लगा कि हे प्यारी तू कौन है और इस जंगल उजाड़ में अकेली तू क्यों आई है तब उसने कहा कि मैं परी हूं और यह पहाड़ और किला मेरा घर है मैं तेरे समान पुरुष ढूंढ़ती थी सो ईश्वर ने आज मिलाय दिया है भ्राता मैं ऐसी २ मीठी प्रीतिबर्द्धक बातें सुनके अपने धन और गेहकी सब सुरति भूल गया निदान उसी भांति वह मेरे साथ विहार करने लगी और मेरे नयन चकोर उस प्यारी मनहारी के मुखारविंदु इंदु को निहार सुख लेने लगे और मन मधुकर उसके कमल नयनों के मकरन्द पर लोभ गये निदान इसीभांति जब तीन महीने बीते तब मैं कहने लगा कि हे प्यारी यहां बन में काहे को रहती है किसी नगर में चलकर रहैं तब उसने कहा कि अच्छा जैसी तेरी मति हो मैं भी उसमें प्रसन्न हूं परन्तु जो तू इसी में प्रसन्न है तो मैं अपने घर के लोगों से मिल आऊं और जब तक मैं न आऊं तब तक तू कहीं जाना मत तब मैंने उससे पूछा कि अच्छा

मैं तो कहीं न जाऊंगा परंतु यह तू मुझसे ठीक बतादे कि कब आवेगी तब उसने कहा कि मैं सात दिन पीछे आऊंगी और जो कदाचित् तू मेरे आने के पहिले चला जायगा तो जीते जी पछितायगा इसलिये हे भ्राता मुझे अब उसके आसरे में सात वर्ष बीतिगये हैं और वह आज तक नहीं आई और मैं उसके खोजमें कहीं जाभी नहीं सक्ता क्योंकि वह कहीं मेरे पीछे आवे और मुझे न पावे तो कोजाने मेरा कौन हाल करै यद्यपि यह भी न हो तो मुझमें कहीं खोजने की सामर्थ्य भी नहीं है और मेरे खानेपीनेका यह हाल है कि इसी इक्षके पत्ते खाता हूं और इसी सोते का पानी पीता हूं और क्या करूं न पृथ्वी में ठौर है और न आसमान निकट है जो समाय जाऊं और पावों में सामर्थ्य नहीं है जो कहीं जाऊं इसलिये यही शब्द कहा करता हूं क्योंकि पृथ्वी तो कठोर चित और आसमान शून्य है किससे कहूं जो मेरी सहायता करै यह सुनके हातिम आंखों में आंसू भरके कहने लगा कि हे दीन बिरही जो तुझे उसने अपने घरका पता बताया है तो मुझसे कह तब उसने कहा कि मैं केवल इतना ही जानता हूं कि उसके कुनबा के लोग अलका पर्वत पर रहते हैं परंतु यह नहीं मालूम है कि अब कहां है तब हातिम ने पूछा कि तुझसे बिदा होके किस तरफको गई थी तब उसने कहा कि जाने के समय थोड़ी दूर तो दाहिना ओर को गई फिर नहीं दिखाई दी कि कहां लोप होगई तब हातिम ने कहा कि जो तू उस के बिरह में दुःखी है तो मेरे साथ चल कहीं न कहीं उसको ढूढ़ही लेंगे तब उसने कहा कि मैं तेरे साथ जाऊं और वह यहां आवे और मुझे न पावे अथवा मुझको यह ठौर फिर न मिलै तो मैं दोनों ओर से गया जैसी कि कहावत प्रसिद्ध है कि (दोनों दीन से गुजरे पांड़े न यहां के हलुवा न वहां के मांड़े) इसलिये मैं यही उचित जानता हूं कि जो उसको मिलना है तो यहां ही मिलैगी नहीं तो उसी के आसरे में यहां ही मरजाऊंगा यह सुनके हातिम आंसू भरके पूछने लगा कि हे प्यारे जो तू उसका नाम जानता है तो बता उसने कहा कि उसको अलगनपरी कहते हैं तब हातिम बोला कि हे जवान अब तू धीरज धर मैं अलका पर्वत पर जाता हूं कि तो उसको तेरे ही पास लाऊंगा अथवा तुझको तेरी प्यारी के पास ले चलूंगा परन्तु पहिले उसका घर खोजके तेरे पास आता हूं यह सुन वह बोला कि वाह आजतक तो मैं ने ऐसा आदमी नहीं देखा कि अपना छोड़ दूसरे का काम करै काहे को भले मनुष्य बात बनाता है जा अपना काम कर यह सुनके हातिम ने कहा कि हे प्यारे मैं तो अपना शीश हथेली पर लिये फिरता हूं कि

जिससे किसीके काम आवे और जिसका जी चाहे सो लेवे और चाहे जीव मेरा जाता रहै परन्तु काम जिसका कहा उसका करिहीके छोडूंगा तुम चाहो मेरे कहने को सांच जानो चाहो झूठ निदान इसी तरह की दो चार बातें कर हातिम उससे बिदा हुआ और जिस तरफको वह परी गई थी उसी ओरको चल दिया थोड़े दिनमें उस पहाड़को नांघके दूसरे पहाड़पर जा पहुंचा जो उसपर चढ़ा तो क्या देखता है कि बहुत से वृक्ष मेवाके और बहुत से फूलोंके लहलहा रहे हैं और उनके आगे एक जगह बहुत अच्छी दृष्टि पड़ी जब वहां गया तो देखा कि चारहुं तर्फ और बहुत घने लगे हैं तो शीतल छाया देख वहां एक मकानमें बड़ी खुशी से गया और वहां जाके जो लेटा तो जाते ही सो रहा जब सन्ध्या हुई तो चार परी आईं जब मसनद बिछाके बैठीं तब हातिमको देखके कहने लगीं कि यह कौन है और यहां कैसे आया है इससे पूछना चाहिये यह आपसमें बतलाके हातिमको जगाके पूछने लगीं कि हे मनुष्य तू यहां किस तरहसे और काहे को आया है हातिमने ज्यों हीं उनका बोल सुना त्यों हीं चौंक पड़ा तो क्या देखता है कि चार परी आभूषण भांति २ के पहरे उसके सिरहाने खड़ी हैं यह उनको देखके उठ बैठा और कहने लगा कि यहां मुझको मेरा ईश्वर लाया है और मैं अलका-पर्वतपर अलगन परीको देखने को जाता हूं और मेरे जानेका भी यह हेतु है कि वह एक आदमी से सात दिन की अवधि बदके आई थी सो सात वर्षमें आजतक नहीं गई और वह अनाथ दीन उसके विरहमें मरनेके निकट पहुंचा है इसलिये मैं जाता हूं कि उसको समझाऊं क्योंकि किसी से अवधि बदना और फिर उसका प्रतिपालन न करना इस कामका परिणाम अच्छा नहीं है इस बातको सुनके वह हंसके कहने लगीं कि अलगनपरी तो अलकापर्वत की शाहजादी है उसे भला कौनसा काम था जो किसी मनुष्य से मिलने की अवधि बदती हमको तो तू बावला सा लगता है जो तू अलका पर्वतपर उसके देखनेको जाता है और यह भी नहीं तो तू वहांसे सजीव नहीं लौटेगा तब हातिमने कहा कि होनी होगी सो तो होहीगी मैं तो बिना गये नहीं मानूंगा तब उन्होंने कहा कि जो तू आजकी रात हमारे घरमें बिहार करै तो सबेरे हम तुझे अलकापर्वत की राह बता दें हातिमने कहा कि बहुत अच्छा मैं भी चाहता हूं यह काम बने निदान उस रातको तो उनके साथ बिहार किया और सबेरा होते ही उन परियोंको साथ लेके अलकापर्वतकी राह ली जब सात दिन तक उनके साथ चला गया तब एक जगह से वे कहने लगीं कि बस आगे हम नहीं

जांयगी क्योंकि अब आगे हमारी सीमा नहीं है अब तू सीधा चला जा कई दिन में अलकापर्वत पर पहुंच जायगा हातिम उनसे बिदा होके आगे चला तो एक मास बीते एक दुराहे पर जा पहुंचा और रात को वहांहीं ठहर रहा जब चार घड़ी रात बीते एक गांव की तरफ से रोने का शब्द सुनाई दिया तो वह सुनके हातिम अपने मन में कहने लगा कि हे हातिम तू ईश्वर की राह पर कमर बांधके किसीके दुःख को सुनके उसकी सुध न लेवे तो ईश्वर के आगे क्या उत्तर देगा और इस सृष्टि में तेरा नाम कौन लेगा इसलिये अपने सुख को छोड़ और इस दुखित को सुख दे और जो तेरे हाथ से इस संसार में किसी का काम बने तो तू भी निस्संदेह इस सृष्टि में भलाई पावैगा यह सोचके उठ खड़ा हुआ और रातभर चारोंओर ढूंढ़ता फिरा सबेरा होतेही जहां से वह बोल सुनाई पड़ा था वहां जाय पहुंचा तो क्या देखता है कि एक जवान स्वरूपवान नगारा लिये रहा है हातिम ने पूछा कि हे जवान तू कौन है और तुझे किस दुःखदाई ने सताया है और इस बन में डाला है तू मुझे अपना हाल कह कर सुनावे जब उसने हातिम को अपनी ओर दयालु पाया तो और भी अधिक रोय रोय कहने लगा कि मैं सिपाही हूं अपने घर से रोजगार के लिये निकला था सो राह भूल के यहां आय पहुंचा और इस नगर निवासियों से पूछने लगा कि इस नगर के हाकिम का क्या नाम है तो उनमें किसी ने कहा कि इस नगर का हाकिम मागवी है मैं इस बात के सुनते ही भागा और एक ओर बन की राह ली तो दैवयोग से राह में एक बाग अति ही रमणीक दिखाई दिया देखता मेरा मन उसके देखने को बहुत ललचाय मानहुआ निदान मैं घोड़ा से उतर उसके भीतर गया तो क्या देखता हूं कि एक झुण्ड परियों का सुनहरे कपड़े पहिने दिखाई दिया तब मैंने अपने मन में सोचा कि हो न हो किसी राजा बादशाह की स्त्री यहां फुलवाई देखने को आई हैं इसलिये यह बात भली नहीं है कि किसी की स्त्रियों को कुदृष्टि से देखूं इस बात को सोचके मैं भीतर से निकलने लगा तो उन स्त्रियों ने अपनी मालिकन से कहा और वह ससवर बादशाह की बेटी थी वह अपने ठौर से उठके मुझे एक मनोहर मकान में ले गई और मेरे साथ बैठके प्रेम की बातें करने लगी। तने में उसका बाप उस बाग में आय पड़ा तो पहिले तो मेरे घोड़े को देखके पूछा कि यह घोड़ा किसका है किसीने मारे डरके उत्तर न दिया फिर आगे बढ़के मुझे अपनी बेटी के पास जो बैठा देखा तो मारे क्रोध के आग बबूला होगया और ज्योंहीं चाहा कि अपनी बेटी का शिर पकड़के दे मारे त्योंहीं वह मारे...

मेराकुछअपराधनहींहै पहिलेअपराधका निर्णयकरलीजिये पीछेजो
चाहियेसोकरो यहसुनकर वहठहरगया इतनेमें दाईनेआकेकहा
महाराजअबशाहजादी युवाहुईहै और इसशहरमें आपके दामाद
होनेकेयोग्यकोई नहींदिखाईपड़ता और यहकिसी बड़ेआदमीका
बेटाहैबड़ाहीशीलदिखाईदेताहै क्योंकिवहमारेलाजकेअभी बाद-
शाहजादी से बोला भी नहीं इससे उचित है कि इन दोनों का
विवाहकरदो और जो इननिर्दोषोंको मारोगेतो लोकमेंतो नाम
धराजायगा और परलोकमेंभी ठौर न पावोगे और इनकी हत्या
तुम्हारेऊपर रहेगी उससमय तुमईश्वरको क्या उत्तर दोगे यहसुन
उसनेअपनी बेटीसेविवाहके विषयमेंपूछा तो उसने कहा कि मैंने
आजतक किसी अनचीन्हेको नहीं देखा पहिले इसीको देखा है
इससे मैंनेइसीको अपनापति मानायह सुनकेउसने कहा कि बहुत
मुझपर पहिलेयह मेरेतीनवचन पूरेकरै तबमैंबोला कि जोआपकी
आज्ञाहो सोकरूं तब उसने कहा कि एकतो यह कि एक जोड़ा
परीरूजानवरोंका मुझेलादे और दूसरेयहकि लालसांपकामुहरा
लादे और तीसरे यह कि खौलत घीकी कड़ाहीमेंस्नान करले तबमैं
इसकाविवाह तेरेसाथ करदूंगा मैं यह सुनके घबड़ाया और इसी
बहानेसे वहांसेनिकलभागा और दोवर्षसे इसीवनमें रोता फिरता
हूंनतो भूखप्यासों के मारे इतनीसामर्थ्य है जो अपनेदेशको जाऊं
औरन इतना होसक्ताहैकि उसकीतीनबातपूरीकरकेअपनी प्यारी
सेमिलूंयह सुनकेहातिम बोलाकि हे जवान तूधीर्यधर मैं उसकी
तीनोंबातें पूरीकरके तेरीप्यारीसे तुझे मिलादूंगा क्योंकि ईश्वर ने
मुझेइसीकामकेपैदाकियाहै किप्रत्येकपुरुषकेदुःखमें कामआऊं यह
कहके सोचनेलगा कि वहस्यारमेरे घावअच्छे करनेकोमाजिन्दान
के वनमें से परीरूजानवरका शीघ्रलायाथा अवश्यही उचितहै कि
उसीस्यारसे मिलाचाहिये यहसोचके उनस्यारोंकेपासचलातो थोड़ी
दूरचलके क्या देखता है कि एक कोटकीखाई के चारोंओर बहुतसे
आदमी लकड़ीघरके अग्नि लगाने को यत्नमें हैं यहदेखके हातिम
ने पूछा कि यहां आग लगाने का क्या कारण है इतने में किसी
ने कहा कि एक जानवर किसी ओर से आया है और तीन
चार आदमी नित्यखाता है जो कुछेकदिन भी यह रहा तो सब
नगर थोड़ेहीदिनोंमें उसकेभोजनहीं भरको होजायगा यहसुनके
हातिमकहनेलगा कि इसबलायको किसीभांतिसे इनके पाससेटाल-
नाचाहिये यहसोचउसकेपास मैदानमें एकगढ़ा खोदवाके बहुतसी

सूखीलकड़ियोंसे पटवाके उसकेभीतरबैठा और जबपहरभररातगई
तब उसजानवरको आतेदेखा कि पहाड़सा चला आताहै जबनि-
कटपहुंचा तो हातिमने पहिचाना कि इस जानवरका नामशमन
है और इसके आठपांव और सातशीशहैं उनमेंसे एकशीशहाथी
कासाहै और शेषबाघकेसे और जो हाथीकासा शीशहै उसमें
नौ आंखें हैं जो उनमेंसे बीचवाली आंखमें चोटलगे तोयह ऐसा
भागे कि फिरकभी इसओरको न आवे इतनेमें वहमुख फैलाकर
शहरकीओर चला जब नगरनिवासियोंने देखा कि आनेचाहताहै
तो उसकिलेके चारोंओरकी लकड़ियोंमें आगलगादी जबउसका
ज्वाला ऐसाऊंचा उठा कि नगरका कोट दिखाई नदेनेलगा तब
वह चारोंओर इधरउधरफिरनेलगा तो उसहाथीके शीशसे एक
ऐसाशब्दाघात किया कि सबनगरनिवासी डरगये और चारोंओर
कीपृथ्वीथलकउठी और फिरते२ वह हातिमकी ओरभीआनिकला
तो हातिमने तानके एकतीर बीचकी आंखमें ऐसामारा कि वार
पारहोगयातो वहमारेपीरके पृथ्वीपर लोटनेलगा और ऐसीचिं-
घारमारीकि जङ्गलकीसम्पूर्ण धरतीहालउठीफिरथोड़ीदेरमें ऐसा
उठकेभागाकि फिरपीछे फिरकेन देखाऔरहातिम उसखोहसेनि-
कल रातभर तो वहांहीरहा जब सबेराहुआतो उसनगरके नि-
वासी पूछनेलगे कि हे प्यारे तूउसको देखके क्योंकर जीताबचा
हातिमने कहा कि मेरेशिरपर ईश्वर देखनेहाराथा उसीकीदया
से मैंने मारा और तुम्हारे शिरसे यहआपदा टली और उसका
नाम शमनथा तब उन्होंने कहा कि इसबातको हमसत्य क़ैसेमानें
तो हातिमने कहा कि आजकीरात तुमसबकेसब कोटकी छतपर
बैठेजागाकरोजोवहआवे तबतोमैंझूठा नहींतोसच्चा जानियो जब
सबोंने वैसाहीकिया और वहरातभर न आया तबसबेराहोतेही
सब हातिमके पांवपर आनपड़े और बहुतसा रुपया मोहर और
सैकड़ोंयार जवाहिरोंके उसकेआगे लाधरे तब हातिमने कहाकि
मैं निहङ्ग अकेला इतनाधन लेके क्याकरूंगा इससे यह उचितहै
कि इसको दीनदुखियोंको देदो जिससेलोक परलोकमें बड़ाई पावो
यहकह आप वहांसे बिदाहोके एकओरको चलदिया तो राहमें
देखा कि एक सांप और न्योला दोनों आपसमें लड़तेहैं और मा-
लूमहोताहै कि दोनोंमें कोईनकोई माराजायगा इतनेमें हातिम
ने ललकारकर कहा कि हे जवानो तुमदोनोंमें ऐसी कौनशत्रुता
है जो लड़मरतेहो तब सांपने कहा इसने मेरेबापको माराहै मैं

इसको खाऊंगा यहसुनके न्योला बोलाकि वहतो मेरा भोजन था मैंने मारखाया और इसकोभी मारखाऊंगा तबहातिमबोलाकि हे न्योलेजो तुझेमांसही खाना है तोमेरीदेहमेंसेखाले और सांपसे कहा कितू अपनेबापकाबदलाहीलियाचाहता है तो मुझेमारजोकितनेक दिनसे परमेश्वर की राहमें अपनाशीश अर्पण करचुका हूं यहसुन के दोनों लड़नेसे रहगये तबन्योलाने कहा कि तू मुझे अपनीदेह कामांसदेनेको कहाथा सो तुझेदे मैं भोजनकरूं और अपने घरकी राहलूं तबहातिमने कहा कि जहांका मांसतू मांगेवहांका मांस देदूं तब न्योलेने कहा कि अपने गालका मांसदे ज्योंही हातिम ने छुरीसेअपना गालकाटना चाहात्योंही न्योलाबोलाकि ठहरजा हे जवान जल्दी मतकर यहसुनकेहातिम ठहरगयातब न्योलाबोलाकि मैंनेतो यहबात केवलतेरी परीक्षा केलिये कहीथी धन्यहै मुझे और तेरे माता पिताको यह कहके दोनों मनुष्य की सूरत होगये तो हातिमने पूछा कि हेसिचो यह क्या भेदहै कि अभीतो तुमदोनों हासिये और अबमनुष्य होगये तब न्योलेने कहा किहमदोनोंजिन हैं और मैंने इसके बापको इसलिये माराहै किमैं उसकी बेटीके ऊपर मोहितहूं और वह अपनी बेटीका विवाहमेरेसाथ नहीं करताथा इसलिये उसको माराहै और यह भी अपनी बहन का विवाहकरने से अपने बापकी भांति इनकार करताहै इससे इसेभी मारूंगा तबहातिमने कहाकि हेजवान तू अपनी बहनका विवाह क्यों नहीं करताहै तबउसने कहा किमैं इसकी बहनको चाहताहूं जोयह मेरेसाथ अपनी बहनको ब्याहदे तो मैंभी अपनी बहनका विवाहइसके साथकरदूं तबन्योलेने कहा कि मेराबापअभी जीता है वह नहीं मानता मेरा कुछ बस नहीं तबहातिम ने कहा कि तू अपने बापके पासमुझे लेचल तो मैं उसको समझाय बुझायलूंगा निदानहातिम और वे दोनों जिनशहरको ओर चले थोड़ी दूरचले किन्योलाने कहा मैंअब महलमें जाताहूं और तुझेयहांके लोगपक-ड़के मेरेबापके पासलेजावेंगे वहांतुझको जैसे बनैतै करना हातिम ने वैसाही किया वहांके जिन उस बादशाहके पास पकड़के लेगये और उस बादशाहका नाम हयूजथा उसने हातिमसे पूछा कि हे मनुष्य तू हमारे शहरमें आनेका कारण बता तब हातिमने कहा किमैं तोतेरे भलेको आयाहूं यहसुनके बादशाहने कहा कि भला तू मनुष्यहोके जिनोंके साथक्या भलाई करैगा तबहातिमने कहा कि मुझेमालूम होता है कि तू अपने बेटाका जीना नहीं चाहता

यह सुन बादशाहने कहा हेप्यारे मेरे तो यही एक जोता पुत्रहै और मैं तो इसको अपने प्राणोंसे भी अधिक मानताहूं तब हातिमने कहा कि जोतू अपने पुत्रके प्राणोंकी रक्षा चाहताहै तो मेरा कहना मान नहींतो आजकल्हमें माराही समझना यहसुनके बादशाहने कहा कि हेप्यारे तैंने मेरे साथ अतिही भलाई करी इसका भेद बयान करके बता तब हातिमबोला कि तेरे बेटाने किसीके बापको मारडाला है वह तेरे बेटाको माराचाहताहै आज मैंने उनदोनों को जंगल में लड़ते देखा और निकट होथा कि दोनोंमेंसे एक मरे इतनेमें मैंने उसके हाथसे तेरे बेटेको छुड़ाया परन्तु बकराकी माकबतकसिन्नी बांटेगी कभी न कभी माराही जायगा क्योंकि उसकी बहन के ऊपर तेराबेटा मोहितहै और वह तेरीबेटीकी प्रीतिमें फसाहै इसलिये तू उनदोनोंका बिवाहकरदे जिसमें आपसमें सफ़ाई होजाय हयूजने हातिमकी बातको माना और उसी साइत अपनी बेटी उसकेसाथ ब्याहदी और उसकी बहन अपने बेटेसे ब्याहली जब दोनोंकी अभिलाषपूरीहुई तब हातिम बादशाहसे बिदा होनेलगा तो बादशाहने कहा कि हे जवान इसभलाईके बदले मुझसे कुछद्रव्यले यहसुनके हातिमने कहा कि बदलालेना मेरा काम नहीं तब हयूज बोलाकि अच्छा जो तू द्रव्य नहीं लेता तो मेरा यह आसा अर्थात् दण्ड ले इसमें कई गुणहैं कि जो सांप और बिच्छू काटे तो उनका विष न व्यापै और न जलनि होय और जो उसके नीचे होरहै तो आगमें न जले और जो कोई जादू अर्थात् माया करै तोभी इस आसा वालेको न व्यापै और जो राहमें नदी आवे तो वह नावके समान होके पार उतारदे और एक मुहरा तुझे देताहूं उसमें यह गुणहै कि राहमें कालखेत अथवा कालासांप मिलै और उसको मुखमें धरले तो कुछ भय न हो उनमेंसे किसीका विष न व्यापैगा हातिमने वे दोनों वस्तु लेली और उससे बिदाहो रातदिन चलागया कितेक दिन पीछे एक महानद दृष्टि पड़ा कि उसकी लहरें सुमेरुगिरिके कंगूरोंको दबानेकी अभिलाष करतीहैं जब हातिमने चारोंओर आंखफैलाके देखा तो किसीको आतेजाते न देखा इतनेमें उसको हयूजके आसा का गुण सुधहुआ तो हातिमने उसको नदीमें डालदिया वह नावके समान होगया हातिम उसके ऊपर चढ़लिया और चलते२ जब माझ धारमें पहुंचा तो एकघड़ियाल हातिमको पकड़के नीचेको लेगया और सातको सतक चलागया कहींदम नलिया जबभरतीमें पांवलगा तो हातिमको एकघड़ियाल पहाड़ के समान दिखाई दिया वह

बड़ी आधीनतासे कहने लगा कि हेजवान यहमेरा मकानहै सो केकड़ेने बरबस छीन लिया है सो तू दिलादे तब हातिमने कहा किमालूम होताहै कि वहतुझसे बलवानहै और तूहीनहै तबउस घड़ियालने कहा कि मैं क्या करूं इससमय वहहै नहीं नहीं तो वहचाहैता अपने आंकड़ोंमें पकड़केमारडाले इस समय वहचरने को गयाहै इतनेमें वह मुहं फैलाये आपहुंचा उसको देख घड़ियाल मारेडरके हातिमके पीछे जाछिपा हातिम को वह कोटके समान दिखाई दियाऐसाथाकि एकआंकड़ातोउसका पूरबको और दूसरा पश्चिमको पहुंचाथा इतने में उसकी दृष्टि जो घड़ियालपर पड़ीतो उसने एक शब्दाघात किया तो वह घड़ियाल थर थराने लगा और हातिमभी आगापीछा करमनमें कहनेलगा हेभगवान इससे कैसे बचूंगा इतनेमें हातिम हयूजका आसालेके खड़ाहुआ वह केकड़ा देखतेही जहांकातहां रहगया तबहातिमने पुकारके कहा कि किसीको दुखदेना अच्छी बातनहीं है क्योंकि जो कोई किसी को दुखदेताहै वह अपनीराहमें कांटेबोताहै तू इस दीन घड़ियालको काहेको दुखदेताहै क्या तेरेरहनेको और कहींठौर नहींहैयहसुनके केकड़ा कहनेलगा किहमदोनों जलकेजीवहैंआपसमें समझलेंगेमनुष्यसे क्याकाम है जो हमारे बीचमें बोलेतब हातिमने कहा कि यहतो सत्यहै परजिस ईश्वरने सम्पूर्ण सृष्टिको बनायाहै उसने कुछजीव पानीमेंरक्खेहैं वेजल चरकहाते हैं और कुछपृथ्वी पर उनको थलचर कहतेहैं और वायुमें रहते हैं उनको नभचर कहतेहैंपरन्तुसब उसकेनिकटसमानहैं इसलिये वहपावनपुरुषयह नहीं चाहता कि एक दूसरे को दुखदे तबउस केकड़ेने कहा कि अच्छा अबतो मैं तेरे कहने से छोड़देता हूं फिर तुझे यह कहां पावैगा जोतुम इसको सहायता करोगे और तुझे और इसेतो क्या तुमनहीं जानतेहो कि यहकहावत प्रसिद्ध है (जलमें रहके मगर मच्छसे बैर) तब हातिमने कहा कि रेनास्तीक अब जाना कि तू किसी पर दया नहीं करता है और ईश्वरको भी नहीं मानता इसलिये अभीतेरा कुछनहीं बिगड़ा है और जोतू अपनेप्राणचाहताहै तो किसीकोसता नहींनहीं तो अभीमारके टुकड़े उड़ाये देताहूं यहसुनके केकड़ा हंसकर कहनेलगा कि अबनइसको और तुझे जीता छोडूंगा यह कहके ज्योंहीं केकड़े ने चाहा कि हातिमको पकड़के दोटूक करै त्योंहीं हातिम ने हयूज बादशाह का आसाऐसे जोरसे मारा कि उसके आंकड़े कटके खीरा के समान

गिरपड़े जबकि कड़ेने देखा कि मेरे पास कुछ हथियार नहीं रहा तो वहांसे भागा और मगर उसकेपीछे दौड़ा तब हातिमने उसे डांटके कहा कि रे कायर अबका हेको उसे दुःख देता है और जो तू इसको दुःख देगा तो मैं तुझे मारडालूंगा मगर यह सुनतेही डरके मारे खड़ा रहगया हातिमने अपनी आंखें मूंदीं और अपने बेड़ेपर चढ़के नदीके किनारे आयलगा और माजिन्दान बनके निकट जापहुंचा तो एकवृक्षकी छाया में बैठके सोचनेलगा कि ईश्वर की दयासे मैं यहां तो आनपहुंचा परन्तु अब उस जानवरका जोड़ा ढूंढना चाहिये इतनेमें रात होगई जबरातको परीन्द चरकरके आये तो एकवृक्षके ऊपरबैठके आपसमें बातें करनेलगे कि एक मनुष्य बड़ा करामाती यहां आया है और हमने उसका नाम हातिम तयका पुत्र सुना है इसलिये हमें उचित है कि उससे चलके मिलें और उससे कुशल प्रश्न पूछें क्योंकि वह सत्पुरुष और हरिदास है यह कहके वे सब हातिमकेपास आये और मीठी२ बातें करनेलगे हातिम उनको देखके बहुत प्रसन्न हुआ और देखा कि उनके मुख तो मनुष्य केसे और शेष शरीर मोरकासा है और ऐसे स्वरूपवान हैं कि जो परीभी देखे तो उसकोभी उनके रूप पर लोभ होवे हातिम से कहनेलगे कि मालूम होता है कि कोई मसखरजादूगर की बेटीकी प्रीतिमें फंसा है इसीसे यहां हमारा जोड़ा लेनेको इतनी विपत्ति भोगता आया है तब हातिमने कहा कि यह तो सत्य है जो अपना एक जोड़ा दो तो उस अधमरे विरहीका प्राणराखलें यह सुनके वे आपसमें कहनेलगे हममेंसे कोई ऐसा है जो अपने बच्चों का एक जोड़ा दे यह सुनके एक उठा और अपने बच्चोंका एक जोड़ा लेके हातिमको देके कहनेलगा कि इनका तू मालिक है जो चाहे सोकर और जहांचाहे तहां लेजा हातिम उस जोड़ाको लेके उनसे बिदा हो मसखरजादू केनगर की राहली थोड़े दिनोंमें दुःख सुःख भोगता उस जवानके पास आ पहुंचा यहां वह मारे शोकके शिरनीचा किये बैठा था उससे मिलकर कहनेलगा कि हे जवान अब हर्षित हो तेराकाम पूरा होगया वह उसजोड़ाको देखतेही हातिम के पावोंपर गिरा हातिमने उसको उठाया और राहका सब दुःख सुख सुनाके कहा कि तू इनको मसखरजादूगरकेपास लेजा और यह सम्पूर्ण हाल उसे सुनाके कहना कि यह जोड़ा मैं लाया हूं निदान वह सिपाही उसजोड़ेको लेके मसखरजादूगरकेपास गया मसखरजादूगर देखके बहुत प्रसन्न हुआ और कहनेलगा कि यह तेरा काम नहीं है इसमें किसीकी सहायता है और जो तू ना-

थाहै तो वहांका सबहाल ठौरठिकानेका बतादे जिसमें निश्चयहो जब उस जवानने सबहाल बताया तो मसखरजादूगर सुनके बहुतप्रसन्न होके कहनेलगा कि यह सब सत्य है अब तू जा और लालसांप का मुहरा ला तब उस जवानने कहा कि एकदृष्टि मुझे उसचन्द्रमुखी को दिखादे जिससे चित्तको संतोष होजाय और चलनेको सामर्थ्य हो यह सुनके मसखरजादूगरने अपनी बेटी से कहा कि थोड़ी देर खिरकी में बैठके अपने रूपकी छटा अपनी बिरहके रोगी को दिखा दे तब वह खिरकीमें से झांकी निदान वह दिन तो देखा देखीही में बीता फिर उसने कहा कि अब लाल सांप का मुहरा लेने को जाता हूं जो तू कुछ जानता होतो बतादे कि वह किस दिशा और किस देश में रहता है तब उसने कहा कि मैंने अपने प्राचीनोंसे सुना है कि वह कोह काफ़के लाल बनमें रहता है यह सुनके वह उससे बिदा होके हातिम के पास आ कहने लगा कि हे प्यारे अब उसने लालसांप का मुहरा मांगा है तब हातिमने कहा कि तू उसका कुछ पता भी पूछआया है तब उसने जो कुछ सुनाया सो कहदिया यह सुन हातिमने कहा कि हे प्यारे तू घबड़ा मत मैं तेरे कामको तनमन से करता हूं और जाता हूं ईश्वरकी दयासे तेरी अभिलाष बहुत शीघ्र पूजैगी निदान ऐसी बातें कहके कोहकाफ़ की ओर चला चलते २ कई दिन पीछे दैव योग से एकदिन प्रातः काल दिशा जंगलको जाताथा तो क्या देखता है कि एक बिच्छू सतरंगा मुर्गीकी बराबर चला आता है यह उसको देखके मनमें कहने लगा कि मैंने अपनी उमरमें ऐसा बिच्छू कभी नहीं देखा है कि वह बिच्छू जाके किसी कोनेमें छिपरहा हातिम उसको दिनभर खोजा किया और बारबार मनमें कहै कि देखना चाहिये रातको यह क्या करता है और जो उस जंगल के चारो ओर गांव बसेथे वहांके निवासियों ने उस राही को देखके उसकी पहुनाई करी हातिम ने भोजन किये और अपने ईश्वर के ध्यान में बैठा और उस मैदान में बहुत से पशुचर रहे थे और पशु पालक सो रहे थे इतने में जब राति हुई तो वह बिच्छू पशुओं की ओर को चला और उचक के एक गौके शिरपर बैठा और अपना डंक मारा वह तड़पके मरगई इसी भांति सब गायोंको उनके पालकों समेत मारके फिर उसी पत्थरके नीचे आछिपा सबेरे जब उस नगरके निवासी आये तो क्या देखते हैं कि सब गायें और पशुपालक मरे पड़े हैं और प्रत्येकके पेटसे नीलापानी बहता है तब उन्होंने हातिमसे पूछा कि हे पथिक तू कैसे बचा है तब हातिम ने कहा कि मैंने एक

ऐसी अद्भुत बातदेखीहै कि ऐसीकभीनहीं देखी वहयहहै कि एक बिच्छूसांपके रंगकामुर्गाकी बराबरनिकला उसीने इनसबकोडसा है इतनेमें वहबिच्छूपत्थरके नीचेसे फिरनिकला और उनकेमालिक के सिरपर डंकमारा वहतो तड़पनेलगा और वेसबरोनेलगे और वह बिच्छू जंगलकीओर चलदिया हातिम भी उसके पीछेहोलिया आगे बढ़के क्या देखताहै कि एकशहर दिखाईपड़ा और वहबिच्छू लो-टपोटके सांपहोगया यहदेखके हातिम और भी विस्मित होकहने लगा कि हेपरमेश्वर यहअभी तोबिच्छूथा सांपकैसे होगया और बांबीमें कैसे जाबैठा यहसोचके हातिम वहांहीं बैठरहा और जब पहररात बीतीतब वहसांप बिलसेनिकलके उस शहरकी ओर को चलाहातिम भी उसकेपीछे हो लिया वह सांप झरोखोंकी राहसे बादशाही महलमें घुसगया और बादशाहको उसकेमंत्रीके घरमें घुसा और उसकी बेटीकोकाटके फिरउसी छेदमें जाबैठा सबेरा होतेही नगरमें कोलाहल मचा कि आजरातको बादशाह और मंत्रीकी बेटीको सर्पने डसा बड़ेसोच की बातहै कि इन दोनों की अकालमृत्यु हुई इतनेमें जबसांझ हुई तो वहसांप फिरएक ओर कोचला तबहातिम भी आंखबचाये उसकेपीछे होलिया औरमनमें कहनेलगा कि देखें अबक्या करताहै और कहांजाताहै इतनेमें स-बेराहोतेही एकनदीके तटपर जापहुंचा और वहांबाघकी सूरत बनगया वहांदश बारह आदमी पानी पीने को आतेथे उनमें एक लड़का जो पन्द्रह सोलह वर्षका था उसको उठा लिया और एक कोनेमें जाके उसको चीरफाड़डाला और एक जंगल की राहली हातिमभी उसकेपीछे२ चला थोड़ी दूरचलके एक चन्द्रमुखीस्त्रीका स्वरूपधारण करकेजाबैठा औरहातिमभी एककिनारे ताकलगाये देखाकिया इतनेमें दोभाई सिपाही अपने घरसे नौकरीको गयेथे सो बिदेशसे कमाये लियेघरको जातेथे जब उसके पास पहुंचेतो वहरोनेलगी उसकेरोनेका शब्द सुनके बड़ा भाई जो उसके पास गयातोक्या देखताहै कि एकस्त्रीबैठी रोरहीहै उसको रोतेदेखके वहभीआंसूभरके पूछनेलगा कि हेसुन्दरीतू इसविकटबनमेंकौनहै और काहेको रोरहीहै तबउसने उत्तरदिया कि हेजवान मैं उस पुरुषकी स्त्रीहूं वहमुझेमेरी माकेघरसे लेके आताथा इतनेमें एक बाघइसबनमेंसे निकला और उसेउठा लेगया और मैं अकेलीबैठी रहगई नतोअपनेबापकेघरकीराहजानतीहूं और नअपनीसुसराल कीजानूं इसी सोचमें बैठी हूं कि कहांजाऊं और क्या करूं और

यहभी नहींमालूम कि अबआगेकौन दुःखपड़ैगा और मेरारंडापा कैसे कटैगा तबउसने कहा कि जो कोई तुझे अपने पासराखै तोतू उसकेपास रहैगी यहसुनके उसस्त्रीने कहा कि हांक्यों न रहूंगी नहीं तो इसबनमें मेरा कौनहै जोमेरा दुःख पूछेगा तब उसमर्दने कहा तू मुझे अपना पति मानती है यहसुनके वहस्त्री बोली कि हांमैं तीनबातों परतुझे अपना पतिसमझूंगी तबउसने पूछा कि वहकौनसी तीनबातैंहैं उसस्त्रीनेकहा कि एकतो यह कि तेरेघर में दूसरी स्त्री न हो दूसरे यहकि मुझसे कुछ कामनले तीसरे यह कितू मुझे दुःख न देवैयह सुनके वहबोलाकि मैंतो आप एककुमार पुरुषहूं जबतक तू जीवेगी तबतक दूसरी स्त्री बारांगणाभी होगीतो मैं उसकीओर आंख उठाके न देखूंगा औरमेरे घरपरपरमेश्वर की दयासे बहुतसे दास दासी हैंतुझे कुछकाम न करना पड़ेगातू केवल बैठीरहना सबतेरी आज्ञानुसार कामहोता रहैगा और तू- तो इसको आपजानसक्ती है कि किसीनेभी अपनी प्यारी सताई है तब उसने कहा कि इसबातको मैं तनमनसे मानतीहूं यहकह उस मर्दने उसका हाथपकड़लिया और आगे लेचला हातिमभी उसके पीछे२चला थोड़ी दूर चलके उस स्त्रीने कहाकि मैं तीन दिन से भूखी प्यासी हूंजो कुछ भोजन न मिलेतो पानीतोपिलादे क्योंकि मारे प्यास और भूखके देहीं सुखजाती है यहसुन मर्दनेउस स्त्रीको एक वृक्षकेनीचे बैठाल दिया और छोटेभाईसे कहाकितू इसकी चौकसी करऔर आपलोटा डोरलेके पानीको गया जब वहपानी को गयातब पीछे उसके छोटेभाईसे कहने लगी किमैं तो तेरेही लिये इसके साथ आईहूं क्योंकि तेरी सलोनी सूरत मेरेहियेमें बसगईहै नहीं तोमैं ऐसे बूढ़ेके साथकाहेको आती इससे अबतुझे भी उचित है कि तू मुझे अपनी सेवामें राखतब वह बोला कि तू मेरी माताके समान है मुझसे ऐसा कामन होगा फिर वह स्त्री बोली कि यद्यपि मैं उसकी भार्य्या बनीहूं परतेरी प्रीति में फंसी हूं केवल तेरी सूरत देखा करूंगी यह सुन उस पुरुषने कहा कि यह भी नहीं होसक्ता तब उस स्त्रीने कहाकिजो नहीं मानेगातो मैं तुझे झूठा अपराध लगाऊंगीकि यहमेरे साथ व्यभिचारकरने को कहता था तबभी उसनेकहाकि तुम चाहैजितना कहोपरन्तु तुम्हारी बात न मानूंगा और हातिमभी एक कोनेमें खड़ा उन की बातें सुन रहाथा इतनेमें बड़ाभाई आय पहुंचा जब उसस्त्रीने उसको निकट देखा तब अपने शिरके बालबखेर रेत डाल कारण

करके चिल्लानेलगी जबवह पानीलेके पास पहुंचा तो कहनेलगा कि मैं तो प्यारी तेरेलिये पानीलेने को गयाथा न तोमुझे किसी बाघने मारा न बराहने तू काहेको ऐसी रोरहीहै तब उसने कहा कि भले आदिमी कोई अपनी स्त्री ऐसे नीच व्यभिचारी के पास छोड़के जाता है देख ज्योंही तू पानीको गया त्योंहीं मेरा हाथ पकड़के अपनीओर खींचा और मैंने अपनी ओर को परमेश्वरने मेरी लाज राखी जब मैंने बहुतेरा उपाय कियापर देखा कि यह मुझे भ्रष्टही किया चाहता है तब चिल्लाने लगी परन्तु कोई मेरी सहाय को न आया। और यह कहताथा कि तू मुझे अपना पति मान मैं तेरे योग्य हूं क्योंकि तूभी चौदह पन्द्रह वर्षकीहै और मैंभी सोलह सत्रह वर्ष का हूं और मेरा भाई तेरे योग्य नहीं है और जो घातपाऊंगा तो अपने बड़भाई को मार डालूंगा यह सुनतेही बड़ा भाई मारेक्रोध के थरथराने लगा औरकहनेलगा कि रे हत भाग्य कोई अपनी माताके साथ ऐसा काम करताहै जो तूने करने का अनुमान कियाथा उसने बहुतेरी सौगन्दें खाईं पर एक नमानी अंतको गाली गलौजकीबात पहुंची और दोनों अपने२ शस्त्र लेके लड़ने को उद्यत हुये इतनेमें बड़े भाई की तो तलवार चली और छोटेका कटार निदान दोनों उसीठौरसमाप्तहुये और वह स्त्री भैंस बनके आगे चली हातिम भी उसके पीछे होलिया वह एक नगर के निकट पहुंची हातिम भी उसके साथ २ चला गया उस गांवके निवासी उसको पकड़ने दौड़े उसने कितनोंको तो लातों से मारा और कितनों को सींगों में छेदलिया और एक बनकी ओर चलदी और वहां जाके एकवृद्ध पुरुष का स्वरूप धारण किय तब हातिमने सोचा कि अब इससे यह भेद पूछना चाहिये कि यह क्याकारणथा निदानहातिमने पुकारके उसवृद्धको खड़ाकिया वहहातिमका बोलसुनके ठहरा और कहनेलगा कि हे हातिम तू अच्छा है क्याकहताहै कह जब हातिमने पूछा कि तुमने मेरा नामकैसेजाना तबउसने कहा कि तेरीतोकौन चलावे मैंतेरे बाप का भी नामजानता हूं परइससे तुझेक्याकाम है जो तुझेपूछना हो सो पूछ क्योंकि इससमय मुझेदूसरे कामकीजल्दीहै अन्तको हातिमनेजो२ देखायासो सबपूछा यहसुनके वहहंसके कहने लगा कि तुझेइसके पूछने से कौन प्रयोजन है एकदिन तेराभी ऐसाही हाल होगा तबहातिमने कहा कि जबतकमुझे सब समझाय न देवोगे तब तकतुमको नछोड़ूंगा हातिमकीयहबातसुनकेबूढ़ेनेकहा किमेरानाम

मलकुलमौत अर्थात् मृत्यु है जैसी परमेश्वरकी आज्ञा होती है वैसे ही मैं उसको भुगताकरता हूं यह सुनके हातिम बहुत प्रसन्नहो पूछने लगाकि अब बतावोकि मेरी मृत्यु कहां है और किसप्रकारसे मैं मरूंगा तब उसनेकहा कि अभीतो तेरी आयुर्बल आधी भी नहीं बीती है जब तू पचासवर्षका होगातब तू कोठेपरसे गिर पड़ेगा और तेरी नाकसे इतनारक्त बहेगा कि तू मरजायगा परंतु अभीतेरी आयुर्बल बहुत है इसलिये जो कामतेरे हाथसे भलाहो उसमें ढील न कर यह सुनके हातिमने ईश्वरको दण्डवत किया और फिर उठायातो वह बूढ़ा आंखोंके आगेसे लोपहोगया फिर हातिमने भी लालबनकी राहली कईदिनमें कालेबनमें पहुंचा और वहांकेसांप मनुष्यकी बास पाके दौड़े हातिम हयूज का आसागाड़के बैठगया सांपोंने हातिम को चारोंओर से घेरलिया रातभर उसको घेरे बैठेरहे सबेराहोतेही अपने २ ठौरगये हातिमने भी अपनी राहली फिर चलते २ श्वेत बनमें पहुंचातो वहांकेश्वेतसर्प भी उसीभांति हातिमको रातभर घेरे रहे और सबेरा होतेही सब सांप अपने २ बिलों में गये तब हातिमवहांसे हरेबनमेंपहुंचा तो वहांभी हरेसांप हातिम की बासपाकर दौड़े और उसीभांति वहांसेभी बचा तिसपीछे लालबन में पहुंचातो क्यादेखता है कि वहांकी पृथ्वी सिंगरफसे भी अधिक लाल है जब हातिम थोड़ी दूरचलागया तब सोचने लगा कि आगे कैसे जाऊं न तो पावोंमें चलने की सामर्थ्य और न मुखसे बोल निकलता है हातिम यह खड़ाहो के सोचनेलगा कि यहां थंभने का तो समय नहीं और आगे बढ़नेकीसामर्थ्य नहीं निदान दोनों भांति मृत्यु हुई परन्तु फिरानेहेतु मृत्युभी उत्तम है यहसोचके आगेचला तो कोसही दो कोसमेंउसके पांवोंमेंफफोलापड़गये और हातिम पृथ्वी पर गिर पड़ा तो गिरतेही सम्पूर्ण तनमें छालेपड़ गये और मूर्छितहोगया तब एकपुरुषने उसको उठायके कहा कि हे हातिम धीर्यधर यहसमय अधीरहोनेका नहीं है और रीछकीबेटीवाला मुहराअपने मुखमेंछोड़ले हातिमने ज्योंहीवहमुहरा अपने मुखमें धरात्योंहीं उसपृथ्वीकी उष्णता और प्यासउसी घड़ीजातीरही तब हातिमने उसकेचरण छूके पूछा कि इस पृथ्वीके उष्णहोने का क्या कारण है तब उसनेकहा कि यहगरमी उसलालसर्पके विषकी है और इसपृथ्वीमें उसकेमुखकी फफकारकी अग्निनिकलती है इसी कारण इस पृथ्वीकारंग लालहै नहीतो प्रथमरंग हराथा यहसुनके हातिम आगेबढ़ा और उसबनके आधी दूर पहुंचा होगा कि इतने

सेलाल सांपने हातिमकी बासपाई तोवहांसे फुंकारनेलगा उसका मुखतो चट्टानके समानथा और धरताड़के ट्टक्षसमानथा और उसके मुखकी फुफकार आकाशतक जातीथी और जोमुखसे विषकी वायु छोड़ताथा उसकोझारसे कोसोंकावन राखहोजाताथा जबहातिम उसअग्निमें पड़ातो अधीरहोके कहनेलगा किअबमेरीतो इस अग्निसे हाड़ पंसुरी कुछ नबचैंगी परन्तुवह जोमुहरा मुखमेंपड़ाथा उसीसेथोड़ा२ ठंढापानीनिचुरके उसकेमुखमेंजाता इसकारण कुछ उसकेविषकीअग्नि उसकोनहीं व्यापतीथी इतनेमें जबउस सर्पकी दृष्टिहातिमपर पड़ीतो इसकीओरको विषउगलता हुआचला यह उसीआसा केबलसे निडरथा और उसकाविष इसको तनकभीन व्यापताथा निदान इसीभांति वह सर्परातभर विषकीवायु छोड़ा किया परइसको कुछभी नव्यापी सबेरा होतेही उसनेमुखसे मुहरा उगलदिया और अपनीबांबी में चलागया तब हातिम उस मुहरा के पासआया परंतु उठानेमें डरा कि ऐसानहो कियह तत्ता हो और मैं जलजाऊं इसलिये थोड़ीदेर ठहरजाऊं फिर थोड़ी देर पीछे उसनेअपनी पगड़ीसे एकचिट फाड़के उसके ऊपर छोड़ी जब वहनजली तबउसने उसको उठाके अपनी पगड़ीमें बांधलिया फिर उसबनकी सारीधरती भी ठंढीहोगई और वह मुहरा इसीभांत हुआ करताहै कि जबउसको कोई लेजायतब तीनवर्ष पीछे उसी भांति उसीप्रकारका मुहराफिर उसके पेटमें उत्पन्न होजाता है निदान हातिम उसमुहराको लेकेउस जवानकेपास आया और उसको वहमुहरा देकेसम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया तब वह हाति-मके पैरोंपरगिर हातिमने उनको हृदयमें लगाके कहा कितूअब मसखरजादूगरके पासजा और उसकोदेवह हातिमको लेकेशहर में आया और मसखरजादूगरसे मिलउसकोवह मुहरादेकरकहा किइसकोमैंबड़ीविपत्ति भोगके लायाहूं यहसुन मसखरजादूगरकहने लगाकि पहले मैं इसकी परीक्षा लेलूं तोतेरी बात सत्यमानूं निदानजब परीक्षामें पूरानिकलातो ऊपरके मनसेतो प्रसन्नहोके प्रशंसाकरने लगा परन्तु अंतःकरणमें लज्जितहोके कहनेलगा कि हे जवान अबतुभी एककाम करनेको और रहगया तब उस सिपाहीनेकहा किवहभी बताइये तबउसने अपनेनौकरोंको आज्ञा दी किएक घीके कराह केनीचे सातदिन तक आग जलावो जब वह ऐसागर्म हुआकि उसमेंसे पत्थरभी राखहोके निकले तब मसखर-जादूगरनेकहाकि हेजवान अबतूइसमें कूदकेसजीवनिकलेतोअपनी

प्यारी से मिलैगा यह देखके वह जवान डरकर हातिम से कहने लगा कि हे प्यारे इस अग्नि से मैं किसभांति बचूंगा तब हातिमने उसको समाधान किया और कहा कि ईश्वरका स्मरणकर क्योंकि सम्पूर्ण कार्योंको वही सिद्धकरताहै इसप्रकार समझाके अपनेपाससे लाल वालामुहरा उसकोदिया और कहाकिअबतू जा और उसमेंबुड़की मारके निकल आ ईश्वर चाहेगा तो तेरा बारबांका न होगा निदानवह जवान गया और डरते २ उसकड़ाह में कूदा जब उसने देखाकि सम्पूर्णघी और कड़ाहपानीके समान ठंढाहै तबतोउसमें चारोंओर फिरनेलगा और कहाकिअबआपकी आज्ञापाऊंतो बाहरआऊं जबउसको समखरजादूगरने देखाकि यहनहीं जलातबलज्जितहोके अपना शिरनीचा करलिया.तबहातिमने कहा कि अब लज्जितक्योंहोताहै अपनी बातका प्रतिपालन कर और जोतूकुछ मायाकरनेके विचारमेंहै तो उसके पासभी एकलालमुहराहै तेरी मायाका प्रभाव उसकेआगेकुछन होगा इसबातको सुनके उसने उस जवानकोअपनेहृदयमें लगाबहुतप्रशंसाकी और विवाहकी सामा कर प्रसन्नतामें अपनीबेटीका विवाहकर विनयकरने लगा कि मेरे अब इस बेटीके सिवा और कोई नहीहै इससेइस सम्पूर्ण राजपाट और धनका तूही स्वामीहै निदान जब वे दोनों आनन्दसे अपने घरमें रहने लगे तब हातिम उनसे बिदा हो कहने लगा कि मुझे अभी बहुत से काम और भी करने हैं तब उस जवानने बहुत सी विनय की और उसका मुहरा देके बिदा किया और हातिम ने अलका पर्वत की राहली तो चलते चलते क्या देखता है कि एक पर्वत ऐसा ऊंचा है कि जहां पक्षीकी भी सामर्थ्य पहुंचनेकी नहीं है तब हातिम वहां के किसी निवासी से मिलनेके विचारमें बैठगया किजिससे उससे राह पूछे इतनेमें एक झुण्ड परीजादों का उसको दृष्टिपड़ा हातिमनेउनसे मिलना चाहा परन्तु नमिल सका तब तक एक खोह देखा कि उसके किनारे पर एक सिला धरी हुईहै तब हातिमने कहीं राह न पाई तोउसी सिला परसे खसकने का विचार किया निदान उसी पर खसकता२ कुछेकदेर में धरती में जा पहुंचा तो एक बड़ा लम्बा चौड़ा मैदान दिखाई दिया और उसको परमरम्य पाकर बहुत हर्षित हुवा पर सोचने लगाकि वेपरीजादकहांगये मैंनेतो उनको इसी तरफ आतेदेखा था यही सोचता हुआ आगे बढ़ा तो एकमकान दृष्टिपड़ाहातिम उसको मनुष्यों का निवास समझ के आगे चला तो वहां के परी

जाद इसको देखके दौड़े और कहनेलगे कि हे मनुष्य यह मकानतेरे
योग्य नहीं तू यहां मत आ और सत्य२ बताकि तुझे यहां कौनलाया
है और खोहाकी राह कैसे पाई तबहातिमने कहा मुझे यहां तो
ईश्वरही लायाहै और जब मैंने तुमको आते देखा तो मैं बहुतेरा
दौड़ा पर तुमसे न मिलसका और तुम दृष्टिसे लोप होगये जिस
तरफ होके तुम सब आयेथे मैंभी उसी राह होके तुम्हारे पीछे २ चला
इतनेमें मुझे एक खोहा दिखाईदिया और उसी शिलासे खसककर
तुम्हारे पासतक आपहुंचाहूं अब दया करके यह बताओ कि इस
पर्वत का क्या नामहै और यह बाग किसकाहै उन्होंने हातिमसे
कहा कि इस पर्वतका नाम अलका है और यह अलगन परी की
फुलवाई है और अब वसन्तऋतु का आगमन है इसी से हम सब
उसको देखने आये हैं और निश्चय है कल्ह परसों तक अलगनपरी
भी यहां आवेगी परन्तु हम तुझे कहां राखैं तू वृथा माराजायगा
हमको तेरी युवा अवस्था देखके बड़ा शोच होताहै तब हातिमने
कहा कि मेराकोई यहां ठिकाना नहीं परन्तु अहोभाग्य जिसके
लिये मैं इतनी विपति झेल के यहां आया सोभी शीघ्रही आया
चाहती है यह सुनके उन्होंने पूछाकि तेरा उससे ऐसा कौनकाम
है जो तू उससे मिलने आया है भला कहां तू मनुष्य और कहां
वह परियों की बादशाह तेरी और उसकी परचै कैसी है क्योंकि
बुधजनतो इस प्रकार कहतेहैं कि बैर प्रीति और सगाई तो समा-
नहोंकी भलीहोतीहै यहसुन हातिमने कहाकि परीकोचाह मनुष्य
की होती है और परी मनुष्य की चाह करतीहै यह सुनके वे सब
क्रोधातुर होकर कहने लगे कि मालूम होता है तू बावला हो
गयाहै क्योंकि जबकोई अपने प्राणोंसे हाथधोताहै तभीऐसी ठौर
आकेढिठाईकरताहै ऐसी२ बातें करके वे इसकेमारनेको उद्यतहुये
तब हातिमने अपना शीश नीचा करदिया तो वे आपसमें कहनेलगे
कि यह कैसा मनुष्यहै कि न भगाने से भागे और न डरपाने से डरै
और न किसीसे लड़े कोई कैसे इसको सतावे तब फिरउन्होंने कहा
कि हमकोतेरेऊपरदया आतीहै इसलिये तू यहां से चलाजा नहींतो
जीता न बचेगा तब हातिमनेकहाकि मैंतो परमेश्वर की राहमें अपना
शीश अर्पि चुकाहूं मुझे मरनेसे कुछ डरनहींहै क्योंकिजो कोई अपने
को ईश्वरको राहमें लगाता है वह उसीकी प्रसन्नताको देखाकरता
है उसको अपने मरनेजीनेसे कौनकाम है यहसुनके वे बहुतदयालु
हो कहने लगे कि जो तुझे अलगन परीके देखने की चाह है तो

हमारेसाथ आ हमतुझे एककोनेमें बैठादेतेहैंपरन्तु जुगनूकोसूर्यसे कौनसमझता निदान एककोनेमें लेजायभांति२के भोजनकराये और तीनदिनतक उसको वहांरक्खा फिरवे पूछने लगेकि सत्य २ बता तेरेआनेका क्या हेतुहै तबहातिमने कहा कि मुझे अलगन परीसे यहकामहैकि वह एकपुरुषसे सात दिनकी अवधि बदिके आईथी और सातवर्ष बीते कि आजतक वहदीन इसके आसरेमें मरने के निकटपहुंचाहै स्वासलेनेकोभी उसमेंसामर्थ्यनहींहै और बारबार यहीउच्चारण करताहैकिवेगि आ अबतेरीबिरहकीअग्नि नहींसही जाती जबमैंने उसकी यह दशा देखी,तबउससे पूछा उसने अपनी व्यवस्था आद्योपांत से कही यह सुनतेहीअधीर होकर मेरी आंखों से आंसूनिकलआये इसलिये मैं उसकोसुधि दिलवानेको आया हूं कि जो वहइसी आशामें मरातो बड़ीअनीतिकी बात है यह सुनके वे बोले कि हमारी यह सामर्थ्य नहीं है जो तेरी बात उससे कहै परन्तु हमसे इतना होसकेगा कि तुझेबांधके उसके सन्मुख ले खड़ाकरैंगे आगेजो तेरेमनमें आवेसो करना और जो हम अपनी ओरसेतुझेउसकेपास लेचलेंतो ऐसानहो किवहहमारे ऊपरक्रोध करै तबहातिमने कहा कि जैसेबने सोईकरो किसीभांति मुझेउसके पासपहुंचादोमैं अपनीसोकरछूटों आगेजोकुछउसबिरहीकी भाग्य मेंहोगासोहोगा फिरकईएकदिनबीते किएकदिन अपनेमहलसेनिकलके उसबागकीओर विधुबदनीसीचली आतीथीउसकोदेख सबके सबउसको आगेलेनेगये और वह उसबागमें एक सुनहरे सिंहासन पर आय बिराजी और सब सखी सहेली चारों ओर यथा योग्य अपने २ आसनोंपर बैठीं तब वे आयके कहनेलगेकि चल हम तुझे अलगनपरी दिखादें जबउन्होंने एकझरोखासे दिखाया कि वहजो धानीजोड़ा और आंचरपल्लू की सारीपहने सोनेकी चौकीपर बैठी है वहीअलगनपरी है हातिमदेखतेही मूर्छितहोगया और उसके नयनकाबाण इसकेकलेजेमें वारपार होगया और उस पुरुष को भुलाय आपही उसके बिरहमें फंसा अन्न जलभी छोड़ दिया जब तीनदिनतक निराहारपड़ारहा तबएकदिन सोतेमेंयह सुनाईपड़ा कि हेहातिम उठ और धीर्यधर यहीतू परायेहेत कामकरनेको कमरबांधे है कि पराईवस्तु देखके लोभकीबस होता है और यहभी कहता है कि जोमैं कामकरताहूं वहपरमेश्वरकी राहपर करता हूं यह सुनतेही चौंक पड़ा और उठके परमेश्वर से प्रार्थना कर बड़ीआधीनतासे कहनेलगा कि हे परमेश्वरमेरा अपराधक्षमा कर

और परीजादोंनेकहाकितुममुझेबादशाहजादीकेपासलेचलोमैं कब-
तकउसकाआसरा देखाकरूंगा क्योंकि वहदीनमेरे आसरेमें वहां
बैठाहै यहसुनजब उन्होंनेबादशाहजादीकोप्रसन्नदेखातबइसकेहाथ
बांधके बागके फाटकपर लेगये और एकउनमें से बादशाहजादीके
पासजाके यों कहनेलगा कि एकमनुष्य बागके किनारेपर हमको
मिलाहै सोहम उसकोबांधके फाटकपरलायेहैं आगेजैसी आपकी
आज्ञाहोसोकरैं उसने आज्ञादी कि उसको मेरे सन्मुख लेआवो
जब उस परीने हातिमको देखातो उसजवानको भूलगई और इ-
सका हाथ पकड़के कुर्सी पर बैठाल पूछने लगी कि हे जवानतेरा
आनाकहांसे होताहै और क्यानामहै और किसकामको जाता
है तबहातिमने कहाकि मैं तयका पुत्रहातिमहूं और यमन मेरी
जन्मभूमिहै ज्योंहीं परीने हातिमका नामसुना त्योंहीं सिंहासनसे
उतर हाथजोड़ कहनेलगी कि मैंने तुम्हारानाम सुनाहै कि तुम
यमनके शाहजादेहो और मैं आपकीबांदीहूं आपनेबड़ी दयाकरी
जोहमारे धामको पवित्रकिया यहसुनके हातिमने कहा कि यह
तो आपकी दया है जोमुझे इतनी बड़ाई देतीहो तब उस परीने
पूछाकि आपकेआनेका क्याहेतु है जो इतनी विपत्ति झेलके यहां
आयेहो हातिमने कहाकिमैं शाहाबाद से अहमरके बनकी ओर
जाताथा किमैंने राहमें एकजवानको वृक्षकेनीचे देखाकिवह रोर
यहीकहता है कि जल्दीआ अवतेरी विरह की आग नहीं सही-
जातीहै तबमैंने उसको बहुत दुखी जानके उससे पूछा तो उसने
अपना और तुम्हारीप्रीतका सम्पूर्ण वृत्तान्तमुझे कहसुनाया और
कहाकि मुझसे सातदिनकी अवधिबदिके गईथी तिसके सात वर्ष
व्यतीतहुये कि आजतक नहींआई और उसकी विरहमें ऐसाबल-
हीनहुआहूं कि मुझमें चलने की सामर्थ्य नहीं रही और उसने
चलतेसमय कहाथा किमैंसात दिन पीछे आऊंगी तूकहीं यहां
सेजाना मति और जायगातो पछितावेगा सो आजतक मैं उसके
आसरेमेंहूं किमैं अपनीप्यारी की आज्ञाकैसे टालूं जो मिलना है
तोयहीं मिलजायगी जबमैंने उसको जान लिया कि इसका सच्चा
विरहहै तबअपना कामछोड़के तुम्हारेपास आया हूं जोतुम उस-
दीनपर दयाकरोतो मानों मुझे मोल ले और उस अधमरेको भी
जियालो यहसुनके उसने कहा कि हे यमनेश तेरे आगे मैं उसको
भूलगई और न वह मेरे योग्य है और न उसका विरह सच्चा है
क्योंकि अपनेप्राणोंके डरसे अलका पर्वत पर पांव भी न धरा तब

हातिम ने कहाकि जो वहसच्चा बिरही न होताते आजतक तेरे आसरेमेंक्यों इतना दुःख सहता और यहसबमानी परन्तु ही उसमें सातदिन की अवध बढ़के आई है इसलिये वह अपनी प्यारी की आज्ञाभङ्ग करना उचित नहींजानताऔर कहताहैकिजो मिलना होगा तोमेरी प्यारीयहांहीं आमिलेगीजोमैंयहांसेभूखप्यासकेमारे कहींचला जाऊं और वहमेरे पीछेआवे और मुझेनपावै तो फिर गया समयहाथ न आवै यहसुनके उससुन्दरीने कहा कितू चाहे जितनी कहपर मैंतोअब उससेप्रीतिनकरूंगी तबहातिमने कहा हे सुन्दरीतेरे क्रोधका क्याहेतुहै देखजो वहबिरही अपने नयन चको-रोंसे तेरे चन्द्राननको नदेखे और इसी आशामें मरगया तो तुझे अपयशहुआ फिर ईश्वरके आगेक्या उत्तरदेगी निदानउसने इसके सीप्रतिउत्तरमें इनकारही कियातबहातिमने कहाकिजोमेरी बात तूनहीं मानतीहै तोमैंभी तेरेद्वार पर अपने प्राणदूंगा क्योंकि तू मेरे परिश्रम और बिपत्ति को तोदेख कि कितनी दूरसे परकार्य्य कोआयाहूं तबउसने कहाकि अच्छातेरे कहनेसे मैंउसे यहां बुल-वाऊंगी परउसके साथमें बिहारनकरूंगी यहसुनके हातिमनेकहा कितू बड़ीकठोर है अबमैं तेरे द्वारपर मरजाऊंगा और मेरीहत्या तेरेसिर जावेगी यहकहके उसके द्वार पर जाके एकटक कोनीचेजा बैठा और अन्न जल त्यागदिया इसीभांति हातिम को सात दिन बीते तबएकदिन स्वप्नमें क्यादेखता है किमानो कोई पुरुष उपदेश करताहै कि हे हातिम यह अलग न परी अतिनिर्दई है इसनेकि-तनोंको अपने चन्द्रमुखके पियूषकी प्यासमें मारडाला है इसलिये तुझेउचित है कि पहलेउसको बुलवाले तिस पीछे वह जो मुहरा तुझे रीछकीबेटीने दिया है उसे उस बिरहीके मुखमें रखके पानी का कुल्लाकरा के उसको दूसरे पानीमें मिलाके किसीभांति इसको पियादे ईश्वरचाहे तो वहसुन्दरीभी उसकी बिरहमें मरनेलगेगी यहसुनके हातिम चौंकपड़ा फिर कुछदेरपीछे सबेराहुआ तो वह सुन्दरी हातिमके पासआके कहनेलगी हे जवान तैंने अन्नजलक्यों छोड़दिया है जोतू मरजायगा तोतेरीहत्यामेरेमाथेपर रहैगी तो मैंईश्वरको क्यामुख दिखाऊंगी तब हातिमने कहा कितू उसको बुलवाले जिसमें वहतेरे चन्द्रमुखावलोकन से अपने नयन चकोरों कोसुखदे तबउस सुन्दरीने कहाकि यहतोमैं तनमनसे करूंगा यह सुन हातिमने कहाकिमैं जाके बुलालाऊं तबवह बोलीकि मैंभी परीजादों को भेजके बुलवालेतीहूं यहकह दो तीन परीजादों को

आज्ञा दी कितुम उस ठौर जावो और वहांकिसी वृक्षकेनीचे एक
पुरुष आंखें मूंदे हाय मार २ पुकार रहा है सो तुम उसके पास
जाके कहोकि हातिम उसठौर पहुंचगया और तेरीप्यारीसे तेरा
दुःखजाके कहाहै सोतुझे अब अलगन परीने बुलाया है यह कहके
उसे शीघ्र लेआवो परीजाद अनुशासन पातेही पलक मारतेही
उसकेपास जा पहुंचे और उसे सब वृत्तान्त सुनाया तब वह अपनी
ठौरसे उठा और हातिम को धन्य २ कह उनके साथहोलिया उ-
न्होंने एकही दिनमें बादशाहजादीके पासला खड़ाकिया फिरउस
सुन्दरी ने उसकोपास बैठालिया उसको देखतेही मूर्च्छा आगई तब
उस सुन्दरीने उसकेमुखपर अपनेहाथसेगुलाब छिड़काजबचेतहुआ
तो उससे धीरासे कहाकि अब मुझे भलीभांति निहारले निदान
वह दिनतो इसीभांति बीतासांझके होते अलगन परीने आज्ञादी
कि आज हर्षकीगान मजलसी रचीजाय और रागरङ्गहो निदान
परियां सबगाती बजातीथीं और येदोनों बैठेदेखरहेथे परअलगन
परी उसजवानकी ओर कुछ मनुहार नकरतीथी इतनेमें हातिमने
कहाकि इसमुहराको पानीमें घिसकेमुखमें छोड़ और फिरउसके
पानी पीनेकी गगरीमें कुल्ला करके चुपके चलाआ वहजवान कु-
ल्लाकरहो रहाथा कि इतनेमें और परियोंने देखके कहा कि तेरा
पानीकेघड़ोंकेपास कौनकामथा तबउसने कहा कि मैंप्यासाअधिक
थाइसलिये पानीपीने आयाथा परियोंनेउसको पानीपिलाके फिर
अपनी ठौरपर बैठालदिया इतनेमें जब हातिम ने देखा कि अब
यह जवान. अपना काम करआया है तब हातिम ने कहाकि इस
समय गरमी बहुत है इसलिये थोड़ाशरबत बनवावो बादशाहजा-
दी ने शरबत बनाने को आज्ञा दी पर हातिम ने अपनेही हाथ
शरबत बनाया प्रथमबादशाहजादीको दिया उसने हातिमके हाथ
से शरबतलेके पिया और पीतेही उस जवानपर बावलीहोगई जब
हातिम ने रङ्ग रूप और का औरही देखा तो कहनेलगा किहे
सुन्दरी इसदीन विरही को दया करके अपनी सेवामें क्यों नहीं
लेती तब उसनेकहा कियह मेरीसमझमें नहींआता कि यहअग्नि
किस कौतुकीने लगाई जिसकाज्वाला मेरेचित्तमें धधकाहै जिसके
बलसे इस पुरुष की प्रीतिकी गांसीमेरे कलेजे को छेदती है और
इसको आंखोंकी पुतलीसमान अलगकरने में महादुःख होता है
और मैंने तेरीबात भी मानली परन्तुअपने मातापिता की आज्ञा
बिनामैं कोई अनुचित कामनकरूंगी यहकहके चटउठके माताके

महलमेंगई और शीघ्र नाय चुपखड़ी होरही तब उसकी माताने शीघ्र आनेका हेतुपूछा कि चालीस दिन के पहले क्यों आई तब उसकी सहेलियों मेंसे एकनेकहा कि हे महारानी राजकन्या के विरह में एक सुन्दर पुरुष कितेक वर्षों से बिकलथा सो अब यहां आपहुंचा है और राजकन्या भी उसकीप्रीति के फन्दमें फसी है परन्तु तुम्हारीबिन आज्ञाकोई बातकरनेको डरतीहै यहसुनके वह अपने पतिकेपास आके कहनेलगी कि बेटी किसीमनुष्यके विरहमें व्याकुल है सोउसके साथ विवाह करनेका बिचार करती है यह सुनके बादशाह ने कहा कि बहुतशुभ तब अलगन परीने हातिम सहित अपने प्रीतम को अपनी माताके सन्मुख बुलवाया उसकी मातादेखके बहुतप्रसन्नहुई और अशीसदेने लगी तबउसके पिताने व्याहकी सामाकरके बड़ेधूमधामसे अपनीबेटीकाविवाहकर दिया और वेदोनो प्रीतमप्यारी आनन्दसे सुखलेनेलगे और हातिम को अशीसदेतेथे कुछदिन पीछेजबहातिमने बिदामांगी तबअलगनपरी पूछनेलगी किअब तेराकहां जानेका बिचारहै हातिमनेकहा किमैं अब अहमरके बनको जाऊंगा यह सुनके अलगनपरीने कई परी जादोंको आज्ञादी कि हातिमको वहां पहुंचाओ वे उसकी आज्ञानुसार अहमरके बनमें पहुंचाके आपवहां चलेआये और हातिम उस ओरको चला जहांसे बोल सुनाई देताथा कि किसीके साथबुराई मतकर और करैगातो वहीपावेगा थोड़ोदूर चलकेदेखे तो एकमनुष्य कालीना एकपींजरामें बन्द है यह उसके पासजाके पूछनेलगा कितू बारम्बार इसीशब्द का उच्चारण काहेको करता है तबउसने कहाकि जोतू कुछउपाय करैतो मैंतुझसे अपनादुःख कहूंनहीं ऐसे बहुतेरे पूछाकरतेहैं तब हातिमने कहाकि अच्छा कहतोसही तब उसबूढ़ेने कहाकिमैं अहमर सौदागर हूं जबमैंने जन्मलियातो मेरेपिताने यहदेश मेरेनामसे बसाया और मुझकोइस शहरमें छोड़केआप किसीदूसरे देशमेंव्यापारके लियेगया और उसी बेर उसनेस्वर्ग बासकिया मेरेपासभी बहुतसाधन था परन्तु अनरीत और इथाखर्च करनेके हेतुदीन और निरधन होगया और थोड़ीसी द्रव्य मुझे दबीहुई मिलीसोभी थोड़ीही अवधिमें समाप्त किया इतने में एक पुरुष बाजार में आकर कहने लगा किजिस किसीका धन पृथ्वीमें गड़ाहो और वहभूलगयाहो उसको मैंनिकालदेऊं तो मुझे चतुर्थांश देवे यह सुनकेमैंने उसको चतुर्थभाग देने को कहा उसनेदो तीनठौर की माटीखोद के सूंघी तब एक

कोनेमें उसनेबताया वहां अमितधन निकला मैंनेलोभबस उसको चतुर्थ भाग तोनहीं दिया किन्तु थोड़ीसी द्रव्य उसके आगे धरी उसने अपना कहाहुआ भागमांगामैंने उसको मारनिकाला वह दीननिराशहोकेमुझे कोसताहुआ चलागया थोड़ेदिनोंमेंआकेमुझसे बड़ीनम्रता करी और कहने लगा कि मेरी दिव्य दृष्टि है जितनी सम्पदा पृथ्वीमें गड़ी है सो सम्पूर्ण मेरीदृष्टिगोचर है मैंनेकहा कि भलाकोई ऐसीभीयत्नहै जिससेमेरीभी दिव्यदृष्टि होजाय तबउसने कहा कि यहतोबहुत सहजबात है चलमैंतेरेएक सुरमालगादेऊं उसअंजनके लगतेही तुझे सम्पूर्ण दृष्टि परनेलगेगा यहकहके मुझे इसबनमें लेआया जबमैंने यहपींजरा देखातो पूछाकि यहांकिसने धराहै उसनेकहा किमुझेतो नहींमालूम फिरएक अंजनकी सीक मेरी आंखोंमें फेरदी मैं ततकाल अंधा होगया तब मैंने कहा हे मित्र अबतो मैं अन्धा हो गया तबउसने कहा कितेरी बुराई का यही फल है और जो नेत्रों की दृष्टि चाहता है तो इस पींजरे में बैठ और यह पुकार के कहा कर कि बुराई मत करो और जो करोगे तो वही तुम्हारे आगे आवेगी फिर मैंने पूछा कि सत्य बताकिमेरी आंखोंकी औषधि क्या है और कहां और किसकेद्वारा मिलेगी तबउसने कहाकि कुछदिन बीते यहांएक हातिमनामक सत्पुरुष परमार्थी आवेगा उससेजबतू अपनोविपत्ति कहेगा तो वहकहींसे खोजके एकप्रकारकी घासनूररेज अर्थात् दृष्टिप्रकाशक होती है सो उसका पानी तेरी आंखोंमें परैगातब नेत्र ज्योंकेत्यों होजांयगे सोउसीके आसरे में तीसवर्ष से इसपींजरा में बैठा हूं और कभी २ अकुलायके जो इसके बाहर निकलता हूं तो रगरग दूखनेलगती हैं तबफिरमैं इसीपींजरामें आयघुसताहूं और हाय मारमारके यही कहताहूं इसीभांति अनेक आये किसी ने मेरे रोगकी चिकित्सा न करी तबहातिमने कहा तू धीर्यधर मैं तेरी दृष्टिकोयत्नकरूंगा इतनेमें वेपरीजाद हातिमको पहुंचाके अलगन परीकेपास जबगयेतो देखतेही वहबहुत क्रोधातुर होकेकहनेलगी कि अभीशीघ्रजावो और हातिमके साथरहो और उसको कुशल पूर्वक उसके घर पहुंचाके आवो इसीमें तुम्हारी भलाईहै वे इस-बातको सुनतेही हातिम के पास आकर कहनेलगे अब आपका विचार कहां जानेकाहै हातिमने कहा किमैं अब नूररेज घासलेने को जाऊंगामुझे उसघासकेबनमेंपहुंचादो तबउन्होंने कहा कि हम केवल उसबनके किनारेपर पहुंचादेवेंगे परउसके भीतर न जांयगे

तुम जो भीतरमे कुशलक्षेम लौटोगे तो आपको ले आवेंगे नहीं तो शाहजादी से तुम्हारे समाचार कहसुनावेंगे तब हातिम ने कहा कि तुम्हारे न जानेका कौन हेतुहै उन्होंने कहाकि जिससमय वह घासजगतीहै तब सम्पूर्ण बनस्पति उस बनको जगमगाने लगती है और मारे सुगन्धके सम्पूर्ण बन महकने लगता और वह घास दीपकके समान जलती है उस समय सम्पूर्ण जीव जन्तु उसके चारों ओर घेरके खड़े होते हैं इससे वहां जानेको किसीको सामर्थ्य नहीं है यह सुनके हातिमने कहा कि अबतो चलता हूं रामकरैगा सो होगा यह कह एक परीजाद के कंधापर बैठलिया और उनसाथ में रहे चलते २ कई दिनमें एक मैदान दृष्टिपड़ा तब हातिमने पूछा कि वह घास कहांहै उन्होंने कहा कि अभी जगीनहीं है दोचार दिनमें जगेगी तब हातिम और वे परीजाद वहांहीं रहे जब वह घास जगी तब सम्पूर्ण बनकी बनस्पति जगजगाके दीपकके समान जलउठीं मारे सुगन्धके सम्पूर्ण बनमें अरघान उठी और जितने बाघवराह पशुपक्षी आदि थे सब उसके चारोंओर घेरके खड़े हुये तब हातिम उनसे बिदा होके गया और वहां से कुछ पत्ती और फूल लेके उनके पास आया तो वे अपने मनमें कहने लगे कि न जाने किसभांतिका मनुष्य है ऐसा मनुष्य न तो आगे हुये हैं न होनेवाला है निदान वहांसे चले फिर कई दिनमें उस बूढ़ेके पास आपहुंचे तब हातिमने पुकारके कहाकि मैं तुम्हारे लिये औषधि लेआया तब उस बूढ़ने कहा कि हे प्यारे जो लायाहै तो उसको मलिके दोबूंद मेरी आंखोंमें छोड़दे हातिम ने मलिके उसकापानी उस बूढ़े की आंखोंमें छोड़ातो पहिलेतो आंखें उबल आईं फिर नीली हुईं फिर पानी सूखगया और उसकी आखें आंवकीसी फांकें खुलगईं तो वह हातिमके चरण परसनेलगा हातिमने उसको हृदयमें लगालिया और कहा कि प्यारे मैंने तो परमेश्वरकी राहमें कमर बांधी है और जो किसी का काम मेरे हाथमें निकलताहै उतनाही समयमैं स्वारथ जानताहूं यह सुनके उसबूढ़े नेकहा कि मेराघर यहांसे थोड़ीदूर है और मेरे बहुत द्रव्य है जितनी तेरामनमाने उतनी ले लेजा तब हातिमने कहा कि द्रव्य मेरे किसकामकी है मेरे ही पास अमित द्रव्य है उसीको ईश्वर की राहमें खरचकरताहूं तेरी द्रव्य लेके क्याकरूं यह कह वहांसे बिदा होशाहाबादके निकट पहुंचा तबपरीजादोंने कहा कि आप दयाकरके एक अपना पहुंचकापत्र हमको बादशाहजादीके चित्तसंतोषार्थ लिखदीजिये जिसमें हमारे प्राणबचैं हातिमने उनको एक

पत्र लिखदिया और आप शहरमें जाके सुनीरशाली को देखके बहुत हर्षित हुआ फिर दोनोंजने हुस्नबानू के पासगये उसने रत्न जड़ित चौकियां बिछवा दीं और आप चिलमन के भीतरसे अपने प्रश्नका उत्तर पूछनेलगी हातिमने जैसा था वैसाही कह सुनाया हुस्नबानू बहुतप्रसन्नहो हातिमकी प्रशंसा करनेलगी तिसपीछे भांति२ के व्यंजन दोनों को करवाये उस दिन तो दोनों वहांहीं रहे और सबेरे उठके हुस्नबानूसे पूछा कि अबतेरा कौनसा प्रश्न है सो मुझे बता उसेभी ईश्वरकी दया से शोधलाऊं तब हुस्नबानू ने कहा कि अब इसकाशोधकर कि, सत्यवादी सदासुखी, उसने कौनबातऐसी सत्यकहीहै कि जिससे उसको सुखप्राप्तहुवाहै तब हातिमने पूछा कि तुमजानतीहो कि वह कहांहै हुस्नबानूने कहा कि मैंने अपनी धायसेसुनाहै कि वह शहरकारममें रहताहै केवल इतनाही जानतीहूं पर यह बुद्धि मुझकोनहींहै कि वह किसओरकोहै हातिम यह सुन उठ खड़ा हुआ और कहनेलगा कि अच्छा ईश्वर इसको भी सिद्धही करदेगा॥

चौथा प्रश्न हातिमके जाने और इसबातके शोधनेके विषयमें कि सत्यवादी सदा सुखी॥

निदान हातिम हुस्नबानू से विदा हो शाहाबादसे निकल और कितेक शहरनांघने के उपरान्त एक पर्वतके नीचे जाके एक नदी रक्तकी बहती देखी उसको देख बहुत विस्मित हो अनुमान किया कि इसका शोधलेना अवश्यहै कि यहजल कहांसे आता है और लाल पानी के प्रवाह का क्या कारण है निदान यह शोच उसके उद्गमस्थान की ओर चला तो थोड़ी दूर चलके एक बड़ा भारी वृक्ष इसदशासे दृष्टिपड़ा कि उसकी प्रत्येक डारमें मनुष्योंके कड़ावों घिरलटकतेहैं और उसकेनीचे एक सुन्दर तालाब स्वच्छ पानी का भराहै और उन शीशोंसे रक्तकेबूंद टपक २ के उसीपानीमें पड़ते हैं वहीपानी रक्तसंयुक्त उस नदीमें जाताहै इसीहेतुसे उस नदीकापानी लालबहता था हातिम यह कौतुक देखके उस वृक्ष के नीचे बैठगया इसकेबैठतेही सबमूड़ हातिमको देख खिलखिला के हंसेतो इसको औरभी सन्देह हुआ और चारोंओर चकितहो निहारनेलगा इतने में उसकी दृष्टि सबसे ऊपरवाले शीशपर पड़ी यह उसके देखतेही मूर्च्छितहोगया जब थोड़ीदेर में चेतहुआ तब अपनेमनमें शोचा कि जो मैं इसअद्भुत चरित्रको बिनाशोधे जाऊं तो औरोंसे इसके क्या समाचार बताऊंगा इसीशोच में बैठे दिन

व्यतीत हुआ और संध्या समय आन पहुंचा तब हातिम एककोने में चुपचाप बैठादेखा किया कि वे शीशवृक्षसे छूटि २ उसी पानी मेंगिरपड़े और उसतालाबकेबीचमें एकबैठका बनाहुआ था तिसपर राजसीबिछौनाबिछाएकरत्नजटित सिंहासन एकओरधरा दिखाई दिया औरकितनीएक देरपीछे उसजलसे अनेकपरीनिकलीं उनमें से एक नौयौवना चन्द्रमुखी अनंगमद पिये छविलिये बड़ेमान रूपके गुमान सेउससिंहासनपर आबिराजी इसीसे विदित हुआकि वही उनसबोंमें अधीश्वरी थी और उसीका शीश उस वृक्षमेंसर्वोपरि था औरकितेकपरीउसके सिंहासनके आसपास यथायोग्य अपनी २ चौकियों पर बैठगईं और कितेक हाथबांधेखड़ीही रहीं तिसपीछे गन्धर्वसमाज साजि नृत्यकरनेको आ सन्मुख खड़ेहुये और आनन्द वचन सुनाकर मृदंगपर थापदे मधुर२स्वरों से काम लुभावु बढ़ावन हारेराग गानेलगे और हातिम बैठादेख २ मनमेंसोचे कि हे भगवान यह क्या कौतुक है कुछभेद नहीं जाना जाता इतनेमें जब आधीरात बीती तबभांति २ के षटरसव्यंजन सोनेके थालोंमें आये उससमय उसरूपराशिने एक अनुचरीसे कहा कि एकपथिक उस वृक्षकेनीचे बैठाहै उसको एकथार में भोजन लेके देआओ आज्ञा पातेही एकदासी थारमें भोजन लेके हातिमके पास आके कहने लगी कि हमारी स्वामिनिने तुमको भोजन भेजा है यहसुन हातिमने पूछा कि तू कौन है और क्या नाम है और तेरी स्वामिनि काक्यानाम है तबउसने कहाकि तुझेइससे कौनकाम है जोभूखा होतोभोजन करले हातिमनेकहा किजबतक तूमुझे यह न बतावेगीतबतक भोजन नकरूंगा यह सुनके वह लौटके उस सुन्दरी के पासजाकर कहनेलगी किवह भोजननहीं करता और कहता है किमुझे अपना और अपनी स्वामिनी का नाम और अपनी सभा काभेद बतादो तो भोजनकरूंगा नहींतोनहीं यहसुन उससुन्दरीने कहाकितू उससे जाकेकह कि आजभोजन करले कल्ह मैं तुझसे सबसमाचार कहदूंगी उसदासीने उससुन्दरीकी वार्त्ताआकर हातिमसेकही तबहातिमने भोजनकिया और चाहाकि उसका हाथ पकड़े वह चट भागकेपानीमें कूदपड़ी और उससुन्दरीके पासजा खड़ीहुई निदानवेसबरातभर तो नाचरङ्गमें रहीं और सवेराहोतेही पानीमें कूदपड़ीं और उनकेशीश पानीपै उतराये और उछल २ के यथापूर्वक वृक्षकीडालियोंमें जालटके और हातिमउस सुन्दरी के शीशपै टकटकी लगाये देख२ मनहीमनमें कहैकि जोइससुन्दरी

को सजीवपाऊंतो जैसेबनैतैसेइसके साथ विवाहकरूं परंतु इसका कुछभेदनहीं खुलता कि यहक्या आश्चर्यकी बातहै कि रातकोतो सजीवहोजाती हैं और दिनको इनके शीश आपसे आप वृक्षकी डालियोंमें लटकजातेहैं होनहो तो यहचरित्र मायाकाहै निदान इसीसोच विचार में दिनकटा जब सांझ हुई तो फिर यथा पूर्वक वहीचरित्र होनेलगा नाचकेउपरान्त फिर सबकेआगेभोजन जबधरे गये तबफिर उससुन्दरी ने कहाकि एक थालमें भोजन उसेभी दे आवोजब वहहातिम के पासभोजन लेकेआई तब हातिमने कहा कितैने आजबतानेको कहाथा सोमुझे पहले बतादे तोमैं भोजन करूं तबफिर उसने बादशाहजादी के पासजाके कहातो बादशाहजादीने कहाकितू उससेकहदे किपहले भोजनकरले फिरमेरे साथचल जब बादशाहजादीकेपासपहुंचेगा तबयहभेद खुलजायगा उसने हातिमसे उसीभांति आ कहा जब हातिम भोजनकरके उसकेसाथ चलातब वहतोतालाब में कूद बादशाहजादी के पासजा खड़ीहुई पीछेसे हातिमने गोतामार आंखेंखोलींतो न वह तालाब है न वह वृक्ष है केवलएक लम्बाचौड़ा मटपरहै उसीमें अपने को खड़ापायातो एकसंग हायमारके पुकार २ के रोदन करने लगा और मूड़पररेत छोड़के फिरनेलगा निदान इसी भांति सातदिन बीतेतो ख्वाजाखिजरको ईश्वरकी आज्ञाहुई कितू उसबनमें जहां हातिम बावरों कीसीसूरत बनायेफिरता है जाकर उसकीसहायताकर क्योंकिवह बहुतसे मनुष्योंके साथभलाई करके इससंसार में अपनानाम विदित करैगा आज्ञा पातेही ख्वाजेखिजरहरे वस्त्र धारणकिये हाथमें आसालिये हातिमकी दाहिनीओरसे प्रकट हुआ तो हातिमउसको देखकर औरभी अधिकरोनेलगातब उस सिद्धिने हातिम का शीशअपनेहाथसे छुआ तब हातिमकी सुधबुध ठौरठिकाने हुईतो पूछनेलगा किहेगुरुदेवइसठौरका क्यानामहै और मैंयहांकैसेआया तबउसनेउत्तरदियाकिइसबनकानाम खबरपुर्स है औरयहांआनेका यहहेतुहै कितू उस तालावमेंउसपरीके साथकूदा था औरवहतालावऔर वृक्ष और मकानादि मायाके प्रपंचसे रचेहैं और उसतालाव के बनानेको यही अभिप्रायहैकि जो कोई उसमेंकूदे वहइसबनमें निकले और अब वहठौरयहांसे तीन सौकोसहै यहसुनतेही हातिमपृथ्वीमेंलोटने और रोरोकेकहनेलगा कि हायहायमैं अबवहां कैसेपहुंचूं और जो मेरीअभिलाष न पूरी होगीतोमैंअपने प्राणखोयदूंगा तबखिजरनेपूछा कितेरी अभिलाषा

क्याहै हातिमने कहाकि मैं जहां था वहांहीं पहुंचूं ख़्वाजानेकहा कि अच्छा तू मेरा आसा पकड़के आंखेंबन्दकर वहीं अपनेको देख हातिमने उसके कहनेके अनुसार उसके आसाको पकड़ा तोक्षण मात्रमें उसीवृक्षके नीचेपहुंचा और अधीरहोके उस वृक्षके ऊपर चढ़ने लगा तो वृक्ष हिलने लगा और गिरने से बचा परन्तु उसकी पींड में लिपटरहा और जब वृक्ष हिलनेसे बन्द हुआ तब फेर चढ़नेलगा उससमय एक शब्दाघातहुआ और वृक्षफटगया उसमें हातिम कमरतक समायगया जबकुछ बसनचला तब कहनेलगाकि यहक्या कारणहै किजब पहले इसके पासजानेका अनुमानकिया तोवह दयाहुई और अबयह संकट आपड़ाहै निदान बहुतेरा बलमारापर भीतरहीको घुसतागया यहांतक किकेवल आंखोंसे देखे और सम्पूर्णधड़ उसमें घुस गया तब ख़्वाजा ख़िज़र आयकर कहने लगा किहातिम तूकाहेको विपत्तिमें फंसके प्राणका घातकरताहै हातिमको उससमय उत्तर देनेकी सामर्थ्य नथी कुछनबोला तब ख़्वाजाने अपना आसा उसवृक्षपर मारा वह मोमसमान होगया हातिम निकलके बाहर आया थोड़ी देरमें चित्त संतुष्ट हुआ तो ख़्वाजेने हातिमसे पूछा किहेहातिम तूकाहेको इतना कष्टसहताहै तुझेइनसे क्या प्रयोजनहै हातिमने कहा कि मैं इनका भेद जाना चाहताहूं तब ख़्वाजेने कहाकि यह शामअहमर जादूकीबेटीहै और यहतालाब और वृक्षमायाके प्रपंच करके इसहेतुसे रचागयाहै किएक दिनइसने अपने पितासे कहा किपिता अब मैं युवा हुई मेराविवाह करदे यह सुनके उसने बहुतक्रोधित हो इसमायाके जंजालमेंलेकर डालदियाजबतक वहजीताहै तबतकइसका विवाहनकरेगा और यहकिसीके हाथनलगैगी यहसुनके हातिम बोलाकि अबमुझे मालूमहुआ किमेरी मृत्युयहां मुझेले आईहै इसीसे मैं शामअहमरजादूकी मायामें फंसाहूं यह सुनके ख़्वाजेने कहा किहे हातिम तुझे जोइसकी बेटीके लेनेकी अभिलाषहै सो अनुमान अपने चित्तमें नकर और वृथा अपनेकोइस जंजालमें न छोड़ तबहातिमने कहाकि मैंतो अपने प्राणोंसे हाथ धोबैठा जो चाहै सोहो जबतक मुझेयह सुन्दरी नमिलैगी तबतक मैंपीछे पांव नधरूंगा तब ख़्वाजाने कहाकि अच्छातेरी क्याअभिलाषहै हातिमने कहा किमेरे मनमें तोयही अभिलाषहै किमैं इसवृक्षके ऊपरचढ़के उनसे बातेंकरूं फिरख़्वाजाने समझाया किहे हातिमतू जान बूझकेकाहेको विषखाताहै हातिमने उत्तरदिया कि मेरी इसीमेंभ-

लाई है कि मैं इनसे अलग न होऊं तब ख़्वाजे खिज़रने एक आसा उस वृक्षपर मारा और इसमें आज़म अर्थात् मुसल्मानोंके धर्म का महामंत्र पढ़के फूंकदिया और कहा कि लेअब इस वृक्षपर चढ़जा और आप हातिमकी दृष्टिसे लोप होगया जब हातिम उस वृक्षके ऊपर चढ़के उस सुन्दरीके शीसकी बराबर गया तो वह शीस भी सब शीशों के बराबर आ लटका और हातिम का भी शीस कटके सब शीशों में आमिला और धर पानी में गिरपड़ा और आकाश से मार २ धर २ सुनाई देनेलगा पृथ्वीसेभी कोलाहल उठा जब सांझ हुई तब सम्पूर्ण शीस हातिमके शीससमेत उस तालाबमें गिरपड़े फिर सबके धड़ लगगये और अपना २ काम यथा पूर्वक करने लगे हातिम भी हाथबांधे एककोनेमें सिंहासनके पासखड़ा होरहा तब उस सुन्दरी ने पूछा तू सत्यबता कि कौन है और तेरा क्या नाम और तू कौन देशका निवासी है और तेरा क्या प्रयोजन है हातिमने कहा कि मैं भी तेरे सेवकोंमेंसे एक हूं इसी जलसे निकला हूं यह सुन उस सुन्दरी ने जाना कि यह मेरी प्रीतके फन्दमें फंसा है कुछ न बोली और अपने नाचरङ्गमें लगी रही जब आधीरात हुई तब भोजनकरने की तैयारी हुई भांति २ के षटरस व्यञ्जन आयके धरेगये तब उस सुन्दरी ने बड़े प्यारसे हातिमको अपने पास बैठालके कहा कि हे जवान कुछ भोजनकर हातिमने भोजन किये पानीपिया परन्तु यह न जाना कि मैं कौन हूं और कहां और किसकामको जाता हूं फिर नाचरङ्ग देखते २ सबेरा हुआ तो सब शीस हातिमके समेत उस वृक्षमें जालटके धड़ पानीमें रहगये इसी भांति कईदिन बीते तब एकदिन ख़्वाजा-खिज़रआये और अपने आसासे हातिमका शीस उस वृक्षसे उतार पानीसे धड़ निकालके उसको मंत्रद्वारा सजीव किया तब हातिमने जो आंखें खोलीं तो उसी सिद्धको अपने सिरहाने खड़ा देखा हातिमने उसके चरणपरसे उसने पूछा कि हे जवान अबतक कहां था हातिमने उत्तर दिया कि मैं उसी चन्द्रमुखी के मुखारविन्द इन्दुको निहार २ अपने नयन चकोरोंको सुखदेरहाथा फिर उसने पूछा कि अबतक तेरे नेत्र उसके रूपको निहारके तृप्त नहीं हुये हातिम ने कहा कि आप मुझे ऐसे दुःखमें देखते हैं और कुछ उपाय नहीं करते तब उस सिद्धने कहा कि अच्छा तेरी क्या अभिलाष है हातिम ने कहा कि मैं तो जबतक यह सुन्दरी न पाऊंगा तबतक इसका पीछा न छोड़ूंगा और इसी शोचमें मरजाऊंगा तब ख़्वाजा खिज़रने कहा कि जब तक इसका पिता शाम अहमर जादू जो बड़ा मायावी है न मारा जायगा

तबतक इसफूलकी सुगन्ध तेरे नयन मधुकरकोदुर्लभहै हांजब वह मायावी मारोजाय तबनिश्चन्देहतू इसकेरूपसमुद्रकामीनहो सक्ता हैऔर उसके जीतेजी तो तेरी अभिलाष वृथा है इस लिये प्रथम तू उसके मारनेकी यत्नकर तिसपीछे इसके चन्द्राननसे अमृत पान करनेका विचार करचल अब मैं तुझेमंत्रसिखाये देताहूं तू पवित्र रहाकरना नित्यस्नान और दिनमेंव्रत रातको भोजन करना हातिमने हर्षितहोके अंगीकार कियातब ख्वाजाखिजरने हातिमको इस्मआजम मंत्र सिखाके कहा कि अबतू अहमरके पर्वत की ओर अभीयहां चलाजा हातिमने कहाकिमैं उसकोकहां खोजूंगा तब उससिद्धने कहा किमेरा आसा पकड़ और आंख मूंद हातिमने आसापकड़ आंखबन्द कियातो क्षणमात्रमें एकपर्वत परजा पहुंचा जोवहां देखेतो तरह२के फूल बिना वसन्तऋतुके विकसित हैं यह देखहातिम बहुतप्रसन्नहो उसपहाड़के ऊपरचढ़ा तोवहां के पत्थरों ने हातिमके पांवऐसे पकड़े किफिरपांवनउठे यथा चुम्बकलोहेको तबहातिमने जाना कि यही कोह अहमर अर्थात् अहमर जादूगर का पर्वतहै अबमंत्रका स्मरणकरना उचितहै जब हातिमने मंत्रका पाठकिया तो पत्थरोंसे पांवछूटे फिरउसीभांति पाठ करता हुआ आगेचलातो एकमैदान बहुतलम्बा चौड़ा दृष्टिपड़ा फिर आगेबढ़ा तोएक सोता पानीका जिसकेचारों ओर मेवाके फलित वृक्ष लगे हुये दिखाईदिये हातिमने कपड़ा उतारकेउसमेंस्नान किया और दूसरा जोड़ा पहर के मंत्रका पाठ करने लगा तो उसके प्रभावसे सब पशुपक्षी मायाकृत जोथे भागगये यह समाचार शाम अहमर जादूगरको पहुंचा तबउसने ज्योतिषकी पुस्तकनिकालके जो देखा तोजानाकि एक दिन हातिमताई इसपर्वत परआकेहमारीमाया को भङ्गकरैगासो आजवही उससोता परखड़ा मंत्रपढ़ताहै औरइस मंत्रके पढ़नेवालेको मायानहीं व्यापती इससे अबऐसीयत्न करनी चाहिये किजिसमें उसका पाठछूटे तोकुछ उपायचले यह सोचके उसने ऐसी मायारची किचारों ओरसे वारांगनाओं के यूथकेयूथ आये और उनमें एकसुन्दरी उसकीबेटीकीसूरतको हाथमें मदिर की सुराही और प्यालालिये दिखाईदी तब शामअहमर ने कहा कि तुम उस सोतेपर जावो और हातिम को मदिरापान कराके वहीं मारडालो वे उसकीआज्ञानुसार हातिम के पास आईं तो हातिम देख बड़े विस्मय को प्राप्तहुआ और सोचनेलगा कि ये तो सब मैंने वहां छोड़ीहैं यहां कहांसे आईं फिर अपने मनको सम-

आया कि क्यासन्देह है उसके बापकाघर है कदापि आईही हों इतनेमें वे हातिमके पास आके बैठके कहनेलगीं किहे हातिमआज मेरे पिताने मुझे इसबागके देखने को बुलायाथा सो जब मैंने तुझे देखातोतेरे मिलनेकोयहां आईहूं तूबहुत परिश्रम करके आया है जो थोड़ी मदिरापानकर जिसमें राहकाश्रमउतरजाय यहकह मदिरा काप्याला भरके हातिम कोदिया हातिमने उसके हाथसे लेके कहा कि आजमेरी भाग्य धन्यहै जो मेरी प्यारी अपने हाथ से मुझे मदिरा पान कराने को आई है यह शोच मदिरा को पी-लिया त्योंहीं वह सुन्दरी महा भयंकरदेव की सूरत होगई और हातिम को बांधके शामअहमर के पास ले खड़ा किया शामअह-मरने हातिम कोदेखके आंखेंनीची करके कहाकि ऐसे युवापुरुष कोवधकरनातो बड़ी मूर्खताहैपरंतु यहशत्रुहै इसलिये कुछपै कुछ दण्ड देना चाहिये यह शोच के आज्ञादी कि इसको अग्नि कुण्ड मेंछोड़के उसके मुखपर एकसहस्र मनलोह कीशिला ढांपदो नौ-करोंने उसकी आज्ञाकाप्रतिपाल किया औरथोड़ी देर में आकर शामअहमरसेकहा कि अब तो वह अग्निकुण्डमेंजलके राखहोगया होगा परंतु उसके मुखमें जो रीछकी बेटीवाला मुहराथा उसके प्रभाव से उसका बाल भी नहीं जला था जब शामअहमर ने जो अपनी ज्योतिष की पुस्तक निकाली और विचारातो मालूमहुआ कि हातिम एकमुहरा के प्रभावसे अग्नि कुण्डमें ऐसे सुखसे बैठा है जैसे कोई शीतल अमराईमें बैठाहो जो किसी भांतिवहमुहरा मिलेतो उसपै वसचले जबतक वह अपने आप वह मुहरा नदेगा तबतक वहकिसी कामका नहीं यह शोचके आज्ञादी कि उसको अग्नि कुण्डसे निकालके फिर उसीसोता पर बैठा आवो उन्होंने उसकी आज्ञानुसार हातिमकोउसी सोता पै जाबैठालाऔरयहां शामअहमर ने मायाके बल उन्हींस्त्रियों कारूप फिर उत्पन्न करके आज्ञादी कितुमजाके हातिमसे वहमुहराले आवो।वेउसकी आ-ज्ञानुसार हातिमके पासजाके कहनेलगीं हे मित्र हातिम अबतेरे पासन बैठूंगीक्योंकि जबकीबेरमैं तेरेपासबैठी वह मेदशामअहमर जादूगर मेरेपिताने जानातो तुरंतकालादेवपठायके मुझेऔरतुझे दोनों को उसके हाथ से पकड़वा मंगाया और तुझे इतना दुःख दिया जिससे मेराभी चित्त बहुत दुःखितहुआ इसलिये अबमैं दूर-हीसे तेरेमुखारविन्द को निहार२ अपने नयनचकोरोंको सुखदिया करूंगी जो मैं तेरेसाथ बैठूं और मेरे पिताको वहभेद विदितहो

जायतोनजाने तेरेलिये कौन दगड नियतकरै यहसुनके हातिमने उसका हाथपकड़के अपनेपास बैठालिया तबवह मायारूपी सुन्दरी बोली कि हे मित्र सत्यवता कि तू अपनेमनसे मुझे चाहता है तब हातिमने कहा कि मैंतो सुन्दरी तुझेअपने प्राणोंसेभीअधिक जानताहूं यहसुनके वहबोलीकिजो तू सत्यहीमुझे प्राणसमान मानताहै तो मुझे अपनेपास से वह मुहरा जो रीछकी बेटीनेदिया था सो देदे तब हातिमने पूछा कितूने कैसेजाना कि मेरेपास वह मुहरा है उसने उत्तरदिया कि मेरेपिता ने ज्योतिषके बलसे जाना है तब हातिमने कहा किवह मुहरा कुछ मित्रसे अधिक नहीहै निदान ज्योंहीं हातिमने चाहा कि निकासके मुहरामायारूपी बादशाहजादी को दे त्योंहीं दाहिनीओर से यह सुनाई दिया कि हे मूर्ख तुझे कुछ बुद्धिभीहै सचेतहो और मुहरा कभी न दीजियो नहीं तो दुःख को तो क्याचलावेअपने जीवसे जायगा यहसुनके हातिमने पूछा कि तुमकौन होजोइसदानमें बाधा लगातेहोतबउसनेकहा कि मैं वहीहूं जिसने तुझेइस्मआजम का मंत्र बतायाहै यह सुनके हातिमने उसके चरणपरसि कहा कि हेगुरुदेव यह क्याभेद है तब उसनेकहा कि वह तेरीप्यारी नहीहै यह वहीहै जो तुझे पहलेमदिरा पानकरायदेवकी सूरतबनके तुझेशाम अहमरजादू के पास पकड़लेगई थी और उसने तुझे अग्निके कुण्ड में छोड़ दिया था वहां केवल इसीमुहराके प्रभावसे बचाथा और जो ये मूर्तें तेरेपास आईहैं सो मायाकृत हैं तू इस्मआजममंत्रका पाठ कर जो बादशाहजादी होगी तो बैठीरहेगी और जोमायाकृतहोंगी तो जलजायगी यह सुनकेहातिमनेमंत्र पढ़नेका आरम्भ कियात्योंहींसम्पूर्ण मूर्तें कांपनेलगींऔररङ्गबदलनेलगाथोड़ीदेरमें प्रत्येक के शिरसे ज्वालाउठा और क्षणमात्र में जल कर भस्म हो गईं ये समाचार शामअहमर के पास पहुंचे कि सम्पूर्ण मूर्तें जो मायाकृत भेजीथीं सो हातिम ने भस्म कर डालीं तब उसने कामदेवकोमंत्रद्वारा आकर्षण किया और बड़ेमानसन्मान से बैठाल निजदुख कहसुनाया तब वारिचर बोला कि मैं कुछनहींकरसक्ता क्योंकि वहअभी दीर्घआयु है और मैंक्या किसीकोभी मायाउस को व्यापनहींसक्ती इसलिये तुझे उचितहै कितू अपनी बेटीव्याह दे यह सुनके शामअहमरजादू ने कहा कि जबतक मैं जीताहूंतब तक तोब्याहनकरूंगा तबमदनबोलाकिजोतेरेमनसयहीहै तोमुझे बुलाकर क्योंदिया दुखदिया तबशामअहमरनेकहाकिउसनेहमारी

बहुतसी मूर्तें जलादी हैं इसलिये आपसे यही प्रार्थना है कि उस-
का पाठ छूटजाय तबफिर सनमय बोला कि यह भी मेरी सामर्थ्य नहीं
है कि मैं उसके मंत्र का पाठ छुड़ासकूं क्योंकि ख्वाजे खिजर उसकी
सहायता को ईश्वर की आज्ञानुसार नियत हुये हैं परन्तु हां इ-
तना होसक्ता है कि वह अचेत होजाय तो उसका वीर्य पतित करके
उसे अशौच करसक्ता हूं यह सुनके शामअहमर बहुत प्रसन्न हुआ और
सनो अब उसकी दृष्टि से अलच्छ हो हातिम को अचेत करके उसका
वीर्य पतित करदिया हातिम एक संग चौंकपड़ा और अपने को
अशौच जान के सोता में स्नानकरने को गया तो वहां मायावी बैठा ही
था चटमाया छलदेव प्रगट किया वह हातिम को पकड़ के शाम
अहमर के पास लेगया उसने इसे देखके कहा कि इसका मारना
तो उचित नहीं क्योंकि जो माराजावेगा तो वह मुहरा हथा ही
जायगा जो यह अपनी प्रसन्नता से देतो काम आवेगा इस लिये
इतना करो कि इसे लोहेकी जंजीरों में कसके पत्थर के खम्भों में
कसदो केवल सुखभर इसका खुलार है और जब तक यह मुहरा
नदे तबतक न खोलो हातिम उस बन्दि में ईश्वरही का आराधन
करता था कि हे परमेश्वर तेरे सिवाय मेरा कोई सहायक नहीं
और शामअहमरने उसके चारोंओरजादूगर बैठा ल दिये निदान
सात दिनरात इसी प्रकार बांधा रहा हातिम मारे भूख और प्यास
के विकल होगयाथा तब शामअहमर आया और कहने लगा कि
हे हातिम तू मुझे वह मुहरा देदे तो मैं तुझे छोड़दूं हातिमने
कहा कि जो तू अपनी बेटी मुझे ब्याहदे तो अभी लेले यह सुनते ही वह
क्रोधाग्नि में जलकर आज्ञा दी कि इसके ऊपर पत्थरों का मेह बर्षावो
जिस्से इसकी हाड़ पंसुरी चकनाचूर होजांय निदान जादूगरों
ने पत्थर उठाके ढेरकिये तब हातिम से कहनेलगे कि जो तू अपने
प्राणों की रक्षा चाहताहै और शामअहमर के क्रोधाग्नि में सलभ
होनेकी इच्छा नहीं है तो मुहरा देनहीं पत्थर तेरे सीसपर वर्षते
हैं यह सुनके हातिमने कहा कि जो ईश्वर चाहताहै तोनिःसंदेह
तुम्हारे स्वामी को मार उसको पुत्री को अपनी स्त्री बना छोड़ूंगा
यह सुनके वे अत्यंत क्रोधित हो हातिम के ऊपर यहांतक पत्थर वर्षा-
ये कि उन पत्थरों का ढेर एक छोटी पहाड़ी सी दृष्टि आनेलगी
तब उन्होंने जाके शामअहमर से कहा कि महाराज अबतो हातिम
को पत्थरों का मेह वर्षा के चूरण कर डाला यह सुन शामअहमर
ने अपनी पुस्तक निकाल के जो देखा तो उसको मालूम हुआ

कि उसकी देह में तो पत्थरों की आंच भी नहीं लगी तबशाम- अहमरने कहा कि तुमको जो मेरी बात की प्रतीत नहीं है तो चाहे तुम पत्थर टालके देखलो उन्होंने पत्थरटाल के जो देखा तो हातिम ज्योंका त्यों निकला तब फिर ऐसा मेहवर्षाया कि उस पहाड़से भी दूना होगया और पत्थरोंको जो सरकाया तो फिर हातिमको कुशल पूर्वक पाया तब हारके शामअहमरने कहाकि तुम प्रतिदिन इसी भांति पत्थर वर्षायाकरो और आप महल के भीतर जाके अपने मंत्र यंत्र पढ़नेमेंलगा निदान इसी भांति सात दिनबीते तब हातिममारे भूख और प्यासके व्याकुलहोके कहनेलगा कि हे मित्रो तुमने इसमुहरा का प्रभाव देखा कि न तोमैं अग्नि कुण्डमें जला और न पत्थरोंके मारेमरा अबमैं कहता हूं कि जो कोई मुझे उसी सोतापर पहुंचादे उसीको मैं यह मुहरा देदेऊं यह सुनके सब चौकीदारोंने कहाकि हमको तेरा मुहरालेने की अभिलाष नहीं है परन्तु उनमें एक सरतक नामक मायावी था उसने लोभवस हातिमको सैनबताई कि मैं तुझे उसी सोतापर प- हुंचा देऊंगा तब हातिमने भी सैनसे कहाकिमैं भी तुझीको मु- हरादूंगा निदान जबसब सोगये और वही सरतकमायावी केवल लोभ वसजागाकिया जब उसने देखाकि सबमायावी सोगये हैं तब हातिमके पासआके कहनेलगा कि चलमैं तुझे वहां पहुंचादूं तो हातिमने कहाकि मुझमें इतनी सामर्थ कहांहै कि जो इनपत्थरों से निकलूं यहसुनके उसने मायाकृत एक देवप्रकट किया उसीने हातिमको उनपत्थरोंसे निकालके सरतक समेत उसी सोतापर लै खड़ाकिया हातिमने पहलेतो अपनेवस्त्र धोये फिरस्नानकर थोड़ासा जलपान किया जब शौच्यहुआ तो वहीं इस्मआजम का मंत्र पढ़ने लगातब उससरतक मायावीनेकहा कि हातिम मैंनेतो तुझेयहां पहुंचा दिया अबतूभी अपनी वाक्य का प्रतिपालकर तबहातिमने कहातू मुहरालेके क्या करैगा और किसके लिये मांगता है यह मुहरा एक मित्रका चिन्हहै भलामैं इसे तुझे कैसेदेदूं परन्तुहां प- हले यहबता कितू किसकेलिये मांगताहै उसनेकहा किमैं अपने लिये मांगताहूं यह सुनके हातिम ने कहा कि अबतुझे देता भी तोभी न दूंगा क्योंकितू अपनेनिमित्त मांगता है जो परमेश्वर की राहमें मांगतातो अवश्यदेता उसने कहा कि हमारा ईश्वर तो कमलाक मायावीहै और वही शामअहमर कागुरू है यह सुनके हातिमकोबड़ाक्रोधहुआऔरकहनेलगाऐनालीक तूएकबापुरेदीन

मलीन महा अपावन जोवको अनादि पुरुष करके मानता है क्या कहूं तैने मेरे साथ भलाई करी है और भलाई का बदला बुराई नहीं है इसीसे तुझे जीता छोड़ता हूं नहीं तो तू निस्सन्देह बधने योग्य है तब फिर उसने कहा कि हे हातिम उसकी ईश्वरता प्रत्यक्ष है उसने अपनेही तो चन्द्र सूर्य्य आकाश बनाये हैं और अपनी माया केवलसे चालीस सहस्र मायावी उत्पन्न किये हैं और वे सब उसीका आराधन करते हैं और हम सब उसको छोड़के दूसरा ईश्वर नहीं जानते यह सुनके हातिमने कहा कि रे धूर्त पाखण्डी चुप हो फिर ऐसी बात न कहना नहीं तो बिना मारे न छोड़ूंगा तब फिर सरतक मायावी ने कहा कि यह तो सब बातें जाने दो और मुहराको चरचा चलावो जो देना होतो दे नहीं तो तेरे जीवका इथाघात होगा और मैं तो जैसे बनेगा वैसे तुझसे मुहरा लेही लूंगा तब तेरा जोका तो जी जायगा और बचन पलट का बचन पलट ठहरेगा तब हातिमने कहा कि मुहरा तो तुझे किसी भांति न दूंगा परन्तु इतना है कि तेरी भलाई और सेवाके बदलेमें जब शामअहमरको मारूंगा तब तुझे यहांका बादशाह बनाऊंगा यह सुनके सरतक ने कहा कि मुझे राज्य की इच्छा नहीं है केवल वही मुहरा देना है तो दे नहीं तो देख क्या करता हूं यह कहके मंत्र पढ़ने लगा और बहुतेरा चाहा कि कुछ मायाका प्रभाव करके हातिमको आधीन करे परन्तु हातिमके मंत्रके आगे कुछ बस न चला उलटा आपही डरके मारे अपने स्वजातियों में जाके चुपके सो रहा जिसमें कोई न जाने निदान सबेरा होतेही वहां हातिम को न पाकर शामअहमर के पास सब चौकीदार जाके कहने लगे कि हातिम दिखाई नहीं पड़ता तब तो शामअहमर को बड़ा क्रोध हुआ और अपनी किताब लेके विचारा तो जाना कि हातिम उसी सोतापर है और उसको सरतक चौकीदारने मुहरा के लोभसे रातको वहां पहुंचाया है इसलिये सरतकको मेरे पास ले आवो मैं उसको सजीव न छोड़ूंगा यह सुन सब सरतक के पकड़ने को चले वह भागके हातिम के पास आके कहने लगा हे हातिक अब तेरे पीछे मेरे प्राण जाते हैं न तो मैंने मुहराही पाया न स्वामीका भला रहा मैंने तो तेरे साथ भलाईही करी है कि तुझे कठिन बन्दिसे छुड़ाया है तब हातिमने कहा कि तू अभय रह कुछ डरकी बात नहीं है इतने में जब शाम अहमरने जाना कि सरतक भाग गया तब मंत्रप्रेरित ज्वाला भेजी वह सरतकने देखा तो मारे डरके घर थराने लगा और हातिम से कहने लगा कि हे हातिम

मैंतेरा चेरा हूं अबमुझे शामअहमरकी मायासे बचानहीं इसज्वाला में सब भस्म हुआ चाहता हूं हातिमने कहाकि अधीरमतहो उसकी क्या सामर्थ्य है जो तुझसे बोलसके तू मेरे समीपआबैठ फिरहातिमने मंचपढ़के फूंकातो वह ज्वालाजो दृष्टिमेंथी सो बुझगई और हातिम इसमकाम कामंच पढ़ताहुआ शामअहमरकी ओरचला और सरतक उसकेपीछेहोलिया जबशामअहमरने जानाकि हातिमऔर सरतक मेरीओरचले आतेहैं तबवह अपनी सेनालेके नगरके बाहर निकलाऔर मायाकरनेलगा इतनेमें पृथ्वीहाली आसमान घमने लगा अंधकार छागया मेघगरजनेलगे और बिजली चमकनेलगी यह देखके सरतक कांपनेलगा और हातिमसे कहनेलगा कि हे हातिम सचेतहो यह सम्पूर्ण मायाका विस्तार है हातिम ने मंच पढ़के आसमानकी ओरफूंकातो वह सबउसीकी सेनापरपड़ी यह देखके शामअहमर कहने लगाकि हातिम बड़ा मायावी है कि जिसने हमारी मायाको झूठकरदिया इतनेमें उसने दूसरी माया ऐसी करीकि एक पहाड़पृथ्वीसे ऊपरको उठातो सरतकने कहा-कि हातिम यह भी मायाही का परपंचहै हातिमने मंचपढ़केजो फूंकातो वहपर्वत उसीकोसेनापर टुकड़ाहोके पड़ा और एकबड़ा-भारीपत्थर शामअहमर जादूगरके मूड़परआयापरन्तुवह आपतो जादूकेबलसे बचगया और वहपत्थर किसीवनमें जापड़ा परंतु सेनाके चारहजार मायावीरनभूमिमें ढेरहोगये फिरतीसरीमायाकरीकि चारों ओरसे महाविषधर सर्पधाये परन्तु हातिमकी ओरसे फिरे और शामअहमर की सेनाकोभक्षिगये केवल तीनलोग आपसमेत शेषरहे पर शामअहमर ने मंत्रकेबलसे उनसांपोंके मुखसे सबनि-कालिये जबसेनाने यह दशादेखीतो तीन सहस्र मायावी अपना जीवलेके भागे शामअहमर ने उनको बहुतेरा फेरा पर वे किसी भांति नमुरे तब हारके उन सबको एक बनमें माया के बलसे दृष्ट करदिया और अपना हातिमके सन्मुख जादूपढ़२के फूंकनेलगा पर कुछ न बिसानी तब आप आसमान की ओर उड़ा और क्षणमात्र में आंखोंसे ओटहोगया तब हातिमने कहा अब वह क्या करैगा सरतक बोलाकि अपने गुरु कमलाकके पास जो बड़ाभारी जादू-गरहै गयाहै और कमलाक मायावीका कुछ हालनहीं कहाजाता कि उसने अपनी मायाके बलसे अपना आकाश सूर्य्य चन्द्रसमेत तारागण संयुक्त बनाया है और एक बड़ाभारी शहर एक पहाड़ के नीचेबसायाहै जिसमेंचालीस सहस्रमायावी बसायेहैं और उनसे

कहता है कि मैंने तुम्हें उत्पन्नकिया है मैं तुम्हारा ईश्वर हूं वह नास्तीक आपही ईश्वरबनके बैठाहै और यहां से उसका मकान तीन सौ कोस पर है तब हातिमने कहा तू अपने मुखसे कहकि ईश्वर अनादि अद्वैत है वह इस बातपर आरूढ़होकर कहनेलगा कि मैंने इस आज़मका प्रभाव देखा और मायावियों का निश्चय मनमें से उठगया तब हातिम ने उसको धीर्य देकर कहाकि अब मेरा विचार कमलाक पर्वतपर चलनेकाहै यह सुनसरतक बोला किजो आपकीआज्ञा पाऊंतो मैंभीआपके साथचलूंऔर ये जोवृक्ष दृष्टिआतेहैं सो शामअहमरकी सेनाकेलोग हैं इनको उसने अपनीमायासे वृक्षबनाया है जो आप दयाकरके इनको सजीव करदें तो एभी आपका यशगाने आपकेसाथ चलें यह सुनके हातिम ने पानी फूकके सरतकको दिया कि इनसभों पर छिड़कआ वेपानी परतेही मनुष्य का स्वरूप होकर पूछनेलगे कि हे सरतक बता अब शामअहमर कहांहै उसने उत्तरदिया किवह तुमको वृक्षबनाके कमलाकके पासभागगयाहै और अबतुमको हातिमने मनुष्यकिया है यह बड़ा प्रतापी बीरहै कि शामअहमर को पराजयकिया यह कहतेहुये हातिमके पास आकर कहनेलगे कि हम तुमसे किसी भांति उऋणनहीं हैं ईश्वर तुम्हें इसका बदलादे अब हमतेरेहैं जो आज्ञाकरो सोकरैं यह सुनके हातिमने उनपर मंत्रपढ़के फूंकाकि उनके मनसे मायाका सम्पूर्ण विकार निकलगया तब उन्होंने पूछा कि हे स्वामी अब आप कहां जानेका विचार करते हैं हातिमने कहाकि मुझे शामअहमर मायावीसे कुछकामहै जबतक वह मुझे न मिलेगा तबतक कहीं न जाऊंगा क्योंकि मैं उसकी बेटीकेसाथ विवाहकरूंगा जो वह आपकरदेगातो भलीभलाहै नहीं तोबिनामारे न छोड़ूंगा यह सुनकेउन्होंने पूछाकि तुमने उसकीबेटीकहां देखीजो उसकी प्रीतिमेंफंसे तब हातिमने सम्पूर्ण समाचार आद्यो पांति उनसे कहसुनाया और कहाकि मुझेकेवल उसीके मिलनेकी अभिलाषहै और जो२ विपत्ति मैंने उससुन्दरीके लिये इस अहमरके हाथसे भोगीहैं सोतो न कहनेयोग्यहैं और न लिखने देखो ईश्वरने मुझऐसे निर्बलको ऐसे पैजय औरयशदिया और वहयहांसे भाजके अपने गुरूके पासगयाहै परन्तु उससे क्या होसक्ता है जो ईश्वर चाहताहै तो उसको उसके गुरूसमेत मारूंगा यह सुनके उन्होंने कहाकि महाराज कमलाक बड़ामायावीहै और उससे जयपाना बड़ी कठिनताहै हातिमने कहाकि जो तुम डरतेहोतो यहांबैठो

मैं जाके उनदोनों गुरुचेलोंको देखेलेताहूं यह सुनके वे बोलेकि यह हमको उचितनहीं है कि आपको छोड़के हम यहां रहैं जो वह तुम से जयपावेगा तो हमभी तुम्हारे साथ लौटआवेंगे और जहांचलोगे वहां तुम्हारे संगचलेंगे क्योंकि वहभी तो हमको अब सजीव न रक्खेगा निदान हातिमने उनसबके साथकमलाक पर्वत की राहली थोड़ी दूरचलके वे सब बोलेकि महाराज शामअहमर तो हम सबको लेके एकही दिनमें कमलाक पर्वतपर जापहुंचता था हातिमनेकहाकि यहसत्यहै वह मायावीथा सो अपनी मायाके बलसेशीघ्र जाताथा तबवे बोलेकिजो आपमायावीनहीं हैं तो आपने ऐसेजादूगर से कैसे जयपाई इतनेमें सरतक बोलाकि रे मूर्खों तुम नहींजानते येभी एकदिनमें जाके उनदोनोंको जीतसक्ते हैं इनके ईश्वरहीसहायकहै मैंनेभली भांतिपरचैलिया है तबहातिमने कहा किमैं इस्मआज़मजानताहूं जहां वहपढ़ाजाताहै वहांमायाका प्रभावनहींरहता देखोअपनी आंखोंसे देखोगेकि वे इसमंत्रकेप्रभाव से आपसे आप जलजांयगे इसी तरह सब एक तालाब पर पहुंचे और उसी राहसे शामअहमरगयाथा सो उसमें भी जादूकरता गया था उसमें सबों ने एक संग बिनाजाने पानीपिया तो पानी पीतेही सबके पेटोंसे रक्तकी धारछूटी और मशकके समानफूलि गये हातिम उनकी यह दशादेखके बहुतघबड़ाया और सोचा लहो न हो तो यहां भी शामअहमर जादूकरता गया है यह सोचके आप प्यासाही बैठा रहा पर पानी बूंद न पिया जब सबेरा हुआ तो इस्मआज़म पढ़के उनको फूका तो पहली बेरमें सूजन उतरगई दूसरी बेर उनके पेटोंसे नीला पानी निकला और तीसरी बेर ज्योंके त्यों होगये तब वे सब हातिमको सराहनेलगे तब हातिमने पूछाकि यह क्याभेदहै उन्होंने कहाकि महाराज शाम अहमर इस तालावपर भी जादूकर गयाहै तब हातिमने उसपर भी इस्म आज़म पढ़ा तो पहले तो ऊपर को उफला तिस पीछे उसका पानी हरा होगयाऔर फिर नीलाहोगया फिर छिनेक में वह पानी यथा पूर्वक होगया जब हातिमने जानाकि अबइस तालाबसे मायाका प्रभाव जातारहा और निःकेवल होगया तब थोड़ासा जल हातिमने पिया और उन सबसे भीकहा कितुम भी थोड़ा२ जल पान करलेवो जिसमें तुम्हारी देहमें जो कुछमायाका प्रभाव शेषहो सोभीनिकलजाय तब वेपानी पीके कहने लगे कि हे स्वामी अब हमसबआपकी ओरसे शाम अहमर और कमलाक

से लड़ैंगे ऐसी २ बातें कहते हुये कमलाककी ओर चले और जब शामअहमर यहांसे भागातबसीधाभागा चलागयाजाके कमलाक की ड्योढ़ीहीपै ठाढ़ाहुआ यहसमाचार द्वारपालों ने भीतरजाके कहा कि महाराज शामअहमर ऐसीदशासे कि न पावोंमें जूती नसीस पर टोपी और मुख सूखाहुवा अधीर द्वारपर खड़ा है यह सुनके कमलाक ने भीतर बुलालिया और हृदय लगाके पूछा कि हेपुत्र तुझे ऐसी कौनकठिन विपत्ति पड़ीहै जोतूऐसा अधीरभागा आता है यहसुन शामअहमर ने कहाकि हे गुरुदेव एक हातिम नामक बड़ा मायावी मेरे पहाड़ पर आया है उसी ने यह दशा मेरीकरीहै यहसुनके वहज्वाला समान धधकउठा और कहनेलगा कि देखतेदेखतेही उसकोराख तेरे सामने कर देताहूं यहकह मंत्र पढ़के अपने पर्वतके चारोंओर जो फूंकातो अग्निका ज्वाला चक्र सम उठा तबउन मायावियोंने जो हातिम के साथ थे बताया कि इस जादू की अग्नि से हमको बचावो हातिम ने उनको धीर्य देके कहा कि तुम ईश्वरका स्मरण करो इतने में हातिम ने इस्म-आजम पढ़के पर्वत की ओर जो फूकातो सम्पूर्ण अग्निशांत होगई तिस पीछे उसने एक माया ऐसी करी कि पहाड़ के चारों ओर नदी दिखाईदेनेलगी और लहराती हुई इनकीओर को उमड़के चलीतब उन मायावी साथियोंने कहा कि यहमाया छलनद जो दिखाईदेताहै यह सुनके हातिमने फिरमंत्रपढ़के फूंकावह सबजल सूखगया इतनेमें उसने ऐसीमाया करीकीदश२ बीस२ मनके पत्थरों को ऐसामेह वर्षाकि वह पर्वत उन पत्थरोंसे बन्द होगया तबफिर हातिमने इस्मआजम पढ़ातो एक ऐसी वायु आई कि उसकेवेगमें सम्पूर्णपत्थर धानकीसीखील उड़गये जबतकउसने एकऐसी माया करी कि वह पहाड़ दृष्टिसे अलक्ष होगया तब हातिम वहां बैठके मंत्र का पाठ करने लगानिदान वहभी माया मिटी कई दिनमें पर्वत दृष्टि आया तब हातिम अपने साथियों समेत उस पहाड़पर चढ़गया इनको देखकेसब जादूगर लोग चिल्लाने लगेकि देखोयह तो कुशल पूर्वक यहां आपहुंचा यह सुनके वह अपनी सेनासमेत शामअहमर को लेके उस आसमान परजो उसने उस पहाड़ से तीन हजार गज ऊंचा बनाया था चढ़गया और जब हातिम ने वहां किसी को न देखकर उसनगर में घुसातो देखा कि शहरमें परमरम्य बड़े२ मकान बाजार बहुत सुन्दर बने हैं और भांति२ के पदार्थ धरेहैं और अमोलिक रत्न और मेवामिष्ठान धरेहैं परन्तु

मनुष्य कहींदृष्टिनहीं आता तब हातिमने पूछाकियहांकेनिवासी कहां गयेतब उन्होंने कहाकि वह सभोंको लेके उसी आसमानपर जो उसने माया कृत रचाहै चढ़गयाहै तब हातिमने हंसके कहा कि ईश्वर ने ऐसे पदार्थ दिये हैं इसको भोजनकरो और ईश्वरका धन्यवादकरो यहसुनके सभोंने भूखके मारे खाये सबकेसब खातेही विकलहो गये और सबकी नासिका से रक्त टपकनेलगा जब हातिमने जानाकि वह चण्डाल छली यहांभी मायाकर गयाहै तो हातिमने पानीफूंकके सबको पिलादिया वेसबचंगेहोगये तिसपीछे सबवस्तुवों परभी पानीछिड़क दियातबमाया कासब प्रभावजाता रहातब हातिमने कहाकि अबयहां माया कालवलेश भी नहीं है यहसुनसबआनन्दसे खानेलगे और हातिमने पूछाकि वहमायाकृत आसमान कहां है उन्होंने कहा किइस पहाड़से तीनहजार गज ऊंचाहै तबहातिम उसओरको मुखकरके इस्मआजम पढ़ने लगा तोथोड़ीदेर में वहआसमान भी टूटगिरा और बहुतसे मायावी मृत्युको प्राप्तहुये और कमलाक और शामअहमर भी किसीओर कोभागे तो हातिमउनके पीछेलगा निदान इसी बवड़ाहट में वे दोनों पहाड़से गिर पड़े और चूर्णहोगये यह देखके हातिमबहुत हर्षितहो ईश्वर का धन्यवाद करके सरतकसे कहनेलगा कि मैंने तुझसे कहायाकि जब कमलाक को मारूंगा तो तुझेउसकी ठौर बादशाहबनाऊंगा इसलियेमैं अब अपनी बातका प्रतिपाल करता हूं परंतु एकबातपर कि ईश्वरको एकही मान और उसका आराधनकर किसी मनुष्य अथवाकिसी ईश्वर के जीवको न सतावे और रात दिन नीत रत रहाकर और जितने और मायावी थे उनसेभी कहाकि तुमसब सरतकको अपना अधीश्वर जानो और परमेश्वरको भजोनहीं तो इसकेलिये अपनेफल भोग करोगे यह कहके हातिमने कहा कि मैं अबउस बादशाहजादी के पासजाता हूं तुमयहां मिलके आनन्द से रहो यहसुनके उनसबने कहा कि हमारी यहअनुमति है कि आपके साथचलें आगे जैसी आपकी आज्ञाहो उसकाहमको प्रतिपालकरना उचितहै परहातिमने उन सबको वहींछोड़ और आप मलका जरीपोश अर्थात् शामअहमर की बेटीके पासको राहली थोड़ेदिनोंमें वहां जा पहुंचा तो देखा किनतो वहतालाव है नवह सुन्दरी है परन्तुएक शीशमहल उस तालाव की ठौर दृष्टिआता है और वहवृक्ष उसीभांति हरा भरा बनाहै तब हातिम उसकी ड्योढ़ी परजा पहुंचा तो दासी बाहर

निकली और हातिमको देखकेपूछा कितू कौनहै हातिमने कहा किमैं वहीहूं जो तुम्हारे साथइस हौजमें लटकाथा अब तुमजाके बादशाहजादी को मेरेआनेके समाचारदे वह यहसुन भीतर जा बादशाहजादी से कहनेलगी किमहारानी वहीपुरुष जो हमारे साथ इसमायामें फंसाथा सो अब अच्छा होके आयाहै यह सुनके बादशाहजादी ने कहाकि कदाचित् वहकोइ अहमरको गयाथा जो शामअहमर जादूगरके कुछसमाचार जानताहो तो कहे वह चेरी फिर आई और हातिम से बादशाहजादीकी सुखागर आय पूछीतो हातिमनेकहा कि शामअहमर नासीकथा सो अपनेगुरु समेत मारागया और शेषवार्त्ताबादशाहजादीसे कहूंगा उसने यह समाचार जाके भीतर कहा तो यह सुनके बादशाहजादीने शिर नीचाकर लिया तब उस दासी ने कहा कि ऐसे पिताके मरने से काहेको इतनी उदासहोतीहो वहमायावीथा किजिसने इससब कोमायाके जालमें डालाथा भलाहुआ जोवहमरा यहसुनके बादशाहजादीने हातिम को बुलवाके एक सुनहरी कुरसीपै बैठारा और अपने पिताकाहाल पूछनेलगी हातिमने सब आद्योपांत कह सुनाया और कहा कि मैंने केवल तेरी प्रीति के कारण यह सब कामकिया इसलिये अबतुझेभी उचितहै कितू अपने सरूपकेबागमें मुझ विरहीको विहार करनेकी आज्ञादे यहसुनके उसने अपनी गई ननौचीकरकी सहेलियोंने कहा कि अब तुम्हारी भाग्यउदयहुई जो अपने पिता मायावी के जाल से छूटी और इसयशी पुरुषके पाले परी और हे प्यारी यहभी यमनदेश का बादशाह है इसलिये उस मायावी उपद्रवीका कुछ शोक न करो इसयुवा प्रवीण पुरुषके साथ विवाहकरो यहसुनकेवह भीतर उठके चलीगई और विवाहको सामाहोनेलगी निदानआठदिन तो नाचरंगरहा और नवींरात को हातिम ने अपनी कुलरीति अनुसार विवाहकिया और जब शैनागार में दोनों जने विहार करनेको गये तब रति के समय हातिमको मुनीरशामीका स्मरणहुआतो हातिम बादशाह जादी से अलग होकर शोचनेलगा कि हे हातिम जब दूसरे को आसरा देकर उसकेकाम को जाकर यहां भोग विलास करै और वह तेरे आसरेमें बैठाकुढ़े तो अन्तकेदिन क्या उत्तरदेगानिदान इसी शोचमें आकेउदासबैठाथा तब बादशाहजादीने अपने मनमें शोचा कि मुझमें न जाने कौनसी बुराईहै जिससे हातिम ऐसेसमय अलगहो बैठाहै तब उससुन्दरी ने हातिमसे पूछा कि हे प्रा-

प्यारे तेरे मनकी उदासीका क्याकारण है हातिमने कहा कि हे प्यारी चन्द्रसूर्य्य में चाहे दोष हो पर तेरे में कोईदोष नहीं परन्तु कारण इसका यहहै कि मुनीरशामी हुस्नबानूकी प्रीतिमें फसा है और उसने उससे सात प्रश्न पूछे वहदीन एक का भी उत्तर न दे सका तब रोतापीटता मेरेदेशको और जानिकला वहांमैं अहेर की आखेटमें आयाथा उसको अधीर रुदन करते देखके मैं उसके पहले हुस्नबानू के प्रश्नोंका उत्तरदेने को उद्यतहुआहूं सो ईश्वरकी दयासे तीनप्रश्नोंके तो उत्तरदेचुकाहूं और यह चौथाप्रश्नहै जिसमें मैंने यहकाम कियाहै और पहिलेही मैं यहप्रण करचुकाहूं कि जबतक तेरेप्रश्नोंके उत्तर न देदूंगा तबतक मैं विषयभोगादिसे दूररहूंगा इसलिये तुममुझे बिदाकरो जिसमें अपनाप्रण पूराकर तुम्हारेसाथ भोगबिलास करूंतबउसनेकहाकिअच्छाफिरमुझेकहां छोड़जावोगे क्योंकि पहलेतो मेरापिताथा सोतो तुमने मारडाला अब मेरीखबर कौनलेगातब हातिमने कहाकितुम यमनको जावो वहां मेरापिता बादशाहहैतुम वहां आनन्दसे रहोगी औरअपना कामकरके मैंभी थोड़े दिनोंमें तुमसे आमिलूंगा यहकह के हातिमने पिताको पत्रलिखा कि हे तात यह बादशाहजादी आतीहै इसकेसाथ मैंनेबिवाह कियाहै आप इसको आनन्द पूर्वक आदर भावसे रखना और मैंथोड़ासा काम और हैसोभी करके आपके चरणकमलों को देखूंगा यहपत्र बादशाहजादी को दिया वहतो अपनी सामासमेत यमनको सिधारीऔरहातिमने शहरख्वारजिम की राहली थोड़ेदिनों में ईश्वरकी दयासे वहांजापहुंचाऔर वहांके निवासियों से पूछनेलगा कि यहां वहकौन है जो यहकहा करताहै कि सत्यवादी सदासुखी उन्होंने उत्तरदिया कि यहां ऐसा तो कोईनहीं है परन्तु एकबूढ़ा है जिसने यह लिखके अपने द्वारपर चपका दिया है और उसका मकान शहर ख्वारजिम से नौकोस पर है निदान हातिम वहां भी तीनपहर में जा पहुंचा तो बड़ाभारी मकान देखा कि उसके द्वारपर यही लिखा है हातिमने द्वारपरसेपुकारा तो भीतरसे सेवकलोगोंने बाहरनिकल केहातिमसेपूछातुमकौनहो औरकहांसेआयेऔरकिसलियेआपका आगमन हुआ है हातिम ने कहाकि मैं शाहाबादसे आताहूंऔर यहां कुछकामहै उन्होंनेजाकर अपनेस्वामीसेकहा उसनेहातिमके बुलानेकीआज्ञादी वहपुरुषप्रत्यक्ष तो युवादिखाईदेताथा परन्तु बड़ाहुआथाहातिम ने भीतर जाकर देखातोएक [illegible] के ऊपर

बठा है हातिम ने उससे दण्डवत् की उसनेभी उठके हातिम को हृदय में लगालिया कुशलप्रश्नके उपरान्त पकवान मेवा मिष्टान्न और भांति २ के भोजन हातिमके आगेधरे हातिमने भोजन करे तबउसनेपूछा कि आजतक दोमनुष्यके सिवाय तीसरानहीं आया सो तू जनदो मेंसे एकतू है सोइसकाहेतु मुझसेबताकि तू शाहाबादसे नाना भांतिकेकष्ट भोगता यहांकाहेको आयाहैतब हातिम सम्पूर्ण वृत्तान्त मुनीरशामी और हुस्नबानू का और जिस लिये आपगया था कहसुनाया तब उस वृद्धने कहा कि अच्छा आजतो तू थका हुआ है सोवे कल्ह मैं इसलिखेके समाचारकह सुनाऊंगा निदान रातकोतो हातिमरहा सबेरा होतेही पूछने लगा कि अब आप बतावें तबउस बूढ़ेने इस प्रकार कहने का आरम्भ किया कि इस शहर ख्वारजिमको बसेसातसौ वर्षहुये और मेरी उमर अबआठसौ वर्षकी है मैं उस समय भी ऐसाही था जैसा कि तू मुझे अब देखता है मैं पहलेबड़ा जुआरी था दिनरात जुवा खेलने केसिवाय कोई काम नहीं करताथा एकदिन दैवयोगसे ऐसा हुआ किमेरे पासएक पैसाभी नरहा तब मैं चोरी करनेका विचारकरके बाहर निकल विचारनेलगा कि किसी दीन दुखीके घरमें चोरी करना उचित नहीं किन्तु बादशाही घरमें चल के चोरी कीजिये और अमित धन लीजिये निदान कमन्द के द्वारा बादशाहके महल में गया और बादशाह को पहरुओं समेत सोते देखके बादशाह के गलेसे हीरा काजड़ाऊ तोड़ा उतारके फिर कमन्दके द्वारा उतर के एक बनकी ओर चलातो एक वृक्षकेनीचे देखाकि कई चोरबैठे चोरी की वस्तु बांटतेहैं मैं जो गयातो मुझकोदेखकेवे पूछनेलगेकि तू कौन और यहां काहेको आयाहै मैंने जैसा था वैसा यथार्थ कहके वह हीराका जड़ाऊ तोड़ा दिखाया तोवे सब देख इससे छीनलेनेको उठे इतनेमें उस बनमें एक ऐसा शब्दाघात हुआ कि सम्पूर्ण बन कांपने लगा वे चोरतो मारे डरके भाग गये और मैं अकेला वहां खड़ारहा तब एक मनुष्य मेरेपास आय के पूछनेलगा कि तू कौनहै मैंने जैसा पहले सच्चा २ हाल कहदिया था उसी भांति उसके भी सन्मुख कह दिया तब उसने प्रसन्न हो के कहा कितू सत्य बोलाहै इसलिये सम्पूर्णधनमैंने तुझीको दिया यहकहके मुझ से कहने लगा कि तू जो चोरी करना छोड़देगा और जुआ न खेलेगा तोतेरी आयु नौसौवर्षकी होगी मैंने उसदिनसे चोरी करनाऔर जुआ खेलनाछोड़दिया और वह सम्पूर्ण धनलेके अपने

घरको आया यहां मैंनेएक बड़ा भारी मकानबनवाया यह देखके
मेरेपरोसी ईर्षावस मेरेशत्रुहोगये और कोतवालसे कहनेलगे कि
कल्ह तोयह मारार फिरताथाकौड़ीको तथानथी आजइसने इतना
धन कहांसेपायाजो ऐसाभारी महलबनवाके बैठाहै कोतवालने
मुझेबुलाकेपूछा मैंने उसके सन्मुखभी यथार्थहीकहदिया यहसुन
केकोतवाल मुझे बादशाहके पासलेगया बादशाहने जोमुझसेपूछा
तोउसकेभी सामनेमैंने ज्योंकात्योंकहा बादशाह मेरीबात सुनक-
हनेलगाकि यह बड़ासत्यवादीहै देखोइसनेप्राणोंकाकुछ मोहन
किया और नकिसी से इतनी द्रव्य छिपाई और सत्यही मेरे भी
सन्मुख कहदिया इसलिये इसकी सचाई के कारण मैंने इसका
अपराधभी क्षमा कियाऔरसम्पूर्णधनउसको छोड़ा औरबहुतसा
धनमुझे अपनेकोषसे दियामैंवह धनपाकेबड़ाधनाढ्य होगया आज
तक मेरे पास बहुत धनशेषहै और बहुतसा खर्चभी कियाहै उसी
दिनसे मैंने यह लिखकेअपने द्वारपरलगाय दियाहै कि सत्यवादी
सदा सुखी इसलियेमनुष्यको उचितहैकिसदा सत्यबोले औरइसको
सादी नामक एक शीराजदेश का विद्वान प्राचीन कालमें हुवाहै
सोभी पुष्ट करताहै ॥ दोहा ॥

सत्यकहे हरिहैहितू नहिंअसत्यसमपाप। सतबादीको नहिंलख्यो सहतकहूंपरिताप॥

यहकहके हातिमसेपूछनेलगा कितू कौनहैतबहातिमने कहा
किमैं यमन काशाहजादाहूं और नाममेरा हातिमहै और मेरा
पिता तयनामकरकेउसदेशमें विख्यातहैयह सुनके वहउठा और
मिलके हातिमका बड़ासनोमान किया कईदिनतकउसकीपहुनाई
करीतब हातिमने कहा किअबमुझे आपदयाकरके बिदा कीजिये
क्योंकि मुझेएक कामबड़ाभारी अवश्य है निदान उससे हातिम
बिदा हो अपनी राह ली एकदिन हातिक को मनका जरीपोश
शाहअहमर जादूगरकीबेटीकीसूरतआई तबमनमें बिचारा किउस
मृगनयनी कोदेखता चलूं निदान यह मनमें ठान निजदेश यमन
कीओर चला और थोड़े दिनोंमें यमनके निकटजा पहुंचा तबता-
लावके ऊपर बड़ेहर्ष से बैठगया तो देखाकि एक तोताका जोड़ा
उसतालाव के किनारे एकवृक्षपर बैठाहुआ बातेंकर रहाथा वहां
हातिमभी उनकीबातें सुननेकेलिये उसओरको कानलगाया और
वहबात यहहै कि उनमेंसे स्त्रीनेकहा किमुझे अकेले छोड़के कहां
जाताहै नजा तब तोताबोला कि हेअज्ञ तू धर्म्मके काममें काहेको
भांजी मारती है अंतके दिन तू मेरे काम न आवैगी जोतेरे पीछे

भलाई करना छोड़दूं और तैनेकभी स्त्रियों के कुकर्म नहीं सुनेहैं जोउनको कहूंतो कितेक ग्रन्थ होजांय तबभी पार न मिले परंतु तेरे चितानेके हेत एकसूक्ष्म इतिहास कहताहूं कि एकदिनकोई बादशाह अहेरको गया वहां बहुतेरी आखेट करी पर कुछहाथ नलगा इसीभांत फिरते २ अपनी सेना से बिछुरके एक बनमें जा निकलातो वहांएक परममनोहर रमणीय बागदृष्टि पड़ा वहउस बागके भीतर गयातो देखा कि एक बंगला अत्यंत सुन्दर बना है और एकहौजपानीसेऊपरतक भराहै और उसकापानी बहुतस्वच्छ देखकेबादशाहका मनबहुतप्रसन्नहुआतो उसकेकिनारेबैठकेहाथसे पानी उछालने लगा इतनेमें उसके हाथमें एकजंजीर लगी उसने उसकोपकड़के खींचातो एकसंदूक निकली जिसमेंताला बन्द और तालीभी उसकेसाथहीथी बादशाह ने उसकोखोलातो उसमें एक परमसुन्दरी चन्द्रमुखी दृष्टिपड़ी बादशाह देखतेही डरगया तब वह सुन्दरीबोली किडरोमत मैंभी मनुष्यहूं यहकहके संदूकके बाहर निकल आई और हाथमें मदिरा की सुराही और प्याला लिये हुये बादशाहके पासआबैठी और बादशाहसे रतिमांगी बादशाह नेभीदेखा किस्त्रीस्वरूपवान और युवाहै इससेइनकारकरनाउचित नहीहै तबउसके साथरतिकरी जब अपनी सेनाकी सुधभई तब उठ खड़ाहुआ और अपनेहाथसे मुंदरीउतारके उसदी और कहाकि यहमैं तुझेचीन्ह दियेजाताहूं जिससेंजो फिरकभी आगमन होतो तूमुझे पहचानतोलेगी इसबातको सुनउसने हंसकेएक थैली मुंद- रियोंसे भरीहुई निकालके दिखाई और कहनेलगी किमेरा पति वणिकहै सोमुझे भ्रष्टहोनेकेडरसे इसबनमें जहां मनुष्यका बंगदि- खाई नहीं पड़ता है तहां इस संदूकमें बन्दकर और मेरे भोजनों के लियेधर इसीपानीके हौजमें लटका जाता है और आपदेश २ ब्यौपार करता है सो इसीभांति जो कोई सौदागर अथवा राजा बादशाह राहभूलके इसबागमें आयहौजपर गया और उसनेमुझे निकालातो उसनेमेरे साथरतिकरी चलतीबेर एकमुंदरी उतारके मुझेचीन्हदी उसको मैंने धरलिया अब इतनी मुंदरीहोगई हैं कि इससेमुझे पहचान नहीहै कि किसकी मुंदरी कौनहै तो तुमको मैं कौनभांति चीन्होंगी यहसुनके बादशाह बहुतलज्जितहो उस- को उसीसंदूक में बन्दकरके अपनी सेनामें आमिला और मकान परआके सबराजपाट छोड़योगीका भेषकर ईश्वरका भजनकरने लगासोतू क्याजानताहै जोमुझे भलेकामको इनकारकरतीहै तो

तूमेरे किसकाम आवेगी देखइस संसारमें एक हातिम सत्पुरुष है और भलाई करने को कमरबांधी है सो भलेकाम को छोड़के अपनी प्यारी मलका ज़रींपोश को देखने जाता है और मुनीरशामी वहां इसके आसरेमें बैठाहै भलाहातिम उसलोभ में कौन सी भलाई देखने को अभिलाष किये जाता है यह सुनके हातिम ने अपनेको बहुतधिक्कारा और ईश्वरका धन्यवादकिया फिर मनमें कहनेलगा कियह उपदेश मुझे ईश्वरहीने कियाहै और उटवहीं से शाहाबादको लौटपड़ा थोड़े दिनोंमें शाहाबाद में पहुंचा वहां केमनुष्य हातिमको पहिचानके हाथोंहाथ लेगये और हुस्नबानू ने चिलमनके पास कुरसीबिछवादी आपभीतरसे अपनेप्रश्नका उत्तर पूछनेलगी तब हातिमने उसबूढ़ेके समाचार कहसुनाये तो हुस्नबानू कहनेलगी सत्यहै इसमेंकुछ झूठनहीं है तिसपीछे हुस्नबानू ने बहुतप्रकारके षटरस भोजन थारा में मंगवाके हातिमके आगेधरे तब हातिम ने कहा कि अबमैं अपनेभाई केसाथ भोजन करूंगा निदानवहांसे हातिम सरायमेंआ मुनीरशामीसे मिलातब मुनीरशामी हातिम की बड़ी प्रशंसा करनेलगा और बारबार हृदयसे लग २ केमिला तिसपीछे दोनोंनेसाथ बैठके भोजनकिये और सब वृत्तान्त जो२ उसकोराहमें बीताथा कहसुनाया फिररातकोसोये सवेरा होतेही हातिम हुस्नबानू के पासजा कहनेलगा कि अबतू अपनाप्रश्न बता तब हुस्नबानू बोली कि हेहातिम यह सुनतीहूंकि एक पर्वतसे शब्दसुनाई देताहै इसीसे उसकानाम शब्दभानपर्वत पड़ाहै और उसीकानाम कोहनिदाहै तू इसको शोधला कि वह शब्दकौन बोलता है और पहाड़ के उसपार क्याहै यहसुनके हातिम वहांसे विदाहो सरायमें मुनीरशामीसे कहनेलगा कि अबमैं शब्दभान पर्वतको शोधनेके लियेजाताहूं जो आयुर्बल बलवान है तोथोड़ेदिनोंमेंआताहूं और जोईश्वरकी दयाहै तोकुछडरनहींहै ॥

पांचवां प्रश्न हातिमके जाने और कोहनिदा अर्थात् शब्दभान.
पर्वत को शोधलाने के विषय में ॥

निदान हातिम दोचार बातेंशिक्षायुत मुनीरशामी को सुनाय एकओरको बनकीराहली और जिसगांव नगरमें जाके निकसे उसके निवासियों से पूछेकि हेमित्रो तुममें जो कोई कोहनिदा की राहजानता होतो मुझे दयाकरके बतादे यहसुनके वेकहैं कि हमारी इतनी आयुबितीत हुईहै हमने तो कभी उसका नाम भी नहींसुनाहै, परन्तु हातिमकेवल मनुसाई केवल महीनों की राह

आटताजाताथा इतनेमें एकशहरके निकटजा पहुंचा तोदेखाकि नगरके बाहरसब छोटेबड़ेखड़ेहैं यह उन्हींको ओरको चला तोवे सब इसकोदेखके बुलानेलगे किहेपथिक इसीओरकोआ हम तेरी बहुतराह देखतेथे भला किया तूइस ओर को आया जब हातिम निकटगया तोदेखा किसब मनुष्यखड़े हैं और एक मृतक की टिकटीधरी है और एक ठौर भांति २ के भोजनधरे हैं इसने पूछा कियह कौनकारणहै कितुम सबजने मृतकको आगेधर रुदनकरतेहो तबउनमें से एकने कहाकि हमारे नगरकी यह रीत है कि जब कोई हमारे नगरमें मरताहै तब छोटे बड़े दुखी सुखी सब स्मशानमें आय भांति २ के भोजन धरके किसी पथिक का आसरा देखतेहैं जो वहआया तब उसमृतकको गाड़केवह सम्पूर्ण भोजन उस पथिक केआगे धरदेते हैं जबवह पहले उसमें से भोजन कर लेताहै तब हम सबजने भोजनकरके नगरको जातेहैं सोआज इस मृतकको सातदिन भये किसी पथिककी राहदेख रहेथे इतनेमें तूआगया तब हातिमने कहाकि तुम्हारे नगरकी भलीरीत है जो कदाचित् कोईएक मासतक नआवेतो तुमक्या करोगे वह मृतक तो सड़जायगा यहसुनके उन्होंनेकहाकिहां यहतो सत्यहै परन्तु सातवें दिनकोई न कोई आयही जाता है जोकोई पन्द्रहदिन न आयातोसब भोजनतो स्त्रियोंको भेजदेतेहैं और हमसबलोग दिन भरव्रतकरतेहैं संध्यासमय कुछ जलपान करलेतेहैं और जो कभी माससे अधिक हुआ तोहम सब उस मृतकको गाड़ अपने २ घर चलेजाते हैं और एकमहीना तक व्रतकर सांझको ईश्वरका आराधनकरके भोजन करतेहैं और उतनेदिन तक अपने सजातियों में भोजन बांटतेहैं फिरकुछ द्रव्य उसमृतककी क़बर परधरके ईश्वर को स्तुति करयथा सामर्थ्य भिक्षुकों को धनदेके शुद्ध होते हैं तब अपने२ काममें लगते हैं निदान उसमृतकको कबरकेभीतर बिछौना बिछायके सुलादिया औरसातबेरउसकी प्रदक्षिणा करकेबाहर निकल आये फिर हातिम सेकहा कि प्रथम तुम भोजन करलेव तबहम सब भोजन करेंगे तब हातिम ने भोजन किये फिर सबोंने भोजन किये और बचा हुआ भोजन अपने २ घर भेज दिया वह उनकी स्त्रियोंनेखाया फिर बहपहनके नगरमें आये और उनमेंजो अधीश्वरथा उसने कहा कि जो तेरामनमाने तोकुछ काल हमारे नगरमें निवासकर हातिमनेकहा कि बहुततोनहीं परन्तु तुम्हारी प्रसन्नता के लिये दोचार दिन रह सक्ता हूं निदान हातिम भी

उनके साथ नगर में आया वहां उसके लिये एक मकान अलग खाली करवा दिया और न्योतेको सामा अच्छी खूबसूरत दासियों समेत हातिम के मकान में भेजदी यह देखके हातिमने कहा कि यह भलीरीति है जो ईश्वर मेरे कामोंसे मुझे छुटकारा दे तो मैं भी इसीभांति पथिकोंको पहुनाई करूं और वे दासीयह अभिलाष रखती थीं कि हातिम उनकेसाथ भोगविलास करै परन्तु हातिम ने उनकी ओर आंख भी उठा के न देखा जब सात दिन बीते तो उन दासियोंने जायके अपनेस्वामीसे हातिमके इन्द्रीजित होनेकी प्रशंसाकरी तब उस हाकिमने हातिमको अपने सन्मुख बुलाय के उसका बड़ा आदर किया और बड़े सनमानसे मसनद पर बैठाके कहनेलगा कि हे युवापुरुष जो तू मेरेनगरका निवास अंगीकार करे तो मैं तेरे साथ अपनी बेटीका विवाह करदूं यहसुनके हातिमने कहा कि मुझे एक काम बड़ाही आवश्यक है नहीं तो मैं तेरेही नगरमें रहतातब उस हाकिमने कहा कि जो हमको बतावो तो हमभी तेरे साथ चलके सहायता करैं यह सुनके हातिमने उत्तर दिया कि यह मैं नहीं चाहता कि मेरेसाथ कोई दुःखभोगे यह सुनके वह बोला कि अच्छा न ले चलै तो हमको उसका नामही बतादे तबहातिमने मुनीरशामी और हुस्नबानू का सबवृत्तान्त कह सुनाया और कहा कि उसके चार प्रश्न तो पूरेकर चुका हूं अब पांचवां प्रश्न यहहै कि कोहनिदाकी खबरलादे सो छः महीने इस की टोहमें बीते हैं आजतक इसका कहीं पता नहीं लगा है सो जो तुमजानते हो तो मुझे राह और दिशा बताय दो मानो मेरे साथही चलचुके यहसुनके उसने कहा कि मैंने अपने प्राचीनोंसे सुना है कि वह पर्वत दक्षिणमें है और उसके बांईओर एकशहर बड़ा भारी बसा है वहां आजतक न तो किसीने मृतक की कबर देखी है और न किसीने किसीको मृतकके लिये रुदनकरते सुना है हातिम ने कहा कि मुझे उसी ओर जाना है तब उस वृद्ध पुरुषने कहा कि तू बताई हुई राह से कैसे अपने ठौर पहुंचेगा हातिमने उत्तर दिया कि जो कोई यहां लाया है वही वहां भी पहुंचाय देगा यह सुनके उसने हातिमके आगे बहुत सी द्रव्य ले धरी उसमेंसे हातिमने अपने राह के योग्य लेली और शेष दीनों को देके दक्षिणकी राहली थोड़े दिनोंमें एक शहरके निकट पहुंच के देखा कि उसके आसपास कोई मृतककीकबरनहीं है तबहातिम ने बिचारा कि मेरी जानमें तो यही नगर लखाई पड़ता है यह

शेरके भीतर गया तो एकने निवासियोंमेंसे पूछा कि तूकहांसे इस नगरमें आता है और कहां जानेका विचार है तबहातिमने कहा किमैं शाहाबाद से आता हूं और कोहनिदा को जाता हूं यहसुनके वहबोला कि कोहनिदाकी राहयहांसे बहुत दूर है तू वहां कैसे पहुंचेगा तब हातिम ने कहा कुछ संदेह की बात नहीं है जो मुझे यहांलाया है वही वहांभी पहुंचावेगा यहसुनके उस नगर निवासीने कहा कि आजकेदिन दया करके मेरेही घरकी सागभाजी भोजनकर फिर मनमाने सोकीजियो उसके कहने से हातिम वहींउतर पड़ा और वहां एक मनुष्य बहुत दिनोंसे रोग ग्रसितथा उस दिन उसके सम्बन्धियोंने उसको वध करके उसका मांसआपसमें बांटलिया सोईभाग इसमनुष्यने जिसकेघरमें हातिम उतरा था बनायके एकगिलासमें पानी और थारीमें रोटी और आमिष वही मनुष्य लेके हातिमके आगेधरके कहने लगा कि हे पथिक शीघ्र भोजन करलेक्योंकि तूने ऐसा अपूर्व भोजन कभी न कियाहोगा तब हातिमने कहाकि मैंने सम्पूर्ण भक्ष्य पदार्थों को भोजन कियाहै तू इसमें कौनऐसी वस्तुलाया है जिससेतूने कहा कि कभी ऐसा भोजन न कियाहोगा उसनेकहा अवश्यतैने सकल पदार्थ भोजनकिये होंगे परंतु मनुष्यका मांसतो कभीन मिला होगा इससेआज मैंतेरेलिये मनुष्यका मांस पकाके लायाहूं यह सुनके हातिम ने कहा कि धिक् है मुझे जो तेरे नगर में आया अरे निर्दई चाण्डालो अबमैंने जाना कितुम मनुष्य भक्षी हो और जो कोई तेरे नगरमें भूलाभटका पथिक विदेशी आ निकलता है उसेतुम सबमिलके मारखाते होतो मुझेभी तुमसेडरना उचित है यहसुनके वहबोला किहम किसीपथिक विदेशीको नहींमारते परंतुयह हमारे नगरकी रीतहै कि जो कोई बीमारहोता हैतो उसके सम्बन्धी उसे बधकरते हैं और अपने कुनबे वो गोत के लोगों में बांटके खालेते हैं सो आज एक रोगी मनुष्य बधकिया गया था सोमैं अपनाभाग तेरेलिये रींधकेलायाहूं इसमेंकुछ दोषनहीं है तू आनन्द से भोजन कर और इसीसे हमारे नगर के आसपास मृतकोंकी कबर नहीं है यह सुनके हातिमउठा और यह कहता हुआचला कि धिक् है तुमको और तुम्हारी रीतको और मैंऐसा महाअपावन भोजननहीं करताहूं तुममहाहत्यारे हो किइसीभांति अमितमनुष्योंको बधकरके खालियाहोगा तुममहापापी होतुम्हारे मुखदेखेसे बड़ापातक लगताहै यहकहताहुआएक बनकी राहली

तोदेखाकि एकबाघमारेभूखके विकलहै चलनेको भीसामर्थ्य नहीं है तबहातिमने एकमृग मारके उसे दिया और थोड़ासा आपभी ले अग्निमें भूनकेखाया जबबाघ आनन्दसे भोजनकरके बनमें चलागया तब हातिमभी अपनी राहलगा इसीभांति जबकिसी बनमें पहुंच-तातोमेवा फूलपत्ती अथवा अहेरकरके अपनापेट भरता निदान चलते २ एक नगर दृष्टिपड़ा वहां देखा कि सब नगर निवासी बालवृद्ध स्त्री पुरुष एक चौगान में अग्नि जलाये उसकेचारों ओर खड़े हैं हातिम जबउस ठौरगया तब उनसे पूछाकि हेमित्रोतुम यहां इतनी लकड़ाजलाके काहेको खड़े हो और तुमकौनहो यह सुनके उन्होंनेकहा कि रेभिक्षुकतू अपनीराहले तुझेपूछनेसे कौन काम है यहांकुछ भंडारा नहीं चढ़ा है जोतुझे भोजन देंहमारे सजातियों मेंसे एक मनुष्य मरगया है सो यहां उसकेसाथ उसकी स्त्रीभी जलतीहै तबहातिमने पूछाकि इसमृतकको गाड़ते क्योंनहीं और इस सजीव स्त्रीको इस मृतकके साथ काहेको जलाते हो तब उन्होंने कहा कि हमको मालूम होता है तू इसदेशका निवासी नहीं है यहदेश हिंदुस्तान है यहां स्त्री आपहीअपने पतिके साथ दग्ध होजातीहै तब हातिमने कहा यह रीतता भलीनहीं है कि सजीवको मृतकके साथदग्ध करतेहो यहकहके उनसे आगे बढ़ा थोड़ीदूरचल एकगांवमें पहुंचावहां एक मनुष्यसे पानीमांगा उसने एक कटोरादूध और एककटोरामट्ठा मेरेआगे लाधरा और कहा किजोतुझे भावेसोपीले तबपहिलेतो हातिमने मट्ठाकाकटोरापिया फिरदूधमांगा उसने थोड़ीसी सक्कर डालके मुझे देके और कहा किहे पथिक मेरेघरमें बांसीचावल पकायेधरेहैं जोतू कहै तोले-आऊं इसदूधके साथखावेगा तोबड़ास्वाद पावेगा हातिमने कहा कि भला नेकी और पूछ२ अच्छाले आओतब वह हिंदू थोड़ासा भातलेआया हातिमने खाया और रातको वहीं रहा सबेराहोतेही उसहिंदूकी भार्य्या मेरेपास आयके कहनेलगी किकुछ भोजनकर ले और दोचार दिन यहांरह जबराहको श्रमसे पांवहलके होवें तोकहीं जाना यहसुनके हातिमने कहाकि मैंतो तुम्हारी इतनीही दयाके बोझसे दबगयाहूं कितुमने मेरा इतना सनमान किया है यहसुनके वह स्त्री बोली कि हमसेतो तेरी कुछभी खातिर नहीं बनपड़ी जो लड़केबालोंके लिये रोटीपानी नित्यहोती है सोईतेरे लियेभी लादीथीहांजोतू दयाकरके हमारेघर रहैतो हमभीतेरी महमानी करें निदान उनकाहेत देखके हातिमनेकहाकि अच्छा

जो तुम्हारी इसीमें प्रसन्नता है तो मैं रहूंगा तब उसने एक मकान में बिछौना बिछवा दिया और अपने घर में हातिम के लिये भोजन बनाने को कहदिया जब भोजन करने का समय पहुंचा तब वह खीर, पूरी, कचौरी, कढ़ी, फुलौरी, फुलका, कई प्रकार की दाल, तरकारी, बरा, भात, दूध, दही, सिखरन, गोभा, हिसें, बाजरेकी टिकिया, दुधवरियां, दही बरा, रसौंछे, रसाजें, और अनेक प्रकार के व्यञ्जन जिनके नाम कहांतक बखानेंके हातिम के पास आके कहने लगा कि तुम इसमें से कुछ थोड़ा बहुत भोजन करो तो हम भी प्रसन्न हों जब हातिम ने भोजन किये तब बहुत चित्त प्रसन्न हुवा और बहुत सराहना करने लगा क्योंकि वह तो मुसल्मान था कभी ऐसे भोजन काहेको किये थे तब कहने लगा कि हिंदुस्तान तो परम रमणीय देश है और यहां सब अपूर्वही पदार्थ होते हैं पर केवल एक रीत यहां सजीव स्त्री दग्ध करने की ऐसी बुरी है कि जिससे मनुष्य निर्दय ठहरता है यह सुनके उस हिंदूने कहा कि यहां स्त्री अपने पतिके साथ आपही जलती हैं कोई उनको बरबस नहीं दग्ध करता जो तुम यहां रहो तो हम तुमको दिखादेंगे इतने में दैवयोग से एक बड़ा प्रतिष्ठित पुरुष रोगबस हो के थोड़े ही दिनों में मरगया और उसके चार स्त्री थीं जब उसकी तिकठी निकली तब चारों स्त्री शृंगार कर फूलों के हार गले में डाल शीस के बार बिखेर के साथ चलीं और कुनबा के लोग सब पांउ पर २ के समझाने लगे कि तुम सब भांति भरी पुरी हो तुम्हे जलना उचित नहीं परन्तु उन्होंने किसीकी सीख न मानी तब हातिम उनसे कहने लगा कि हे सुन्दरियो तुमको लाज नहीं आती जो तुम कुलकानि छोड़ पर पुरुषोंके सन्मुख सुख खोले स्तकके साथ दग्ध होनेको जाती हो यह सुनके वे हंसके कहने लगीं कि हे जवान हम तो अब स्तक हैं हमको तुझसे कुछ लाज नहीं है वह कौनसा दिन था कि इस स्तक के साथ भोग विलास किया था और अब जो यह मरगया तो इसको छोड़ के हम जीवें यह प्रीति रीति विपरीत है और इसके सिवाय हमको जीते जी कामाग्नि में जलना पड़ेगा उससे तो यही उत्तम है कि एकबेर अपने पतिके साथ दग्ध होने से सदाकी बिरहानल से बचीं और को जाने हमारे रूपाग्नि में हमको काम चाण्डाल सतावे तो हम परपुरुषको देखें तब हमारे माता पिता और सासु ससुर का पति समेत नाम धराजाय इस लिये ऐसे जीवन को धिग् है निदान उन्होंने हातिम का भी कहा न माना जब चिता में अग्नि धरी

तो उस चिताकी प्रदक्षिणा करके उसपर चढ़बैठीं तबकिसीनेतो उस मृतकका शीश अपनी गोदमेंधरा किसीने हाथ किसीनेउसके पांउ और प्रसन्नता से बैठीं तब हातिम ने बिचारा कि कदाचित् जब अग्नि का ज्वाला उठेगा तो उसकी गरमी पाय भागेंगी सो कुछ न हुआ वे आनन्दसे बैठी २ उसकेसाथ जलके राख होगईं हातिम यह देखके घबराया और सबके लोग वहांसे घरकोआये तब हातिम से उसने कहा कि हे जवान तैंने देखा कि स्त्री अपने मनसे दग्ध होतीहैं तब हातिम नेकहा यहसत्यहै और प्रीतिकी भी यही रीतिहै कि अपनेप्यारेके साथ आपभी जलजाय क्योंकि बिरहानल इसअग्निसे विशेष उष्ण है फिर कईदिन पीछे हातिम ने कहाकिहे प्यारे मुझे कोहनिदाको जानाहै सोतू अब मुझेबिदा कर यह सुनके उसहिन्दूने कहाकि कोहनिदायहां से बहुत दूर है तू वहांकैसे पहुंचेगा तब हातिमनेकहाकि ईश्वरबड़ा कौतुकी हैजैसे मुझे यहां पहुंचाया है उसीभांति वहमुझेवहांभी पहुंचाय देवेगा निदान वहां से बिदाहो देश २ पर्यटन करता उत्तर की ओरजा निकलातोएकनगरके पास बहुत मनुष्योंकी भीड़ दिखाईदी जो उनके पास गयातो उनसे पूछाकि यहां इस भीड़होने काक्या कारण है तबवे कहने लगे कि यहां एक सरदारकी बेटी मरगई है सो उसके पतिकोभी उसके साथ गाड़नेके बिचार में हैं वहअभी मानता नहीं है इसी से सब लोग इहां इकट्ठे हुये हैं तब हातिम ने कहा कि मुझे अपने सरदारकेपास लेचलोमैं उससे कुछकहूंगा उनमेंसे एकउसको सरदारके पासले गया तो हातिमने कहा किहे बुद्धिमान यह कैसी अनीतिहै कि मृतकके साथ सजीव को गाड़ते हो और वह गड़ने को प्रसन्न भी नहीहै भला कुछ तो ईश्वर से डरो तब उसने कहाकि हे प्यारे हम उसको बरबस नहीं गाड़ते किंतु वही अपने मुखसे प्रथम कहचुका है और अब अपने कहने का प्रतिपाल नहीं करता तुम सुनो कि हमारे देशमें यहभ तेरी भांति बिदेशी है और हमारे देशकी यह रीतिहै कि हमलोगबर कन्याको बालावस्थामें नहीं ब्याहते जबवे अपने आपएक दूसरे का इसप्रकार प्यार करतेहैं कि एक दूसरेको बिरहमें बिकल होनेलगता है उस समय अपनी प्रसन्नता से दोनों बचन बन्द होतेहैं किहम दोनोंमेंसे जो चाहे सो मरे सजीव भी उस मृतकके साथ कबरमें गड़ेगा तब हम सबजने मिलके उनका बिवाह करदेते हैं जब यह आया तो थोड़ेही दिनों में हममें मिल गया और मेरी बेटी का

प्यार करने लगा तब हमने इसे यहां की रीति से सचेत किया तो यह हमारी रीति अनुसार वचन बन्द हुआ तब मैंने इसके साथ अपनी बेटी का विवाह कर दिया अब तूही कह कि यह कैसा पुरुष है जो अपने वचन का प्रतिपाल नहीं करता तब हातिम ने कहा कि हे जवानतू क्यों नहीं अपने वचन का प्रतिपाल करताहै तब वह बोला कि हे पथिक तूभी इनमें मिलगया क्यों नहीं तू अपने देशकी रीति इनको बताता है हातिमने कहाकि मैं क्या कहूं तूतो पहिलेही अपने मुखसे हार बैठाहै वह बोलाकि चाहे जो होय मैंतो इसके साथ न गड़ूंगा जब हातिमने देखाकि नतो यह मानता है और न ये विनागाड़े छोड़ेंगे तब हातिमने उस से अपनी यमन भाषामें कहाकि तूमानले और इसके साथगड़जा जब रातिहोगी तो जैसे बनेगा तैसे मैंतुझे कबरमें से निकासि लेऊंगा उसने कहाकि मैंतेरे निकासने तक कैसे बचूंगा तब हातिमने उ-नलोगोंसे कहाकि यह कहताहै किहमारे देशकीसी जो कबर ब-नावै तो इसके साथ गड़ूंगा यह सुन केवेसब बोले कि यहबात तो नगरके हाकिम के हाथहैजो वहचाहै सो करैतब उनको हातिम नगरके हाकिम के पास लेजायके कहनेलगा कि वह पुरुषकहता है किमेरे देशकीसी कबर बनावै तोमैं इस मृतक के साथ गड़ूंगा हाकिम ने पूछा कि तुम्हारे देशमें कैसी कबर बनाई जाती है तब हातिम ने कहा कि हमारे देशमें ऐसी खोदी जाती है कि जिसमें दशबीस आदमी चारों ओर खड़े रहैं यह सुनके हाकिमने गर्दन नीची करली और थोड़ीदेर पीछे बोलाकि अच्छा जो वह कहै सोईसही कैसेहूं तोगड़ेतब वैसीही बड़ी कबर खुदाई और उसमें उस जवानको उस मृतकस्त्री के साथ धर ऊपरसे एक बड़ीभारी पत्थर की सिलधरदी और वहांसे हातिम सहित सब घरको चले आये तो वे हातिमको मकान पर लायके बहुत सनमान किया रातको जबघरके लोगसोये तब हातिम अपने बिछौनेसे उठके उस कबरके पास आया परन्तु वहां की यहभी रीतिथी कि तीनदिन तकउस मृतकके कुनबाके लोग रातदिन उसकी कबरको रखाया करतेथे इसलिये हातिम तीनोंरातों को खालीही लौटआया जब तीसरे दिन सब लोग वहांसे घरको आयेतब हातिम वहांगया और वहजवान हातिमको बहुतेरे दुर्बचन कहेकि उसपथिकने मुझेधोखा देके इसकबर में बन्दकरादिया जोमैं उसेऐसा झूठा जानता तोकभी [illegible]

तो उस चिताको प्रदक्षिणा करके उसपर चढ़बैठीं तबकिसीनेतो उस म्तकका शीस अपनी गोदमेंधरा किसीने हाथ किसीनेउसके पांउ और प्रसन्नता से बैठीं तब हातिम ने बिचारा कि कदाचित् जब अग्नि का ज्वाला उठेगा तो उसको गरमी पाय भागेंगी सो कुछ न हुआ वे आनन्दसे बैठी २ उसकेसाथ जलके राख होगईं हातिम यह देखके घबराया और जबवे लोग वहांसे घरकोआये तब हातिम से उसने कहा कि हे जवान तैंने देखा कि स्त्री अपने मनसे दग्ध होतीहैं तब हातिम नेकहा यहसत्यहै और प्रीतिकी भी यही रीतिहै कि अपनेप्यारेके साथ आपभी जलजाय क्योंकि बिरहानल इसअग्निसे विशेष उष्ण है फिर कईदिन पीछे हातिम ने कहाकिहे प्यारे मुझे कोहनिदाको जानाहै सोतू अब मुझेबिदा कर यह सुनके उसहिन्दूने कहाकि कोहनिदायहां से बहुत दूर है तू वहांकैसे पहुंचेगा तब हातिमनेकहाकि ईश्वरबड़ा कौतुकी हैजैसे मुझे यहां पहुंचाया है उसीभांति वहमुझेवहांभी पहुंचाय देवेगा निदान वहां से बिदाहो देश २ पर्य्यटन करता उत्तर को ओरजा निकलातोएकनगरके पास बहुत मनुष्योंकी भीड़ दिखाईदी जो उनके पास गयातो उनसे पूछाकि यहां इस भीड़होने काक्या कारण है तबवे कहने लगे कि यहां एक सरदारकी बेटी मरगई है सो उसके पतिकोभी उसके साथ गाड़नेके बिचार में हैं वहअभी मानता नहीं है इसी से सब लोग इहां इकट्ठे हुये हैं तब हातिम ने कहा कि मुझे अपने सरदारकेपास लेचलोमैं उससे कुछकहूंगा उनमेंसे एकउसको सरदारके पासले गया तो हातिमने कहा किहे बुद्धिमान यह कैसी अनीतिहै कि म्तकके साथ सजीव को गाड़ते हो और वह गड़ने को प्रसन्न भी नहींहै भला कुछ तो ईश्वर से डरो तब उसने कहाकि हे प्यारे हम उसको बरबस नहीं गाड़ते किंतु वही अपने मुखसे प्रथम कहचुका है और अब अपने कहने का प्रतिपाल नहीं करता तुम सुनो कि हमारे देशसे यहभी तेरी भांति विदेशी है और हमारे देशकी यह रीतिहै कि हमलोगबर कन्याको बालावस्थामें नहीं ब्याहते जबवे अपने आपएक दूसरे का इसप्रकार प्यार करतेहैं कि एक दूसरेको बिरहमें बिकल होनेलगता है उस समय अपनी प्रसन्नता से दोनों बचन बन्द होतेहैं किहम दोनोंमेंसे जो चाहे सो मरे सजीव भी उस म्तकके साथ कबरमें गड़ेगा तब हम सबजने मिलके उनका बिवाह करदेते हैं जब यह आया तो थोड़ेही दिनों में हमसे मिल गया और मेरी बेटी का

प्यार करने लगा तब हमने इसे यहां की रीति से सचेत किया तो यह हमारी रीति अनुसार वचन बन्द हुआ तब मैंने इसके साथ अपनी बेटी का बिवाह कर दिया अब तूही कह कि यह कैसा पुरुष है जो अपने वचन का प्रतिपाल नहीं करता तब हातिम ने कहा कि हे जवान तू क्यों नहीं अपने वचन का प्रतिपाल करता है तब वह बोला कि हे पथिक तूभी इनमें मिलगया क्यों नहीं तू अपने देशकी रीति इनको बताता है हातिमने कहाकि मैं क्या कहूं तूतो पहिलेही अपने मुखसे हार बैठा है वह बोलाकि चाहै जो होय मैंतो इसके साथन गड़ूंगा जब हातिमने देखाकि नतो यह मानता है और न ये बिनागाड़े छोड़ेंगे तब हातिमने उससे अपनी यमन भाषामें कहाकि तूमानले और इसके साथगड़जा जब रातिहोगी तो जैसे बनेगा तैसे मैंतुझे कबरमें से निकासि लेऊंगा उसने कहाकि मैंतेरे निकासने तक कैसे बचूंगा तब हातिमने उनलोगोंसे कहाकि यह कहता है किहमारे देशकीसी जो कबर बनावे तो इसके साथ गड़ूंगा यह सुन केवेसब बोले कि यहबात तो नगरके हाकिम के हाथहैजो वहचाहै सो करैतब उनको हातिम नगरके हाकिम के पास लेजायके कहनेलगा कि वह पुरुषकहता है किमेरे देशकीसी कबर बनावै तोमैं इस म्रतक के साथ गड़ूंगा हाकिम ने पूछा कि तुम्हारे देशमें कैसी कबर बनाई जाती है तब हातिम ने कहा कि हमारे देशमें ऐसी खोदी जाती है कि जिसमें दशबीस आदमी चारों ओर खड़े रहैं यह सुनके हाकिमने गर्दन नीची करली और थोड़ीदेर पीछे बोला कि अच्छा जो वह कहै सोईसही कैसेहूं तोगड़े तब वैसीही बड़ी कबर खुदाई और उसमें उस जवानको उस म्रतकस्त्री के साथ धर ऊपरसे एक बड़ी भारी पत्थर की सिलधरदी और वहांसे हातिम सहित सब घरको चले आये तो वे हातिमको मकान पर लायके बहुत सनोमान किया रातको जबघरके लोगसोये तब हातिम अपने बिछोनेसे उठके उस कबरके पास आया परन्तु वहां की यहभी रीतिथी कि तीनदिन तकउस म्रतकके कुनबाके लोग रातदिन उसकी कबरकी रखाया करतेथे इसलिये हातिम तीनोंरातों को खालीही लौटआया जब तीसरे दिन सबलोग वहांसे घरको आयेतब हातिम वहांगया और वहजवान हातिमको बहुतेरे दुर्बचन कहेकि उसपथिकने मुझेधोखा देके इसकबर में बन्दकरादिया जोमैं उसेऐसा झूठा जानता तोकभी नबन्द होतानिदान ऐसी२ बातेंकहके सोरहा तब हातिमनेसिरहाने

कोओरसे पुकाराकि हे जवानसोताहै किजागताहै मैं तेरे निकासने को आया हूं परन्तु वह न बोला तबतो हातिम को निश्चय होगई कि अब वह मरगया फिर दूसरीबार पुकारा तबभी न बोला तब हातिम ने तीसरी बेर पुकार के कहा कि हे जवान मैं तेरे निकासनेको आयाहूं जोजीताहै तो बोलनहींतो इसीमें मरेगामेरा कुछ दोषनहीहै इतनेमें वह बोल सुनके चौंकपड़ा और बोला कि तू कौनहै जो मेरी कबर पर पुकारता है तब हातिम ने कहाकि मैं वही हूं जो तुझसे निकासनेको कहा था यह कहके कमर से कटार निकार कबर खोदउसे बाहर निकालके कहाकि ले अब जिसओर तेरामनमाने उसओरको चलाजा तबउसने कहा किमैं कैसे जाऊं मेरे पासतो कुछ खर्च नहीं है तब हातिमने कईदिरम अपनी खीसीसे निकाल के दिये वह तो अपनी राह लगा और हातिम नगर में आ सबेरे उनसे बिदाहो कहने लगा कि मुझे कोहनिदाको जानाहै उन्होंने कहाकिकोहनिदा यहांसे थोड़ीही दूर है जावो परन्तु एकबात है कि थोड़ी दूर चलके एक दुराहा मिलैगा सो तुम दाहिनी ओर को राह लीजियो ईश्वर चाहे तो वहीं जाय खड़े होगे निदान हातिम उनसे बिदाहो के चलदिया और ग्यारहवेंदिन उस दुराहेपर जा पहुंचा वहां उसकाकहना भूल बाईं ओर की राहली तो दो दिन पीछे क्या देखता है कि बनके जीव जन्तु सबभागे चले आतेहैं इसने जानाकि कोई जंगली जीव इनकेपीछे पड़ाहै इसीसे सबभागे आतेहैं यह सोच के वृक्षके ऊपर चढ़गया तो क्या देखता है कि बड़े२ हाथीगैंड़ा आदि जन्तु भाग चले आते हैं और उनके पीछे एक छोटा सा जीव जिसकी दीपकीके समान आंखें जलती हैं और पूछघुमाय केमूड़पर किये धायाचला आताहै यहदेखके हातिम सोचा कि यहकोई बड़ाही कराल जीवहै जिसके डरसेऐसे २ भारीजंतुतो जीव छुड़ाये भागे आते हैं मेरी कौन चलावै परंतु अपने मनको दृढ़करके हाथ में दुधारा लेके बैठा तो दैवयोग्यसे वहजीव उसवृक्षके नीचे आयाओर मनुष्यकी बासपाय के डकरा और ऊपर को उछला निकटहीथा कि हातिमको पकड़के चीरडारे पर हातिमने ऐसादुधारा मारा कि उसकेदोनों हाथकटगये और पृथ्वीमें गिरपड़ा तब मूतके अपनी पूछभिगो चारोंओर को फिराने लगा तो जहां २ उसके मूतकी बूंदें पड़ीं तहां२ आगलगगई जबहातिमने देखाकिदावावृक्षकेपास आन पहुंचा तब कूदके एकसोतामें गिरा इतनेमें वहजन्तुमरगया

और आगभी बुझगई तब हातिम उससोतासे निकलके उसकेपास आयातो उसकेदांत दुधाराके समानथे वेउखारलिये और उसके नाककान पूंछ काटके अपने चोगामें धरलिये फिर चलते२ कई दिन पीछे एक कोट दिखाई दिया कि जिसके बुर्जमानो आसमान से बातें करतेहैं परसूनमान है जब उसके भीतर गया तो देखा कि बड़े २ मकान औरहरा खड़ेहैं और चौपड़का बाजार जिसमें जो पदार्थ चाहिये सोप्रत्येक दुकानपर धराहै पर मनुष्यका पुतराभी नहीं दीखपड़ता यहदेखके हातिम बहुत विस्मित हुआ फिरसोचने लगा कि कदाचित् यहांकोईदेव अथवा और कोईऐसी बलाआई है उसीके डरसे सबअपनी२ दुकानें और घरबार छोड़के भागगये हैं यही सोच विचार में आगेबढ़ा यहांतक कि बादशाह के महलोंतक जा पहुंचा तो केवल बादशाह तो अपनेकुनबा समेत था और उसके दोचार भृत्य भी खिरकियों में बैठेहुये दिखाई दिये हातिमको देखके एकनेकहा कि बहुतदिनोंमें यहएक पथिक इस शहरमें दिखाई दियाहै तबदूसरेने कहाकि इसको यहांबुलावो यह सुनके एकनेपुकारा उनकाबोलसुन हातिम एकखिरकी के नीचेखड़ाहोरहा तब बादशाहने उसको खिरकीकी राहसे देखके पूछा किहेजवानतू कौनहै कहांकानिवासीहै और कहां जानेका विचार है हातिमने कहाकि यमनमेरी जन्मभूमि है शाहाबादसे आताहूं और कोहनिदाको जाताहूं यह सुन बादशाहने कहाकि हेपथिक मैंने सत्य २ यहबात जानो कितुझे तेरी मृत्यु यहांले आईहै अबतू अपनेकोमृतकहीजान और यहराह कोहनिदा कीनहीं है तूभूला है वहदाहनी ओरकी राहथी सोतू उसको छोड़केबायें हाथकी राहमें चलाआया यहसुनके हातिमने कहाकि जो ईश्वरने यहां मुझे मरनेहीको भेजाहै तोमैंभी तनमनसे प्रसन्नहूं परतू यहबता कि तू कौनहै और यह नगर क्यों उजाड़ है तूयहां क्यों अकेलाकिलेमें पड़ारहताहै इसका क्या हेतुहै यहसुनके उसने उत्तरदिया कि मैंइस शहरका बादशाहहूं थोड़ेदिनोंसे यहांकोई ऐसाजंतु आता है कितनो उसके सन्मुख सिंहखड़ा होता है और नहाथी भला मनुष्यकीतो क्या सामर्थ्य है उसीकेडरसे प्रजानगर निवासी भाग गयेहैं मैंइस कोटकेभीतर अपनेदशपांच सेवकों सहितपड़ाहूं क्योंकि वहकभी कोटके भीतरनहीं आयाहै तबहातिमने पूछाकि वहकौन है देवहै कि दैत्यहै और कहां रहता है बादशाह ने कहाकि मैंने तो उसेदेखा नहीं परंच सुनताहूं किवह कोहक़ाफ में रहता है

और दिनप्रति यहांआय दोचार मनुष्योंको खायफिर अपनीठौर लौटजाता है तब हातिमने कहा कि ईश्वर की लीलाको देखना चाहियेकिमुझे राहभुलादोतो राहमेंमुझसे भेंटहोगई फिरउसका सम्पूर्ण वृत्तान्त कहिकेकहा कि एक ठौरवनमें मैंनेउसको माराहै यहसुनके बादशाह बहुत प्रसन्नहोहातिमको भीतरलेजाके मसनद परबैठाल भांति २ के भोजनकराय बादशाहने कहाहेप्यारेमुझेइस को निश्चय किस भांतिहो कि वह मारागया यहसुनके हातिमने उसके कान पूछ और दांत बादशाह के आगे धरे यह देखतेही बादशाह हातिमके हृदयमें लगा बहुबार धन्य २ कहबड़ी प्रशंसा करनेलगा और अपने नगरनिवासियों और सेनाके लोगोंको पत्र लिखे कि वह बलाय हमारे देशसे मिटगई अब आनन्द से आय बसो फिर थोड़े दिन पीछे हातिम वहांसे बिदाहोनेके समय एक मनुष्यको अपनेसाथले कोहनिदाकी ओरचला कुछदूर चलकेवह हातिमको कोहनिदाकी राहदिखा वहांसे अपनेघरको लौटआया हातिमने कोहनिदाकी राहली थोड़ेदिनोंमें एकशहरमें जापहुंचा वहांके निवासी उसको बादशाहके पासले गये उसने हातिम से पूछा कि तू कौन है और कहांसे आताहै और कहां और किस लिये जाता है हातिमने उत्तर दिया कि मुझे शाहाबादसे बरजख सौदागरकी बेटीने कोहनिदा की खबरलेनेको भेजा है सो यहां भांति२ के कष्टभोगके पहुंचाहूं इसलिये जो आपमेंसे कोईजानता है तो उसका हाल मुझसे बतादे तो अत्यन्त इस पथिक पर दया होगी यहसुन उसने कहा कि हेभ्राता यह समाचार ऐसा नहीं है जो तुझसे कोई कहै परन्तु जोतू यहां रहैगा तो आपहीजान जायगा यहसुनके हातिम वहां रहनेलगा और बादशाहके घरमें भोजन करनेलगा बहुधा बादशाह और आप एकही साथभोजन करै इसमें कुछ कालबीता तब एक दिन सौ दोसौ आदमियों के साथ हातिम और बादशाह दोनों बैठे बातें कररहे थे इतने में अचानकएकशब्द सुनाईदिया कि शीघ्रआ शीघ्रआ यहसुनके उनमें एक जवान पुरुष दौड़ा लोगोंने उसके कुनबा और सम्बन्धी लोगों से बताया कि उस मनुष्यको कोहनिदा से बुलाया है यह सुनके उसके सम्बन्धी दौड़े और उसको घेरलिया तो क्या देखते हैं कि उसका सुखरक्त रंग होरहा है और पहाड़की ओर दौड़ा चलाही जाताहै तबहातिमने लोगोंसे पूछाकि इस मनुष्यको क्या होगयाहै जो न किसीसे बोलता है और न कुछचाहता है बावरों की भांति

चलाही जाताहै तब लोगोंने कहाकि इसको कोहनिदासे बुलावा आयाहै यहसुनके हातिमने मनमें कहा किसीने उसको बुलाया होगा यहशोचके हातिम ने उसको पकड़ लिया और पूछनेलगा किहेभाता यहकैसी बात्तीहै जोतू बिनबोलेचलाहम सबको छोड़े जाताहै भलाकुछतो मुखसे बोल निदान हातिम ने बहुतेरा मूड़ पटकापर उसने कुछनकहा हाथछुड़ाके भागा और पहाड़के नीचे जापहुंचा हातिमभी उसके पीछेही लगाचला गया इतने में एक संग वहपहाड़ हातिमकी दृष्टिसे लोपहोगया केवलरंगे भयेपत्थर उसको दृष्टि पड़े फिर हातिम हारकेसबके साथ लौट आया और यहांदेखा कि उसकाकोई सम्बन्धी उसकेलिये न रोया किन्तुसभों ने बड़ाआनन्द कियाफिर अपना २ काम करनेलगे जब हातिमने पूछा कितुमको यहभी मालूमहुआ किउस मनुष्य की कौनदशा हुई तबवेकहने लगे किवहां तूभी तो वर्तमानथा जो हमने देखा सोईतैनेभी देखाहै फिरहमसे काहेको पूछताहै यहसुनके हातिम उसमनुष्य केलिये आंसूभरके शोचकरनेलगा तब उन्होंने कहा कि यह हमारेदेशकी रीतनहीं है किकोई किसीके लियेरोये अथवा शोककरै जोतुझको कुछदिन हमारेपास रहनाहैतो हमारीभांत तूभीरहनहीं निकालके गांवबाहरकरैंगे यहसुनके हातिमनेअपने आंसूपोछडालेपरशोचमें बनारहै जबसबोंनेहातिमको शोचबसदेखा तो कहा अबतू काहेको शोचकरता है कोहनिदा का यहीहाल है जो तैने देखाहै तब हातिमने कहाकि मैंनेतो कुछनहीं देखाजो हुस्नबानू मुझसे पूछेगी तोमैं क्या बताऊंगा निदान छः मास तक हातिम वहां रहा और इसी भांति पन्द्रह मनुष्य उसपहाड़की ओरको गये और जहांगये तहींरहे वहांसे कोईनआया जोवहां के समाचार कहै इतनेमें दैवयोगसे उनमेंभी एक मनुष्य हातिम नामकथा और इसहातिम और उसके मध्य ऐसी मयत्री होगई थी किदूरजाने कोतो कौनकहै एकक्षण मात्रभी दोनों बिलगनहीं होतेथे सो एक दिनसबलोग बैठेबातैं कररहेथे किभावी बलवान इतनेमें शोघ्र आ यहशब्द सुनाईदिया यह सुनतेही वहदीन बावरे की भांति उसपहाड़की ओरचला यहसमाचार सुन उसके हितू सम्बन्धी हातिमताई समेत वहां आये और चारों ओर से घेरके खड़ेहुये तब हातिम निजमनमें शोचनेलगा कि एकतो मेरे और इस मनुष्यके बीचमयत्री विशेषहै सोजाताही है वहांसे बहुरनेका नहीं दूसरेयहांके निवासियोंसे शब्दभान पर्वतकाकुछ सन्देह नि-

वर्त्तकभेदभीनविदितहुआ और उसविधिविधाताका लिखाअमिटहै इसलिये जो ईश्वरकरै सोहो अबतो इसकासाथ न छोड़ूंगा वरञ्च इसके साथ अवश्यही जाऊंगा यहनिज मनमें ठान उसका हाथ पकड़ पहाड़ की ओर राहली राहमें हातिम उससेबहुतेरा पूछे किमित्र तेरेकौन पिशाचलगा है जो बरबस खींचता है कुछ मुझे भीतो इसभेदसे सचेतकर परन्तु उसने इसका कुछभीउत्तरनदिया तबतो इसने झुंझलाके कहा कि भलेआदमी देख कितेक दिनसे हमदोनों निसवासर एकठौर रहतेहैं और परस्पर कैसी मचती हुई और इस समय बोलनाभी भारीहोगया यहकैसी मनुष्यत्वहै और क्योंतेरा कण्ठरुंधा है और तेरा लेजानेहारा कौन है और कहांजाताहै उसनेइसकी ओरको ध्यानभी नकिया कि यहकौन और क्या कहरहाहै और उलटे हातिमके हाथसेअपनाहाथ छु-ड़ानेलगा हातिम ने बहुतेरा बलकिया पर उसने हाथ छुड़ाही-लिया और कोहनिदा की ओर कोचला परन्तु हातिमने उसका पीछानछोड़ा निदानदोनों आगेपीछे पहाड़के नीचेपहुंचे तबहा-तिमने उचकके उसकीकमर पकड़ली और दोनों पहाड़के ऊपर चढ़गये और जबकोटके निकटपहुंचे तबएक खिड़कीसे होके भीतर गयेतो सबकीआंखोंसे अलक्षहुये तब सबलोग वहांसे हातिम का सोचकरतेहुये लौटआयेऔरनगरके अधीश्वरसेकहाकिउसकेसाथ वह पथिक भी चलागया यहसुनके वह हाकिम क्रोधातुर होके बोलाकि अरेमूर्खो आजतक कोईउस पहाड़पर बिनाबुलाये नहीं गयाहै तुमनेउसको क्यों छोड़दिया जो उसकेसाथ चलागया तब उन्होंने कहाकि हेअन्नदाता हमाराकोई अपराध नहीं है हमनेतो अपनीसी बहुतकरी परन्तुउसने एक न मानी और कहाकि यह मेरामित्र है मैं इसका साथनछोड़ूंगा और जोकुछ आपदा उस-परपड़ेगी उसकामैंभी भागीहूंगा ऐसी २ बातेंकरके सबजने हा-तिमके लिये सोचनेलगे अबकोटके समाचार सुनोकि जबवे दोनों भीतरगये तब उसके भीतर एक शून्य मैदान हरी घाससे भरा दृष्टिपड़ा थोड़ीदूर चलके थोड़ीसी पृथ्वी बिनाघासके दिखाईपड़ी उसमें पांव धरतेही वहजवान गिरपड़ा तब हातिमने चाहाकि उठावे परन्तु गिरतेही उसका बदन पीलाहोगया आंखें पथरा गईं और हाथपांव कड़ेहोगये यहदेख हातिम को निश्चय होगया कि अबयह मरगया तब हातिम रोनेलगा इतनेमें धरती फटगई वह जवानउसमें घुसगया तबउसठौर भी हरी दूब होगई यहदेख कै

हातिमने वही पमीलाका धन्यवाद किया और कहाकि यह संसार अनित्यहै इसीभांति सबको मरना सत्यहै तबहातिमने यही मनमें ठानी कि मैंने कोहनिदा की बात जानी निदान वहां सेचलने की मनमें ठानी दिनभर फिरापर नतो उस खिरकी को फिरदेखा और न कहीं कोटका चिन्ह पाया इसी भांति सात दिनतक निरन्तर बिनअन्न जल फिराकिया बदनमें चलनेकी सामर्थ्य नरही तबसोचने लगा कि हे हातिम तेरीमृत्यु तुझेयहां लाई जो तू बिना बुलाये कोटके भीतर आया अब नतो वह खिरकी है और न कोटहै न वह शहर है यही सोचता हुवा एकनदीके किनारे आपहुंचा तो देखा कि वहनदी बड़ेबेगसे बहती है और कहीं और छोर नहींदिखाई देता तबमनमें बिचारा कि इसकेपारकैसे उतरूं इतनेमें एकनौका उसकी ओरकोआती दृष्टिपड़ी सोजाना कि कोई केवटलिये आता है जब निकट पहुंचो तो उसपर किसीको न देखकर विस्मित हुवा पर ईश्वर का नाम लेके उस पर चढ़ा तो उस नौका के कोने में एक बस्तलपेटाहुवा दृष्टिपड़ा इसने उसको खोला तोदो रोटी और भूनी मछली निकलीं तब हातिमतो क्षुधावंतथाही उसने भोजन करनेका अनुमानकिया परसोचा कि यहकिसी दूसरेका भाग है मुझे इसका ग्रहणकरना अनुचित है इतनेमेंनदीसे एकमछलीनेमुंह निकालके कहा कि हे हातिम यहतेराही भाग है तू इसकोखाले वहतो यहकहके जलके भीतर चलीगई हातिमने वे रोटी खाई और ईश्वरका धन्यवादकिया और वायुके बेगसेएक किनारपै जाउतरा तो कहनेलगा कि अबचलकेनगरमें उसपुरुषका समाचार वहांके निवासियोंसे कहूं निदान हातिमको फिरते २ सात दिन बीते न तो कहीं गांवका खोज मिला और न कहीं अन्नही मिला इसी सोचविचारमें चला जाता था कि अबक्याकरूं इतनेमें उसको एक पर्वत दृष्टिपड़ा तीनदिनमें वहां जा पहुंचातो जिसपत्थरको उठाके देखे वहीं रक्त बहता मिलेयह देखके कहने लगा कि किससे पूछूं जो यह हाल बतावे निदान पहाड़पर चढ़नेलगा तो बारहदिनमें उसके शिखरपर पहुंचा तो एकलम्बा चौड़ामैदान दिखाईपड़ा और जितने वहां जीव जंतु खगमृग सबरक्त रंग देखे तोभूख प्यास भूलके आगे बढ़ा और छः कोसतक मारामार चला गयातो एकरक्तनद लहरैं लेता दृष्टिपड़ा और जितने जलचरजीव उसमेंथे सोभी ऐसे ही दृष्टिपड़े कि मानों रक्त संयुक्त मांसके लोथड़े हैं यह देखके अपनेमनमें कहने लगाकि किस प्रकारसे पार उतरूं यह सोचता

बर्तकभेदभीनविदितहुआ और उसविद्याविधाताका लिखाअमिटहै इसलिये जो ईश्वरकरै सोहो अबतो इसकासाथ न छोड़ूंगा बरण इसके साथ अवश्यही जाऊंगा यहनिज मनमें ठान उसका हाथ पकड़ पहाड़ की ओर राहली राहमें हातिम उससेबहुतेरा पूछे किमित्र तेरेकौन पिशाचलगा है जो बरबस खींचता है कुछ मुझे भीतो इसभेदसे सचेतकर परन्तुउसने इसका कुछभीउत्तरनदिया तबतो इसने झुंझलाके कहा कि भलेआदमी देख कितेक दिनसे हमदोनों निसबासर एकठौर रहतेहैं और परस्पर कैसी मयत्री हुई और इस समय बोलनाभी भारीहोगया यहकैसी मनुष्यत्वहै और क्योंतेरा कण्ठरुंधा है और तेरा लेजानेहारा कौन है और कहांजाताहै उसनेइसकी ओरको ध्यानभी नकिया कि यहकौन और क्या कहरहाहै और उलटे हातिमके हाथसेअपनाहाथ छुड़ानेलगा हातिम ने बहुतेरा बलकिया पर उसने हाथ छुड़ाही-लिया और कोहनिदा की ओर कोचला परन्तु हातिमने उसका पीछानछोड़ा निदानदोनों आगेपीछे पहाड़के नीचेपहुंचे तबहातिमने उचकके उसकीकमर पकड़ली और दोनों पहाड़के ऊपर चढ़गये और जबकोटके निकटपहुंचे तबएक खिड़कीसे होके भीतर गयेतो सबकीआंखोंसे अलखहुये तब सबलोग वहांसे हातिम का सोचकरतेहुये लौटआयेऔरनगरके अधीश्वरसेकहाकिउसकेसाथ वह पथिक भी चलागया यहसुनके वह हाकिम क्रोधातुर होके बोलाकि अरेमूर्खो आजतक कोई उस पहाड़पर बिनाबुलाये नहीं गयाहै तुमनेउसको क्यों छोड़दिया जो उसकेसाथ चलागया तब उन्होंने कहाकि हेअन्नदाता हमाराकोई अपराध नहीं है हमनेतो अपनीसी बहुतकरी परन्तुउसने एक न मानी और कहाकि यह मेरामित्र है मैं इसका साथनछोड़ूंगा और जोकुछ आपदा उसपरपड़ेगी उसकामैंभी भागीहूंगा ऐसी २ बातेंकरके सबजने हातिमके लिये सोचनेलगे अबकोटके समाचार सुनोकि जबवे दोनों भीतरगये तब उसके भीतर एक शून्य मैदान हरी घाससे भरा दृष्टिपड़ा थोड़ोदूर चलके थोड़ीसी पृथ्वी बिनाघासके दिखाईपड़ी उसमें पांव धरतेही वहजवान गिरपड़ा तब हातिमने चाहा कि उठावे परन्तु गिरतेही उसकाबदन पीलाहोगयाआंखें पथरा गईं और हाथपांव कड़े होगये यहदेख हातिम को निश्चय होगया कि अबयह मरगया तब हातिम रोनेलगा इतनेमें धरती फटगई वह जवानउसमें घुसगया तबउसठौर भी हरी दूब होगई यहदेख के

हातिमने वहीं परमात्माका धन्यवाद किया और कहाकि यह संसार अनित्य है इसीभांति सबको मरना सत्य है तबहातिमने यही मनमें आनी कि मैंने कोइनिंदा की बात जानी निदान वहां सेचलने की मनमें ठानी दिनभर फिरापर नतो उस खिरकी को फिरदेखाऔर न कहीं कोटका चिन्ह पाया इसी भांति सात दिनतक निरन्तर बिनअन्न जल फिराकिया बदनमें चलनेकी सामर्थ्य नरही तबशोचने लगा कि हे हातिम तेरीमृत्यु तुझेयहां लाई जो तू बिना बुलाये कोटके भीतर आया अब नतो वह खिरकी है और न कोटहै न वह शहर है यही शोचता हुवा एकनदीके किनारे आपहुंचा तो देखा कि वहनदी बड़े बेगसे बहती है और कहीं ओर छोर नहींदिखाई देता तबमनमें बिचारा कि इसकेपारकैसे उतरूं इतनेमें एकनौका उसकी ओरकोआती दृष्टिपड़ी तोजाना कि कोई केवटलिये आता है जब निकट पहुंचो तो उसपर किसीको न देखकर बिस्मित हुवा पर ईश्वर का नाम लेके उस पर चढ़ा तो उस नौका के कोने में एक बस्त्रलपेटाहुवा दृष्टिपड़ा इसने उसकोखोला तोदो रोटी और भूनी मछली निकली तब हातिमतो क्षुधावंतथाही उसने भोजन करनेका अनुमानकिया परशोचा कि यहकिसी दूसरेका भाग है मुझे इसका ग्रहणकरना अनुचित है इतनेमेंनदीसे एकमछलीनेमुंह निकालके कहा कि हे हातिम यहतेराही भाग है तू इसकोखाले वहतो यहकहके जलके भीतर चलीगई हातिमने वे रोटी खाईऔर ईश्वरका धन्यवादकिया और वायुके बेगसेएक किनारेपै जाउतरा तो कहनेलगा कि अबचलकेनगरमें उसपुरुषका समाचार वहांके निवासियोंसे कहूं निदान हातिमको फिरते २ सात दिन बीते न तो कहीं गांवका खोज मिला और न कहीं अन्नही मिला इसी शोचविचारमें चला जाता था कि अबक्याकरूं इतनेमें उसको एक पर्वत दृष्टिपड़ा तीनदिनमें वहां जा पहुंचातो जिसपत्थरको उठाके देखे वहीं रक्त बहता मिलेयह देखके कहने लगा कि किससे पूछूं जो यह हाल बतावै निदान पहाड़पर चढ़नेलगा तो बारहदिनमें उसके शिखरपर पहुंचा तो एकलम्बा चौड़ामैदान दिखाईपड़ा और जितने वहां जीव जंतु खगमृग सबरक्त रंग देखे तो भूख प्यास भूलके आगे बढ़ा और छः कोसतक मारामार चला गयातो एकरक्तनद लहरें लेता दृष्टिपड़ा और जितने जलचरजीव उसमेंथे सोभी ऐसे ही दृष्टिपड़े कि मानों रक्त संयुक्त मांसके लोथड़े हैं यह देखके अपनेमनमें कहने लगाकि किस प्रकारसे पार उतरूं यह शोचता

में पकड़ लिया अब दूसरा मारूं तो काहे को लगेगा इतने में वे निकट आके कहने लगेकि हे हातिम तुझे लाज नहीं आई जो तैने रत्नों का लोभ किया तब हातिमने कहाकि मैंने कौन लोभकिया तो उन्हों ने कहा कि उसबन मेंसे तू रत्नलाया है और अभी तक तेरे पास हैं तब हातिमने कहा कि यह ईश्वर की सृष्टि अथाह है जो मैंने वहां से रत्न लिये तो तुम को क्या कुछ तुम्हारे तो नहींहैं उन्होंने कहा कि यह सबसत्यहै पर वे रत्न मनुष्योंके लिये नहींहैं किंतु परियों की जातिके लोगोंके निमित्त हैं तब हातिम ने कहा कि मैं तो आजतक यहीसुना कियाहूं कि मनुष्य सृष्टिमें सर्वोपरि हैं और इन्हींके द्वारा सकलसाधन सुलभहैं पर आजतेरे कहने से यह मालूम होताहै कि परी मनुष्यसेश्रेष्ठ हैं और क्या मनुष्य इन रत्नोंके योग्यनहीं हैं जो पहरैं और इनको काममेंलावैं मैंनेतोके-वल मनुष्योंके दिखाने के लिये उठालिये हैं जिससे सबलोग देखके ईश्वरकी मायाको थिरनाय मायापति का धन्यवाद करैं कि देखो उसने कैसे २ अनुपम अमोल्य पदार्थ अपनी सृष्टिमें उत्पन्नकियेहैं यहसुनके उन्होंने कहा कि यहसत्य है कि तुझेइनका लोभनहीं है परन्तु जो तू अपनेदेशको कुशलपूर्वक जाना चाहताहै तो इनर-त्नोंसे हाथ उठा यहसुनके हातिमने सबखोलके फेंकदिये कि लो तुम्हीं लेजाव पर इतनीही शोचकी बातहै किमैं इतनीदूरसे इन-को इथा बांधके कष्टसहताहुआ लेआया तुमने यहबड़ी अनीतिकी है कि मुझसे छीनलिये मैं कुछचुराके नहीं लाया था तुमने मेरा परिश्रम निष्फलकिया यहसुनके उन्होंने कहा कि जोतू इनकेउ-ठाजाने का वेतन चाहताहै तो यहभी उचितनहींहै किंतु किसी का इतनाधन बिना कहे उठाके अपनेपास रखछोड़े और फिरउ-लटीमजूरीमांगै यह तैने कहांकी नीति बखानी यहसुनके हातिम ने गर्दन नीची करलीऔर चुपहोरहगया तबवे एक २ रत्न सबप्रकार का जो सबसे अधिक दामका था देनेलगे और कहा कि तुझे यही बहुतहै हातिमने उनको लेलिया और कहा कि हे हरिदासोमुझे राह बतादेव जिसमें अपनेदेशमें किसी भांति पहुंचूं यह सुनके वे कहनेलगे हे जवान तूअबयहीधन्यमानकितू कुशलपूर्वक यहांपहुं-चा नहीं तो यहांसे आयके कोईलौटके नहींगया अब कुछ इतनासं-देहनहींहै तेरीआयुर्बल बड़ीदिखाई पड़तीहै अबतुझे आगे एकतो जवांहिरका नदमिलेगा और दूसरा अग्निका जो तू इनसे कुशल पूर्वक पार होजायगा तो निसन्देह अपने देशमें पहुंचजायगा पर

किसी वस्तुको देखके लोभ मतकीजियो नहींतो अपनेकिये के फल पावेगा वे तो इतना कहके फिर उसीसोतामें उतरगये हातिमने रातभर तो वहींबैठ ईश्वर २ कर रातकाटी सबेरा होतेही आगे बढ़ा तो कुछदूर चलके एकनदी दृष्टि पड़ी उसका पानी चांदीके समान देखा ज्योंत्योंकरके पारउतरगया थोड़ेदिन चलके उसेदूसरी नदी दृष्टिपड़ी यहकईदिन का प्यासाथा देखके बहुतहर्षित हुआ जो उसकेनिकट पहुंचा तो देखा कि उसकी रेतीमें बराबर मोती बिछेहैं और प्रत्येक मोती अण्डे की बराबर है और उनकीचमक के मारेआंखें झिलमिलाई जातीथीं एकबेर तोमनमेंआई कि इनमें से कुछ मोतीउठावे परन्तु उनदेवोंकी शिक्षासुधिहुई तो फिरडरके मारेआंखें बन्दकरलीं और उसके तटपर बैठके जो देखा तो उसका पानी दूध और घीके समानहै यह तो प्यासाथाही भलीभांतितृप्त होके पानी पिया और उसको उतरकरके आगे बढ़ातो दूरसे एक प्रकाश ऐसादृष्टिपड़ा कि मानों सोनेका पहाड़है निदान एकमासउपरान्त निकट पहुंचा तो सत्यही सोने का पर्वत दिखाई पड़ा जो उसपर चढ़ा तो सबवृक्ष सोनेहीके फलफूल उसपर जगमगा रहेहैं इसीभांति देखता हुआ तीनदिन तक चलागया तिसपीछे एक बड़ा लम्बाचौड़ा चौगान दृष्टिपड़ा और सम्पूर्ण पृथ्वी वहां की सोनेहीकी देखपड़ी उसकेउपरान्त एकसोनेका महलदिखाई दिया उसका कपाटखुलापाके उसकेभीतर चलागयातो देखाकि एक बाग सुनहरे वृक्षों का जगमगा रहाहै और भांति २ के मेवा पके हुये लगेहैं यहदेखके ईश्वरकी मायाको नमस्कार किया औरकुछ मेवातोड़के खाई फिरघूमता फिरता एकहौजके किनारे जा पहुंचा उसका पानी ऐसा स्वच्छथा कि मानो बिल्लौरका बिछौना बिछा है यह इसीसोचविचार में था कि यहकिसका बागहै और इसका स्वामी कौनहै कि इतनेमें कईपरी आके दृष्टिवानहुई औरहातिम को देख हंसकर विस्मितहो कहनेलगींकि यह मनुष्य यहां कहां से आया तब हातिम उनसे पूछने लगाकि तुम कौनहो और यह बाग किसका है तब उन्होंने उत्तरदिया कि यह महलपरी नोशलबकाहै इतनेमें वह आपही आपहुंची हातिम उसको देखतेही मूर्छित होगयातो वह हातिमके सिरहाने खड़ीहोके कहनेलगी किकोई शीघ्र गुलाबलाके इसके मुखकोसींचै अनुशासनके साथही एक बारांगना दौड़ी आई और हातिमका मुख गुलाब से सींचा जब इसकी मूर्छा जागी तब वह तो जाके एक जड़ाऊ सिंहासन

पर जाबैठी और एक सोनेकी जड़ाऊ कुरसीपर हातिमको बैठा-लके पूछनेलगी हे जवान सत्यबता तू कौन है और कहांसे आताहै और यहां किसकार्य्यको आयाहै तब हातिमने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त आद्योपान्त कहके पूछाकि इसठौरका क्या नामहै और इस बाग का स्वामी कौन है और तू कौन है तब परी नोऋलबने उत्तरदियाकि इस पहाड़का नाम कोहजरीहै और यह मकान शाहपाल बादशाहका है और उसकी एक बेटी आसानामक है उसीकी दासियोंमें से मैंभी एक हूं सातवें दिनके पीछे मेरी बारी सेवाकरने की आतीहै तब एक दिनको मैं उसकी सेवाको जाती हूं और इस पहाड़का सम्बन्ध कोहकाफसेहै और यह जो ऊंचाई बड़ी दूरपर दृष्टि आतीहै सो उसीका कोटहै निदान उसने हातिम को चार दिन तक पाहुन राखके भांति २ के षटरस व्यंजन हातिम को जिवांये तब पांचवेंदिन उसने कहाकि यह ठौर तुम्हारे रहने के योग्यनहीं है इसलिये अब तुम्हें उचितहै कि दयाकर के बिदा-हूजिये हातिम वहांसे बिदाहोके दश बीस दिन तो पहाड़ही प-हाड़चला फिर एक बनमें जाके देखाकि एक नदी जिसका पानी गलेहुये सोनेके समान लहरें लेरहाहै यह पार उतरनेके सोचमें उसके किनारे बैठगया इतने में एक सुनहरी नौका दूरसे दृष्टि-वान हुई थोड़ी देरमें हातिम के पास आपहुंची हातिम उस पै चढ़लिया तो उसमें एक थाली में ततकालका बनाहुआ हलुवा धरा देखा हातिम ने बड़े हर्षसे उसको भोजनकिया और ईश्वरकी दयासे नदीपार हुआ और सातदिन तक निरन्तर मार्गमें ऐसे२ आश्चर्य देखे कि प्रथम ऐसे नहीं देखेथे निदान आठवेंदिन पत्थरों में आपहुंचा परन्तु सब पत्थर ऐसे जलते थे कि मानो आग से निकालेहैं हातिम दो चार कदमचला फिरमारे उष्णताके न च-लागया और प्यासके मारे ओष्ठ सूखने लगे शरीर भुलसने लगा अन्तको व्याकुलहोके लोटनेलगा और मरनेके निकट पहुंचा त्यों-हीं वही दोनों देव था प्रगटहुये और शीतपानीसे हातिमका मुख सींचके उठालिया जब हातिमको चेतहुआतो उन्हींदोनोंको देखा तब हातिमने उनकी बड़ी प्रशंसाकरके कहाकि मित्रो भले समय आके सहायताकरी अब मुझे बतावोकि यह उष्णता काहेकी है उन्होंने कहा आगे अग्निका महानदहै उसीकी ज्वालासेये पत्थर और पृथ्वी उष्णहोरही है तब हातिमने पूछाकि हे मित्रोमैं कहां होकेजाऊं जो इस अग्निसेबचूं तब उन्होंने कहा पंथदिखाना तो

हमारा काम नहीं है पर एक यह मुहरा तुझे देतेहैं तू इसको मुखमें धरले अग्नितुझे जलसमान शीतललगेगी पर जब उसपार पहुंचे तब इस मुहराको मुखमेंसे निकालके फेंकदीजियो वे तो यह सिखाय हातिमके सामने से अदृष्ट हुये और सवेरा होतेही हातिम आगेको बढ़ातो क्या देखताहै कि अग्निकी ज्वालाऐसी उठी हुई है कि मानो आकाश को छुआ चाहती है तब हातिम मारे डरके कभी तो धरतीदेखे और कभी आकाश इतनेमें एकनौका आगे आई हातिम अपने मनमें सोचाकि अब जान बूझके अग्निमें कूदना है परन्तु क्या कीजिये राह यही है निदान ईश्वर का नाम लेके नौकापर सवारहुवा और मुखमें वह मुहरा तो रक्खेहीथा जब नावपर बैठा तो रोटी तरकारी धरी मिली इसने उस भोजन को खा लिया और अपनी आंखें बन्दकरके उसी नौकामें बैठरहा कभी खोले भी तो फिर सहमके बन्दकरले इतनेमेंनौका बीचधारामें आयके चक्कीकी भांतिघूमनेलगी तब हातिमको निश्चय होगया कि अबप्राण किसी भांति नहीं बचसक्ते मारेडरके अपनी आंखेंबन्दकरके एककोनेमें पड़रहा निदानतीनदिन पीछेनौकाकिनारेपरआपहुंची तबहातिमने आंखेंखोलीतोनतो वहअग्निकानद है और न नौकाहै किंतु एकयमन कासा जंगलदिखलाई दिया तब हातिमने वह मुहरा फेंकदिया और अपने मनमें बहुत हर्ष वन्त हुआ थोड़ीदूर चलकेएक किसानसे पूछा कि यह कहां का देश है तो वह हातिमकी ओर बिनाबोलेचाले टकटकीबांधके देखनेलगा तबहातिमने पूछा कि हेप्यारे तू बधिर तो नहीं है जो मेरीओर को देखता है और उत्तर नहीं देता यह सुनके उसने कहा कि मुझेतो तुमहातिमकी अनुहार दिखाई देतेहो तबहातिमने पूछा कि तू मुझेक्याजाने उसनेकहा कि यहदेशयमन है और हातिम हमारा शाहजादा है और उसका पितातय यहांका बादशाह है परन्तु शाहज़ादेको सातवर्ष हुये कि यहां से निकल गयाहै इस अन्तरमें उसकेसमाचार मलकाजरीपोशसे मिलेयेसा सुनके सबके मनको ढाढ़सबंधाथा और अबतोउसके कुनबाका बहुत बुराहाल होरहाहै यहांतककि सबविधातासे मृत्युमांगतेहैं और मलकाकातो ऐसा हाल है कि कोजाने उससे मिले या न मिले यहसुनके हातिमने कहा कि थोड़ेदिनहुये तुम्हारा शाहजादा मुझे मिला था वह कुशल पूर्वक है तुममेरी ओरसे उसकेगांवमें जाकेसबसे कह दीजियो कि हातिम आनन्द पूर्वक शाहाबाद को ओर गया है

फिर हातिम ने कहा कि हे मनुष्य मैं प्यासा हूं थोड़ासा पानी-ला वह दौड़के एक कटोरा दूधका ले आया हातिमने बड़े हर्षसे पीलिया और मनमें यह कहता कि बहुत दिनों में अपने देशका दूधपियाहै फिरशाहाबादकी ओरचला थोड़े दिनोंमें शाहाबादमें आपहुंचा हातिमकेआनेके समाचार हुस्नबानूनेसुने उसनेतत्कालही बुलाया और आपपर्देके भीतरबैठीऔर हातिमको कुर्सी चिलमनके बाहर बिछादी तबहातिमसे पूछनेलगीकि हातिम अबमुझे कोह-निदाका भेद बता उससमय हातिमने अपना आद्योपांत कहसु-नायातो हुस्नबानूने कहाकि हातिम तू सत्य कहता है परंतु मुझे कोईचिन्ह मेरेसन्तोषार्थ दिखा तबहातिम ने कहा कि यह मेरा बासकर सम्पूर्ण चांदीकाहोगयाथा परंतुपीछेमैंने किसी उच्छिष्ट सोताकेजलमें जोधोयातो हाथतो अपने स्वाभाविक रंगकाहोगया परंतु नखइसके अभीतक चांदीके बनेहैं और जबमैं सोने की नदी पर आया तोपानी पीनेसे चार दांतस्वर्णके होगये हैं और ए रत्न वहांके मेरे पासवर्तमान हैंहुस्नबानूने देखे तो देखतेही हातिम के बारम्बार धन्यकहा और प्रथक्२कह प्रशंसा करनेलगी फिरभांति२ के व्यंजन हातिमके आगेधरे हातिमने कहा कि यहसब मेरेसाथ भेजियेमैं मुनीरशामीके साथभोजनकरूंगा वहांसे हातिम उठकेस-रायमें मुनीरशामीके पासआय कंठसेलग दोनोंजनेमिले और एक साथ बैठके भोजन किये और सम्पूर्ण व्यवस्था मुनीरशामीसे कही तिसपीछे शयनकी फिरकई दिनपीछे स्नानकर अच्छे२ वस्त्रपहिन हु-स्नबानूकेपासगया द्वारपालोंने भीतरजनाया हुस्नबानूने भीतरबुलाया तबहातिमने पूछा कि हे हुस्नबानू अब तू छठाप्रश्नबता तबहुस्नबानूने कहा कि एक मोतीमेरेपास है उसका जोड़ामिलादे हातिम ने कहा मुझे दिखादे तो मैंभी उसको देखलूं हुस्नबानूने वह मोती हातिम को दिखाया तब हातिम ने देखा कि सत्यही जलमुर्गी के अंडेकी बराबर है फिर हातिमने कहाकि इसकी आकृत मुझेदेतो इसके समान ढूंढूंगा हुस्नबानूने दूसरामोती उसके समान चांदी का बनवा दिया हातिम उसकोले बिदाहो मुनीरशामी के पास सरायमें आय कहनेलगा किभ्राता अबइतना बड़ामोती मांगती है मैंयही कहताहूं किहे भगवान कौनसमुद्र में ऐसामोती उत्पन्न होताहै तब मुनीरशामीने कहा कि ठौरका पतापूछ लीजियो कि कहां यहमोती उत्पन्न होताहै यह सुनके हातिम ने कहाकि हे भ्राता वहां मेरा परमेश्वर मुझे पहुंचादेगा जिसनेसब कठिनता

को सरलकिया है वही इसको भी सिद्ध करैगा मैं तो ईश्वरके भरोसे के सिवा किसीसे सहायता नहीं मांगता तब मुनीरशामीने कहा कि भाई धन्य है तुझे और तेरे साहसको अब कुछ दिन यहां आराम कर तिसपीछे कहीं जाइयो यह सुनके हातिमने कहा कि जब भाई हमींको काम करना है तो विलम्बका कारण कौन निदान हातिम मुनीरशामी से विदा होके जलमुर्गी के अंडाके समान मोती की खोजमें निकला॥

छठा प्रश्न हातिम के जाने और जलमुर्गी के अण्डा समान मोती लानेके विषय में॥

जब हातिम शाहाबाद से निकला तो पांचकोस पर जाके एक पत्थर की शिलाके ऊपर बैठके सोचनेलगा कि हे भगवान इतना बड़ा मोती किस समुद्रमें मिलेगा जो तूही अपनीकृपा कटाक्ष से बतावे तो यह अद्वैत मोती हाथ आवे नहीं मुझे तो सामर्थ्य नहीं है इतनेमें संध्या हुई तो एक जोड़ा नातिका नामक सतरंगे पक्षीका जिसका स्थान कहरमा नदके तट परथा उसदिन दैवयोगसे वहां एकवृक्षपर बसेरा लियाथा उनमें से स्त्री बोली कि यद्यपि यहां हमारे खाने की वस्तु नानाप्रकार की हैं तद्यपि हमको तो यहां के जलवायु भले नहीं लगते सो मेरा तो विचार सबेरे उड़चलनेका है तबपुरुष बोला कि मेरा विचार तो यहां कुछ काल बितानेकाथा पर तेरी मनुहारके लिये सबेरे जन्मभूमिको उड़चलूंगा यहकहथोड़ी देरचुपरहे फिरस्त्री बोली कि वह कौन मनुष्य है जो गर्दननवाये किसी सोचमें बैठा है तब पुरुषने कहा कि यह यमन का शाहजादा हातिम है इसठौर सोचमें बैठा है क्या करै यह दीन सत्पुरुष है और परमार्थ के ऊपर कमर कस उद्यत हुआ है यहकुछ अपने लिये नहींकिन्तु परायेलिये जलमुर्गीके अंडाको समान मोतीकी टोह में निकला है स्त्रीने कहा कि यहक्या करैगा तबपुरुषने कहा कि एक मुनीरशामी नामक ख्वारजिमका शाहजादा एक हुस्नबानू नामक बरजख सौदागर की बेटी की प्रीतिके फन्दमें खगइवफसा है और उस कुटिलने सातप्रश्नकिये सो न तो उस शाहजादे विरहीमें यह सामर्थ्य है कि उसके प्रश्नोंके उत्तरदे और न उसेछोड़ा चाहता है क्योंकि वहतो उस मृगनयनीके स्वरूप सागरकी मीनहो रहा है भलामीन बिनजल कैसे जीवे तथा उसकोभी दशाजान, सोई एक दिनरोदन करता बनमें फिरताथा और यह हातिम वीरेश उस बनमें अहेरकी आखेटमें वहांभी फिरता २ आनिकला और उस

को रोतेदेख इसके कोमलचित्तमें उसविरही पर अति दया आई तबउसने पूछनेसे अपनी विरहका सम्पूर्ण वृत्तान्त इससे कहा इसने उसकी आपदा अपनेमाथे ओढ़ी और उसके पलटे प्रश्नोंके उत्तर देने को उद्यत हुआ सो उस सुन्दरी के पांच प्रश्नों के उत्तर तो दे चुकाहै अबछठा प्रश्नयही है कि इतना बड़ामोती लादे इसलिये यहदीन इसवृक्षके नीचेइसी सोचमें बैठा है किकहां जाऊं जहां यहमोती पाऊं और सत्यहै किबिनदेखे कौनसी पंथको जावेंऔर ऐसामोती कैसेमिले परंतुजोप्यारोतू कहैतो मैंइसको राहदिखाऊं तब उसस्त्रीने कहाकि भला इससे क्या उत्तम है कि पशु हो मनुष्य सर्वोपरिके साथ भलाईकरै निदान वहपुरुष अपनीस्त्रीकोी मति-पाय इस प्रकार कहने लगा कि इस मोतीकी उत्पत्तियों कहिप्रा चीन कालमें सुनतेहैं किकहरमा नदीके तटपर तीसवर्ष हैपरान्त पक्षी अण्डे देते थे सोई मोती होते थे उनमें से एक उसशाह के हाथ लगा और उसके पास बहुत खजाना था और एक बड़ा नगर उसने बसाया था सोतो उजड़ गया और खजानाएउसका अब हुस्नबानू को मिला है और उसी खजानामें वहमोती निकला है निदान जब उसराजा कहरमानी मरातो उसका देश किसी दूसरे के हाथमें आया तो उसकी स्त्री गर्भिणी भागके बनमें जापड़ी तो पहर दिनरहे कहरमा नदीके किनारेजानिकली औरउसीसमय मसऊद सौदागरभी अपनी नौकापर चढ़ाजल विहार करताहुआ उस ओर आनिकला उसस्त्री ने कहाकि मुझ अनाथकोभी नौका पर बैठार ले तब मसऊद सौदागर ने दयालु होके अपनी नौका पर चढ़ायके उससे वृत्तान्त पूछा तो उसने अपनाआद्योपांतवृत्तान्त सुनाया तब मसऊद सौदागर ने उसको अपनी धर्म्म पुत्री बनाया थोड़े दिनपीछे उसने बालक जना तो उसीका नाम बरजख धरा इतनेमें मसऊद सौदागर मरा वह लड़का उसकी जगह मालिक हुआ और उसीकी द्रव्यसे लाखों सिपाही नौकर रक्खेरहा और कई हजार गांवथे उनको अपने आधीन रक्खेरहा फिर धीरे २ वहां का बादशाह होगया उसकी मृत्युके उपरान्त सुलेमानबाद-शाह हुआ उन्होंने कोहक़ाफ़ और उसके आसपासके प्रदेश और लाल समुद्र कहरमा मानेऔर अग्निकेनद समेत जितनी धरातल कोहकाफ सम्बन्धीथीसो सम्पूर्णदेश, देव, परी, मायावी आदिजित-ने मनुष्य पीड़क हैं उनके वसने कोदी और उनकी सीमा बांधि दी जिसमें मनुष्यों को नसतावें इसलिये अब उनद्वीपों और शहरों में

वही वसते हैं निदान धीरे२ वह मोती ऊश्शाम परी लालकुलाह को मिलाथा और अवमाहवारसुलेमानीनो मनुष्य और परी का मिश्रित पुत्र है उसकेपास एकमोती वरजख के द्वीपमें है और उसके एकपुत्री चन्द्रमा कपोत, केहरी, हुमा, और शुकादिको लजावन हारहै सो उसका बिवाह उसीके साथ करैगा जोकोई उसमोतीके उत्पन्न होनेकी सम्पूर्ण व्यवस्था उससे कहैगा निदान उसका यहप्रण सुनके अगणित परीजादे उसके पासगये औरकोई उसमोती की उत्पत्तिको न बतासका सबअपनासा मुखलेके निज२ ग्रामको सिधारे और वुह भी बड़ाविद्वान है क्योंकिसम्पूर्ण प्राचीन ग्रन्थ उसीके हाथलगे उनके द्वारा उसने उस मोती के उत्पन्नहोने के समाचार जाने हैं और उनपक्षियोंको उससमयसे सुलेमानकी आज्ञानहींहैकि किसीठौर अण्डादें इसलिये अब उसप्रकारका मोती नहीं उत्पन्न होता वरण इसबातके विदित करनेकोभी आज्ञा नहीं है परन्तु मैंने इसको परस्वार्थ देखके इससेकहाहै और अबनिश्चय हैकि इसकीअभिलाषपूरी होय यहसुनके उसस्त्रीने कहाकि इस दीनकी पहुंच कहरमा नंद तककैसे होगी क्योंकि वहांसे देवोंकीसीमाहै और नाना भांतिके प्रतिबन्ध हैं यहसुनके पुरुषने कहा जोयह आयषवान है तोइसके पहुंचनेमें कोई सन्देह नहीं है परन्तु ततकाल तो इसेउचित हैकि हमारे पंखअपने पासरक्खे जबयह देवोंकी सीमा में पहुंचेगा तब इसको एकअथाह बनमिलेगा उससमय हमारे लाल पंखजलाके उसकीराखजलमें घोरके अपने शरीर परलेपनकरले उसकीगन्धि से सब जीव जन्तु भागजांयगे और यह निधड़क चला जायगा और इसका स्वरूपभी देवकासा होजायगा और जब यह बरजखके द्वीप की सीमापर पहुंचे तब श्वेतपंख अपनी देहपर लेपनकरै जबस्नान करैगा तो फिर ज्योंका त्यों होजायगा पर वहां के निवासी इसे माहयारसुलेमानी बादशाह के निकट धरलेजांयगे तब वह अपनी प्रार्थना करै निश्चय है कि वह मोतीही के उत्पन्न होने के समाचार पूछे इसलिये इसे उचितहै कि यह मेरी सम्पूर्ण मुखागर का स्मरण रक्खे और उसकेसन्मुख जाकेकहै वह अपनेवचनका धनीहै अपनीपुत्री मोतीसमेत बिवाहदेगा तब स्त्री बोली कि इसको हमारे पंख कैसे मिलें यह सुनके पुरुष ने अपने पंख फटफटाये तो कितनेही पंख वृक्षके नीचे गिरपड़े हातिम ने बटोरलिये तब स्त्रीने पूछा कि तैनेयह कैसेजाना कि यह इसकाम के लिये आयाहै और इतनी वार्त्ता तैने कैसे स्मरण रक्खी उसने उत्तरदिया कि जितने

हमारे सजातीय पुरुषहैं वे सृष्टिका संपूर्ण वृत्तान्त जानतेहैं इतने में भोरहोगया वे पक्षी तो उड़गये और हातिमभी उठखड़ाहुआ और एकओर को राहली कितेकदिन पीछे एकवृक्षके नीचे रात्रि को सोरहा था तो इतनेमें बहुत से जीव पुकारनेलगे कि हाय २ कोई ऐसा सामर्थी नहीं है जो हमारी सहायता करै यह सुनके हातिम उसओरको दौड़ा तो देखा कि एक लोखड़ी अपना शिर पृथ्वीपर देदेमारतीहै और चिल्लारहीहै हातिमने बड़ीदयालुतासे पूछाकि तुझेकिसने दुःखदियाहै जो ऐसीअधीरहो बिलापकररहीहै तबवह लोखड़ीबोली कि धन्यहै तेरेसाहसको जो तू मुझअनाथकी पुकारसुनके आया मेरादुःख यहहै कि एकबधिक मेरेपतिको बच्चों समेत पकड़लेगया है सो मैं उन्हींके बिछोहसे दुखीहोरहीहूं और चारोंओर पुकार करतीहूं कोई नहींसुनता परन्तु एक तू आया है सो देखूं तू क्या करताहै क्योंकि मनुष्य अपने सजातियोंहीं का पक्षीहोगा तब हातिमने कहा कि तू यह क्या कहतीहै सबमनुष्य एकही से नहींहोते जो मनुष्य दूसरोंको दुःखदेनेमें कुछलाभदे- खते हैं तो उनको दूसरोंके दुःखसे कौनकाम है उन चाण्डालोंने यही अपनी जीविका का द्वारा नियतकिया है सो तू मुझसे इस- का कुछ सन्देह न कर मुझे बतादे कि तेरेपतिको बच्चोंसमेत कौन लेगयाहै तब लोखड़ी ने कहा कि यहांसे छःसातकोस पर एकब- धिक रहताहै सो न जाने उसको हमसे कौनसी शत्रुता होगई है जो हमारे पीछेपड़ाहै तब हातिमने कहा तू मेरेसाथ चलके गांव की राहबतादे तो मैं जैसे बनेगा तैसे तेरेपतिको बच्चोंसमेत छुड़ा- लाऊंगा तब लोखड़ीने कहा कि मैं तेरेसाथ तो चलूं पर मुझेयही डरहै कि ऐसानहोकि मेरीभी बंदरिया कीसी दशाहो तोफिरकुछ न हो तब हातिमने पूछा कि उसकी कौन दशाहुई सो बता यह सुनके उसने कहा कि किसी समय का यह समाचार है कि एक बंदरिया ने एक गढ़े में बच्चे जने वे बच्चे अपने पिता के साथ उस गढ़ेमें बैठेथे और कहींसे बधिक फिरता २ आनिकला और घात लगाके उस बन्दरके बच्चों समेत पकड़लिया और नगर में जाकर किसी धनिक के हाथ बेचलिया वह बंदरिया दीन पुकारती हुई उसनगरके ठाकुरके पासगई उस ठाकुरने पूछा कि इसको किसने सतायाहैकिसीनेकहा इसकेबच्चोंको इसकेपतिसमेत वहबधिक पकड़ लायाहै तब उसनेकहा कि जावोअभी उसबधिकसे कहो कि इसके बच्चों को छोड़दे वह बंदरिया उसमनुष्यके साथ २ चली वह मनुष्य

उस वधिकके पास पहुंचा तो उस मनुष्यने वधिकको बुलाया और उसीकेपरोस वह वधिक भी रहताथा इतनेमें बोलसुनवधिकबाहर निकलआया और वहभी कहनेलगा कि इसबंदरियाको किसने सतायाहै तबवहवधिकबोला कि आजकई दिनकीबातहै कि मैंनेइसके बच्चे आपकेहाथ बेचे हैं जो आपको दयाआती है तो छोड़दीजिये और उनका मोल मुझसे फेरलीजिये उसने कहा कि अब तो मैं उनसे अपना मन बहलाताहूं कोई उपाय और करो जिसमें इसका संतोष होजाय तब वधिकने कहाकि फिर इसको भी उनके साथ मिलादीजिये निदान उसको भी फंसाके उन्होंके साथ बन्दकिया जबगांवके ठाकुरने सुनाकि उसकोभी पकड़लिया तबउसने आज्ञा दीकि उसबंदरिया को उसके पति और बच्चों समेत लेआओ जब उसकेपास लेगयेतो उसने उनबच्चोंको तो कहाकि मेरेयहां छोड़ना और इनदोनों स्त्री पुरुषको तुमलेजावो परिणाम यह हुआ किवह बंदरियातो अपनेबच्चोंके शोकमेंमरी और बन्दर अपनीस्त्री के शोकनेंमरा हेजवान यहमनुष्यकी अनीति और कठोरता तैने सुनी अबतूही बताकितेरे कहनेकी मुझे कैसे प्रतीत परै और यह कैसे निश्चयहो कितू मेरेसाथ भलाईकरैगा तबहातिमने उसका सबप्रकार समाधानकिया और कहा कितू मेरीओर से निश्चिन्त रह जैसे बनेगा तैसेतेरे पति और पुत्रों को छुड़ालाऊंगा निदान बहुतकहे सुनेसे लोखरी हातिमके साथहुई और नगरकी राहली जब नगरकेनिकट पहुंची तब हातिमने कहा कि तू यहां किसी झाड़ीमेंघुसकेबैठरह मैंतेरेपतिकोबच्चोंसमेत लाताहूं फिरहातिम रातकोतो वहांहीरहा सबेराहोतेही नगरमें वधिककेद्वारपर आ पुकारा वह बोलके साथही बाहरनिकला और हातिमसे पूछाहे जवानतूतोकोई विदेशीसा लगताहै तेराकौनऐसाकामहैजो इतने सबेरेमेरेद्वारपर आयाहै हातिमनेकहा किमैं रोगीहूं सो वैद्योंने कहाहै कि जो तू तत्काल की मारीहुई लोखरीके रक्तको अपने शरीरमें मलेतो तेरारोग शांतिहो इसलिये तेरेद्वारपर आयाहूं कितू बहुधालोखरी और स्यारोंकी अहेरकिया करताहै जोकोई लोखरी तेरेघर होतो मुझेदे और उनका मोल मुझसेलेले उसने उत्तरदिया किजैवाहे तैले मैंनेसात लोखड़ीपकड़ीहैं चाहे जोती ले और चाहेमृतकले हातिमने कहामुझे सब जीती देदे यहसुनके सब लोखड़ियों को हातिमने प्रत्येक लोखड़ीका मोलएक एकरुपयादिया तो वह बहुत प्रसन्नहुवा हातिम उनकोबनमें लायावहां

लाके उनके हाथपांव खोलदिये बच्चे तो अपनी माताके पास जा बैठे और लोखरा वहीं बैठारहा थोड़ीदेर में लोखरी अपने बच्चोंको प्यारकरके अपने पतिके पास आके शिर पीटनेलगी और रोनेलगी तब हातिमने पूछाकि अबतू काहेको रोदन करती है लोखरी ने कहाकि मैं तो आजसे अनाथ होगई शीश का छत्र उतरगया तब हातिमने कहाकि काहेको उदास होती है इसकी इतनीही आयुर्बल थी नहीं तो बच्चा दूधके फोहासे तो बचें और यह जवान मरजाय यह सुनके लोखरी बोली कि अभी इसकी औषधि हो तो न मरे क्योंकि यह तो मेरी विरह में ऐसा हीन होगया है तब हातिम ने पूछा कि अच्छा बता तो कौन औषधि इससमय चाहिये लोखड़ी ने कहाकिजो मनुष्य का तत्ता २ रक्त इसकेमुखमें छोड़ाजाय तो अभी चङ्गा होजावे तब हातिमने कहाकि पशुकेलिये मनुष्यको बध करना महादोष है अच्छाजो तुझेरक्तही चाहियेतो बता कहांका रक्तचाहिये उसनेकहा कि इसेकुछ प्रयोजन नहीं चाहै जहां का हो पर होतत्काल का तब हातिम ने बाण निकाल के अपने बांयें करकीनाड़ी में छेदा उससे रक्तकी धारा चली हातिमने कहा ले जितना तुझेचाहिये उतनाले वह अपने पतिको हातिमके पास ले आई हातिम उसके मुखमेंरक्त छोड़ने लगाजब उसकापेट भरगया तो वह ज्योंकात्यों पुष्ट हो गया तब हातिम ने अपने हाथसे पट्टी बांधी और कहा कि हेलोखड़ी अबतू मुझसे प्रसन्नहुई वह दौड़के हातिमके चरणोंमें पड़ी और बहुप्रकार प्रशंसा करके कहनेलगी कि मनुष्यों में एक तुझे बातका धनी देखा निदान हातिम उससे बिदाहो अपनी राहलगा जहां कहीं क्षुधावन्त होता तो बनफल खाता और तृषावन्त होता तो नदी ताल में जलपान करता एक दिन चलते २ ऐसेबनमें जापहुंचा कि जहां जलका नामनहीं और धूपसे गरमी ऐसी हुईकि हातिम व्याकुलहोगया और मारे तृषा के चारों ओर जल खोजनेलगा इतनेमें कोईश्वेत झलकी दृष्टिपड़ी तो हातिमको जलका आभासहुआ वह उसओर को लपका जब निकटगया तो देखा कि एक महाअजगर समान श्वेतसर्प इंडुरी बांधे बैठा है हातिम देखतेही सहमगया और दबेपांव उलटाही फिरा तब वह सर्पबोला कि हे यमननिवासी काहेको फिराजात है तब हातिम ने कहा कि मैं तृषावश जलखोजता फिरता था इतने में तेरीश्वेत झलकी देख मुझेजलका आभास हुआया अबलौटा जाताहूं तब उससर्पने कहा कि तुमको यहांही सकलपदार्थ मिल

जांयगे आओ मेरेसाथ चलेआओ यह सुनके हातिम एकतो सांप के बोलनेही से आश्चर्यमें था दूसरे अपनेसाथ चलनेको जो उसने कहातो हातिम ठिठुकिरहा जबउसनेजानाकि यह डरताहै तबवह सांपबोला कि तुम निधड़क चलेआओ तब हातिम उसके साथ २ चलागयातो थोड़ीदूरचलके एकबागमें जापहुंचा उसकेभीतर चित्र विचित्रके स्थानों में बिछौने बिछेहुये और उसबाग में एक हौज के किनारे एकबंगलामें बहुतस्वच्छ बिछौने बिछायेहुयेथे उसमें जाके हातिमसे कहा कि तुमयहां बैठो मैं एकक्षणमें आताहूं यहकहके उसहौजके भीतर घुसगया थोड़ीदेर में कईदास रत्नोंकेथार शिर पै धरेहुये उसी हौजसे निकले और हातिमके आगे धरके कहने लगे कि यह हमारे स्वामीने तुम्हारी भेटभेजी है सोआप इसे अङ्गी-कार कीजिये हातिमने कहा कि यह मेरे किसी कामके नहीं हैं अकेला इनको लेके कहांजाऊंगा इतनेमें कईपरीजाद शिरपैरत्नों के थार धरेहुये उसी जलसे निकले और आके थार उसकेआगे धरदिये हातिमने कहा कि इनकीभी मुझे कुछचाहनहीं है फिर कईपरीजाद गंगायमुनी थारोंमें रत्नभरे सुनहरे पत्तरोंसे ढांपेहुये निकले तब हातिमने कहा कि पाऊना तो यहांबैठाहै परन्तु स्वा-मेघ कहांहै इतनेमें एक जवानपुरुष विद्याधरों के समान चालीस परीजादों को अपनेसाथ लिये उसी हौजसे निकला हातिम यह देख बहुत विस्मितहुआ कि यहदिव्यस्वरूप कहांसे प्रकटहुआयह देखके हातिम उठखड़ाहुआ उसने हातिमका हाथपकड़ मसनद पर बैठाला और पूछने लगा कि तूने मुझे पहचाना हातिम ने कहाकिजो पहलेदेखातो पहिचानलेता तबवहहंसके कहनेलगा कि मैं वहीहूं जो तुझेयहां लाया यहसुनके हातिमने कहा कि हे प्यारे प्रथम तो तेरा स्वरूप सर्पका था और अब मनुष्य का स्वरूप कैसे होगया तब उसने कहा कि यह भेद भोजन करने उपरान्त खुलजायगा उसके पीछे भोजन भांति २ के आये दोनोंजने भोजन करनेलगे तब हातिम अपने मनमें विचारनेलगा कि ऐसे स्वादकी रसोई मैंने कभी नहीं खाई है कितो एकबेर कोहनिदा के ऊपर परीनोशलब के साथ भोजन किये थे कितो आजयहां, इससे हो न हो तो यहभी परीजादोंमें से होगा इतनेमें जब भोजन करचुके तब अतर सूंघने केलिये आया तो हातिमने सूंघा तो अत्यन्त मन प्रसन्न हुआ और कहनेलगा कि हे ईश्वर तैंने इनको ऐसे पदार्थ दिये हैं कि जो मनुष्यों को स्वप्नमें भी दुर्लभ हैं तेरी लीला तूही

जानताहै फिर हातिमने पूछा कि अब मुझे बताओ कि पहिलेतुम सांपके स्वरूपमें थे और अब मनुष्यका स्वरूप धारण कियेहो इस का क्या कारणहै तब उसनेकहा कि मैं परियों के वंशमें हूं और मेरानाम समसमशाह है एकदिनका यह दृत्तान्त है कि सुलेमान के समय में अपना उपवन देखता फिरताथा इतनेमें मेरेमनमें यह चिन्ताहुई कि मनुष्य के निवासके ठौर परमरम्य मनोहर हैं इस लिये अपनी सेनासाथ लेकेजाऊं और वहांके राजाओं को जीतके वह सम्पूर्ण प्रदेश अपने बसकरूं यहसोचके निजगृहमें आ अपने सैनपोंको बुलाके कहा कि सब सजगहो और सेनाकोसजो निदान उनको आज्ञादी औरमैं रातको शयनागारमें जाके सोरहा जो सबेरे उठा तो अपनेको सेनासमेत सर्पके शरीरमें पाया उसदिन तो मैं यथा जलबिन मीन तड़पाकिया सांझसमय रुदनकरनेलगा और परमेश्वर की प्रार्थना करके कहा कि हे भगवान अब कभी चित्तमें ऐसी अभिलाष न करूंगा तब मेरीसेनाको स्वाभाविक स्वरूप मिला पर पंखकिसीके न हुये तब फिर मैंने परमेश्वरसे प्रार्थना की तो यहशब्द सुनाईपड़ा कि जो कोई एकबेर वचनबन्दहो के फिर उसका प्रतिपालन नहींकरताहै और अपने ईशकी आज्ञा का उल्लंघन करता है उसका यहीदण्डहै यहशब्द बहुतदिनों तक निरन्तर सुनाईपड़ा किया एकदिन फिर मैंने ईश्वरके आगेबहुत प्रकार आधीनता प्रकट करी तो यह आकाशवाणी हुई कि थोड़े दिनबीते तीसवर्षकी अवस्थाका एक हातिम नामक यमनका निवासी इस बनमें आवेगा तू उसकी सेवातनमनसे कीजियो प्रथम उसके दर्शनोंसेही अपने स्वाभाविक स्वरूपको प्राप्तहोगा औरजब वह तुम्हारेलिये ईश्वरसे प्रार्थना करैगा तो तुम सदा मान अपने पूर्वस्वरूपको स्थिरहोगे इसीलिये मैंने तेरीसेवा तनमनसे करीहै अब जो तू हमारेलिये ईश्वरसे प्रार्थना कर तब हातिमनेपूछा कि प्रथम तुम मुझे वह बातता बताओ जिसके न माननेसे तुम्हारीयह दशाहुई है तब उसनेकहा हमने सुलेमान के सामने इसबात पर वचनबन्दहुयेथे किहम अथवा कोईहमारेवंशमेंसे कभीमनुष्योंको दुःखनदेगाअथवाजोउनकादेश कोपलनेकाचित्तमें अनुमानभीकरैं तो हम ईश्वरकी क्रोधाग्निमें परैं उसदिनसे हमारे सजातियों ने किसी मनुष्यको नहींसताया केवल मेरेही मनमें यह सङ्कल्पहुआ जिसकाफल पाया तब हातिमने मानकर नवीन वस्त्र धारण किये और उसका अपराध क्षमाहोने के लिये ईश्वर से प्रार्थना करी

उसकी प्रार्थना अङ्गीकार कई और यद्यपि वह यहूदी था परन्तु वह परमात्माको अनादि अद्वैत जानता था और उसने मरतीबेर अपने कुटुम्बके लोगोंको बुलाके कहा कि हमारी जातिके मनुष्य सदा नास्तिकभावको लिये रहेहैं अब मैं तुमको उपदेश करताहूं कि भविष्यकालमें एक आखिरुज्जमा नामक दूत होगा और वह यमनधर्म का प्रचार करैगा यहबात तुम मेरी सत्य होमानो उससमय उनसे दण्डवत् करके कहियो कि हातिम के लिये ईश्वरसे विज्ञापन करै तब उन्होंने पूछा कि उससमय तुम्हारा सन्देश कहनेके लिये हमी रहैंगे कि कोई हमारे बंश में से रहैगा तब हातिम ने कहा कि उससमय हमारे बंशमें एकलड़की रहैगी निदान जब वह पायक उत्पन्नहुआ तो सम्पूर्ण यहूदियोंको पकरके कहा सबसे कहोकि यमन अर्थात् महम्मदै का धर्म अङ्गीकारकरो नहीं तो वध किये जावोगे इतनेमें एकलड़की उनमेंथी उसने कहाकि तुम मेरीओर से हरिद्रूतसे जाके कहोकि एकलड़की इसयूथमें हातिम के बंशमें से है यह सुनतेही उसपायक ने कहा कि अच्छा उसलड़की को छोड़दो क्योंकि वह एकदाताका बंशहै तब उसके नौकरों ने कहा कि तू अपनेघरको जा तेरी बन्दीखलासहुई यह सुनके वह लड़की बोलीकि यहबात हातिमके बंशके बिपरीतहै कि अपने स्वजातियों को छोड़जाऊं जो इनकीगति सो मेरीगति तब फिर लोगोंने जाके कहाकि वहतो कहतीहै कि मैं अपने सजातियों को छोड़ के न जाऊंगी तो आज्ञाहुई कि अच्छा हातिम एक दानी मनुष्य था उसके शीलसे हमने सबको छोड़दिया जब उसलड़कीने छुटकारा पाया तबउसको हातिमके उपदेशका स्मरणहुआ तो उसने कहा कि मुझे उसपायकके पास लेचलो जब उसके पासगई तो हातिम का सन्देशकहा और मुसल्मानहोगई यहीकारणथा कि हातिम की याचना इस परीजाद के लिये पूरी हुई क्योंकि एकदिन एक पायक ईश्वरसे हातिमकेलिये याचनाकरैगा निदान सम्पूर्ण सेना सप्रसन्नहुई और बादशाह भी अपने स्वाभाविक स्वरूप में बनारहा तब उसने हातिमसे पूछाकि तुम यहांकाहेको आयेहो और कहां जानेका अनुमान कियाहै हातिमने कहाकि मैं शाहाबादसे आता हूं और वरज़खकेटापूको जाऊंगा तिसपीछे हातिमने वहचांदीका मोती निकालके दिखायाकि इसलिये मैं वहां जाताहूं तब उसने कहाकि सत्यहै इसके जोड़का मोती वहांहै पर वह एक बातका प्रण कियेहै कि जोकोई उस मोतीके उत्पन्नहोनेके समाचारकहै

उसीको इस मोतीसमेत अपनी बेटीदेगा परन्तु वहां तेरा पहुं-
चना कठिन है क्योंकि बड़े २ कराल देव राहमें मनुष्य भक्षी रहते
हैं तब हातिमने कहाकि अबतो जोचाहे सोहोय मुझे जाना अवश्य
है यह सुनके उसने कहाकि अच्छा मैंभी तेरी सहायता करूंगा
फिर कितेक परीजादों को बुलायके कहाकि देखो इसने हमको
कैसेदुःखसे छुड़ायाहै इसलिये तुम्हेंभी उचितहै कि तुमभी इसकी
सेवा करो उन्होंने कहा कि जो आज्ञाहो बादशाह ने कहा कि
इसको बरजखके टापूमें पहुंचा दो यह सुनके सभोंने गर्दननीची
करली थोड़ीदेरमें बोलेकि महाराजके जीवकीजय वहांकी राह
ऐसी विकटहै की वहांके देव हमेंसजीव न छोड़ेंगे और हमारीतो
कौन जाने जो आप जानेको विचार करैं तो भलीभांति रक्षाभी
जायेगी तब बादशाह ने कहाकि हे वीरो किसीप्रकार तो इसको
वहां पहुंचावो तब सातपरीजादोंने कमरकसके प्रार्थना करीकि
हम इसको वहां पहुंचावेंगे परन्तु पीछे से हमारी सहायता की
सुधि लियेरहियो निदान हातिमको एकउड़नखटोलापर बैठाया
और दोपरीजादोंने उसको निजशीशपैधरा और शेषसाथ २ चले
तीनदिन तक रात दिन चलेगये चौथेदिन भूखप्यास से व्याकुल हो
एक वृक्षके नीचे उड़नखटोला उतारके चाहा कि यहां कुछ जल
पान करलें तो चलें यह सोचके दो परीजादोंको हातिमके पास
छोड़के शेष अपने खानेपीने की टोहको निकले इतने में कितनेही
देववहां अहेरको आखेटमें आयनिकले और इनकोदेखके इनपर
टूटे तो परीजादोंने कई देवों को तो मारापर दोजने कहांतकलड़ें
उन्होंनेएकको तो मारा और एकको हातिमसमेत अपनेबादशाह
के पास धरलेगये और कहाकि यहलोगहमको हमारी सीमाके
भीतरमिले हैं देवोंके सर्दारनेपूछा कि इसमनुष्यको कहांसेलाया
है और कहांलेजायगा यहसुन परीजाद कहनेलगा कि यह मनुष्य
शमसशाहका बड़ामित्रहै उसनेबरजखके टापूको हमारे साथ भेजा
है यह सुनके उसने कहा कि वह तो कितेक दिन बीते कि लोप
होगया अब कहां से उत्पन्न हुआ अच्छा इस मनुष्यको परीजाद
समेत उसकुआंमें बन्दकरो भोजन करनेके उपरान्त इसको खाजाऊं
गा अनुशासन के साथही उसको हातिम समेत कुआंमें बन्दकिया
और जबवहां वे परीजाद आये तो देखाकि हातिम और परी-
जाद नहीं हैं फिर निकटआके देखें तो एक परीजाद और कई
देव मरे परे हैं परन्तु एक देवके कुछ खासचलती है तब उन्होंने

उसके मुखमें जलछोड़ा तो चैतन्य हुआ तब वे परीजाद पूछनेलगेकि तेरे घायलहोने का क्या हेतुहै उसने कहाकि यहां दो परीजाद एक मनुष्यको लिये बैठेथे हम अहेर करतेहुये आ निकले परीजादोंसे और देवोंसे युद्धहोनेलगा उनमेंसे एक परीजादने हमको मारा और वह भी मारागया और एक परीजाद उस मनुष्य समेत पकड़के बादशाह के पासगया यह सुनके परीजादोंने उसको उठालिया और अपने बादशाह के सन्मुख आके सम्पूर्ण वृत्तान्त कहा यहसुनके शाहंशाह बहुत क्रोधातुरहो सेनपोंको सेना सजनेकी आज्ञा दी और देवोंके ऊपर चढ़चला जब उनको सीमा पर पहुंचा तबपूछाकि सुकरनिस कहांहै जावो तीसहजार परीजाद जाके जहां वह हो मेरे पास पकड़लावो आज्ञा पातेही तीस हजार परीजाद उठदौड़े और उसको एक बनमें अहेर करताहुआ कितेक साथियों समेत पकड़ाजब बादशाहके सन्मुख लाये तो बादशाहने कहाकि रे मूढ़ तू हमको ऐसा भूलगया कि तेरे नेत्रोंमें तनकभी डर न रहा और यह न सोचाकि जोमैं बादशाह के किसी इष्ट मित्र को सताऊंगा तो सजीवन बचूंगा अच्छा जो हुआ सो हुआ उस मनुष्य को परीजाद समेत ला इसी में तेरी कुशल है यह सुनके उसने कहा कि उस मनुष्यको तो उसीसमय खागया यह सुनके बादशाह कोबड़ा क्रोधहुआ और कहा कि रे हतभाग्य चाण्डाल तुमको सुलेमानने आज्ञादीथीकि मनुष्योंको न सताना उसका तैंने उल्लंघन करडाला यह सुनके उसदेवने कहा कि उनकी आनिकेवलउन्हींतक थी यहसुनके वह और भी अधिक क्रोधातुरहोकर आज्ञादीकिलकड़ी कठोरीकरो और उसकेइसको साथियों समेतदग्धकरदो फिरथोड़ीसी देरमें बादशाहने कहाकि अभी कुछ नहीं बिगड़ाहै मैं उस मनुष्यको अधिक प्यारकरताहूं जो तू मुझे देदेगा तो अभी छोड़दूंगा जब उस देवने किसीभांति अपना बचाव न देखा तब बादशाह से कहाकि जो तुम सुलेमान की आनिकरके कहो कि मैं मनुष्यके पानेपै कुछ न कहूंगातो अभी मगवादेता हूं तब बादशाहने कहाकि जोतू मनुष्यको परीजाद समेतदेगा तो मैं तेरा अपराध क्षमाकरदूंगा इस बातका साक्षी मेरे तेरे बीच हजरत सुलेमानहै यह सुनके उसदेवने अपने नौकरोंको आज्ञादीकि उस कुआंमें दोनों बन्दहैं सो लैआवो निदान आज्ञा पातेही देवोंने हातिमसमेत परीजादको बादशाह के पास लाय खड़ाकिया बादशाह ने हातिम को तो अपने सिंहासन पर

बैठाला और आज्ञादी कि इन लकड़ियों के ढेरमें अग्निलगा के इस चाण्डाल को छोड़ दो जिसमें सदाका झगड़ा मिटजाय तब उस देवने कहाकि हे बादशाह तैनेतो सुलेमान की आनिकरके मुझे धोखादिया बादशाहने कहाकि तैनेतो ईश्वरको धोखादिया जो मैंने तेरे साथ छलकियातो कौन आश्चर्य की बातको निदान मुकरनिसको जो देवोंका यूथपथा उसके साथियों समेत दग्धकरके वहांका राज्य अपने भाईको सौंपा तब हातिमने पूछाकि अब बताओ तुम्हारीक्या अनुमतिहै यहसुनके हातिमने कहाकिजो प्रथम से थी सोई अबहै तब बादशाह ने कई प्राचीन परीजादोंको बुलाके हातिम के साथ किया और उन परीजादोंने उसी भांति उड़नखटोला पै हातिम को चढ़ाय अपनी राह ली रातदिन चलते २ सोलहवें दिन उस पहाड़ पर पहुंचे कि जहां तूमान नामका एक परीजाद बरजखी द्वीप के बादशाहकी बेटी के बिरहमें रोय रहाथा इतने में अचानक रोने का शब्द हातिमके कान में पड़ा-तो हातिम ने कहा कि हे मित्रो यहां कौन ऐसा दुःखी रोदन कर रहाहै इसको खोजना चाहिये यह कहके हातिम उठखड़ा हुआ और उसीओरको चलातो थोड़ीदूरचलके देखाकिएकसुन्दर युवा परीजाद बैठा नीचेको शिरकिये रोयरहा है हातिमने पूछा कि तू कौनहै और यहां काहेको रोयरहा है यह सुनके उसने आंखें खोलके जो देखा तो एकमनुष्य खड़ाहै उसने पूछा कि तू कौन और कहां आयाहै हातिमने कहाकि ककुर्गीके अण्डाकी बराबर मोती खोजता यहांआयाहूं सामैंनेबरजख केटापूकेबादशाह केयहां ऐसा मोती सुनाहै इसलिये वहां जाताहूं यह सुनके वह हंसपड़ा और कहने लगा कि उस मोतीका पाना तो तुझे बहुत कठिन है क्योंकि वह प्रश्न ऐसा करता है कि जिसका उत्तर हम परीजादोंके तो देही नहींसकेहैं भलातू तो मनुष्यहै तब हातिम ने कहा कि यह ईश्वर आधीनहै परन्तु अपने समाचार बता कि तेरे दुखीहोने का क्या हेतुहै तब उसने कहाकि मैं उसीकी बेटी के बिरहमें रोताहूं और मेरा नाम शाहजाद महराबर है और मेरा पिता माहरूरनामक तूमानके टापूका बादशाहहै अब एक दिनका यहवृत्तान्तहै कि सभामें एकने उसकी बेटीकी स्वरूपकी प्रशंसाकी मैंसुनतेही आपमें न रहा और वहांसे बरजखके टापूको गया बादशाहको संदेशा भेजा उसनेमुझे बुलायके सभाकेमध्य बड़े आदरसे बैठाला और वहमोती मंगायके मेरेआगे धरा औरउस

मोतीके उत्पन्नहोने का वृत्तान्त पूछा तो मुझसे कुछकहते सुनते न बना तब मुझे सभाके बाहर किया जिससमय मैं वहांसे निकला तो वह चन्द्रमुखी जिसके मिलने की अभिलाष करके घर से गया था कोठेपर खड़ी थी अचानक मेरी आंख उसके ऊपर पड़ी तो ठग समान होगया और चित्तवृत्तिठिकानेनरहीपरन्तु वशकुछनहीथा गिरता परता इसपर्वततक आया और लाजके मारे अपने देशको भी जानेको मन न माना इसीठौर रातदिन रोदन करते कटता है यहसुनके हातिम बोलाकि अबतू निश्चिन्तरह मोती मैं लेलुंगा और मोतीवाली सुन्दरी तुझे दूंगा और मैं उसमोतीकी उत्पत्ति का सम्पूर्ण वृत्तान्त जानता हूं यह सुनके वह परीजाद बोली कि मुझे तूसत्य कैसे मालूमहो तब हातिमने कहा कि हे भ्राता वह मोती सीपीसे नहीं उत्पन्नहुआ है और पहिले उसटापूमें मनुष्य हो रहतेथे चल उठखड़ाहो वह हातिमको कुछ सच्चासा जानके उठ खड़ाहुआ तब हातिम उनचारों देवोंसे पूछनेलगाकि तुमदो मनुष्योंका भार उठालोगे उन्होंने कहाकि दो नहीं जो चारहोंगे तो भी कुछ संदेह नहीं निदान दोनों उड़नखटोला परबैठे देव उड़े राह में महाकाल नामक देवकी फुलवाड़ी की ओर होके निकले वह वहां बैठाथा अचानक उसकी दृष्टि उड़नखटोले पर पड़ी देखतेही अनुचरोंको आज्ञादीकि परीजादोंसमेत इस उड़न खटोलेको लेआवो अनुशासन पातेही देवदौड़े औरउनको धरलाये तब महाकाल ने पूछाकि तुम कहांसे आतेहो और इस मनुष्यको कहांसे लातेहो और कहां लेजावोगे उन्होंने कहाहम शमसशाह के देशसे लिये आतेहैं और बरजखके टापूको लेजांयगे महाकाल ने कहाकि शमसशाहको तो लोपहुये बहुतकाल व्यतीतहुये और उसके देशमें सर्प बसतेहैं उन्होंने उत्तरदिया कि यह बातसत्य है हम सबसर्प होगये थे परन्तु इस मनुष्यने ईश्वरसे प्रार्थनाकरीइस से फिर बादशाहभी अपने स्वरूपको प्राप्तहुवा और हम सभों के भी पंखनिकलआये फिर उसनेपूछा कियह परीजाद कौनहै यह सुनके वह आपही बोला कितू मुझे भूलगया मैं शाहजादा मेह-रावर महरूर बादशाहका बेटाहूं यह सुनके उसने कहा कि हे शाहजादे तुझ से तो मैं कुछ नहीं कह सक्ता क्योंकि तू सुलेमान परीजाद के वंश में है परन्तु तुझ से और मनुष्य से कौन सम्बन्ध यह कहके खटोला परसे हातिमको खींचलिया तब मेहरावर ने कहा कि हे देव जो सुलेमान से बचन बन्दहुये थे कि मनुष्य पीड़ा

नकरेंगे सो भूलगया तब उसने उत्तरदिया कि अबसुलेमान कहांहै जो हम उसके बचनको मानें और इतनेदिन पीछे यह एकमनुष्य मिलाहै अबतो तनक जिह्वाको खादखुंगा जब शाहजादे महरा-वरने देखा कि यह न छोड़ेगा तो शाहजादे ने कहा कि हे देव यहमेरा बहुत प्याराहै इसको छोड़दे इसके बदले मुझसे दशमनुष्य लेले यहसुनके उसने कहाकि अच्छा पहले लादो तब इसे लेजावो शाहजादेने कहाकि अच्छा इसको कोई दुःखन होनेपावे तबएक बागमें हातिम को रक्खा और शाहजादा चारों परीजादों समेत तीनदिनकी अवध बदके महाकालसे बिदाहुये और बनमें एकठौर बैठके बिचारने लगेकि जोहमना लानेकेलिये चलेंतो देरहोगी और अवध बीतनेपर वह चाण्डाल हातिमको दुःखदेगा इसलिये यही अनुमति ठीक देखने में आती है कि जब सब पहरुआ सो जावें तो हातिमको रातको चुरालेभागें रातभरमें साठसत्तरकोस निक-लजांयगे फिर हमको कौनपावेगा निदान यहीसोचके घातलगाये बैठेरहे और यहां देवोंने सोचाकि शाहजादा और परीजाद म-नुष्य को कुछ चुरा लेही नहीं जायंगे और इसके कुछ पंखभी नहीं हैं जो उड़जायगा यह सोचके कुछ लोगअहेर करकेलाये और उ-नको भूनके भोजन किया और मदिरापान कर सबके सबद्वार क-पाटमें तालादेके सो रहे तब परीजादों नेहातिमको उड़न खटो-लापर बैठालके अपनीराहली और दिननिकलते २ उसबागसे सौ कोस पै जा पहुंचे वहां एकठौर उतरके कुछ कलेऊ किया फिर अपनी राहली इसीभांति बैठते उठते चलेजातेथे और यहां यह पहरुआ जानतेथे कि हातिम तो बन्दहै इसलिये आप निश्चिन्त रहतेथे जब अवधके तीनदिन व्यतीतहुये तब महाकालने कहा कि अब उसमनुष्यकोलाओ जबदेवोंने जाकेदेखा तो वहां हातिमको नपाया तब आयके प्रार्थनाकरि कि महाराज वहां तो वहमनुष्य नहीं है तब महाकाल ने क्रोध करके कहा कि निस्संदेह उसको तुम्होंने भक्षण कियाहै अब देखो तुम्हें क्यादण्ड देताहूं यह कहके देवोंकेब आज्ञादीकि इनको भलीभांति पीटो तबवे प्रार्थनाकरने लगे कि महाराज योंतो आपके हमआधीनहैं और आपस्वाधीन हैं चाहेमारोचाहे छोड़ो परन्तु हमसुलेमानकी साक्षीदेके प्रार्थ-ना करतेहैं कि हमको कुछ नहीं मालूम कि वह भीतरसे कहां गया अब आगे के समाचार सुनोकि जब हातिम परीजादोंसमेत कहरमान सागरके ऊपर पहुंचा तो वहां दैवयोगसे महाकालका

एकदेव बरजख़के टापूमें गयाथा ज्योंहीं इनको देखा तो पहचान के उतर पड़ा और चाहा कि हातिम का हाथ पकड़के उतार लेवे त्योंहीं महरावर शाहज़ादे ने एक ऐसा खड्ग मारा कि उसका हाथ बदन से अलगहोगया तब उसनेकहा कि अच्छा तुम ने मनुष्य के लियेमुझे खड्गसे माराहै अबमैंयहांके देवोंकी सहाय लाता हूं शाहज़ादेने पूछा कि तू कहांका निवासीहै उसनेकहा कि मैं महाकाल का सेवक हूं यह सुनके शाहज़ादे महरावर ने कहाकि जा तू महाकाल से यह सन्देश कह दीजियो किमैं इस मनुष्य कोलिये जाताहूं और फिरतीबार उसकेदेशकोष और नगर को मटिया मेट करूंगा यह सुन के वह देव तो महाकाल की ओर कोउड़ा और वे परीजाद हातिमको लेके उस ओर कोचले इतने में एक बनके निकट आपहुंचे तब कहनेलगे कि अब हमारी सीमा नहीं है इसलिये हमको बिदाकरो तब शाहज़ादे महरावर ने कहाकि हेबवानमैं तेरेसाथ ओर छोरतक रहूंगा यह सुनके हातिम उतरपड़ा और उन चारोंको बिदा किया तब हातिमने शाहज़ादेसे कहाकि यहमैं नहींचाहता किमेरे साथतुझे कष्टहो परन्तु इतना पूछताहूं कि इस विकट बनको कैसे पारकरेंगे तब महरावरने कहा कि अब आगेतो परीजादभी देवोंके मारे नहीं जासक्ते क्योंकि वेतो जीवहीके बाधकहैं किसलिये कि एकबेरदेवों और परीजादोंमें बड़ा युद्ध हुवा है उस समय से बड़ी शत्रुता होगईहै तब हातिमने कहाकि जोमैं यहांदेवका स्वरूप धारणकरूं तोतू कैसे पंथचलेगा यह सुनके वह बोलाकि जोतू देवबनके चले गा तोमैं वायु मंडल में होके उडूंगा जहां तू रहैगा वहां मैं भी उतरपडूंगा तब हातिमने उसपक्षीके लायेपंख जलायपानीमें घोर अपने शरीर में लगाया त्योंहीं देवका स्वरूप होगया और बनके सकलजीवजन्तु उसकोदेखभागनेलगे निदानहातिमदिनभरचलता और संध्यासमय दोनों एकठौरहोजातेएकदिन महरावरने पूछा कि यहपंख कौनपक्षीकेहैं हातिमने कहाकि जिसने मुझेमोतीकी उत्पत्ति बताईहैउसीके पंखहैं और कहाकिजबशाहाबादसे चलातो मैं सोचीगर्दनकिये बड़े शोचमें एकवृक्षकेनीचेबैठाशोचताथाकि हे भगवानइतनाबड़ा मोतीकौन समुद्रमें होताहैऔरमैं कैसेपाऊंगा इतनेमें उसी वृक्षपै जहांमैं बैठाथा एकअतिही शोभायमानपक्षी काजोड़ा बैठाथासो पहिले तोवे उस बनके वायुजलके विषयमें बातें करतेरहे फिर कहरमानसागरका कुछ हालकहके मेरा वृत्तान्त

पूछा तब उनमें से पुरुषने मेरासम्पूर्ण वृत्तान्त और मोतीके उत्पन्न होने और इस बादशाह को मिलनेका सब वृत्तान्त अपनी भार्य्या को कहसुनाया सो मैं शाहयार सुलेमानीके सन्मुख कहूंगा और सम्पूर्ण वृत्तान्त हातिमने उसके सनमुख इस डरसेनहींकहा किजो मैं इसे कहूं और यह आगेजाके अपना काम करके चलाजावे और मैं निराशही रह जाऊं तो यह संपूर्ण परिश्रम वृथा ही हो निदान इतनी बातके सुन्ने से महरावर को ढाढसबंधा और जानाकि इसकी सहायता से मेराभी काम निकल जायगा फिर दोनोंने अपनी२ राहली रात को दोनों एकठौर रहते और सवेरे हातिमतो अपनी राहपैदल पृथ्वीपर चलता और महरावर आकाशकी मार्गवायुमें उड़ता एकदिनका यह वृत्तान्तहै कि एक ठौर दोनों जने सो रहेथे इतने में मलूकशाज का एकदेव उस ओर आनिकला तो देखा किएक परीजाद और एक देव दोनों पास२ सोरहेहैं उसने यहदेख अपने दूसरे सजातीबुलाये उन्होंमेंसे एकने कहा कि इनको अपने बादशाह के पासलेचलें तब किसीने कहाकि किसीठौरके विदेशी यहां रातको सोरहेहैं इन्होंने कुछ हमारा बिगाड़ नहीं किया है अपने कामको जातेहैं किसी को दुःखदेना भलीबात नहींहै परन्तु परीज़ाद जागताथा उनकी सब बातें सुनाकिया जबतकएकने कहाकि इनको जगाओ तो मालूम तो ऐसे होतेहैं कि मानो बरजखके देशकेहैं दूसरेने कहाअच्छा वहींके सही फिर तुमसे क्या प्रयोजनहै तीसरेने उत्तरदिया कि बादशाह आज पूछताथा कि बरजखके टापूके बादशाह की कुछ कुशलबहुतदिनोंसे नहींमिली और तू नेक नहींडरता जोऐसीबात कहताहै भलाजो बादशाहसे कोईजाकरकहै कि उसठौर किसी देशके परीजाद और एकदेवआयेथे सो आपसे किसीने नहींकहा तब हमारा और तेराकौन हालहोगा निदान उनदोनोंको देवोंने जगायातबहातिमने उनसेकहा कितुमने हमको क्योंजगाया देवोंने कहा कितुमकौनहो औरकहांसेआते और कहांजावोगे हातिमने कहा कितुमनहींजानते किशमसशाहप्रकट हुआऔर एकमनुष्य के कारण देवोंको दग्ध करदिया और उसदेशको अपने आधीन किया सो उसमनुष्य को तुमभी ढूंढ़के अपने बादशाह के पास ले जावो फिरपूछा कि यह परीजाद कौन है हातिमने उत्तर दिया कि यही परीजाद तूमानके टापूका है संदेशालेके जाता है तब उन देवोंने कहा कि तुम चैनसे सोवो हम उस मनुष्य को खोजने

जाते हैं वेतो उस ओरको चले इन्होंने उठके अपनी राहली तीन दिन पीछे कहरमान् सागर के किनारे जापहुंचे तब महरावरने कहा कि यही कहरमान् सागरहै तो हातिमने सत्य २ भांति २ के जलचर और वरन२के नभचर देखे कि जिनके देखनेसे ईश्वरकी लीलाका स्मरण होता था फिर हातिमने पूछा कि इस सागरके पार किसभांति जांयगे महरावरने कहा जो शीघ्रगामी परीजाद हैं सोभी सातदिन में नहीं नांघसक्ते और मेरी भी सामर्थ्य नहीं है और तेरी तो कौन कहै परन्तु तू यहां ठहर मैंजाके शमशान परीजादोंके बादशाहसे दरियाई घोड़ले आऊं हातिमने कहाकि बहुतशुभ निदान महरावर रातवसे शमशानके पास पहुंचा उसने कुशल प्रश्नके उपरान्त पूछा कि आपके आगमनका कौन हेतु है महरावरने कहा किमैं आपसे दो घोड़े याचने आया हूं तब बादशाहने कहाकि मैंतुझे चीन्हताहूं तू मान देशका शाहजादा है यह तोबता कितेरे अकेले आनेका क्या कारणहै महरावरने कहाकि यहसत्यहै परमेरेऊपर एकआपदा आनपड़ीहै इसीसेमैंआपकेपास आयाहूं यह सुनके शमशान उठके मिला और अपनी घुड़सारमें लेगया और कहने लगा कि जो घोड़े आपको भलेलगें सो लेलो वहांसे उसने दो घोड़ेलिये और क्षणमात्रमें हातिम के पास आय पहुंचा और हातिमसे कहा कि उठो सवारहो और बाग इसकी ढीली मत कीजियो ऊपर को उठाये रहियो निदान दोनों ने अपनी राहली कईदिन पीछे भूखप्याससे बहुत विकलहुये तब महरावरने कहा थोड़ीसी मेवा और सुराहीमें मेरेपास पानीहै जो चाहोतो तुम कुछ जलपान करलो हातिमने दोचारदाने मेवाके खाके दोघूंट पानीपिया और फिर संभलबैठा कईदिन पीछे किनारा दृष्टिपड़ा तब महरावरने कहाकि अब घोड़ाकी बाग ढीली करो जिसमें पृथ्वीपर आवैं हातिमने कहाकि मैंने सुनाहै कि बरजख़का टापू जलके मध्यमेंहै यह सुनके महरावरने जवाबदियाकि इसकी सीमा यहींसेहै और तुमयह मतजानो कि हम कहरमान् सागर के पार होगये हैं अभी ऐसे २ कई और टापूइसमें बसेहैं तब हातिमने पूछाकि यहांसे वह शहर कितनीदूरहै महरावरने कहा कि यहां से अभी दशदिनकी राहपरहै यह सुन हातिमने कहा किफिर क्योंबैठेहो चलते क्योंनहींहो तब उसनेकहा कि मैं एक बातकहूं जो तुम मानो तो हातिम ने कहा मैं तन मन से मानूंगा तब उसनेकहा कि मेरादेश यहांसे बहुतनिकटहै जो तुम

कहो तो मैं जाके अपनी कुछ सेना लेआऊं हातिमने कहाकि हम को माहयार सुलेमानी से कुछ लड़ना तो है ही नहीं जो सेना साथ ले चलैं तब उसने कहाकि इससे मेरा कुछ प्रयोजन नहीं है परन्तु यह कि जो हम दीन मलीनकी भांतिचलैं तो दीनको कौन पूछताहै और जो ऐसेठाटसे चलेंगे तो हमारे पहुंचनेसे पहलेही उसको हमारे समाचार विदित होंगे फिर हातिमने कहाकि मैं अकेला कहांरहूंगा शाहजादेने कहाकि यहांकहीं दुःखदाई का नामभी नहीं है चाहे जहां आनन्दसे रहो तब हातिमने कहा कि फिर क्यों विलम्ब करतेहो अब सिधारो यहसुन बादशाहजादा तो अपनी बाटलगा और हातिमने स्वेतपंख निकालके जलाया और पानीमें घोलके उसकीराख अपनी देहमें मली ज्यों काल्यों स्वरूप होगया फिर धनुष बानलेके अहेरको निकला और एक बारासिंगा मारलाया उसका मांसभूनके भक्षणकर सोरहा इसीप्रकार कई दिन व्यतीतहुये एकदिन हातिम अहेरको गया तो वहां एकबाग दृष्टिपड़ा हातिम उसका कपाट खुलापाके भीतरगया तो नाना-भांतिके वृक्ष फलोंसे लदेहुये देख उसकी रम्यता परचित्त लोभगया और बहुत प्रसन्नहुआ वरण उसीबागका निवास अंगीकार किया और थोड़ा दिनभर सागरके तटपर चराकरता और संध्या समय फिर उसीबागमें आ रहता इसीभांति एक अठवाराबीता और जब यहां महरावर अपने देशमें पहुंचा तो सबचीन्हरे बहुत हर्षितहुये और सबसे मिलता भेटताहुआ अपने मातापिताके पासपहुंचा इस-ने दण्डवत करी और उन्होंने हृदयमें लगापूछा कि तू तो घरसे सेनादि के साथ में गयाथा फिर न जानेकहां रहगया सेना के लोगोंने सारीपृथ्वी खोजमारी जब नमिला तो हारके लौट आये अब बतातेरी अभिलाष पूरीहुई और तुझे माहयारकी पुत्रीमिली यहसुनके उसने गर्दन नीचीकरके कहनेलगा कि जो मैंने आपकी आज्ञाकानन करीसोफल मुझेविधाताने भलीभांतिदिया कि कितेक दिन तोरोतेहीबीते और जोर दुःख मैंनेभोगेहैं सोपरमात्मा किसी शत्रुको भी नदिखावै मैंतो अपने प्राणों से भी हाथधोये बैठाथा इतने में एक यमन निवासी हातिम नामक उस मोतीके खोजमें आपहुंचा जब उससे मैंने अपनी बिथाकही तोवह बचन बन्दहुवा कि जब मैं वह मोतीलूंगा तब उसकी बेटी तुझे देदूंगा यह सुनके उसकी माता हंसनेलगी कि तेरी अज्ञता बालकों कीसी अभीतक नहींगई कि अब परीजाद उसका वृत्तान्त कुछ जानतेही नहीं हैं

तो भलामनुष्य कैसे जानेगा उसदीनमें इतनी सामर्थ्य कहांहै तब उसने कहा कि वह ऐसावैसा नहींहै यमनका शाहजादा है वह बुद्धिमानोंमेंपरी और जिनोंसेभी अधिकहै और उसको एक पक्षी ने पतादियाहै और जो कुछ माहयार सुलेमानीने मुझ से कहा सो उसने भी मेरे सामने कहदिया और मुझे निश्चय होगया है कि वह ठीक२ वृत्तान्त मोतीकी उत्पत्तिका जानताहै और मैं उस को बरजखके टापूके पासछोड़ आयाहूं और वहतो एकअपूर्व मनुष्य है किदेवपरी और जिन्नादिकोंभी भाषा जानताहै तब उसने पूछा कि तूतो अब काहेकोआयाहै महरावरने कहाकिमेरी अभिलाषहै किसेना साथलेके बादशाहों के समान माहयार के नगरमें जाऊं यहसुनके उसकेपिताने कईसहस्र परीजाद उसकेसाथकर राजसी ठाटसे भेजा वह अपनी अवधि पर हातिम के पास आपहुंचा और हातिमको लेके अपनी सेनामेंआया फिर भांति२ के व्यंजन बने हातिमसहित महरावरने भोजनकिये रातकासमय नाचरंगमें काटा सबेराहोतेही सेनाको कूचकी आज्ञा दी जब माहयार के नगरके निकट पहुंचे तो माहयार ने सेनाके समाचार सुन एक सेनपके साथ बहुतसी सेनाभेजी और आज्ञादी कि आगे न बढ़ने पावें जब महरावरने एक परीजाद सभाचातुर बुद्धिवान को यह संदेशा देके भेजा कि हम युद्धकरनेकी इच्छासे नहीं किंतु बाद-शाहसे मिलनेकी अभिलाषसे आये हैं यहसुनके सेनपने बादशाह को समाचार का पत्र भेजा बादशाहने आज्ञादी कि उनको बड़े आदरसे लेआवो और नगरके निकट एक ठौर सेनाको उतारदो निदान सेनपके साथ२ कितेक सभासदोंको साथलेके नगरमेंगये वहां इनकेरहनेको एक सुघरास्थान खालीकर दियातब माहयार ने महरावरसे पूछा कि अबआपके आनेका क्या हेतु है यहसुनके महरावरने उत्तरदिया कि हातिमनाम यमनके शाहजादेको आप के दर्शनोंकी बहुत अभिलाषथी सोमैं उसको लेके आयाहूं फिर माहयारने पहले तो महमानी करीतिस पीछे हातिम को अपने सन्मुख बुलवाके पूछा कि आपके आनेका क्या हेतुहै तब हातिमने वह चांदीका मोतीदेकेकहा कि इतने बड़े मोतीके खोजमें आपके विभूति स्थानतक आयपहुंचा हूंसो आपदयाकरकेदें तो मेरीअभि-लाष पूरीहो माहयार सुलेमानीनेकहा कि जोतू उसकीउत्पत्ति का वृत्तान्त मेरेसामने कहै तोमैं उसमोती समेत अपनी बेटीतुझे देदूंगा हातिम ने कहा कि मुझेतो केवल मोतीही चाहिये और

अपनी पुत्रीका आपको अख़्तियार है चाहै जिसको देव तबमाहयार सुलेमानीने कहा कि पहिले मैं तुझे मोती समेत सौंपदूं फिर जिसको तेरामनमाने उसेदीजियो तबहातिमने कहा कि महरावर कोभी बुलवालेव बादशाहने सन्देशाभेजा सुनतेहीवहसभामें आया बड़े सनमानसेमिलके आसनदिया और हातिमने सम्पूर्ण उसपक्षी की सुखागर बादशाह के सन्मुख कह सुनाई बादशाह ने सुनतेही गर्दननीची करली और भीतरजाके मोती ला तरके सन्मुख रख आज्ञादी कि लड़की को व्याह कपड़ा पहिना के सभा में लाओ जबवह सभामें आई तो हातिम ने कहा कि यह मेरी बहन की ठौर है अबआपको उचित है कि इसका विवाह महरावर शाहजादेकेसाथ करदेवतब बादशाहने अपनी कुलरीत अनुसार अपनी पुत्रीका विवाह महरावर शाहजादेके साथकर दानमान से पूर्ण कर विदाकिया जब कहरमान सागरके तटपर पहुंचे तब हातिम ने कहा कि अबभाई तुम अपने देश को सिधारो और मैं अपनी राहलेता हूं यहसुनके महरावर नेकहा कि यहतो बहुत अनुचित है कि मैं तो ऐसे ठाटबाटसे अपने घरकोजाऊं और तुझेऐसे कष्टमें छोड़जाऊं मेरीतो यह अभिलाष है कि तुझे शमस शाहके पास पहुंचाके अपनेघरको जाऊं निदान यह कह सेनाकोपार उतरने की आज्ञादी और आप और हातिम उनदोनों घोड़ों पर सवार हुये कईदिन में पार उतरके एक वनमें डेरे दिये यह समाचार देवोंको मिलाकि परीजादोंकी सेना आयपहुंची तब वेभी अपनी सेनालेके राहघेरके पड़ेतो महरावरने एक दूतको यहकहके भेजा कि हमतो सुलेमानके वंशके हैं और शमसशाहके मिलनेको जाते हैं कुछतुमसे युद्धकरनेको नहीं आये हैं तब उन्होंने भी कहा कि हमकोभी युद्ध करने की इच्छा नहीं है केवल आपके दर्शनोंकोआये हैं यहसुनके बादशाहने उनके अधिपतिको बुलायके भोजनकराये और वरुण२की मदिरापान करायके बिदाकिया और आपभीअपनी राहलगे थोड़े दिनोंमें देवोंकी सीमासे निकले तो यह समाचार शमसशाहको पहुंचा कि हातिम और महरावर मेरे मिलने को आये हैं यह सुनके आगे आयके मिला और एकबाग में ले जाके सेनाको उतारा और महरावरसे कहनेलगा कि तैंने हातिमको कुशल पूर्वक मुझसे मिलाया इसका पलटा कोई नहीं मैंतो इसके शोचमें निशिदिन व्याकुल रहा करता था निदान चालीस दिन तक पहुनाईरही इकतालीसवें दिन महरावरने बिदा मांगी तब

हातिम शमसशाहने बिदा किया उसनेतो अपने देश की राहली तब शमसशाहने हातिमसे कहा कि हे हातिम तैंने राहमें बहुत कष्टसहे हैं अबतुझेमैं तेरेदेशमें एकदिनरातके अन्तरमेंपहुंचाऊंगा तब हातिमनेकहा कि मुझे अपनेदेशसे कुछकामनहीं है अभीमुझे शाहाबादको जाना है यहसुनके बादशाहने परीजादों को आज्ञा दी कि उड़नखटोलापर बैठालके शीघ्रपहुंचावो निदानपरीजाद खटोला पर बैठाल हातिमको लैउड़े और रातदिनके अन्तर में शाहाबादके निकटपहुंचे तबहातिमने अपनी पहुंचका पत्रउनको लिखदिया और आपनगरमेंपैठा यहसमाचार हुस्नबानूको पहुंचा कि वहमनुष्य कुशलपूर्वक आयपहुंचा यहसुनकेहुस्नबानूने हातिम को अपने पास बुलायो और चिलमनके बाहर कुर्सीपर बैठालके पूछनेलगी तब पहिले तो उसने बटुआ से मोती निकालके सबको दिखाय फिर बटुआ में धरलिया फिर सम्पूर्ण वृत्तान्त हुस्नबानू से कहा और मोतीदैके सरायमें मुनीरशामीके पासआके कहनेलगा कि अबकुछ घबड़ाहटकी बातनहींहै अबकेवल एकप्रश्न और रहाहै सोभीईश्वर चाहताहै तो पूराकरकेतेरी प्यारीको तुझसेमिलाता हूं यहसुनके मुनीरशामी हातिमके चरण परसनेलगा हातिमने उसको हृदयमें लगालिया और फिर सात दिन तक तो पन्थश्रम निवारण करनेकेलिये ठहरारहा और आठवेंदिन हुस्नबानूकेपास जाके पूछा कि अबतू सातवां प्रश्नबता हुस्नबानूने कहा कि हम्माम बादगिरदकी खबरलेआ कि हम्माम तो स्नान करनेका स्थान है उसको वायुकेसाथ चक्रीके समान फिरने से कौन प्रयोजनहै और जो वह वायुमें फिरता है तो मनुष्य उसमें स्नान क्योंकर करतेहैं इसको शोधके वहांके समाचार मुझसेकह तब हातिमने पूछा कि भला यहतो जानतीहै कि वह कहां और किसदिशामेंहै हुस्नबानू ने कहा कि मैं केवल इतनाहीं जानती हूं कि वह दक्षिण और पश्चिमके कोण अर्थात् नैर्ऋत्यमेंहै और यह नहींजानती कि किस देशमें है यहसुन हातिम हुस्नबानूसे बिदाहो सरायमें आया और मुनीरशामीको बहुप्रकार ढाढस बंधाकेकहा कि अबकीबेर लौटके तेरीप्यारीसे मिलाय मैंभी अपनेभारसे हलकाहोजाऊंगा निदान ऐसी २ बातें कर मुनीरशामी से बिदाहुआ॥

सातवां प्रश्न हम्मामबाद गिर्दकी ख़बरलाने और मुनीरशामी के साथ हुस्नबानूका विवाह होने और हातिम का निज गृहमें जाने के विषय में॥

जब हातिम शहरसे बाहर निकला तब एक ओर बनकी राह

ली और कईदिनमें एकनगरकेनिकट जापहुंचा तो देखा कि एक कुए के ऊपर बड़ी भीर लगीहै हातिम ने पूछा कि इस कुआंपर भीड़होने का क्याकारण है किसीनेकहा कि कईदिनसे इसनगरके बादशाहका पुत्र बावलाहोगयाथा सो आज इसकुआंमें गिरपड़ाहै बहुतेरा उसको कांटों से टटोलतेहैं परन्तु कहीं उसकापता नहीं मिलता और कोईइसमें अपनेप्राणोंकीबाधासे नहींधसता किकहीं कोई अजगर इसमें हो तो उसे भी खाजाय इतनेमें उसके माता पिताआये और इसप्रकारविलापकरनेलगे कि उनका कदनसुनके मारे दुःखके दुःखकी छाती दरकउठी और धीरजभी अधीरहोके भागखड़ा हुआ और उनके रोनेसे ऐसे आंसू बहे कि धारा बहने लगी और पशुपक्षी उड़भागे वनकानिवास अङ्गीकार किया बहुत कहांतक कहूं कि उनकाविलाप सुन मनुष्यकी तो कौनचलावेजो न पसीजै यह निज नयनकी देखीबातहै कि उसकी आहके धुआंसे पाषाण पसीज उठे निदान हातिम उनकेपास जाके उनकेसन्तो-षार्थ कहनेलगा कि भावी बलवानहै जो कुछ विधाता चाहता है सो होताहै इसलिये सन्तोष करना उचितहै देखो बुद्धिमानों ने कहाहैकि मनुष्यको उचितहै कि न तो अधिकदुःखमेंघबड़ावे और न अधिक सुखमें बहुत हर्षकरै किन्तु बुद्धिमान दोनों को समान जान चित्तको अडोल रखतेहैं यहसुनबादशाह ने उत्तरदिया कि हे जवान तू सत्यकहताहै और हमभी भलीभांति समझतेहैं तद्यपि मनको सन्तोष नहींहोता जो उसकी लोथहीहमको देखनेकोमिले तो उसी को देखलेते भला मनको सन्तोष तो होजाता इसीलिये सबसे कहहारे और हजारों रुपया देनेको कहते हैं पर कोई ह-मारी इसविपताका भागी नहींहोता जो इसकुआंमेंसे हमारे पुत्र की लोथको निकाले यहसुनके हातिम ने कहा कि मैंअपनाशीश अपनीहथेलीपर धरे फिरताहूं और निशदिन यहीअभिलाषहैकि मेरा तनधन किसीकेस्वार्थलगे अब मैं तुम्हारे पुत्रकीलोथ कुआंसे निकालने धसताहूं तुम मेरेआनेतक यहीं बैठेरहो उन्होंनेकहा जब तक तू न आवेगा तबतक हमयहांसेपांव न टारैंगे निदान हातिम एक महीनेकी अवधि बदके कूपगतहुआ और जबनीचेजाके आंखें खोली तो वहां कुआंहै न जल है किन्तुएक समधरातल पटपरसा दृष्टिपड़ा थोड़ीदूरचलके परमरम्य मनोहर बागदेखा और किवाड़ खुलेदेखके उसके भीतर चलागया तो देखा कि कितेक परीजाद एकठौरइकट्ठे हैं और एकयुवापुरुष सुन्दरस्वरूपवान एकरत्नजड़ित

सिंहासनपरबैठाहै हातिम एकठौरघनेवृक्षोंमें खड़ाहोके देखनेलगा इतनेमें परीजादोंकी निगाह हातिमके ऊपरपड़ी तो उन्होंनेकहा कि यह मनुष्य कहां से आया यह समाचार अपने अधीश्वरी से कहाकि एकमनुष्य वृक्षोंमें छिपाखड़ाहै वह उसजवानकेपास आके पूछनेलगीकि एकमनुष्य तुम्हारासजाती और आयाहै जोतुम कहो तो उसेभी बुलालावें यहसुनके उसनेकहा बहुत शुभ मुझेभी अपनी जातिके मनुष्यों से बड़ीप्रीति है तब उसपरीने अपने साथियों में से दो तीन को भेजा कि उसको बड़े सन्मान से ले आओ निदान हातिमको वहांलेगये जब सिंहासनकेपास पहुंचा तब परी और वह जवान दोनों उठखड़ेहुये और बड़ेआदर से उसको बैठाला और भोजनकराने के उपरान्त पूछाकि तुम कौनहो और कहांजातेहो और क्यानामहै और कौनठांवहै जहांके निवासी हो हातिम ने कहाकि मेरानामहातिमहै मैंयमनकानिवासी शाहाबादसेआता हूं दैवयोग से इसकूएपर आनिकला जब मैंने बहुतभीड़ देखी तो दोचारोंसे समाचार मिलेपर तेरेमाता पिताकी विथा मुझसेनहीं सहीगई जबउनके पासगया तो वे कहनेलगे किकोई हमाराऐसा हितूनहीं जोहमारे पुत्रको खोय इसमेंसे निकाले यह सुनके मैं इसकुएमें कूदपड़ा तो यहां आपहुंचा अबमैं यहतो नहीं जानता कि उनका पुत्रतूहीहै कि और कोई है पर एक मनुष्य देखताहूं यहसुनके वहजवान बोलाकिहे भ्राताजो दोखी पुरुष उसकुए पर रोतेछोड़ आया है मैं उन्हींका पुत्रहूं एक दिन उसकुआं पर मैं आनिकलातो इसचन्द्रमुखी कीझलक विद्युच्छटाके समान देखतेही बावला बनके उसकुआंपर बैठरहा और यह दिनप्रति जाय२ मुझे अपना मुख दिखा आतो एकदिन निराश होके कुआं में कूदपड़ा निदान गिरतेपरते यहां आपहुंचा इसनेमेरी दशादेखके दयाकर मेरेविरहतापको शान्ति किया अबदिनरात आनन्दसे भोगविलास करते हैं यहसुनके हातिमने कहाकि बड़ेशोच की बातहै धिक्कार तेरे ऐसेसुखको है कि तूतो ऐसे सुखचैनसे रहे और तेरे विरह में माता पिता निराशहोके जीवखोते हैं तब उस जवानने कहा किमेरातो अबजाना इसमृगनयनी के हाथहै जो यह छुट्टी देतो उनको धीर्यदेके फिरआऊं यहसुनके हातिमउस परीसेकहनेलगा किहे सुन्दरी यहनीति और दयाके विपरीत है कि इसके माता पिता महा दुःख में विलाप कर २ अपनाजीव खोते हैं इसलिये इसको दोतीन दिनकी छुट्टीदे जिसमें अपने मातापिता को धीरज

देके फिरआवे यहसुन वहहंसकेबोलीकिमैंने इसकोकबरोकाहै यह आपही नहींजाता यहसदा स्वाधीनहै जहांमनमाने तहांजावे तब हातिमने कहा ले उठ अबतो परीनेतुझे आज्ञादी यहसुनके उसने कहाकि यहआज्ञानहीं किन्तु व्यङ्गहै हां प्रसन्नयुत विदाहोना तो यहहै कि यहमुझसेयों वचन बदहो कि तू निस्सन्देह अपने माता पिता के पासजा मैंतेरेपास अठवारेमें दोतीनबार आया करूंगी और तुझेअपने मनसे न भुलाऊंगी यहसुनके हातिमने गर्दननीची करली और कुछेकदेरमें बोला किहे सुन्दरीइसपै दयालुहोकेजो यहकहता है सामानले तबतोवह त्योरीचढ़ा के बांकपनसे बोली किहमारी जातमें यहरीत नहींहै मैंउसके विपरीत कैसेकरूं बस अधिकलाड़ मेरेसामने मतकरो मुझेचिकनी बातभली नहींलगती तब हातिमने कहा कि जोतुम इसपै दयाकरो तोमैं कुछ प्रार्थना करूं मैंने उस प्रदेश की परियों को देखा सुना है और बहुधा उनका मेरासाथभी हुआहै उन्होंने अपने विरही लोगोंपर ऐसी दयाकरी है किजिसका कुछहिसाब नहीं और तुमकहतीहो कि हमारीजात में यहरीत नहींहै मैंइस बातको कैसेमानूं मनुष्य तो निरदई भी हो जाता है पर परीज़ाद अपनी बात को भलीभांत निवाहती हैं यहसुनके उसने मुहफेरके कहा कियह झूठाहै मुझे मनसे नहीं मानता यह तो केवल तेरी बनावट है यह सुनके वह जवान बोलाकि इसबुद्धिकी बलिहारी है मैंनेकैसी विपतभोगी है कितेरेलिये कुआमेंपड़ा राजपाट छोड़ा मातापिता हितूसम्बन्धी त्याग नानाप्रकार के दुःखभोगता यहां आया तिसपैभी मैंगाहक न ठहरा इससमय यहीकहावत स्मरण होतीहै कि पक्षीका तो घातहुआ और अहेरिया ने कुछ स्वादही नपाया यहसुनके वह कुटिल बोली कि यह वृथा बाद काहेको करता है मैं जब जानूं तूमुझे चाहता है किजो मैंकहूं सोमाने यहसुन वहचट खड़ाहोगया और बोलाकि अब विलम्ब काहेको करती है शीघ्र कह तब उसने एककड़ाहमें घी गरमकराया और कहा किजोमुझेचाहता है तो इसकड़ाहमें कूद वह जवान निधड़क कूदनेकोचला ज्योंहीं निकट पहुंचा त्योंहींवह परीदौड़के उसकेगले में लिपट गई और कहनेलगी कि तेरीप्रीत निश्चलहै अबमैंभी तेरीचेरीहूं जोकहैसो करूं फिर बड़ा हर्ष किया और नाचराग रङ्ग में एकमास व्यतीत हुआ और यहां कुएपर जो लोग बैठे थे सोदिन गिनरहे थे जब तीसदिन होगये तबवे कहनेलगे किजो वहआजभी न आया तो

उठके अपने २ काममें लगें फिर हातिम उठखड़ाहुआ और कहने लगा कि मुझेहुसनी आवश्यकता है इसलिये जोतैने कहाहै उसका प्रतिपाल कर और परीसे कहा कि देख अपने वचन का प्रतिपाल करना और जोतुम सुलेमान को साक्षी दी तो मुझे निश्चयहो तब परीने सुलेमानकी आनकरी और परियों को आज्ञा दी कि इन दोनोंजवानों को कुआंपरपहुंचाओ उन्होंने एकही उड़ानमें दोनों को कुआंके मुहरेपर बैठादिया सबलोग देखके बहुत हर्षित हुये और उसके मातापिता दौड़के हातिमके चरणपरसने लगे निदान सबकेसब प्रसन्न युत नगरमें आये तो नगरमें अनन्दबधाये बजनेलगे चौदहदिन तक हातिमकी पहुनाईकरी और रागरङ्गकी बड़ीधूम मचीरही और वहपरीभी अपनेवचन का प्रतिपाल करनेलगी तब हातिमने कहा धन्यहै तेरेरूपको शील को और नीतिभी यहीहै कि रूपवानको शीलनहीं तो रूपहथाहै तथा बिनलाजके नैननिदान पन्द्रहवें दिन हातिम वहांसेविदा हुआ और एक बनकी राहली कईदिन उपरान्त उसको एक नगर दृष्टिपड़ा और उसके परकोटाकेबाहर एक वृद्ध पुरुषखड़ा देखा तो उसने हातिमको सलाम किया हातिम ने भी कहा सलाम २ हे शीलवान वृद्ध सलाम तब उसने हातिमसे कहा हेपथिक जोआजकी रातमेरे धामको चल पवित्र करैतो मैं अपनेको धन्यमानूं हातिमने कहाकि नेकी और पूछ २ निदान हातिमको वह अपनेघरलाया और बड़ेआदर सन्मान से भोजन करानेके पीछे पूछाकि हेजवान तू कौनहै और कहां से आताहै और कहांको जावेगा हातिम ने कहा किमैं यमन का निवासी हूं और हातिम मेरानाम है और मैं हम्माम बादगिर्द को साधनेजाताहूं यहसुन उसने गर्दननीचीकरली और थोड़ीदेर में बोला कि हेप्यारे कौनतेरा शत्रु है जिसने तुझे ऐसीठौर भेजा जो कोई वहां गयासो नहींफिरा उसका कुछचिन्ह नहीं जोकोई वहांजानेकी अभिलाष करैसो पहले यहीं मृतकस्नान करले क्योंकि वह यमपुरीसे घाटनहीं है और उसकी सीमापर शहरकता शहर के बादशाहने एकचौकी बैठारदी है किजोकोई वहां जावे उसको पहले मेरे पासले आवो नजाने उसको बधकरता है अथवा छोड़ देता है आजतक किसीने वहांके समाचार नहीं कहे तब हातिम ने कहा कि हुस्नबानू सौदागर बच्ची पर मुनीरशामी शाहजादा आशिक हुआ है और अपनाघर हारछोड़के उसनगरकी सरामें पराहै और केवल उसकेसाथ सुखक्रीड़ा करनेकी अभिलाषसे अभी

तक जीताहै और उसक़ुटिलने सातप्रश्न कियेहैं सोउसके बदलेमें प्रश्नोंके उत्तरदेनेको उद्यतहुआहूं सो परमेश्वर कीकृपासे छ: प्रश्नों के उत्तरभी देचुकाहूं और सातवां प्रश्नयहीहै कि हम्मामबादगिर्द को सोधलादे अबदेखूं चतुर विधाता मुझेकौन कौतुक दिखाता है यहसुनके उसबृद्ध ने कहा कि धन्यहै तू और तेरेमाता पिता जो पराये पीछे इतनीविपत्ति भोगता फिरताहै परन्तु अब तू यहां से लौटजा क्योंकि वहमायाका प्रपंच है वह किसी की बुद्धिमें नहीं आता तब हातिम ने कहा कि मुझसे यह तो नहोगा कि उसके सन्मुख झूठबोलूं और जीवजाने के डरसे लौटजाऊं तो परमेश्वर के आगे क्या उत्तरदूंगा तबफिर वहबृद्ध बोला कि हे जवान मेरी शिक्षान मानेगा तोपछतावेगा जैसेएक दादुरने अपने सजातियों की बातनमानी तोपीछे पश्चात्तप करनापड़ा यहसुनके हातिम ने उसका वृत्तान्तपूछा तब वह बृद्ध इसप्रकार कहनेलगा किग्राम के देशान्तरमें एकनदीमें दादुरबसतेथे एकदिन उनमेंसे एकनेकहा किमनमें ऐसेआतीहै किकहीं विदेशको चलाचाहिये और किसी दूसरी नदीमेंजाकर रहें क्योंकि देशाटन में ऐसे लाभहैं कि दीन धनाढ्य होजातेहैं और निजदेशमें किसीभांति धनकी संचयनहीं होती और विना हाथ पांव डुलाये मुखमें भोजन भी नहींजाते यहसुनके उसकेसजाती बोले किरे मूर्ख यह अनुमान जो तैंने किया हैसोचित्तसे उड़ादे नहीं तो सुखनहीं किन्तु दुःखहीपावैगा निदान उसने एकनमानी अपने कुनबा को साथ लेके वहां से चलदिया और यद्यपि जलचरों को थलमें चलते बहुत कठिनता होती है तद्यपिवह बड़े हर्षसे उछलकूदके चला जाताथा चलते२ एकसोता के ऊपर जापहुंचा उससोतामें एकसर्प रहताथा उसने उससोता के सब मेढक बीनखायेथे इस समयमें कई दिनका भूखाथा ज्योंहीं इनको देखा त्योंहीं इनपर तीर समान टूटा और प्रत्येकको बीन२ उदरमें धरलिया वही एक जैसे तैसे वहांसे भागबचा और अपने पूर्वस्थानमें आया तब वह तो दीन मलीन मारे विपति के अपने पुत्रकलत्रोंके शोकमें बैठाथा और उसके सजाती उसका उपहास करतेथे किरे मूर्खतैंने हमारा कहना नमाना अपने हठका फल- पाया बनावनाया घर माटीमें मिलाया वह सुडनीचाकिये घुरेको सिमान सबकी सुनताथा किसीको उत्तर नदेता किन्तु अपनेकिये पै आपही पश्चात्तापकी अग्निमें औट रहाथा सो हेजवान जोकोई कभी हितू की बातनहीं कानकरता वह अन्तमें पछिताताहै यह

सुनके हातिमने कहा कि यह सत्यहै और तुमतो मेरेही हितकी कहतेहो परन्तु जबईश्वरकी राहमें कटि कसिचुका तोउसे मरने जीनेका कुछ विचार नहीं करनाचाहिये केवल बिधाताके लिखेपै आरूढ़होना उचित है इसलियेमैंने तो यहकर्म अंगीकारकिया है और उसकेपलटे कामकरने को उद्यतहूआहूं अबमुख फेरना उचितनहीं जोकरैसोईश्वर अबतू मुझेशहरकता कीराह दयाकरके दिखायदे जबउसने इसकानिज अनुष्ठान हम्माम बादगिर्दके जाने-हीका लखातो शहरके बाहर आयके उससे कहनेलगा कि यहांसे तू दाहिनी ओरको राहले बहुतसे नगर गावों के उपरान्त एक पहाड़ मिलेगा वहां बहुतसी विपत्ति और नाना प्रकारकी भयसे बचेगा तो फिर एक बड़ाविकट वनमिलेगा वहां ईश्वर की लीला देखेगा थोड़ीदूर चलके एक दुराहा मिलेगा वहांसे बायेंओरकी राहपर आरूढ़ हूजियो सीधा शहरकता में जा पहुंचेगा यद्यपि दाहिनी ओरकी पन्थसे जल्दीपहुंचेगा परन्तु अधिक भयानक है तबहातिम ने कहा कि भावी बलवान है बिनामृत्यु कोई मारता नहींहै फिर क्यों सीधीराह छोड़के टेढ़ीराह चलूं यहसुनके उसवृद्ध ने कहा कि प्राचीनों ने इसप्रकार कहाहै कि फेर का सोचतजके सीधीपन्थ चलिये और रांडस्त्रीकासंग मतकरिये यद्यपि वहवारांगनाके समानहो और यहप्रसिद्धहै कि बिनामृत्यु कोईमरतानहीं तद्यपि जानके गरलका संग्रह न कर और जो तू मेरीबात कान न करैगा तो पछितायगा निदान हातिम उससे बिदाहुआ तो थोड़ेदिनोंमें एकशहर दृष्टिपड़ा देखाकि एकजगह लोगबैठेहैं और राजसी सामा वर्त्तमानहै और प्रत्येकजमावके पास नगारे बजरहे हैं यह देखहातिम ने पूछाकि हेमित्रो सत्यकहोयहांकिसीकेघर बिवाहहै यहसुनके उनलोगोंने उत्तरदिया कि इसशहरकी रीतिहै किवर्षवेंदिन बादशाहआदि सम्पूर्ण नगरनिवासी अपनी२ पुत्रियों को दुलहिनि के समान शृंगार करके तम्बुओं में बैठारदेते हैं तब बनमेंसे एक सर्पआताहै सो मनुष्यका स्वरूप धारणकरके सब तम्बुओं में देखता फिरता है जिसे मन मानता है उसे लेजाताहै इसलिये हम मारे डरके लाजछोड़के नगारे बजवाते हैं और बिवाह की सी सामाकररक्खी है सबके मनमें यही धड़काहै कि देखेंकिस की बेटी मनमानतीहै और संध्यासमय अवश्य आके किसीको ले जायगा यह सुनके हातिमने सोचा कि यह कर्म केवल जिन्नका है फिर कहा कि हेमित्रो तुमकोतो उसनेबड़ादुःखदिया उन्होंनेकहा

कि क्याकरें हमारा कोईबस नहींचलता और ऐसाकोई ईश्वरका प्यारा नहीं जो हमको इसमहाशोक से निवारणकरै तबहातिम बोलाकि जो ईश्वरचाहे तो आजही इसमहादोषसे तुम्हें बचाता हूं यहसमाचार उन्होंने अपने बादशाहसे कहे उसने हाथोंहाथ हातिम को बुलवाया और एक कुर्सी पर बैठाल के पूछा कि हे जवान तुझे मालूमहुआकि यह क्या महाआपदाहै हातिमनेकहा कि मुझे भलीभांति विदितहुआ कि यह जिन्नहै और जब इनको उपद्रव करना होता है तो सुपन्थ छोड़कर कुपन्थ चलते हैं यह सुनके बादशाह बोला कि जो यह जिन तेरे हाथ से मारा गया तो इसका पलटा तो कुछ नहीं परन्तु जीतेजी तुम्हारा रिणियां रहूंगा हातिमने कहा कि मैंने तो ईश्वरकी राहमें कटिकसी है जो काम करताहूं सो परमात्माको सौंपताहूं जो तुम्हाराभी काम करूंगा तो तुम्हारे ऊपर भी मेरा कुछ येहसान नहीं है परंतु इतनाहीहै कि जोमैंकहूंसो मानो बादशाहने कहाजोतू कहै सो हम सब तनमनसे करनेको उद्यत हैं तू बता हातिमने कहा कि जबवह आयके किसी लड़कीको मांगे तो तुम उसे इतनाहीं कहो कि आपको लड़की देनेमें हम बहुत प्रसन्नहैं परन्तु थोड़ेदिनों से हमारा स्वामी आयाहै इसलिये उसकी बिनआज्ञा हमकुछकाम नहीं करते और जो करैं तो तत्काल में हमारे देश कोष को मटियामेट करदेगासोतुम उससे याचना करोनिदान हातिम को अपनी सभामें दिन भर बैठाररक्खा जब सांझ हुई तबउसके आने के समाचार प्रकट हुये कि एक शब्दाघात होता आताहै इतनेमें एक भूधराकार सर्पआता दृष्टिपड़ा और जो वृक्षादि उसकी छाती के नीचेपड़े सो कचरके चूर्णहोतेजातेहैं निदान जब निकट पहुंचा तब ऐसीपूंछ थरथराई कि सबकीगर्दन नीचीहोगई और वहलोट पोट के सुन्दर युवा पुरुष का स्वरूप धारण करलिया तब सबोंने आगे बढ़के लिया और बादशाह के तंबूमें आबैठा थोड़ीदेर पीछे उठा और कहनेलगा किमुझे अपनीलड़की दिखावो तब बादशाह साथ होलिया और सबकी पुत्री दिखाई तिसपीछे बादशाह की बेटी के तंबू में आया और उसकी बेटी को अङ्गीकार किया और बादशाहके पासआबैठ कहा कितुममुझे अपनी पुत्रीदेदोबादशाह ने कहा कि अब थोड़ेदिनों से हमारा स्वामी आयाहै हमउसीके आधीनहैं जो वह कहताहै सोई करतेहैं इसलिये आप उसी से याचना करें यहसुनके वहबोला अबतकवहकहांथाअच्छा बुलावो

निदान हातिम उसके पास आया उसने पूछा कि आज तक तो तू इस शहर में नहीं था और अब इनको काहे को बहका के इनका देश उजड़वाया चाहता है हातिमने कहाकि जबमें यहां न था तबतक तेरा कहा किया अब इसदेश का स्वामी मैं हुआहूं इसलिये जो कोई मेरे प्राचीनों की रीति अङ्गीकार करै उसको हम बेटीदेते हैं उसने कहा कि अच्छा जो रीति हो सो बतादो हातिमने कहाकि एक मोहरा मेरे पासहै पहिले तो मैं उसको घिसके पिलाताहूं उसने मारे अभिमानके कहा कि अच्छा घिस-लाओ हातिमने रीछ की बेटीवाला मोहरा घिस पानी में दिया उसने पिया तो जिनोंकी सम्पूर्ण विद्या भूल गया तब फिर उसने कहाकि और अब कौन रीतहै हातिमने कहा कि एक मटकी में बैठो और हम उसपै ढकना धर दें तुम उससे निकल आवो और जो न निकलसको तो उससमय सहस्रलाख औरएकसहस्रइक्समास और जल सुर्मीके अगड़ा समान मोतीउससे गुनहगारी लें उसने कहा कि ला मटकी भी लेआ निदान हातिम ने मटकी मंग-वाई और कहाकि इसमें बैठो उसने मारे अभिमान के वैसाही किया हातिमने उसेढकनासे बन्दकिया और इस्मआजम पढ़ा तो उसके प्रभावसे वह ढकना पहाड़के समान होगया बहुतेरा उसने बलकियापर वह ढकना न उठा तब हातिमने उस मटकी केचारों ओर लकड़ीधर अग्निलगवादी तब वह जिन चिल्लायाकि मैं जला मैं जला जब वह भलीभांति जलगया तब हातिम ने उसे पृथ्वी में खोदके गड़वादिया और कहा अब आनन्दसे अपने २ घरको जावो यहदेख बादशाह बहुत प्रसन्नहुआ और बहुत.सी द्रव्य उसके आगे ले रक्खी हातिम ने कहा यह मेरे किसी कामकी नहीं है जो तुम्हारा मनमाने तो दीनोंको बांटदो बादशाहने उसीसमय सबद्रव्य भिक्षुकों को बांटदी और तीनदिन पीछे हातिम वहांसे बिदाहुआ कई दिनपीछे उसपहाड़ के पास जा पहुंचा जिसका नाम उसबूढ़े ने बतायाथा थोड़ीदेर ससताके उसपै चढ़ा जब उसको पारकिया तो एकबनमें जा पहुंचा तो अनेकप्रकारके अपूर्वपदार्थ देखे और बनफलखाते और पानीपीते उसके भी पारगया तब एक दुराहा मिला वहां शोचनेलगा कि उसवृद्धने कहाथा बाईंओरकी रास्ता लेना सो उसकी बताईराहपर चलना चाहिये जब थोड़ीदूर बाईं ओरकी राहमें चला तब मनमें शोचाकि जो इस राहसे चलाती वहांकी अपूर्व बस्तु न दिखाई परैंगी इसलिये उसी राहसे चलना

चाहिये जो ईश्वर सहाय हुआ तो राह निःकंटक होजायगी यह सोच के दाहिनो ओरको फिर लौट आया जबथोड़ी दूर चलातो बबूरों का बनऐसा मिलाकि मारे कांटोंके कहीं सुईधरनेकी ठौर नहीं मारे कांटोंके सम्पूर्ण शरीरछेदगया वस्त्र टुकड़े२ होगयेहातिम अपने मनमें पछिताने लगाकि उस बूढ़ेने सत्य कहाथा और यह नहीं मालूमकि आगे कोई और आपदाहै निदान ज्यों त्यों करके उसके पार गयातो छिपकलियोंके बनमेंगया वहांक्या देखता हैकि गोंदर लोखड़ी स्यारके समान छिपकली मनुष्य कीगन्ध पाकेधाईं हातिम को यह निश्चय होगया कियेअब अवश्य खाय जांयगीयह सोचके बहुत व्याकुलहुआ औरशरीर शिथिल होगयातब दाहिनो ओरसे एक पुरुष प्रगटहोके कहने लगाकि हेहातिम धीरज धर पहिले तैंने उसवृद्धकी बातनमानी अन्तको यह कष्टदेखा हातिम ने कहाकि अबतो अपराध हुआतबउस पुरुषने कहाकि जोमुहरा तुझे रीछकी बेटीने दियाहै उसकोपृथ्वीमें छोड़दे हातिमनेवैसाही किया उसके छोड़तेही प्रथमतो धरतीकालीहुई फिरहरी हुई तिस पीछे लालके होतेही वे सबआपसमें लड़मरींतब हातिमने मुहरा उठाय लिया और आगे बढ़ातो एक धरातल अजदहात अर्थात् एक प्रकारकी धातुकामिला जिसके कणकेपाओंमें पारहुये जातेथे निदान बड़ेकष्टसे पारगया तो देखाकि पांव चलनी होरहे हैं तब हातिमने जानाकि अबकोई विपतिनहीहै तोउठके आगेबढ़ा त्योंहीं मनुष्यकी गन्धपाके कुक्कुटकेसमान ऊंचे और थारी के समान चौड़े बिच्छू धाये यहदेखहातिमकोसुधि बुधिसबजातीरही शरीरशिथिल होगयो तबफिर वही पुरुषप्रगट होके कहने लगा किहातिमवही मुहरा धरतीमें छोड़दे हातिमके ऐसे हाथपैर फूलगये किमुहरा भी न खुल सका तब उसने अपने हाथ मुहरा खोलके हातिम के हाथमें देके कहाकि तूमे पृथ्वी पर छोड़दे और ईश्वर की लीला देखले जब हातिमने धरती पर डाला तो छिपकलियों के बनकी भांति धरती रंग बदलनेलगी औरजब रक्तरङ्ग होगई तबसबबिच्छू आपसमेंलड़नेलगे तीनदिनके अनन्तरमें सबकटिमरे फिरहातिम ने अपना मुहरा उठाय लिया और अपनी राहली थोड़े दिनों में एकशहर में जापहुंचा तो वहांके निवासियोंने हातिम को बिदेशी देखके पूछाकि तू कौन सी राहसे आयाहै हातिमने कहाकि मैं तो दाहिनेहाथकी राहसे आयाहूं तब उन्होंने पूछाकि तू छिपकली बिच्छू बबूलादिके कांटों से कैसे बचा उसने कहा कि वे सब

मरगये केवल अब बबूरके कांटे और अजदहातके काष रहगये हैं और सबप्रकार यहराह निःकण्टक होगईहै यह सुनके व्योपारी लोगोंने सोचा कि उसराहसे बहुत दिनों में पहुंचते हैं इसलिये इसीराहसे चलना चाहिये निदान सबव्योपारी उसीराहसे चल-दिये यह समाचार बादशाहके पासगयेकि एकपथिक इसराहसे आयाहै उसके कहनेसे सबव्योपारी भी इसी राहसे गये हैं बाद-शाहने यहसुनके सिपाही उनकीरक्षा के लियेभेजे किजावो देख आओ जोराह निःकण्टक होगईहोतो व्योपारी इसीराहसे बहुत आयाजाया करैंगे।शहरकी आबादीबढ़ैगी और हातिमको अपने सन्मुख बुलाके कहाकि हेपथिक तैंने पंथमें बहुतसा कष्टभोगा है अबकुछ दिन हमारे पासरह थोड़ेदिनमें पंथका श्रममिटाके जहां मनमाने तहां जावो परंतु मुख्य अभिप्राय उसका यह था किजो यह सत्यकहता है तबतो भलीभलाहै नहींतो इसको शूली दूंगा और कितक सिपाही उसकेदेखनेके लिये कि जिसमें कहीं चला नजाय नियतकिये जब सौदागर लोग उसराहसे गये तो पीछे२ बादशाही सिपाही उनके पीछेलगे रहे जब वे कुशलपूर्वक अपने२ नगरोंमें पहुंचे तब उन्होंने लौटके बादशाहसे कहाकि यह पथिक जोकुछ कहता है सत्यहै अब इस पंथमें कोई कण्टक नहींरहाहै तबबादशाहने चारोंओर को पत्रभेजे कि यहराह अब निःकण्टक होगई है जिसका मनमाने सो आवे जावे और हातिम की बड़ी प्रतिष्ठा कर बहुत आधीनता से अपने अपराध की क्षमा मांगने लगा और हातिमके आगे बहुत सम्पदारक्खी तब हातिमने पूछा कि जिसदिनसे मैं आपके शहरमें आयाहूं उस दिनसे बड़े चैनसे रहाहूं पर यही नहीं मालूमकि तुम क्षमा किसलिये यांचतेहो तब बादशाहने कहा कितुम नहींजानते किमैंने तुम्हारेपीछे मनुष्य लगा रक्खेथे कि जोयह कहीं जाया चाहे तो जाने नपावे क्योंकि इसबातके झूठ ठहरनेपै तुमकोनगरके बाहरसूलीदेता जिसमें कोई फेर ऐसी बात न कहै यह सुनके बादशाहसे हातिम ने कहा कि धन्यहै हे बादशाह ऐसीही नीतिहै ईश्वर आपके देश कोषकी वृद्धि करे और सदा आपके शत्रु निर्बलरहैं और जो सम्पदा आपने मेरे आगे धरीहै सो मेरे कामकी नहींहै क्योंकि मेरेपास कोई भार बाटभी नहीं यह सुनके बादशाहने कहा कि इसका कुछ सन्देह नहीं मैं तुम्हारी जन्म भूमि तक तुम्हें पहुंचादूंगा तब हातिम ने कहाकि अभीकोई आवश्यककामहै जबतक वह नहोजायगा तब

तक जाना ते। दूर है अपनी जन्मभूमि की ओर मुखभी न करूंगा तब बादशाहने कहा कि वह कौन कामहै इसको भी बतावो ते। कुछपै कुछ हमभी सहायता करेंगे हातिम ने कहा कि मैं केवल ईश्वर की सहायता के सिवाय किसी मनुष्य की सहायता नहीं चाहता जो आप मुझे शहरकतां की राह बतादीजिये ते। जानो आपने मेरी सहायताही की तब बादशाहने पूछा कि तेरा वहां क्या कामहै हातिम ने उत्तरदिया कि मुझे हम्माम बादगिर्द को सोधनाहै यहसुनके बादशाहने कहाकि हे प्यारे इस अरमानको चित्तसे न लावो क्योंकि वहां से आजतक कोई कुशलपूर्वक नहीं फिराहै निदान बहुतेरा कहा परन्तु हातिमने एक न मानी फिर शार के बादशाह ने कितेक आदिमी हातिम के साथ किये और हातिमको बिदा किया हातिम शहरसे निकल के अपनी राहली और थोड़ेदिनोंमें एकठौर पहुंचा ते। राह दिखानेवाले बोले कि अब हमारी सीमा यहांहीतकथी यहांसे आगे शहरकतांकी सीमा है यहां हमको बिदाकरो हातिमने उनको बिदाकिया और आप आगे बढ़ा जब शहरकतांके पास पहुंचा तब वहांके निवासी पूछने लगेकि हे जवान तू कौनसी राहसे आयाहै हातिमने कहाकि मैं ते। दाहिनीओरकी राहसे आयाहूं यद्यपि उसमें बहुत कंटकथे पर अब ईश्वर ने अपनी दयासे निःकण्टक किया यह सुनके वे बहुत प्रसन्नहुये हातिम शहरमें घुसा और सरायमें जाउतरा एक दिन दशमोती और दोलाल अनमोललेके बादशाहसे मिलनेको गया जब राजद्वारपर पहुंचा तब चोबदारने बादशाह से प्रार्थना कीकि एक किसी अन्यदेश का निवासी ब्योपारी अति शुद्ध स्वरूप बुद्धिमान आपकेदर्शनोंको आयाहै बादशाहने आज्ञादीकि शीघ्रलाओ जब सन्मुख गया तब बादशाहोंकी रीतिअनुसार दण्डवत्कर और वेरत्न भेंटदिये बादशाहदेखके बहुत प्रसन्नहुआ और योग्यआसन बैठने को दिया और कुशलप्रश्न के उपरान्त उसके समाचार पूछे हातिमने कहाकि बहुतकाल से मैं सौदागरी करताहूं परन्तु अब संसारअसार जानउसओरसेमनको निवृत्तकिया और बादशाहोंके दर्शन करना अंगीकार किया और यहां आपकायश और कीर्ति ऐसी सुनी कि मन वरवस खींच लाया कि ऐसे सतोगुणी नीति रत प्रजापालक के दर्शन अघनाशक होतेहैं और लोक परलोक में सुख और बड़ाई का लूटना है बादशाह उसकी ऐसी मीठी नम्रताकी बातेंसुनके बहुतही प्रसन्न होके कहनेलगा कि हेप्यारे

जो कुछकाल हमारे नगरमें रहे तो हमभी तेरे सत्सङ्ग का सुख लूटें हातिमने कहा यद्यपि हमऐसे लोगोंका दोचारदिन भी एक ठौररहना अनुचितहै तद्यपि ऐसे नीतरत बादशाह की दयादेख मुझेनव प्रकार शुभदायकहै और मैंनेआपकी आज्ञाअपने शीशपर धरी फिर बादशाहने पूछा कितुम कहांउतरेहो हातिमने कहा कि सरायमें यहसुन बादशाह ने आज्ञादी किइस जवानके लिये एक शुद्धस्थान नियतकरो और रसोईकर्त्तासे कहो किदोनोंसमय सात २ थार भोजनोंके इसके स्थानपर भेजा करै और सेवक इस पुरुषकी सेवाकरनेको नियतरहैं फिरहातिमसे कहा किहेजवान वहांसे उठआ और दिनप्रति हमारी सभामें आय२ अपनेमधुर वचन सुनाय २ हमारेचित्तको प्रसन्न किया कर निदान हातिम को बादशाहकी सभामें रहते छः मास बीते अंतको हारस बादशाह ऐसा हातिम को चाल भांति बात चीतऔर रूपशील और गुण परलोभा कि क्षणमात्रभी उससे जोविलगहोतो व्याकुलहोने लगे और बादशाह उसको तनमनसे चाहनेलगा और बहुधाअपने सभासदोंसे उसकी प्रशंसाभी करै और वेभी उसके प्रतिउत्तरमें कहतेकि सत्यहै महाराज ऐसा बुद्धिमान पुरुष काहेको मिलता है जब हातिम ने एकदिन बादशाह को बहुतप्रसन्न देखातब फिर भेट आगेधर खड़ाहोरहा तो बादशाहने कहाकि हेजवान मैंतो तेराबैसेही तनमनसे चेराहोरहा हूं तूकाहेको वारम्बार लज्जित करताहै और मैं तुझसे इसलिये अधिक लज्जितहूं कि इतने दिनों से तूमेरी सभामें वर्तमानहै परतैने कुछयाचना नकरी परंतु अब मेरी यही अभिलाष है कि तू मुझसे याचना कर और मैंजो तू मांगेगा सोई निस्संदेह दूंगा और यह देशभी तेराही है जिसको चाहे तिसको देदे और जोचाहेसोअपना करले और जिसराजकी पुरुष को चाहे अपना आज्ञा कारी करले यह बादशाह की बातसुन के हातिमने प्रार्थना करी किमुझे आपकी दयासे सकल लौकिक पदार्थ सुलभ हैं और महाराज के राज्य और जीवकी सदाजय और वृद्धिहो मेरेमनकी सकल भावना ईश्वरने पूरीकरी परएकही अभिलाष मनमें शेषहै तिसकेबिन पूरीहुये मरनसमय भी पश्चात्तापसे हृदयदहेगा यह सुनके बादशाह ने पूछा कि वह ऐसीकौन अभिलाष है जोतू चाहेतो अपनीपुत्री कोभी तुझेदेदूं और देशकोषकीतोकौनबातहै यहसुनहातिमने गर्दननीचीकरके कहाकिहे महाराज वहमेरी बहिनसमानहै मेरीतो अभिलाषही

अन्यहै और उसके प्रकट न करनेका यहकारणहै किमैंकहूं और आपनमानें तो सभामध्य मुझे लज्जितहोना पड़े बादशाहने कहा किमेरेतो मेरी स्त्री के सिवाय कोई पदार्थ तुझको अदेय नहीं है हातिमने कहा किजो आपवचन बन्दहोके मुझसे याचना करने को कहैं तो मैं प्रार्थना करूं बादशाह ने कहाकि जो मांगेगा सो पवेगा इसमेंकुछ सन्देह नकर सोच तजके मांग हातिम ने कहा किमेरी अभिलाष हम्मामबादगिर्दके देखनेकी ओरहै जोआपकी आज्ञापाऊं तो उसेदेख मनकी भावना पूरीकर पुनिआय चरण सेवनाऊं यहसुनके बादशाह ने गर्दननीची करली और कुछ न बोला यहदेख हातिम ने प्रार्थना कीकि ऐसे काहेको सोचगत आप होतेहैंमैं सबप्रकार आपका अनुचरहूं जो आज्ञाहोगी उस- का भली भांति प्रतिपाल करूंगा तब बादशाहने उत्तर दिया कि मेरे सोचबस होनेके कईकारणहैं एकतो यहकि मैंने प्रणकियाहै कि किसी को वहां नजानेदूंगा दूसरेयहकि तुझसा युवासुशील स्वरूपवान नहींआया सोभी जीव देने को जाता है तीसरे यहहै कि तुझेमें अधिक प्यार करताहूं जो तुझे जानेदूं तो तेरीबिरहमें दुखीहूंगा पांचवें जो तुझे न जानेदूं तोमेरा प्रणजाताहै कितुझ से प्रथमवचनबन्द होचुकाहूं और अबतुझे न जानेदूं तो वचन पलट ठहरूं तो प्रतीति जातीरहै इससे राजप्रबंध में उपद्रव होने लगें तब हातिम ने कहा कि आप किसीप्रकार का सन्देह न कीजिये ईश्वर चाहे तो एक तुच्छकालमें वहां से आनन्द पूर्वक फिर आय चरणदेखताहूं आपसोचविचार तज आज्ञादीजिये क्योंकि मैंकिसी भांति ठहरभी नहीं सक्ता क्योंकि शाहजादामुनीरशामी हुस्नबानू बरजख सौदागर की बेटीपर मोहित हुआहै और उस कुटिल ने सातप्रश्न कियेहैं सो नतो उसविरहीमेंसामर्थ्य उत्तरदेनेकी ठहरी और न उससुन्दरीके बिरहमें धीरज धरसकताहै निदान उसको दुःख में व्याकुल देख उसके बदले मैं उत्तर देनेको उद्यतहुआ सो उनमें से छः प्रश्नका उत्तरतो देचुकाहूं अब केवल यही प्रश्नहै कि हम्माम बादगिर्द की सोधिआओ यह सुनके बादशाहने कहा कि धन्य है तुझको और तेरे माता पिताको कि दूसरे के लिये कष्ट उठाताहै और अपनेको सजीव मृतक जानलिया क्योंकि आजतक कोई वहांसे नहींफिरा बहुतेकुंवर सौदागर बचा आदि वहांगये पर वहां से कोई सजीव न फिरा इस से निश्चय हुआ कि उस सुन्दरीने भेजाहै परन्तु अब यह तो बताकि तूकहांका निवासीहै

और तेरानामक्याहै हातिमने कहाकि मैं तयकापुत्र हातिमयमन का निवासीहूं यहसुन बादशाहने उठके हृदयमें लगालिया और कहा कि सत्यही तेरे भाग्यसे राज्यका चिन्ह प्रकटहै और तेरी कीर्त्ति विदितहै और दिनप्रति तू विख्यातहोगा तेरी उपमादी जायगी अब जोकोई उत्पन्न होगा सो तेरा द्वितीय गिनाजायगा यहकहके अपने मंत्रीको आज्ञादीकि हम्माम बादगिर्दके द्वारपालकको पत्रलिखो और हातिमको हृदयलगा कितेकमनुष्य उसके साथ कर बिदाकिया हातिम तो शहर के बाहर निकला और बादशाह हातिम के शोचसे सभा से उठ महलमें गया पन्द्रहदिन पीछे हातिमको हम्माम बादगिर्द दृष्टिआया तो पूछाकि यहकोट है अथवा कोई पहाड़है उन्होंने कहा कि यह हम्माम का कपाट है देखने में तो निकट लखाई परता है परन्तु अभी सातदिन के चलनेसेमिलेगा जब सातवेंदिन वहां पहुंचातो वहां बड़ीसेना देखी तब हातिम ने पूछा कि यहसेना किसकी है साथियोंने कहा कि यह द्वारपालक की है निदान सेनाके भीतर गया तो वहां उन साथियों के बहुतसे सम्बन्धी और इष्टमित्रये सभोंसे मिलेतो वेपूछने लगे कि तुम्हारे आनेका क्या हेतुहै उन्होंने उत्तरदिया किबादशाह ने इस यमनीपुरुषके साथ भेजा है और द्वारपालक को एक पत्र भी लिखा है निदान हातिम उसपत्रको लेके द्वारपालक के तम्बूमें गया दण्डवत्करके वहपत्र उसकोदिया उसनेपत्रशीसपर चढ़ाया और बादशाह की दयादृष्टि देखके हातिम को हृदयमें लगालिया औरपत्रको खोलके पढ़ातो उसमेंयहलिखाथा किइसको मैंने बचन दियाहै सोइसे हम्माम के भीतरजाने की आज्ञादो परन्तु पहिले इसको यथासामर्थ्य समझायके फेरदोतो मैंतुमसे बहुत प्रसन्नहूंगा द्वारपालक ने हातिमको बहुतभांति समझाया परएक नमानीतब उसने बादशाहको अपनीओर से लिखाकि यहनहीं मानता और मैं अपनीसी बहुत कहकर चुका जब बादशाहके पास यहपत्र पहुंचातब अपना मूड़धुना और उसकेप्रति उत्तरमें लिखाकि जो वह नहींमानता तो मतरोको जो वहपत्र बादशाहके पाससे फेरआन पहुंचातो भी उसने हातिम को बहुत समझाया पर पत्थरमें जोक न लगी तब हातिम को हम्माम के द्वारपर लेगया तो हातिम ने उसकेद्वारपर यहलिखादेखा कियह मायागृह क्योमुर्स बादशाहके समयमें बनाहै और बहुतकाल तक इसका चिन्ह वर्तमान रहेगा औरजोकोई इसमाया गृहमें आवेगासो सजीव नजायगा किंतु

इसीमें भूखाप्यासा भ्रमताफिरा करैगा और जो कुछ उसकी आयुर्वलके स्वासों की संख्याहोगी सो एक बागमें जाके मेवाखाके पूरी करैगा परंतु इसमाया गृहसे किसीभांति ननिकलेगा जब हातिम ने यहलिखा देखातो फिरनेका विचारकिया परंतुमनमें सोचाकि बाहरका वृत्तान्ततो जानापर जब वह भीतरका समाचार पूछेगी तबकौन उत्तरदूंगा इसलिये भीतर चलना अवश्यहै निदानद्वारपालकने कपाटखोल दिया और हातिम भीतरघसातो दशबारह कदमसे अधिकनगया होगा कि इतनेमें पीछे फिरके देखातो नवे मनुष्य दिखाईदिये न फाटक का चिन्हमिला हातिम ने बहुतेरा चाहाकि द्वारढूंढके बाहरनिकले पर न मिला तब हातिमने मनमें सोचाकि हम्मामका तोकेवल बहानाथा परन्तुथी यहमृत्यु क्योंकि पांवधरतेही यमपुरी में आपहुंचा निदान भवचक्कासा चारोंओर देखताहुआ आगेबढ़ातो थोड़ीदूरमें एकमनुष्य दिखाईपड़ा हातिम ने जानाकि यहांभी मनुष्यकी बसगति होगी जब निकट पहुंचा तो उसमाया कृतस्वरूपने अपनीकांख से दर्पण निकालके हातिम कोदिया हातिमने पूछा कि क्यातू नाई है जो दर्पण दिखाता है उसनेउत्तर दिया कि महाराज मैंइसी स्नानगृहका नाईहूं जोकोई मुझे दिखाई पड़ातो उसकोस्नान गृहमें लेजाके स्नान कराय उसकी श्रमखोय उससे कुछ पारितोषिकका आशावान होताहूं जो आप प्रसन्न हों तो यहांसे निकटही है स्नान कीजिये और पंथका श्रम दूरकरिये आपकी दयासे मुझे भी कुछभाग्य अनुकूल मिलरहेगा हातिमने पूछाकि वहांतूही अकेलाहै अथवा और भी कोईतेरा साथीहै उसने उत्तर दिया कि यहां हैं तो अनेक परंतु आजतो मेरीही बारी है तबहातिमने कहाकि अच्छा मैंभी बहुत श्रमितहूं और वायुके वेगसे पंथकी धूर उड़के शरीर पै पड़ीहै तिससे चित्त बहुतव्याकुलहै इसलियेस्नानकर स्वच्छ वस्त्रधारणकरूं निदानआगे२ नाई पीछे२ हातिम जब दोतीन कोसके लगभग पहुंचा तब एक मठदृष्टि पड़ा वहनाई उसस्नान गृहकेभीतर गयातो हातिमकोभी बुलाया और ज्योंही हातिम भीतरघसा त्योंहीउसके पटअनायास बन्दहोगये परंतु दृष्टि आते थे फिर इसी अभिलाषसे आगेबढ़ाकि फिरती बारखोलके निकस जाऊंगा फिरधीरे२ वहनाई उसहौज परलेगया और हातिमसे कहनेलगा किआप वस्त्र उतार के जलमें धसियेतो मैं ऊपरसे पानी छोड़के शरीरका मैल छुड़ाऊं निदान हातिम कपड़ा उतार के जलमें उतरा और वह नाई एक गंगा

यमुनी गडुवे से हातिमके वदनपर उष्ण जल छोड़ने लगा ज्योंहीं हातिम ने तीसरा लोटा छोड़ा तैसेही एक शब्दाघात ऊआ और अंधकार छायगया थोड़ीदेरमें जो अंधकार मिटा तो क्या देखता है कि न तो वह नाई है न हौज है न वह मकान है केवल एक मठ है फिर थोड़ीही देरमें वहां ऐसा पानी बढ़ने लगा कि क्षण भरमें पानी पींडुरी तक होगया तब तो हातिमघबड़ाय के चारों ओर फिरने लगा इतनी देरमें घुटनों के ऊपर पानी पऊंचा तो हातिम सोचने लगा कि ऐसी शीघ्र पानी की बाढ़ है तो किस भांति यहां से मैं बाहर निकलूंगा फिर हातिम चारों ओर दौड़ा फिरापर द्वार कहीं न मिला इतनेमें पानीडुबाऊं होगया हातिम पैरनेलगा और मनमें सोचनेलगा कि यहांसे न निकलनेका यही कारण है कि लोग पैरते २ थक जाते हैं अन्तको मरजाते हैं और यही दशा मुझे अपनी भी मालूम होती है क्योंकि कोई द्वारा निकसने का दृष्टिनहीं आता और हारस बादशाह इसी से नहीं आनेदेताथा हाय २ अकालमृत्यु ऊई फिर मनको समझानेलगा कि अभीइतना काहेको घबड़ाना चाहिये क्योंकि दाताकी नौका पहाड़पर चढ़ती है और तैनेतो कुछ अपने विषय भोगको तो यह काम कियाही नहीं है केवल औरके लिये है और परस्वार्थ की राहमें मरना भी शुभहै ऐसी बातोंमें मनको समझा रहाथाकि ऐसा थका कि बसअब बूड़ा इतनेमें मठसे पानी टकरानेलगा और एक जंजीर दृष्टिपड़ी हातिमने आधारजानके उसको पकड़लिया कि भला क्षणमात्र तो सुस्तालूं फिर पहलीही भांति एक शब्दाघातऊआ और हातिम उस मठ के बाहरहोगया और अपने को एक पटपरसी धरतीपर खड़ा देखा तो यह चारोंओर देखभाल के आगेबढ़ा तो एक शोभायुत स्थान चमकता दृष्टिपड़ा तब इसने जाना कि यहां कोइगांव है जब और आगेचला तो एकबागदृष्टि पड़ा उसका द्वारखुलादेख के भीतरगया जब फिरके देखा तो उस के द्वारका चिन्हभी न दिखाईपड़ातोसोचनेलगा किइतनीविपत्ति भोगी तबभीमायागृह के बाहर न ऊआ अन्तकोहारके एकमकान की ओर चलातो राहमें अनेकप्रकार के मेवोंसे फलदेऊये मिले यह मारे भूखके मेवा तोड़ २ के खानेलगा पर पेटमें कुछ भी न मालूमऊआ यहां तक कि सैकरोंमन मेवा खाया पर फिर भूखा का भूखारहा फिरमेवा खाताऊआबारहदरीके पासजाके देखातो बऊत से मनुष्य लुंगचढ़ाये नंगे खड़े हैं परन्तु सब पत्थर के हैं

यह कौतुक देखके बहुत विस्मितहो निजमनमें सोचनेलगा कि यह क्या आश्चर्य है और इसका भेदकैसे जानूं इतनेमें एक तोताबोला कि हेजवान काहेको खड़ाहै जो यहां आयाहै उसने अपना जीव खोया है यह सुनके हातिमने ऊपरको देखा तो एक तोता पींजरामें बैठाहै और एकताख में यह लिखाहै कि हे मनुष्यजो इस स्थान गृह में आया है सो बाहरि को सजीव नहींगया है एकदिन यहां बादशाह कैोमुर्स अहेरकरता हुआ आ निकला तो इसवन में उसको एक हलमास पड़ामिला जब उसको तौलाया तो सातसौ सक्राकुल की बराबरहुआ तब अपने सभासदों से पूछाकि इसका जोड़ा कहीं मिलसक्ता है उन्होंने उत्तरदिया कि महाराज ऐसा रत्न तो जबसे सृष्टिहुई है तबसे न सुना है न देखाहै यहसुनके सोचा कि इसको ऐसी ठौरधरूं जिसमें कोई न पावे यह विचारके उसने यही मायाकृत स्थानगृहरचा और वह हीरा इसतोता को निगलायके इसमकानमें लटकायदिया और इस रत्नजड़ित कुर्सी पर धनुषबाण इस प्रयोजनसे धरदिया कि जो कोई इस मायागृह में आयके फिर जानेका विचार करै तो एकबान इसतोता केशीसमें मारै और जो लगजावैतो वहउसी समय इसमाया गृहके बाहर निकला और वहहीरा उसीको मिलेगा और सोचकातो पाखान का होजायगा यहपढ़के हातिमने उनपाखान की मूर्तों की ओर देखकेकहा कि हेहातिम जो तू तीरनहीं मारता है तोभी इसीमें घूम२ के मरजायगा इससेतो यहीउत्तम है किइन्हीं मूर्तोंमें तूभी मिलजा और कोई यत्नतो बाहर निकलनेका अब नहीं है ईश्वर करैसोहो अबतू धनुषबाणले यहसोचके धनुषबाण उठा शरसंधान तोताकेलगाया तो तोता तो अलगहोगया तीर पींजरा की छतिमें लगा तिसपीछे तोता फिर अपनी ठौरपर आबैठा और हातिम घुटनों तक पत्थर का होगया तब वह तोता बोला कि हे जवान यहांसेजा यहस्थान तेरेयोग्य नहींहै और हातिम धनुषतीरसमेत सौकदम पीछे उछलके खड़ाहुआ और ऐसे भारी पांवहोगये कि उठनहीं सक्तेथे यह दशादेखके हातिम आंखों में आंसूभर सोच करनेलगा कि हेहातिम इतनीविपति भोगकेतो यहांआया और यहांभी तेरीयह दशाहुई इससेतो उचितयहीहै किएक बाण और मार और तूभी इन्हींमूर्तों में मिलजायहविचारके दूसराबाणमारा वहभी नलगा और हातिम कटि तक पाषान का होगया और आपहीआप उछलकेदो सौकदमपर जाखड़ाहुआ फिरतोताने यही

कहाकि हेजवान तू जायह ठौरतेरे योग्य नहीं है तबतो हातिम रोदन करके कहनेलगा कि मुझसा हतभाग्य कोई नहीं यह कह हायमार कहनेलगा कि रे हातिम अबकेवल एकबाण और रह-गया है और अपना मरना आंखोंसे न देखना चाहिये इसलिये आंखमूंद यहबाण भी ईश्वरके भरोसेपै मार ईश्वरेच्छा ऐसे दुःख में तो मरना सुखहै वहोशोच तोता को ताक आंखमूंद परमेश्वर कानाम लेके बाणको छोड़ातो तोताके लगा वहलगतेही पींजराके बाहरहतक होगिरपड़ा इतनेमें आंधीआई मेघतड़पनेलगे बिजुली चमकनेलगी अन्धकारऐसाहोगया किहाथोंहाथनसूझनेलगाऔर बड़ाकोलाहल मचाउससमय हातिमको निश्चयहुआ किअबसम्पूर्ण शरीर पाषाणका होगया थोड़ीदेर में जबयह सब उपद्रवशान्त-हुआतो हातिमने आंखखोलीतो नतोबागहैनतोताहैनमकान दृष्टि पड़ा केवलवह हीरा ताराभा चमकरहा है और जितनी पाखान की मूर्त्ति थीं सोसब मनुष्यके स्वरूप होगये हातिमने दौरके वह हीराउठाय लिया उनसभोंने पूछा कि तुमयहां कैसे सजीव बचे हातिमनेसंपूर्ण वृत्तान्त उनकोकह सुनाया तबवेहातिमके पैरछूके कहनेलगे किअब हमतुम्हारे होचुके निदान हातिम उनको साथ लेके शहरकतांकीओरचला थोड़ीदूर चलकेवहीद्वार दृष्टिपड़ाफिर हातिमद्वारपालके पासआया उसनेबड़े आदरसे हातिमकोलिया और बहुतसी प्रशंसाकरके वहांका वृत्तान्तपूछा हातिमने सम्पूर्ण वृत्तान्त कहसुनाया कईदिन पीछेवहांभे शहरकतां में आयाबाद-शाहने हातिम को अपनी बराबर सिंहासन पर बैठारा और सब हालपूछा हातिमने ज्योंकात्यों कहसुनाया और वहहीरा बाद-शाहके आगे धराकि यहआपकी भेंटहै पर इतना है कि एकबेर हुस्नबानूको दिखालें तबफिर आपकेपास भेजदूंगा और येजो पुरुष मेरेसाथ हैं सोइनमेंसे बहुतसे बादशाह और सौदागरोंके पुत्र हैं सोआप दयाकर इनको एक२ कड़ोररुपया देके यथायोग्य इनकी सभाठीक करदीजिये जिसमें आनन्द पूर्वक अपने देशमें पहुंचके आपकेगुण गावें बादशाहने हातिमके कहनेके अनुसारकिया और बहुतसीसेना औरद्रव्यहातिमकेसाथ करकेविदाकिया थोड़ेदिनोंमें हातिम शाहाबाद आ पहुंचा यहसमाचार हुस्नबानू को मिलेकि वहपुरुष बड़ीधूमधामसे कुशलपूर्वकआयपहुंचाहुस्नबानूनेप्रतिहारों केहाथ सन्देशादिया किआपदयाकर प्रथम इसी ओर कोआइये हातिम पहले हुस्नबानू के द्वार परगया उसने यथा पूर्वक कुर्सी

बिछवा आप चिलमनके भीतर बैठी और हातिम से हम्माम बाद-गिर्दका वृत्तान्त पूछने लगी हातिमने सब आद्योपांत कहसुनाया और वह हीरा उसके सन्मुख रक्खा वह देखके विस्मित हुई और चुपकी होरही तब हातिम ने कहा कि मैंने तेरे कहनेका प्रतिपाल कर तेरे प्रश्नोंके उत्तरदिये अब उचितहै कि तूभी अपने बचन का प्रतिपालकर तब हुस्नबानू धीरेसे बोलीकि अबमैं तेरी होचुकी चाहेतू अपनी करके राखचाहे किसीको देदे तब हातिम ने कहा कि मैंने कुछ अपने लिये यह परिश्रम नहीं किया वरञ्च श्य २ मुनीरशामी के लिये इसलिये वह जो तेरी विरहानल में जलताहै अबउसको अपनाचन्द्रानन दिखायकेठंढाकर औरउसको अपना पतिमान यह सुनके हुस्न बानू बोली कि तुम मेरे पिताकी ठौर होजो वह मेरे पतिहोनेके योग्य होयतो कुछ सन्देह नहीं है आपका कहा मेरे सिरमाथेपरहै हातिम ने फिर मुनीरशामी कोसन्देशा भेजा कि तुमराजसी वस्त्र आभूषण धारण करके शीघ्र आवो वहसुनतेही तुरन्तकपड़ा पहरके हातिमके पास जापहुंचा हातिम ने दूसरे रत्न जटित सिंहासन पर बैठारा तब हुस्नबानू ने जो चिलमन से झांकके देखा तो मुखदेखतेही चन्द्रचकोर कालेखा होगया और लज्जावस आंखें नीचेकिये दूसरे घरमें चलीगई तब हातिमभी मुनीरशामी को लेके सरायमें आयासबेराहोतेहीहुस्न बानूने एक बड़ा मकान खालीकियातिसमें हातिम मुनीरशामीको लेकेआय बिराजा और द्वारपै अनदबधायेबाजने लगेतिसपीछे हर्ष मण्डली और नृत्यादि की सामा हुई फिर कितेक दिन पीछेशुभ मुहूर्त बिचारके लगन आई और सब मकानोंमें पाटम्बर बिछौना बिछायसकल गलीदुलहा दुलहिनके मकानसे अरगजासे सिचाई और दुलहाकेघरसेलेके दुलहिनके मंडफतककपूरकेकवलगवाय आतशबाजी की टट्टी गड़वाय दी और जब आधी रात बीती तो मुनीरशामी बड़ीधूम धामसे ब्याहनेकोचढ़ातो बरातकी शोभाको कहांतक कोई बखान करैनिदान बड़े उत्तम घोड़ेपर मुनीरशामी सवार हो माथे परमोतियों की झालरदार मौर धरके चला और आगे२ बरांगणोंकेयूथ तख्तोंकेऊपर नृत्यकरतेजातेथे और महताबी हथफूल अनार फुलझरी दुपहरी धुरिगोलादि तमासेछुटतेथे कि जिनके आगेचन्द्रमाकाप्रकाशमलीनहोगया और सितारों कीचमक से रजनी दिन समान लगने लगी और नाना वरणके स्वांगतमासे जिनको देखतेही बने कवि की बुद्धि इतनी कहां जो उसको कहै

और कन्या के घरको सामा और विभूति को तुमसे कहांतककहूं कि वहांसे कईगुणा अधिक थी जब दूलह निकट पहुंचा तो लोग अगवानी लेनेको आये और दूलह को हाथोंहाथ लेजायके मसनद पर बैठारा जिसके दाहिनी ओर हातिम भी बड़े हर्ष से बैठा तिस पीछे सकल बराती यथा योग्य बैठे निदान काजीने आयके विवाह कराया तिस पीछे दूलहको दुलहिनके मगडफ़ को किनेक बूढ़ीबड़ी द्वबसनाती लेगईं वहां बरदुलहिनको एक आसन पैबैठाला तब सुनीरशामी ने हुस्नबानू का घूंघट खोल के जो देखा तो एक संगमूर्छा आई ततकालदासीगुलाबलेके मुखपैछिड़कने लगीं थोड़ीदेर में सुनीरशामी को चेत हुआ तो बारम्बार हातिम को धन्य २ कह परमेश्वरको दण्डवतकरी और जोरीत भांति वहां करनीथी सो करदुलहिन को डोलासे चढ़ाय बड़ीधूम धाम से आनन्द बधाये बजबाता अपने विभूति स्थान में आय विराजा तो चार दिनतक तो द्वारका सुखभीन देखा पांचवेंदिन घरसे बाहर निकल हातिम के चरण परने लगा उसने सुनीरशामी को हृदयमेंलगा बहुत २ आशीर्वाद देके बिदामांगी तो सुनीरशामी ने हातिम से बहुत कह सुनके चारपांच दिन और पहुनाई करी तब हातिमने मुसकराके कहाकि भाई यहतो न्यायभला नहींहै देखोअपनीसी दशासबकी जानो यह व्यङ्ग सुन सुनीरशामी ने हातिम को बिदाकिया वह आनन्दसे यमनकी ओरचला जबथोड़े दिनोंमें नगरके निकटपहुंचा तब बादशाह अर्थात् हातिमके पिताने मंत्रीको आगेलेने भेजा वह बड़ी प्रतिष्ठासे हातिमको बादशाहकेसन्मुखलेआया हातिमने अपने पिताके चरणछुये बादशाहने उठके हृदयसे लगालिया तिस पीछे महलमेंगया वहांजा माता को प्रणामकिया उसनेभी हातिम को हृदयमेंलगा कलेजा ठंढाकिया महलमें आनन्दमई होगई नगरमें घर२ आनंदबधाये बाजनेलगे बादशाहने सबकोयथोचितदानमानसे परिपूर्णकिया और नयेसिरसे सलकाजरीपासकेबिवाहकाआनन्द मण्डल रचा तिसपीछेबादशाह अपनी सभामें जाके बैठा तो अपने सभासदों से कहनेलगाकि सृष्टिमें ऐसेभी मनुष्यहैं जोअपना सुख चैन छोड़ पराये लियेदुःख सहैं और सत्यभी योंहीहै और वेही लोक परलोक दोनोंमेंभले हैं ऐसी २ दोचार बातें कह हातिम को राज्यसौंपि अपना समाधलगा ईश्वर का भजन करने लगे निदान दश वर्ष सात मास नौ दिन में हातिम के सात पर्यटन समाप्त हुये और सुनीरशामी की अभिलाषपूरी हुई देखो नतो

हातिमताई रहा न सुनीरग्रामीहीरहा केवलकहावत रहगई॥

दोहा॥

हातिम रह्यो न तय रह्यो रह्यो गांव नहिं ठाम।
सुख संपति कछु नहिं रह्यो रह्यो जगत में नाम॥

सोरठा॥

रवि मरीचि का तोय तिमि जग झूठो जानिये।
उत्तम पुरुष है सोय जाको यश जगमें रह्यो॥

इति

———

पुस्तकों की फेहरिस्त

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
स्त्री दर्पण	लघु कौमुदी	ताजीरात हिन्द अर्थात्
समर बिहार बिन्द्राबन	शब्दार्थ कोष	ऐक्ट ४५
औषधि सङ्ग्रह कल्पवल्ली	अमर कोष प्रथम काण्ड	ऐक्ट २५ सन् १८६१ ई०
गुलबकावली	अमर कोष तीनों काण्ड	ज़ाबिते फ़ौजदारी
प्रेम रत्न	भाषा टीका सहित	मजमूआ ऐक्ट लगान व
बारह मासा बलदेव प्रसाद	अनेकार्थ प्रकाश	बध जिसके साथ नीचे
प्रबोध चन्द्रोदय नाटक	तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	लिखे हुये ऐक्ट संयुक्त हैं ॥
कायस्थ दर्पण	सङ्ग्रह शिरोमणि	ऐक्ट २६ सन् १८६३ ई०
सहस्र रजनी चरित्र जो उर्दू	मुहूर्त चिन्तामणि सारिणी	ऐक्ट १४ सन् १८६५ ई०
अलिफ़ लैला से तर्जुमा हुई	शार्ङ्गधरी सटीक	ऐक्ट १६ सन् १८६१ ई०
कल्प सूत्र भाषा नागरी	मुहूर्त गणपति	ऐक्ट नम्बर २६ सन् १८६६ ई०
कमीशन बङ्गाल	भाषा जातकालंकार	ऐक्ट २० सन् १८६६ ई०
षट् पंचाशिका	लघुजातक भाषा टीका	ऐक्ट २४ सन् १८७० ई०
बैताल पच्चीसी	सहित	ऐक्ट १० सन् १८५९ ई०
सिंहासन बत्तीसी	कल्पसूत्र	ऐक्ट ५ सन् १८६१ ई०
शुक बहत्तरी	शीघ्रबोध	ऐक्ट २० सन् १८६७ ई०
छन्दोर्णव पिङ्गल	सामुद्रिक	ऐक्ट १८ सन् १८६६ ई०
बाल बोध	लीलावती भाषा	ऐक्ट २६ सन् १८६७ ई०
फ़क़ीर अल्लाबख़्श का बारह	गणित कामधेनु	ऐक्ट नम्बर १६ सन् १८६
मासा	शार्ङ्गधर	ई०
दैवज्ञाभरण	वैद्य जीवन	क़वायद रेलवे और उसके
शृंगार प्रकाश	वैद्य मनोत्सव	साथ क़ानून भी हैं ।
नानार्थ नौ सङ्ख्यावली	अमर विनोद	ऐक्ट १८ सन् १८७३ ई०
सङ्ख्यावली	रमल सार नागरी	अर्थात् क़ानून लगान
दूसरी पुस्तक रामायण माला	दैवज्ञाभरण	मुमालिक मग़रबी व शि-
तीसरी रामायण गीताष्टक	जगद्विनोद	माली ।
चौथी ज्ञान दोहावली	निघण्टु भाषा	ऐक्ट ११ सन् १८७४ ई०
पांचवीं रस तरङ्गिणी	अमृत सागर	ऐक्ट १० सन् १८७२ ई०
छठी तिथि बोध	अमृत सागर बड़ी	दान लीला नाग लीला
सातवीं पुस्तक मातृदत्त कृत	किताब पटवारी ४ भाग	मनु स्मृति उर्दू टीका सहित
हारीत स्मृति नागरी	लावनी व शेर बनारसी	इन्द्र सभा नागरी
गुलो सनोबर नागरी	हिदायतनामा मालगु-	ज्ञान स्वरोदय
बाग़ो बहार नागरी	ज़ारी	जातक चन्द्रिका
बाला बोध	हिदायतनामा बन्दोबस्त	राम लगन

पुस्तकों की फेहरिस्त

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
विद्यार्थीकी प्रथमपुस्तक	रेखा गणित १ भाग	बाला भूषण
वैल्लवी संध्या	रेखा गणित २ भाग	हिदायत नामा गुर्दसान
विश्रामसागर	बीज गणित १ भाग	कुल्लह बन्दी
बिहारी सतसई सटीक	तथा २ भाग	शिक्षावली
अपूर्व कथा	सूरज पुर की कहानी	भोज प्रबन्ध सार
याग्य वल्क्य भाषाटीका सहित	विद्याचक्र	राजनीति
	भूगोलतत्व	स्त्रियों की हित पत्रिका
सरिश्तह तालीम की पुस्तकें	पदार्थ विद्या सार	धात्वर्णव
	वर्ण प्रकाशिका	अवध का भूगोल
	पत्र दीपिका	कविन्द्र रत्नाकर
अक्षर दीपिका	भारत स्वरीलका	महाभारत भाषा छन्द प्रबन्ध
विद्यांकुर	क्षेत्र प्रकाश	में जो श्री मन्महाराजाधिराज
बालबोध	पत्रहितैषिणी	उदितनारायण सिंह जी का-
भाषा चन्द्रोदय	रामायण सातो काण्ड	शीनरेश ने गोकुल नाथादि
इंगिलस्तान का इतिहास	बालकाण्ड	कवीश्वरों से रचना कराय
गणित लता २ भाग	अयोध्याकाण्ड	कलकत्ते में छपवाया था वही
तथा ३ भाग	आरण्यकाण्ड	श्रीयुत माधवसिंह गढ़म-
गणित प्रकाश १ भाग	किष्किन्धा काण्ड	ठी नरेश की सहायता और
तथा २	सुन्दरकाण्ड	अनुराग से इस यन्त्रालय में
तथा ३	लङ्काकाण्ड	अत्युत्तम टैप के पुष्ट अक्षरों
तथा ४	उत्तरकाण्ड	में १८ पर्व बड़ी शुद्धता
क्षेत्र चन्द्रिका पहला भाग	अक्षर रत्न	से छपा है ॥
क्षेत्र चन्द्रिका २ भाग	भाषा तत्व दीपिका	
अक्षरावली	पशु चिकित्सा	
मङ्गल कोष	भूगोल दर्पण	

जो किताबें छप रही हैं उन के नाम नीचे लिखे हैं ॥

अमीर हमज़ा	नाटक भाषा टीका सहित	निर्णय सिन्धु
कृष्णप्रिया	योग वाशिष्ठ भाषा जो दे-	गीतावली सटीक
विद्वन्मोद तरंगिणी	वनागरी में छपता है ॥	महिम्नस्तोत्र सटीक

पुस्तकों की फेहरिस्त

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
विद्यार्थी की प्रथम पुस्तक	रेखा गणित १ भाग	बाला भूषण
वैष्णवी संध्या	रेखा गणित २ भाग	हिदायत नामा मुर्दैसान
विश्राम सागर	बीज गणित १ भाग	हल्कहबन्दी
बिहारी सतसई सटीक	तथा २ भाग	शिक्षावली
अपूर्व कथा	सूरजपुर की कहानी	भोज प्रबन्ध सार
याज्ञवल्क्य भाषाटीका	विद्याचक्र	राजनीति
सहित	भूगोल तत्त्व	स्त्रियों की हित पत्रिका
सर्रिश्तह तालीम की	पदार्थ विद्या सार	धात्वर्णव
पुस्तकें	वर्ण प्रकाशिका	अवध का भूगोल
	पत्र दीपिका	कविन्द्र रत्नाकर
अक्षर दीपिका	भारत खण्डिका	महाभारत भाषा छन्द प्रबन्ध
विद्याङ्कुर	क्षेत्र प्रकाश	में जो श्री मन्महाराजाधिराज
बालबोध	पत्र हितैषिणी	उदित नारायण सिंह जी का-
भाषा चन्द्रोदय	रामायण साती काण्ड	शीनरेश ने गोकुलनाथादि
हिन्दुस्तान का इतिहास	बालकाण्ड	कवीश्वरों से रचना कराय
गणित लता २ भाग	अयोध्याकाण्ड	कलकत्ते में छपवाया था वही
तथा ३ भाग	आरण्यकाण्ड	श्रीयुत माधवसिंह गढ़ अ-
गणित प्रकाश १ भाग	किष्किन्धाकाण्ड	मेठी नरेश की सहायता और
तथा २	सुन्दरकाण्ड	अनुराग से इस यन्त्रालय में
तथा ३	लङ्काकाण्ड	अत्युत्तम टैप के पुष्ट अक्षरों
तथा ४	उत्तरकाण्ड	में १८ पर्व बड़ी शुद्धता
क्षेत्र चन्द्रिका पहला भाग	अक्षर रत्न	से छपा है ॥
क्षेत्र चन्द्रिका २ भाग	भाषा तत्त्व दीपिका	
अक्षरावली	पशु चिकित्सा	
मङ्गल कोष	भूगोल दर्पण	

जो किताबें छप रही हैं उन के नाम नीचे लिखे हैं ॥

अमीर हमज़ा	व्रतार्क भाषाटीका सहित	निर्णय सिन्धु
कृष्णप्रिया	योग वाशिष्ठ भाषा जो दे-	गीतावली सटीक
विद्वन्मोद तरंगिणी	वनागरी में छपता है ॥	महिम्नस्तोत्र सटीक